रसूलुल्लाह की चन्द बे मिसाल हदीसों का मजमूआ



मुन्तख़ब हदीसें

(नवादिरूल हदीस)

लेखक

शैखुल हदीस हज़रत अब्दुल मुस्तफ़ा आज़मी अलैहिर्रहमतु वर्रिज़वान

नाशिर

आज़मी बुक डिपो

तकसीम कार

मौहम्मदी बुक डिपो

रसूलुल्लाह की चन्द बे मिसाल हदीसों का मजमुआ

मुन्तख़ब हदीसें

(नवादिरुल हदीस)

मुसन्निफ़

शैखुल हदीस अ़ल्लामा अ़ब्दुल मुस्त़फ़ा आज़मी
अलैहिर्रहमतो वर रिज़वान

हिन्दी तर्जुमा :
मौलाना अमीनुल क़ादरी बरेलवी

नाशिर :
आज़मी बुक डिपो, घोसी।

तक़्सीम कार:
मुहम्मदी बुक डिपो,
५२३,वहीद कुतुब मार्केट,मटिया महल
जामा मस्जिद दिल्ली -६

नाम किताब : मुन्तख़ब हदीसें (नवादिरुल हदीस)
तस्नीफ़ : हज़रत अल्लामा अब्दुल मुस्तफा आज़मी
हिन्दी तर्जुमा : मौलाना अमीनुल क़ादरी, बरेलवी।
कम्पोज़िंग : मुहम्मद ततहीर ख़ाँ, बरेलवी।
क़ीमत :
तादाद : 1100
इशाअत अव्वल : अप्रैल 2007

मिलने के पते

मकतबा नईमिया, मटिया महल, दिल्ली।
फारुक़िया बुक डिपो, मटिया महल , दिल्ली।
रज़ा बुक डिपो, मटिया महल, दिल्ली।
बरकाती किताब घर, मटिया महल, दिल्ली।
नाज़ बुक डिपो, मोहम्मद अली रोड, मुम्बई
अलकुरआन कम्पनी, कमानी गेट, अजमेर।
क़ादरी दारुल इशाअत, दिल्ली।

फ़ेहरिस्ते मज़ामीन

इन्तिसाब

और

ईसाले सवाब

मैं अपनी इस किताब के ज़रीये उन तमाम उल्माऐ दीन और फुक़हा व मुहद्दिसीन की अरवाहे तय्यबा को ईसाले सवाब करता हूँ, जिनके नोके क़लम की सियाही शहीदों के ख़ून का दर्जा रखती है।

नाज़ेरीन किराम भी फातिहा पढ़ कर इस किताब का मुतालआ करें इन्शा अल्लाह ख़ैरो बरकत पायेंगे।

ख़ाकपाऐ उल्माऐ किराम
अब्दुल मुस्तफ़ा आज़मी

अहादीसे दिल

बिस्मिल्लाहिर्रहमा निर्रहीम

अल्लाहुम्मा लकल हम्दो सरमदन सल्ले अला हबीबिका मुहम्मदिवं व आलेहि व असहाबिही अ ब द।

न शबम, न शब परस्तम कि हदीसे ख़्वाब गोयम
चूँ गुलामे आफताबम हमा अज़ आफताब गोयम

आफताबे रिसालत हुजूरे अकरम सल्लल्लाहो अलैह वसल्लम की एक बहुत ही बशारत आमेज हदीस है कि –

"मन हफेज़ा अ़ला उम्मती अरबईना हदीसन फी अमरे दीनेहा बअ सहुल्लाहु फ़कीहौं व कुन्तु लहू यौमल क़ियामते शाफ़िअंव व शहीदा।"

(मिशकात, किताबुल इल्म, पेज 36)

तर्जुमा :– जो शख़्स दीनी मुआ़मलात के मुताअ़ल्लिक चालीस हदीसें याद करके मेरी उम्मत तक पहुँचा देगा अल्ला तआला उसको क़ियामत के दिन इस शान के साथ उठायेगा कि वह " फ़कीह" होगा, और मैं क़ियामत के दिन उसकी शफ़ाअत करूँगा, और उसके लिए गवाही दूँगा।

जबसे इस ह़दीस के मुताले से नज़र सरफ़राज हुई बराबर दिल में यह तड़प और कल्ब की गहराईयों में यह जज्बा मोजज़न रहा कि क्यों न मैं भी दूसरे मुहद्दिसीन किराम की तरह चालीस हदीसों का एक मजमूआ लिख दूँ और उम्मते रसूल की बारगाह में पेश करके इस बशारते उज्मा के उम्मीदवारों की मुक़द्दस फ़ेहरिस्त में अपना नाम भी दर्ज करा लूँ। शायद के मेरा रब्बे करीम अपने फ़ज्लो करम से मुझ बे इल्म, बे अमल गुनाहगार को भी इस माये नाज़ सआदत के एजाज से सरफराज़ फरमा दे।

चुनाँचे इसी तमन्ना में यह चालीस हदीसों का एक गुलदस्ता तर्जुमा और शरह के साथ लिख कर " नवादिरुल हदीस" के नाम से उम्मते रसूल सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की ख़िदमत में नज़र करता हूँ। और खुदावन्द रहमानो रहीम की रहमत से और उसके फ़ज़्ले अज़ीम से उम्मीदवार हूँ कि वह मेरी इस हकीर ख़िदमत को क़बूल फरमा कर क़ियामत के दिन "फुकहाये किराम" की सफ़े निआल में मुझको जगह अता फ़रमा दे। और रसूले रहमत सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की शफ़ाअ़त की कमली में मेरे जुर्मों

की परदा पोशी फ़रमा दे। "व मा ज़ालिका अलल्लाहि बि अज़ीज़े व हुवा हसबी व नेअ़मल वकील।"

वो अगर चाहे तो एक क़तरे को दरिया करदे
उसकी कुदरत है कि एक ज़र्रे को सेहरा करदे

अपने अल्ताफ़े करीमाना से वो चाहे अगर
एक "कुन" कहके वो कौनैन को पैदा करदे

मैंने यह किताब ख़ास तौर पर मुबतदी तलबा, नये मुकर्रे रीन और उर्दू ख़्वाँ आवाम के मुताले के लिए तहरीर की है। इस किताब में क़सदन मैंने हदीसों की सनदों पर मुहद्दिसाना कलाम नीज़ मसाइल पर फ़क़ीहाना बहसों और सरफ़ो नहव, या इल्मे मआनी व बयान के इल्मी नुकात को बयान करने से गुरेज़ किया है। और शौकते अल्फ़ाज़, जिद्दते तराकीब, इबारत आराई वग़ैरह के तकल्लुफ़ात से भी इजतिनाब किया है। और निहायत ही सलीस और सादा ज़बान और बिलकुल ही आम फ़हम इबारत में अपने मफ़हूम को पेश करने की कोशिश की है। लिहाज़ा नाक़ेदीने फ़न और इल्मी नुकात के मुतालाशी अहबाब से दस्त बस्ता मुल्तजी हूँ कि वह इस मजमूआ में मज़कूरा बाला महासिन को न तलाश करें और यह समझ कर इस मजमूअे को शर्फ़े कुबूल से सरफ़राज़ फ़रमायें।

गुल आवरद सअ़दी सूऐ बोस्ताँ
ब शोख़ी, चू फ़िलफ़िल बा हिन्दोस्ताँ

मैंने बिलमक़सद इस किताब में ना बाब और फ़स्ल की कैद रखी, न मज़ामीन की तरतीब का कोई ख़ास एहतिमाम किया, बल्कि मुख़्तलिफ़ मज़ामीन की हदीसों को यके बाद दीगरे बग़ैर किसी ख़ास तरतीब के तहरीर करता चला गया। क्योंकि मेरा तर्जुबा है कि एक ही क़िस्म के मज़ामीन को लगातार पढ़ते रहने से अमूमन मुताला करने वाले उकता जाते है और ताज़ा ब ताज़ा, नोअ़ ब नोअ़ मुख़्तलिफ़ क़िस्म के नये नये मज़ामीन को अजीब अजीब उनवानों के साथ पढ़ने से तबीअत की ताज़गी और ज़ौक़ का निशात बराबर बढ़ता रहता है। ख़ुदा करे कि मेरी यह ग़ैर मारुफ़ और बे ढंगी रविश कारेईन किराम को भी पसन्द आ जाये।

मैं उन तमाम क़ारेईने किराम का इन्तिहाई ममनून होंगा जो इस

किताब का मुताला करने के बाद इख़लासे क़ल्ब के साथ मेरे हक़ में यह दुआ फ़रमायेंगें कि खुदावन्द करीम अपने फ़ज़्लो करम से मेरी इस हक़ीर क़लमी ख़िदमत को दोनों जहान में मकबूलियत की करामतों से सरफ़राज़ फ़रमाये और मेरे लिए और मेरे वालिदैन के लिए इस को तोशअे आख़िरत और सामाने मग़फ़िरत बनाये।

नज़रे मन, दर दो जहाँ बा इज़्ज़त व तमकीन बाद
ई दुआ अज़ मन व अज़ जुमला जहाँ "आमीन" बाद

लिख चुका वअ्ज़ भी हिकायात भी
थीं ये मेरे नसीब की बातें
अब मदीने की याद आयी है
लिख रहा हूँ नसीब की बातें

गुलशने कुद्स की बहारों में
बाग़े जन्नत के फूल लाया हूँ
आशिक़ो भर लो दामने दिल को
मैं "हदीसे रसूल" लाया हूँ

उम्र गुज़री है लिखने पढ़ने में
सब किताबों से हो चुका दिल सैर
अब लगन है हदीसो कुरआँ से
इसको कहते हैं "ख़तिमा बिल ख़ैर"

व सल्लल्लाहु तआला अला अशरफिल अम्बिया व अला आलेहि व सहबिहि अजमाईन।

अ़ब्दुल मुस्तफ़ा आज़मी
27 रमज़ानुल मुबारक 1394 हिजरी

हदीस की चन्द इस्तिलाहें

हुजूर नबीए करीम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम या सहाबा या ताबेअीन ने जो कुछ फ़रमाया, और जो कुछ किया, या किसी को कुछ कहते सुना, या कुछ करते देखा और उस पर मना व इन्कार नहीं फ़रमाया बल्कि ख़ामोश रहे तो उन सब को मुहद्दिसीन की इस्तिलाह़ में " हदीस" कहा जाता है।

इस एतिबार से हदीस की तीन क़िस्में हो गयीं।

1. हदीसे मरफ़ूअ़
2. हदीसे मौक़ूफ़
3. हदीसे मक़्तूअ़

हदीसे मरफ़ूअ़ :—वह हदीस जो हुजूर सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम तक पहुँच जाये यानी उस हदीस में यह ज़िक्र किया गया हो कि हुजूर ने ऐसा फ़रमाया। या हुजूर ने ऐसा किया। या हुजूर के सामने लोगों ने ऐसा कहा या ऐसा किया तो इसको " हदीसे मरफ़ूअ़" कहते हैं।

हदीसे मौक़ूफ़ : — वह हदीस जो सहाबी तक पहुँचे। यानी उस हदीस में यह मज़कूर हो कि मसलन इब्ने अब्बास ने कहा, या इब्ने उ़मर ने कहा, या इब्ने मसऊद रदियल्लाहु अ़न्हु ने ऐसा देखा या ऐसा सुना। तो ऐसी हदीस को " हदीसे मौक़ूफ़" कहते हैं।

हदीसे मक़्तूअ : — वह हदीस जो ताबेअी तक पहुँचे। यानी उस हदीस में यह बयान किया गया हो कि मसलन सईद बिन ज़ुबैर ने ऐसा कहा या ऐसा किया। या अकरमा ने लोगों को यह करते देखा। या यह कहते सुना तो इसको हदीसे मक़्तूअ कहते हैं।

रिवायत : — हदीस नक़ल करना, हदीस बयान करना।

रावी : — हदीस नक़ल करने वाला, हदीस को बयान करने वाला, हदीस को नक़ल करने वाले रावियों का सिलसिला जैसे अन यूनुस, अन इब्ने शहाब, अन उबैदुल्लाह बिन अब्दुल्लाह, अ़न इब्ने अब्बास, अ़निन नबी स़ल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम।

मतन हदीस : — जहाँ सनद खतम हो जाए उसके बाद के अल्फ़ाज़ को मतन हदीस कहते हैं।

सहाबी : —जिसको बा हालते ईमान हुजूर स़ल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की सोहबत नसीब हुई और ईमान पर ही उसका ख़ातमा हुआ।

ताबेओ़ी : – जिसने बा हालते ईमान किसी सहाबी से मुलाक़ात की और ईमान ही पर उसका ख़ातमा हुआ।

इस ऐतबार से कि असल हदीस् रावी तक किस तरह पहुँची। हदीस की चार किस्में हैं :–

1 हदीसे मुतावातिर
2. हदीसे मशहूर
3. हदीसे अज़ीज़
4. हदीसे ग़रीब

हदीसे मुतावातिर : – वह हदीस है जिसके रिवायत करने वाले हर ज़माने में इस क़दर कसीर लोग हों कि उनका झूट पर मुत्तफ़िक़ हो जाना आदतन मुहाल हो।

हदीसे मशहूर : – वह हदीस है कि जिसके रावी हर दौर में दो से ज़ियादा रहे हों। इसको हदीसे मुस्तफीज़ भी कहते हैं।

हदीसे अज़ीज़ : – वह हदीस है जिसको हर दौर में दो रावी रिवायत करते रहे हों और पूरी सनद में कहीं भी दो रावी से कम न हों।

हदीसे ग़रीब : – वह हदीस है जिसके सिलसिलाऐ सनद में कही सिर्फ एक ही रावी रह गया हो।

विज़ाउ़ल हदीस : – झूट हदीसे गढ़ लेने वाला, ऐसा आदमी सख़्त गुनाहगार और जहन्नुमी है।

हदीसे मौज़ूअ् :– झूटे रावी की बयान की हुई हदीस, जिसका हदीसे रसूल होना साबित न हो यह हदीसे मौज़ूअ है जो क़तअन ग़ैर मोअ्तबर है।

मुहद्दिसीन : – उ़लूमे हदीस में मशगूल होने वाले हज़रात मुहद्दिसीन कहलाते हैं।

मुअर्रेख़ीन :– गुज़रे हुए ज़माने की तवारीख़ और हालात बयान करने वाले मुअर्रेख़ीन या अख़बारी के लक़ब से याद किया जाते हैं।

सिहाहे सित्ता : –

1. बुख़ारी शरीफ
2. मुस्लिम शरीफ
3. तिरमिज़ी शरीफ

4 अबू दाऊद शरीफ

5. निसाई शरीफ

6. इब्ने माजा शरीफ

हदीस की यह छः मशहूर किताबें सिहा सित्ता कहलाती हैं

दीन में हदीस का मुक़ाम

जमाना–ए– नुबुव्वत से आज तक तमाम मुसलमानों का यही अक़ीदा रहा है कि अहकामे शरीअत की दलीलों में से सबसे मुक़द्दम और सबसे आला खुदा की मुकद्दस किताब " कुरआन मजीद" है। और चूँकि कुरआन ही की तसरीहात व हिदायात के बमोजिब हुजूर नबीए करीम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की इत्तिबाअ़ व अताअत भी हर मुसलमान के लिए लाज़िमुल ईमान और वाजिबुल अमल है। क्योंकि बग़ैर उसके कुरआन मजीद की आयतों के सही मफ़हूम और हक़ीकी मुराद को समझ लेना गैर मुमकिन और मुहाल है। इस लिए कुरआन मजीद के बाद के अहकामे शरीअत की दलील बनने में यह हदीस ही का दर्जा है। इसके बाद इजमाऐ उम्मत और क़यासे मुजतहिद का दर्जा है। इस लिए यह अकीदा रखना ज़रूरियाते दीन में से है। कुरआन मजीद व हदीस दोनों ही दीने इस्लाम की मरकज़ी बुनियाद और अहकामें शराअ़ की मज़बूत दलीलें है।

इस दौर के बाज मुलहेदीन जो अपने को " अहले कुरआन" कहते है और हदीसों के दलीले शरअ़ी होने का इन्कार करते हैं। कुरआन करीम ने साफ और सरीह लफ्ज़ो में इन ज़ालिमों के इस काफ़िराना नजरिया का रद फ़रमाया है। चुनाँचे इरशादे खुदावन्दी है कि " मा आताकुमुर रसूलो फ़खुज़ूहो वमा नहाकुम अन्हु फन्तहू।(हशर)

यानी रसूल जो कुछ तुम को (हुक्म) दें उसको लो, और जिस चीज से तुमको मना करें उससे बाज रहो।

मुसलमानों ! देख लो, कुरआन का यह फ़रमान साफ साफ ऐलान कर रहा है कि रसूल सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के अवामिर व नवाही, जो हदीसों की सूरत में हैं यकीनन बिला शुबाह वाजिबुल अमल और अहकामे शरअ़ की हुज्जत और मजबूत दलीलें हैं।

मनसबे रिसालत :– हकीकत तो यह है कि जो लोग हदीसों के दलीले शरअ़ी होने का इन्कार करते हैं वह दर हकीकत मकामे नुबुव्वत व मन्सबे रिसालत ही के मुन्किर हैं। इन लोगों के नज़दीक रसूल की हैसियत महज़ एक क़ासिद और एलची की सी है। हालाँकि कुरआन मजीद ने साफ और सरीह लफ्ज़ों में इस मुलहिदाना नज़रिया और काफ़िराना बकवास की जड़ ही काट डाली है। चुनाँचे कुरआन मजीद का इरशाद है कि :–

"मयं युतिइर रसूल फ़क़द अता अ़ल्लाह"। (निसा)

यानी जिसने रसूल की इताअ़त की उसने अल्लाह की इताअ़त की। कहीं इरशाद फ़रमाया है कि " वमा अरसलना मिर्र रसूलिन इल्ला लियुताआ बि इज्निल्लाह" (निसा)

यानी हमने जिस रसूल को भी भेजा इस लिए भेजा ताकि लोग अल्लाह के हुक्म से उसकी इताअ़त करें।

इसी तरह इरशादे रब्बानी है :–

"या मुरो हुम बिल मअ़रुफ़ि व यनहा हुम अ़निल मुन्करे व युहिल्लो लहुमुत तय्येबातो व यो हर्रेमो अलैहिमुल ख़बीसु"। (ऐराफ)

यानी रसूल लोगों को नेकी का हुक्म देते हैं और बदी से मना करते हैं और लोगों के लिए साफ सुथरी चीज़ो को हलाल फ़रमातें हैं और गन्दी चीज़ों को हराम फ़रमाते हैं।

मज़कूरा बाला आयात और इस किस्म की दूसरी आयतें ऐलान कर रही हैं कि रसूल एक क़ासिद और एलची की पोज़ीशन में नहीं है। बल्कि रसूल का मन्सबे रिसालत इस क़दर बुलन्द व बाला है कि रसूल मुक़तदा और मुताअ़ है। रसूल आमिर व नाही हैं, रसूल हलाल करने वाले, हराम करने वाले हैं। रसूल हाकिम व हुक्म और मुअ़म्मिल व शारेअ़ है।

मुसलमानों ज़रा सोचो तो सही ? कहीं क़ासिद और एलची की भला यह शान हुआ करती है ?

मुनकेरीने हदीस की नफ़सानियत :–

फिर यह भी जहन मे रखिये कि मुनकेरीने हदीस ने किसी दीनी जज़्बे के मातहत कुरआन पर अमल और हदीसों के इन्कार का ऐलान नहीं किया है बल्कि इस फितना फ़साद से उनकी ग़रज़े फासिद यह है कि हदीसों का

इन्कार करके कुरआन के मआनी और मतालिब बयान करने में वह तशरीहाते नुबुव्वत की मुकद्दस हद बन्दियों से आज़ाद हो जाऐं और बिल्कुल आवारा हो कर कुरआन के मफ़हूम व मुराद को अपनी नफ़सानी ख़्वाहिशों के मुताबिक ढाल सकें। चुनाँचे इस सिलसिले में एक लतीफ़ा बहुत ही दिलचस्प भी है और निहायत ही इबरत खेज व नसीहत आमोज़ भी।

लतीफ़ा :– एक मुनकिरे हदीस् ख़्वाह मख़्वाह मुझ से उलझ गया और कहने लगा कि कुरआन में " अक़ीमुस्सलात" के माअ़्ने मोलवियों ने जो " नमाज़ पढ़ना" बताया है वह ग़लत है। क्योंकि लुग़त में " सलात" के माने तो दुआ माँगने के हैं। लिहाज़ा " अक़ीमुस्सलात" का यह मतलब हुआ कि पाबन्दी के साथ दुआ माँगते रहो।

मैंने उससे कहा कि अल्फ़ाज़े कुरआन के माअ़्नी लुग़त से बयान किये जायेंगे? या रसूल सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की तशरीहात के मुताबिक कुरआन मजीद का तर्जुमा किया जायगा ? तो उसने निहायत बे बाकी के साथ बरजस्ता कहा कि जनाब! कुरआन अरबी ज़बान में नाज़िल हुआ है लिहाज़ा अरबी की लुग़ात से ही कुरआन का तर्जुमा किया जायेगा। रसूल अलैहिस्सलातो वस्सलाम की तशरीहात का पाबन्द होना हमारे लिए कोई ज़रुरी नहीं है।

यह सुनकर मेरा ख़ून खौल गया। मगर मैंने ज़ब्त किया। लेकिन जल भुन कर मैंने उससे कहा कि जनाब! अगर लुग़त ही से कुरआन का तर्जुमा करना है तो लुग़त में सलात के बहुत माने लिखे हुए हैं। और एक बहुत ही दिलचस्प मगर फूहड़ माअ़्ना " तहरीकुस सलावीन" (सुरीन हिलाना) भी है। (तफ़सीरे बैजावी)

तो फिर " अक़ीमुस्सलात" का यह तुर्जमा क्यों न कीजिए ? कि पाबन्दी से सुरीन हिलाते रहो। चलो छुट्टी हुई न नमाज़ पढ़ने की ज़रुरत, न दुआ माँगने की हाजत, बस हर दम सुरीन हिलाते रहो और कुरआन पर अमल करते रहो।

मेरी यह ग़ज़बनाक मगर हकीकत अफ़रोज तक़रीर सुनकर वह इस क़दर मरऊब हुआ और झेंप गया कि फिर न वह मुझ से आँख मिला सका, न कुछ बोल सका, बल्कि दुम दबा कर चुपके से भाग गया।

बहर हाल हक़ीक़त तो यह है कि दीन में अहादीसे रसूल की

अहमियत का यह आलम है कि बिगैर अहादीस के तो कुरआन मजीद का कलामे इलाही होना भी नहीं मालूम हो सकता। अगर रसूले अकरम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम यह नहीं फरमा देते कि " अल्हम्द" से " वन्नास" तक का पूरा कलाम कुरआन मजीद और कलामे इलाही है तो कियामत तक कोई नहीं जान सकता था कि कौन कलामुल्लाह और कौन कलामे रसूल है।

लिहाज़ा हर मुसलमान को इस हकीकत पर पूरा पूरा ईमान रखना चाहिये कि मसाइले शरीअत की दलीलों में कुरआन शरीफ के बाद हदीस शरीफ ही का दरजा है। और बिगैर अहादीसे रसूल पर ईमान लाये हुए न कोई कुरआन के मआनी और मतालिब को कमा हक्कुहु समझ सकता है और न दीने इस्लाम पर अमल कर सकता है।

इस लिए इस ज़माने में जो लोग हदीसों के ख़िलाफ अलमे बग़ावत बुलन्द किये हुऐ हैं। मुसलमानों को अच्छी तरह समझ लेना चाहिये कि यह लोग गुमराह बदमज़हब बल्कि बाज़ तो मुलहिद और मुरतद हो चुके हैं। लिहाज़ा इन लोगो की कोई तहरीर पढनी और इन लोगो के वाज़ों में शिरकत हराम व नाजाइज़ है। मुसलमानों पर लाज़िम है कि इनकी सोहबत सिमे कातिल और जहरे हलाहल समझ कर इनसे इजतिनाब व परहेज़ को लाज़िम पकड़े। यही हुक्म तमाम गुस्ताख़े रसूल फ़िरक़ों और उनकी कुतुब के मुताअल्लिक़ है। ख़्वाह यह हज़रात कितनी ही मक्कारी से अपने ऊपर हनफ़ी शाफेई का लेबल चस्पाँ करें।

बिस्मिल्ला हिर्रहमा निर्रहीम

नियत का फल

हदीस नम्बर 1

عن عمر بن الخطاب رضی الله تعالیٰ عنه قال قال رسول الله ﷺ انما الاعمال بالنیات و انما لامری مانوی فمن کانت هجرته الی الله و رسوله فهجرته الی الله و رسوله ومن کانت هجرته الی دنیا یصیبها او امراة یتزوجها وفهجرته الی ماهاجر الیه.(بخاری و مسلم)

अ़न उ़मर इब्निल ख़त्ताब रदि़यल्लाहु अ़न्हु क़ाला क़ाला रसूलल्लाहि स़ल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम इन्नमल अअ़मालो बिन्नियात व इन्नमा लेअमरी मानवा फ़मन कानत हिजरतुहू इलल्लाहि व रसूलिहि फहिजरतुहू इलल्लाहि व रसूलेहि वमन कानत हिजरतुहू इला दुनिया युसीबुहा अ विमरातिन यताज़व्वजोहा फहिजरतोहू इला मा हाजरा इलैहि।

तर्जुमा : – हज़रत उमर इब्ने ख़त्ताब रदि़यल्लाहु अ़न्हु से रिवायत है उन्होनें कहा कि रसूलुल्लाह स़ल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम ने फ़रमाया कि तमाम आमाल का सवाब नियतों से है। और हर आदमी के लिए वही है जो उसने नियत की। जिस शख़्स की हिजरत अल्लाह और उसके रसूल की तरफ हो तो उसकी हिजरत अल्लाह और उसके रसूल के लिए है और जिस शख्स की हिजरत दुनिया हासिल करने के लिए या किसी औरत से निकाह करने के वास्ते हो तो उसकी हिजरत उसी के लिए होगी जिसकी तरफ़ उसने हिजरत की है।

हज़रत उ़मर रदि़यल्लाहु तआ़ला अ़न्हु : – इस हदीस को हुज़ूर स़ल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम से रिवायत करने वाले हजरत अमीरुल मोमिनीन उमर बिन ख़त्ताब रदि़यल्लाहु अ़न्हु हैं। आपकी कुन्नियत अबू हफ़स और लक़ब "फ़ारुक़" है। आप क़दीमुल इस्लाम हैं आप चालीस मर्दो और ग्यारह औरतों या उन्तालीस मर्दो और तेरह औरतों या पैंतालीस मर्दों और ग्यारह औरतों के मुसलमान होने के बाद इस्लाम लाए। हजरत जिबरईल अलैहिस्सलाम ने बारगाहे नबुव्वत में हाज़िर होकर यह ख़ुशख़बरी सुनाई कि या रसूलल्लाह

आसमान वाले हज़रत उमर के इस्लाम लाने पर खुशी मना रहे हैं। खलीफा अव्वल अमीरुल मोमिनीन हज़रत अबूबक्र सिददीक रदियल्लाहु अन्हु ने आप को अपना वली अहद मुन्तख़ब फ़रमाया। चुनाँचे आपकी वफ़ात के बाद 22 जमादिल आख़िर 13 हिजरी को आप अमीरुल मोमिनीन मुन्तख़ब हुए और दस बरस चन्द माह मसनदे ख़िलाफ़त पर रौनक अफ़रोज़ रहे। और फ़ारस व रोम की सल्तनतों से जिहाद फ़रमाकर उन ममालिक को ख़िलाफ़ते इस्लामिया के ज़ेरे नगीं फरमाया। फिर इस्लाम और मुसलमानों की सरबुलन्दी और तरक़्क़ी के बेशुमार सामान मुहय्या फरमाकर 28 ज़िल हिज 23 हिजरी बरोज पंजशम्बा बमक़ाम मदीना मुनव्वरा तिरसठ बरस की उम्र में शहादत से सरफ़राज़ हुए। और रौज़ऐ मुनव्वरा में मदफून हैं। पाँच सौ उन्तालीस (539) हदीसें आप से मरवी हैं आपके फ़ज़ाइल व मनाक़िब बहुत ज़्यादा हैं जिनका मुफ़स्सल बयान हमारी किताब " ह़क़्क़ानी तक़रीरें" में पढ़िये।

इस हदीस की खुसूसियात :– इस ह़दीस की चन्द खुसूसियात क़ाबिले ज़िक्र हैं :–

1. यह बुख़ारी शरीफ़ की सबसे पहली हदीस है और इमाम बुख़ारी अलैहिर्रहमा ने इस ह़दीस को मुतअद्दिद सनदों और मुख़तलिफ़ लफ्ज़ो के साथ अपनी इस किताब में दूसरे छः मुक़ामात पर भी ज़िक्र फ़रमाया है और वह छः मुक़ामात यह हैं। किताबुल ईमान, किताबुल अत्क़,बाबुल हिजरत, किताबुन निकाह, किताबुल ईमान, किताबुल हील,।

2. इमाम मुस्लिम, इमाम तिरमिज़ी, इमाम निसाई, इमाम इब्ने माजा, इमाम अहमद, इमाम दारकुतनी, इमाम इब्ने हब्बान, इमाम बयहकी जैसे मुसल्लिमुस सुबूत और बुलन्द पाया मुहददिसीन ने भी अपनी अपनी किताबों में इस ह़दीस को पूरी शान और शौकत के साथ नक़ल फ़रमाया है!

3. मुहद्दिसीन ने इस हदीस को उन बुनयादी हदीसों में शुमार किया है जिन पर दीने इस्लाम का दारो मदार है। चुनाँचे इस ह़दीस के बारे में अबू दाऊद मुहद्दिस का कौल है कि लाखों अहादीस के ख़ज़ानों में से दीन पर अमल करने के लिए सिर्फ चार हदीसें काफ़ी हैं। और उन चार में से एक "इन्नमल अअ्मालो बिन्नियात" है।

हज़रत इमाम शाफ़ेई और हज़रत इमाम अहमद ने फ़रमाया कि इस हदीस में इल्मे दीन का एक तिहाई हिस्सा है क्योंकि दीन के आमाल तीन

ही किस्म के हैं। कल्ब के आमाल, ज़बान के आमाल, बाकी आजा के आमाल और इस हदीस में आमाले कल्ब यानी " नियत" का ज़िक्र है।

(क़स्तलानी, जिल्द 1 सफ़ा 164)

मख़दूम शैख़ अहमद कमशख़ानवी कुद्दिसा सिर्रहु ने जामिउल उसूल के मुतम्मात में ज़िक्र फ़रमाया है कि हज़रत इमाम आज़म अबू हनीफ़ा रदियल्लाहु अन्हु ने अपने फ़रज़न्द जनाब " हम्माद" को नसीहत फ़रमाते हुए तहरीर फ़रमाया कि ऐ नूरे नज़र! मैंने पाँच लाख हदीसों में से चुनकर ऐसी पाँच हदीसों को मुन्तख़ब किया है कि अगर तुमने इन को याद करके इन पर पूरे एतिमाद के साथ अमल किया तो तुम दोनों जहान की सआदतों से सरफराज़ हो जाओगे। और वह पाँच हदीसे यह हैं।

अव्वल :– हदीस " इन्नमल अअ्मालो बिन्नियात" यानी तमाम आमाल के सवाब का दारो मदार नियतों पर है।

दोम :– आदमी के इस्लाम की ख़ूबी में से यह है कि वह तमाम ला यानी और बेकार चीज़ों को छोड़ दे।

सोम :– तुम में से कोई शख़्स उस वक्त तक मोमिने कामिल नहीं होता जब तक कि वह अपने भाई(मोमिन) के लिए उसी चीज़ को पसन्द न करे जिसको वह अपने लिए पसन्द करता है।

चहारुम :– हलाल ज़ाहिर है और हराम ज़ाहिर है और इन दोनों के दरमियान कुछ मुश्तबह चीज़े भी हैं जिनको बहुत से लोग नहीं जानते। तो जो शख़्स इन मुश्तबह चीज़ों से भी परहेज़ करता रहा। उसने अपने दीन और अपनी आबरु को बचा लिया। और जो शख़्स इन मुश्तबाह चीज़ो में पड़ गया वह कभी न कभी हराम में भी वाकेअ् हो जायेगा। जैसे वह चरवाहा जो हमा(महफ़ूज शाही चरागाह) के इर्द गिर्द जानवरों को चराता था तो हो सकता है कि उसका जानवर कभी न कभी हमा में दाख़िल हो जाए।

ख़बरदार हर बादशाह के लिए हमा होती है और बेशक अल्लाह तआला की हमा उसकी हराम की हुई चीज़े है। सुन लो और यकीन रखो कि बदन में गोश्त का ऐसा टुकड़ा है कि जब वह दुरुस्त हो जायेगा तो पूरा बदन दुरुस्त हो जायेगा। और जब वह फ़ासिद हो जायेगा तो पूरा बदन फासिद हो जायेगा। आगाह हो जाओ कि वह " दिल" है।

पन्जुम : – कामिल मुसलमान वह है जिसकी ज़बान और हाथ से

मुसलमान सलामत रहे। (बशीरुल कारी, सफा 65)

4. बाज मुहद्दिसीन ने इस हदीस को " हदीसे मुतवातिर" कहा है लेकिन यह सही नहीं है हक यह है कि यह हदीस सनद के आख़िरी हिस्से के एतिबार से "हदीसे मशहूर" है और सनद के इब्तिदायी हिस्से के एतिबार से " गरीब" है। (क़स्तलानी, जिल्द 1 सफा 164)

5. इस हदीस को हुजूर नबीए करीम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने मिम्बर पर अपने खुतबे में इरशाद फरमाया। चुनाँचे इसके रावी अमीरुल मोमिनीन हजरत उमर रदियल्लाहु अन्हु ने भी मिम्बर पर दौराने खुतबा में इस हदीस को फ़रमाया।

6. आम तौर पर मुहद्दिसीन किराम इस हदीस को अपनी अपनी किताबों के शुरु में लिखते हैं जिसका मक़सद होता है कि वह अपने नफ़्स को इस बात पर मुतनब्बा करना चाहते हैं कि वह अपने अमल तसनीफ़ व तालीफ़ में अपनी नियतों को दुरस्त करलें। क्यों ? इस लिए कि –

हो अगर नियत बुरी अच्छे अमल बेकार हैं
जागता है चोर भी मिस्ले निगेहबाँ रात को

तौज़ीहे अल्फ़ाज़ : – हदीस मज़कूर में तीन अल्फ़ाज़ काबिले वज़ाहत हैं। लिहाजा उनकी तशरीह़ हस्बे जैल है।

नियत :– दिल के क़स्द और इरादे को नियत कहते हैं और इस हदीस में नियत से मुराद खुदावन्द तआला की खुशनूदी और उसके दरबार में तकर्रुब हासिल करने का क़स्द व इरादा है।

हिजरत :– लुगत में हिजरत के माना हैं किसी चीज़ को छोड़ देना, चुनाँचे बाज हदीसों में हिजरत का लफ्ज छोड़ देने के माना में भी इस्तेमाल हुआ है जैसा कि एक हदीस में है कि "अलमुहाजिरो मन ह ज र मा नहल्लाहु अन्हु"। यानी कामिल दर्जे का मुहाजिर वह है जो अल्लाह तआला की मना की हुई तमाम चीजो को छोड दे। लेकिन शरीअत की इस्तिलाह मे हिजरत यह है कि मुसलमान खुदावन्द तआला की खुशनूदी के पेशे नजर अपने दीनो ईमान की सलामती के लिए अपने शहर, या मुल्क को छोड कर किसी दूसरे शहर या मुल्क में चला जाए। जहाँ उसका दीन व ईमान महफूज रह सके।

हिजरत के लिए ज़रुरी नहीं कि दारुल कुफ्र से दारुल इस्लाम ही की

तरफ हिजरत हो। क्योंकि जमाना–ए– नुबुव्वत में दो किस्म की हिजरत हुई। एक दारुल ख़ौफ़ से दारुल अमान की तरफ़ जैसे कि बाज सहाबा किराम ने मक्का से हबशा की तरफ़ हिजरत की। उस वक़्त मक्का और हबशा दोनों ही दारुल कुफ़ थे। मगर मक्का में मुसलमानों को जान व ईमान का ख़ौफ़ व ख़तरा था और हबशा में उनके लिए जान व ईमान के बारे में अमन व अमान था। दूसरी हिजरत दारुल कुफ़्र से दारुस्सलाम की तरफ जैसे कि हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के मदीना तय्यबा में साकिन व मुतमक्किन हो जाने के बाद मक्का के मुसलमानों ने मदीना की तरफ़ हिजरत की। उस वक़्त मक्का दारुल कुफ़्र था और मदीना दारुस्सलाम बन चुका था।

बहर कैफ मुख़तलिफ शारेहीन हदीस की तक़रीरों से यही ज़ाहिर होता है कि दारुल कुफ़्र से दारुस्सलाम ही की तरफ जाने में हिजरत मुनहसिर नहीं। बल्कि एक इस्लामी मुल्क में भी अगर हुक्काम व अम्माले हुकूमत के अक़ाइद व नज़रयात इस क़दर बिगड़ जायें कि एक सहीहुल मुसलमान की इस्लामी ज़िन्दगी वहाँ तंग हो जाए और दीन पर क़ायम रहना मुश्किल हो जाए तो अपने दीन व ईमान की हिफ़ाज़त और सलामती के लिए वहाँ से किसी भी ऐसे मुल्क में चला जाना जहाँ इस्लामी ज़िन्दगी बसर करने में कोई मज़ाहमत न हो यह भी शरई हिजरत ही होगी।

इसी तरह अगर किसी दारुल कुफ़ में मुसलमान को अपने दीन व ईमान पर क़ायम रहना मुश्किल नज़र आता हो और उसके क़रीब ही में कोई ऐसा दारुल कुफ़्र हो जो इतना ज़ालिम व जाबिर न हो बल्कि वह किसी मुसलमान के इस्लामी ज़िन्दगी बसर करने में कोई मज़ाहमत न करता हो तो इस सूरत में उस दारुल कुफ़्र से दूसरे दारुल कुफ़्र में चले जाना यह भी शरई हिजरत ही कहलायेगी। और इन सब सूरतों में बशर्ते इख़लासे नियत इन्शा अल्लाह हिजरत ही का सवाब मिलेगा।

दुनिया : – यह इस्मे तफ़जील अदना का मोअन्नस है जिसके माने हैं ज्यादा क़रीब होने वाली। अहले लुग़त का कौल है कि इस आलम को दुनिया इस लिए कहते हैं कि यह ज़वाल के क़रीब है या यूँ समझ लीजिए कि यह बा निस्बत आख़िरत के हम लोगों से ज़्यादा क़रीब है। इस लिए इसको दुनिया यानी ज्यादा क़रीब होने वाली कहते हैं।

उल्माऐ मुतकल्लेमीन हर उस मख़लूक़ को दुनिया कहते हैं जो

आख़िरत से पहले वुजूद में आयी और सूफ़ियाऐ किराम के नजदीक हर वह चीज़ दुनिया है जो इन्सान को ख़ुदा से ग़ाफ़िल करदे। चुनाँचे मौलाना जलालुददीन रुमी अलैहिर्रहमा " सूफ़िया" की तुर्जुमानी करते हुए अपनी मसनवी शरीफ़ में फ़रमाते हैं।

चीस्त दुनिया अज़ ख़ुदा गाफिल बदन
ने क़माश व नक़रऐ व फ़रज़न्द व ज़न

यानी ख़ुदा से ग़ाफ़िल हो जाने का नाम दुनिया है। लिबास, चाँदी और बीवी बच्चे अगर इन्सान को ख़ुदा से ग़ाफ़िल न करें तो यह चीज़े दुनिया में शुमार नहीं की जायेंगी। वल्लाहु तआला अअ्लम।

इरशादे हदीस की बाइस : – इस हदीस के इरशाद के सबब क्या हैं? और कब? किस मौक़ा पर और क्यों हुज़ूर ने यह हदीस सहाबा को सुनाई ? इसका वाक़या बहुत ही अजीब और निहायत ही इबरत अंगेज़ है।

हज़रत अब्दुल्ला बिन मसऊद रदियल्लाहु अन्हु फ़रमाते हैं कि एक मुसलमान औरत जिसका नाम "कैला" था मगर आम तौर पर लोग उसको उम्मे क़ैस कह कर पुकारते थे। उस औरत को एक शख़्स ने निकाह का पैग़ाम दिया। उम्मे क़ैस ने उसको यह जवाब दिया कि जब तक तू मक्का से मदीना हिजरत नहीं करेगा मैं तुझ से निकाह नहीं करुँगी। आख़िर उस शख़्स ने निकाह करने के लिए हिजरत की। सहाबा किराम में यह बात मशहूर हो गई। चुनाँचे सहाबा किराम उस शख़्स को मुहाजिर उम्मे क़ैस कहने लगे। और यह शख़्स इस लक़ब से इस क़दर मशहूर हो गया कि उसका असली नाम किसी को याद नहीं रहा। चुनाँचे उस शख़्स का असली नाम क्या था? किसी किताब में मुझे नहीं मिला।(क़स्तलानी जिल्द 1 सफ़ा 16)

जब इस वाक़या की ख़बर रहमते आलम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम को हुई तो आपने उस शख़्स को तम्बीह व हिदायत के लिए दौराने ख़ुत्बा में मिम्बर पे यह इरशाद फ़रमाया कि " इन्नमल अअ्मालो बिन्नियात " यानी आमाल का सवाब तो नियतों पर मौक़ूफ़ है। लिहाज़ा जो शख़्स जिस नियत से हिजरत करता है वही उसको मिलेगा।

शरहे हदीस : – इस हदीस का मतबल यह है कि आमाल दो क़िस्म के हैं बुरे आमाल और अच्छे आमाल। बुरा अमल तो बुरी नियत से किया जाए ख़्वाह अच्छी नियत से उस पर सवाब मिलने का कोई सवाल ही

नहीं। इसलिए कि बुरा अमल तो बहर सूरत बुरा ही है और यह बाइसे अज़ाब है।

रह गया अच्छा अमल तो इसके बारे में इरशादे नबवी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम है कि तमाम अच्छे आमाल ख़्वाह दिल के आमाल हों या दूसरे आज़ा के। अवामिर पर अमल हो या नवाही से बचना हो। इबादत के आमाल हो या आदात के। इन सब आमाल पर सवाब उसी वक़्त मिलेगा जब उन आमाल को तक़र्रुब इलाही और रज़ाऐ इलाही तलब करने की नियत से किया जाए। और अगर मआज़ल्लाह कोई अमल ख़्वाह वह कितना ही अच्छा से अच्छा अमल क्यों न हो खुदा की खुशनूदी की नियत से न किया जाए तो अगर चे वह अमल फ़र्ज़ व वाजिब या सुन्नत व मुस्तहब ही क्यों न हो मगर हरगिज़ हरगिज़ उस पर कोई सवाब न मिलेगा। बल्कि उल्टा नुक़साने ईमान और अज़ाबे जान का बाइस और दोनों जहान में ख़सरान व हिरमान का सामान बन जाऐगा।

मसलन कौन नहीं जानता कि नमाज़ एक बेहतरीन और अच्छा अमले ख़ैर है कि अहम्मुल फ़राइज़ और अफ़ज़लुल इबादत है। अगर खुदा की रज़ा व खुशनूदी और उसकी कुरबे रहमत को तलब करने और इरादऐ फर्ज़े खुदा वन्दी की नियत से नमाज़ पढ़ी जाए तो सुब्हानल्लाह! उसके अजरो सवाब का क्या कहना? नूर ही नूर बल्कि नूर अला नूर है। लेकिन यही नमाज़ अगर कोई इस नियत से पढ़े कि लोग मुझे नमाज़ी समझ कर मेरी ख़ूब ख़ूब इज़्ज़त और आव भगत करेंगें और मेरी बुर्जुगी का ख़ूब ख़ूब शोहरा होगा। तो ज़ाहिर है कि यह नमाज़ जो अफ़ज़लुल इबादात थी। उसकी बुरी नियत से बद तरीन मअ़सीयत और गुनाह का बाइस बन गई और ऐसे नमाज़ी को लानतों की फटकार और अज़ाबे नार के सिवा क़ह्हार व जब्बार के दरबार से और क्या मिलेगा? ग़र्ज़ एक ही अच्छा अमल अच्छी नियत से लाइके सवाब और बुरी नियत से बाइसे अज़ाब बन जाता है।

इसी लिए हुज़ूरे अकरम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने इरशाद फ़रमाया कि तमाम आमाल के सवाब का दारो मदार नियतों पर है। और हर आदमी को उसकी नियत ही पर सवाब मिलता है।

फिर हुज़ूरे अनवर सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम इस क़ादऐ कुल्लिया को बयान फ़रमाने के बाद इसकी एक ख़ास मिसाल के तौर पर यह इरशाद फ़रमाया कि " जो अल्लाह और रसूल की रज़ा जोई की नियत से हिजरत

करता है तो उसकी हिजरत अल्लाह व रसूल के दरबार में मकबूल होती है। और खुदावन्द कुद्दूस उसको अपने फ़ज़्ले ला जवाब से बे हिसाब अजरो सवाब अता फ़रमाता है। और जो शख़्स किसी दुनियावी मनफ़अत उठाने या किसी औरत से निकाह करने की नियत से हिजरत करता है तो उसकी हिजरत का हासिल और तर्के वतन का माहसल वही दुनियावी मनफ़अत और वही औरत है। बाक़ी अजरो सवाब जिस दौलत का नाम है उसके एक ज़र्रे का करोड़वां हिस्सा भी उसको नहीं मिलेगा। बल्कि यह सरासर ख़सारा और महरुमी की नहूसत में गिरफ़्तार हो कर खाइब व ख़ासिर और महरुम व ना मुराद होकर रह जायेगा।

बहरहाल इस हदीस का ख़ुलासऐ कलाम और हासिले मतलब यह है कि जो अमले ख़ैर नेक नियत के साथ किया जाएगा अगरचे वह कितना ही छोटा हो उसपर ज़रुर सवाब मिलेगा। और जो अमले ख़ैर बद नियती के साथ किया जाएगा अगरचे वह कितना ही बड़ा अमल क्यों न हो, मगर हर गिज़ हरगिज़ उसपर कोई सवाब नहीं मिलेगा।

हिकायत :– इस सिलसिले में एक बुर्जुग की हिकायत बड़ी ही सबक आमोज़ और इबरत ख़ेज़ है। मशहूर है कि एक बुर्जुग के दो मुरीद थे एक मुरीद ने मस्जिद के दरवाज़े पर एक खूँटा गाड़ा। और दूसरे मुरीद ने उस खूँटे को उखाड़ कर फेंक दिया। जब उन बुर्जुग को लोगो नें उन दोनों मुरीदों की हरकतों से आगाह किया तो वह साहबे कश्फ़ बुर्जुग थे। उन्होनें मुराक़बा किया और अपने दोनो मुरीदों की कल्बी नियतों को देख कर फ़रमाया कि सुब्हानल्लाह ! दोनों को सवाब मिला। हाज़ेरीन ने हैरत से कहा कि हजरत! एक ने खूँटा गाड़ा, दूसरे ने उखाड़ा। और दोनों को बराबर सवाब मिला यह कैसे ? बुर्जुग ने ज़ोर देकर फ़रमाया कि हाँ हाँ दोनों को सवाब मिला और दोनों को बिल्कुल बराबर मिला।

जब लोगो को बहुत ज़्यादा हैरानी हुई तो आपने उन दोनों मुरीदों को बुलाकर लोगों के सामने पूछा कि क्यों जी ? तुमने मस्जिद के दरवाज़े पर खूँटा क्यों गाड़ा था ? उसने कहा कि हुज़ूर! मेरी नियत तो यह थी कि मस्जिद लबे सड़क थी। ऊँट वाले, घोड़े वाले, बैल वाले नमाज़ पढ़ने के लिए मस्जिद में आते हैं। तो उन लोगों का ध्यान अपने जानवरों में लगा रहता था कि न मालूम जानवर खड़े हैं या भाग गये ? और वह ख़ूब दिल लगाकर

नमाज नहीं पढ सकते थे। इस लिए मैंने वहाँ एक खूँटा गाढ दिया था। ताकि लोग उसमें अपने जानवरों को बांधकर हुजूरे क़ल्ब और इतमिनान से नमाज पढ़ सकें।

बुर्जुग ने हाज़ेरीन से फ़रमाया कि अब बोलो ! तुम लोग क्या कहते हो? बताओ इस शख़्स को सवाब मिलना चाहिये। फिर बुर्जुग ने दूसरे मुरीद से दरयाफ़्त किया कि क्यों जी ! तुमने खूँटे को उखाड़ा क्यों? उसने अर्ज़ किया कि हुजूर! उस मस्जिद के कई नमाज़ी ना बीना थे और अंधेरी रातों में भी लोग नमाज़ पढ़ने आते हैं। तो मैंने इस नियत से खूँटे को उखाड़ दिया कि किसी नमाज़ी को ठोकर न लगे। बुर्जुग ने हाज़ेरीन से दरयाफ़्त फ़रमाया कि कहिये, अब आप लोग क्या कहते हैं ? इसने सवाब का काम किया है या नहीं ? तो सब ने कहा यक़ीनन इसने सवाब का काम किया है। लिहाजा इसको ज़रुर सवाब मिलना चाहिये।

गौर फ़माइये कि दोनों मुरीदों का अमल एक दूसरे के बिल्कुल ख़िलाफ़ है मगर चुकि दोनों की नियतें अच्छी थीं इस लिए दोनों को बराबर सवाब मिला।

हिकायत : – इसी तरह मौलाना रुम अलैहिर्रहमा ने भी मसनवी शरीफ़ में बहुत ही मोअस्सिर हिकायत इस उनवान पर तहरीर फ़रमायी है। वह लिखते हैं कि :–

ख़ानऐ नौ साख़्त रोज़े नौ मुरीद
पीर आमद, ख़ानऐ ऊरा बदीद

यानी एक मुरीद ने जो बिल्कुल नया मुरीद हुआ था। उसने एक नया मकान बनाया और अपने पीर को उसके इफ़्तिताह के लिए बुलाया। चुनाँचे पीर साहब तशरीफ़ लाये और पूरे मकान का मुआयना फ़रमाकर मुरीद से दरयाफ्त किया कि –

रोज़न ज बहरचे करदी ऐ रफ़ीक़
गुफ़्त ता नूर अन्दर आयद अज़ तरीक़

यानी पीर ने मुरीद से पूछा कि तुमने मकान में रोशन दान किस नियत से बनवाया है? मुरीद ने जवाब दिया कि मेरी नियत तो यही थी कि रोशनदान के ज़रीये मेरे घर में रौशनी आयेगी। मुरीद की ज़बान से ये सुनकर पीर साहब को बड़ा रन्जो मलाल हुआ और तड़प के फ़रमाया कि

गुफ़्त आँ फ़रअ् अस्त ई बायद नियाज़
ता अज़ीं रह बा शुनुई बांगे नमाज़
नूर खुद अन्दर तबअ् मी आयदत
नियत आँ कुन कि आँ मी बायदत

यानी पीरे कामिल ने फ़रमाया कि अगर तूने रोशनदान बनाते वक़्त यह नियत कर ली होती कि इस के ज़रीअे अज़ान की आवाज़ तेरे घर में आयेगी। तो रौशनी भी आजाती और तुझको तेरी इस नेक नियती पर सवाब भी मिलता। आइन्दा से याद रख नियत ऐसी किया कर कि जो तुझ जैसे मोमिन के शायाने शान है। यानी हर छोटे बड़े अमले ख़ैर को अच्छी नियत से कर। क्योंकि तमाम आमाल के सवाब का दारो मदार अच्छी नियतो पर है।

एक अ़मल चन्द नियत

जब इस ह़दीस से साबित हो गया कि अ़मल के सवाब का दारो मदार नियत पर है तो इससे साफ़ तौर पर यह नतीजा निकलता है कि अगर एक अ़मल पर एक ही अच्छी नियत होगी तो एक ही सवाब मिलेगा। और अगर एक अमल करते वक़्त चन्द अच्छी अच्छी नियतें करली जाएँ तो जितनी तादाद मे नियतें होंगी उतनी ही तादाद में सवाब मिलेगा।

मसलन तुम्हारा कोई भाई मुफ़्लिस व मोहताज है। अब अगर इस नियत से तुमने उसकी माली इमदाद की कि तुम अपने भाई की मदद कर रहे हो। तो तुम्हें अपने रिश्ता दार के साथ नेक सुलूक करने का सवाब मिलेगा। और अगर तुमने इस नियत से उसकी माली इमदाद की कि वह एक मुफ्लिस और ग़रीब आदमी है तो तुमको सिर्फ़ एक मुफ़्लिस की मदद करने का सवाब मिलेगा। और अगर तुमने उसकी इमदाद के वक़्त दो नियते कर लीं कि तुम अपने एक रिश्तादार की मदद भी कर रहे हो और उम्मते रसूल के एक मोहताज की माली मदद भी कर रहे हो। तो चूंकि तुम्हारी दो अच्छी अच्छी नियतें है इस लिए तुमको दो का सवाब मिलेगा। एक सवाब अपने रिश्तादार के साथ नेक सुलूक करने का, और एक उम्मते रसूल के एक मुफ़्लिस को इमदाद करने का।

इस तरह मस्जिद में दाख़िल होना एक अमल है। लेकिन अगर कोई शख़्स दुख़ूले मस्जिद के वक़्त सिर्फ़ अदाऐ नमाज़ की एक ही नियत करे तो उसको एक ही सवाब मिलेगा। और अगर उसने दुख़ूले मस्जिद के वक़्त

अदाऐ नमाज के साथ यह नियत भी कर ली कि मैं मस्जिद में दाखिल होने की और निकलने की दुआये भी पढ़ूँगा, मस्जिद में चन्द मिनट का ऐतिकाफ़ करूँगा, जमाअत का इन्तिज़ार करूँगा, जितनी देर मस्जिद में बैठा रहूँगा दुनियावी खुराफ़ात से बचा रहूँगा। मस्जिद के नमाज़ियो में से जो सालिहीन हैं उनसे मुलाक़ात करूँगा। उन लोगों को सलाम करूँगा। मस्जिद में बैठ कर तिलावत करूँगा। देख लीजिए मस्जिद में दाख़िल होना एक ही अ़मल है मगर अमल चन्द नियतों का किया गया है। इसलिए जितनी तादाद में भी अच्छी अच्छी नियते होंगी। उतनी ही तादाद में उस एक अ़मल का सवाब मिलेगा। ग़र्ज़ एक अ़मल पर अगर कोई शख़्स पचास नियतें या पाँच हज़ार नियतें कर ले तो सिर्फ़ एक अ़मल पर खुदावन्द करीम अपने करमे बे हिसाब से पचास हज़ार सवाब मरहमत फ़रमायेगा। उसके ख़ज़ानों में कोई कमी नहीं है। उसकी रहमत का ऐलान है कि " वल्लाहो जुल फ़दलिल अ़ज़ीम" यानी अल्लाह तआला का फ़ज़्ल बहुत ही बड़ा है। वल्लाहु तआला आलम।

बुरी नियत का अन्जाम

बहर हाल इस हदीस का हासिल यही है कि एक ही अ़मल अच्छी नियत से बाइसे सवाब और बुरी नियत से बाइसे अज़ाब हो जाता है। नियत की ख़राबी की वजह से बेहतर से बेहतर काम और अफ़ज़ल से अफ़ज़ल आमाले सालिहा करने वाले क़ियामत के दिन मुँह के बल घसीटते हुए जहन्नुम में डाल दिये जायेंगे। चुनाँचे मुस्लिम शरीफ़ की एक हदीस है जिसके तसव्वुर से बदन का एक एक रुंगटा काँपने लगता है।

रसूलल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया कि क़ियामत के दिन सबसे पहले जिन लोगों का फ़ैसला किया जाएगा। उनमें से एक शहीद होगा। यह लाया जायेगा और अल्लाह तआला उससे फ़रमायेगा कि यह यह नेअ़मते मैंने तुझे दी थीं, शहीद इक़रार करेगा कि बेशक तूने मुझे दी थीं। फिर अल्लाह तआला फ़रमायेगा कि तूने मेरी इन नेअ़मतो के शुक्रिया में कौन कौन से आमाल किये हैं ? वह कहे गा कि मैं तेरी राह में लड़ा यहाँ तक कि शहीद कर दिया गया। अल्लाह तआला फ़रमायेगा कि तू झूटा है तूने मेरी रज़ा के लिए जिहाद नहीं किया बल्कि तू इस नियत से लड़ा था कि लोग तुझ को बहादुर कहेंगे। तो लोगों ने (दुनिया में) तुझको बहादुर कह दिया। (और तुझे तेरी नियत का फल मिल गया) फिर अल्लाह तआला

उसके बारे में अपना हुक्म सादिर फरमायेगा। और उसको मुँह के बल घसीटते हुए आग में डाल दिया जाएगा।

दूसरा शख़्स एक आलिम होगा। जिसने इल्म सीखा और सिखाया और कुरआन पढ़ा होगा। यह लाया जायेगा। और अल्लाह तआला फ़रमायेगा कि फलाँ फलाँ नेअ्मते मैंने तुझको दी थीं। वह कहेगा कि बेशक तूने अता फ़रमायी थीं। फिर अल्लाह तआला फ़रमायेगा कि तूने मेरी उन नेअ्मतों की शुक्र गुज़ारी में क्या किया? वह कहेगा कि मैंने इल्म सीखा और दूसरों को सिखाया और तेरी रज़ा के लिए कुरआन पढ़ा। अल्लाह तआला फ़रमायेगा कि तू झूट बोलता है। तूने तो इल्म इस लिए सीखा और सिखाया कि लोग तुझको आलिम कहें। और कुरआन इस लिए पढ़ा था कि लोग तुझको क़ारी कहें। तो लोगों नें दुनिया में तुझको आलिम और क़ारी कह दिया। फिर अल्लाह तआला के हुक्म से उसको भी मुँह के बल घसीटते हुए आग में झोंक दिया जाऐगा।

तीसरा शख़्स वह होगा जिसको अल्लाह तआला ने बहुत वसी रोज़ी दी और हर क़िस्म का माल व मताअ् अ़ता किया। यह लाया जायेगा। अल्लाह तआला इससे फ़रमायेगा कि मैंने ये नेअ्मतें तुझको दी थीं और इन नेअ्मतों के मिलने का इक़रार करेगा। फिर अल्लाह तआला उससे फ़रमायेगा कि तूने मेरी इन नेअ्मतों का कौन कौन से आमाल करके शुक्र अदा किया?

वह कहेगा कि मैंने तेरे हर उस राह में माल ख़र्च किया जिसको तू पसन्द फ़रमाता है। अल्लाह तआला फ़रमायेगा कि तू झूट बोल रहा है तूने मेरी रज़ा के लिए माल नहीं ख़र्च किया बल्कि तूने इसलिए ख़र्च किया था कि लोग तुझे सख़ी कहेंगें। लोगों ने तुझे सख़ी कह दिया। और दुनिया में ही तेरी नियत का सवाब तुझको मिल गया। फिर वह भी खुदा के हुक्म से मुँह के बल घसीटते हुए आग में दाख़िल कर दिया जायेगा।

अच्छी नियत का समरा(फल)

अब एक हदीस और मुलाहिज़ा फरमा लीजिए और इस हदीस की रौशनी में देखिए कि अच्छी नियत से अमल करने वाले के आमाल के समरात व बरकात क्या हैं? और अल्लाह तआला उनको कैसे कैसे दरजात अता फ़रमाता है? मिश्कात शरीफ की हदीस यह है :–

एक शख़्स ने अहद किया कि मैं छुप कर सदक़ा करूँगा। चुनाँचे यह

शख़्स रात को सदके का माल लेकर निकला और एक चोर को मिस्कीन समझ कर सदके की रक़म उसके हाथ में रखदी। सुबह को उसका चर्चा हो गया और लोग चे मिगोइयां करने लगे कि किसी ने रात में एक चोर को सदका दिया। जब इस शख़्स को ख़बर हुई तो उसने कहा या अल्लाह! तेरे ही लिए हम्द है। (अफ़सोस) मेरा सदक़ा एक चोर के हाथ में चला गया। फिर दूसरी रात को सदका लेकर चला तो एक ज़िनाकार औरत को मोहताज समझकर उसके हाथ में सदके का माल रख दिया। सुबह को फिर लोगों में इसका चर्चा होने लगा कि रात में किसी ने एक ज़िनाकार औरत को सदक़ा दे दिया। जब उस शख़्स को यह पता चला तो फिर उसने यही कहा कि अल्लाह तेरे ही लिए हम्द है। अफ़सोस मैंने एक ज़िनाकार औरत को सदक़ा दे दिया। फिर तीसरी रात यह सदक़ा लेकर निकला तो एक मालदार आदमी को फ़कीर समझ कर उसको सदक़ा दे दिया। सुबह को लोगों ने फिर उसका तज़किरा किया। और उसपर तनक़ीद व तबसरा करना शुरु कर दिया। तो उसने यही कहा कि या अल्लाह! तेरे ही लिए हम्द है। अफ़सोस कि मेरा सदक़ा चोर,ज़ानिया और मालदार के हाथ में पहुँचा। यह शख़्स इसी अफ़सोस व तफ़क्कुर में सो गया। तो ख्वाब में एक फ़रिश्ते ने ख़ुदा की तरफ़ से उसको यह ख़ुशख़बरी सुनायी कि तेरा हर इक सदक़ा मक़बूल हुआ। तूने चोर को सदक़ा दिया तो उम्मीद है कि वह उस रात को चोरी से बचेगा। और ज़ानिया को सदक़ा दिया तो उम्मीद है कि उस रात को ज़िना कारी से बचे। और मालदार को सदका दिया तो उम्मीद है कि उसको इबरत हो तो वह भी सदक़ा देने लगे। (मिश्कात बाबुल इनफ़ाक)

फ़क़त नियत पर सवाब

हजरत शैख अब्दुल हक मुहद्दिस देहलवी रहमतुल्लाह अलैह ने इस हदीस की शरह में तहरीर फ़रमाया कि :–

बाज़ अहादीस में आया है कि जब फ़रिश्ते बन्दों के नामाऐ आमाल आसमानों पर ले जाते हैं और दरबारे इलाही में पेश करते हैं तो अल्लाह तआला फ़रमाता है कि :–

"अल्क़े तिलकस सहीफ़तो, अल्क़े तिल्कस सहीफ़तो"

दो मरतबा फ़रमाता है कि इस नामाऐ आमाल को फेंक दो, फ़रिश्ते

अर्ज़ करते है कि या इलाही ! तेरे बन्दे ने नेक आमाल किये हैं जिनको हम ने देख कर और सुनकर लिखा है। हम इसको क्योंकर फेंक दें ? तो खुदावन्द आलम इरशाद फरमाता है कि " लम युरिद वजही" इस बन्दे ने उस अमल में मेरी रज़ा की नियत नहीं की थी। इस लिए ये मेरे दरबार में मकबूल नहीं।

फिर एक दूसरे फ़रिश्ते को अल्लाह तआला हुक्म फरमाता है कि " उक्तुब लेफुलाने कज़ा व कज़ा" यानी फ़लाँ बन्दे के नामऐ आमाल में फ़लाँ फ़लाँ अमल लिख दे। फ़रिश्ता अर्ज़ करता है कि खुदावन्द! यह अमल तो उस बन्दे ने नही किया है। तो अल्लाह तआला इरशाद फ़रमाता है कि गो उसने यह अ़मल नहीं किया लेकिन उसकी नियत तो उस अमल के करने की थी। इस लिए मैं उसकी नियत पर उसको उसके अ़मल का अज्र दूँगा।

इस लिए बाज़ हदीसों में यह भी आया है कि " नीयतुल मोमिनीन ख़ैरुम मिन अम्लिही" यानी मोमिन की नियत उसके अ़मल से बेहतर है। ज़ाहिर है कि नेक अ़मल पर तो सवाब उसी वक़्त मिलेगा जब नियत अच्छी हो। और अगर नियत बुरी हो तो नेक अ़मल पर कोई सवाब ही नहीं। मगर अच्छी नियत पर तो बहर हाल सवाब मिलेगा। ख़्वाह अमल करे या न करे। इस लिए मोमिन की नीयत उसके अ़मल से बेहतर है इसलिए बाज सूफियाऐ किराम ने फ़रमाया है कि :–

हर कि रा अन्दर अमल इख़लास नीस्त
दरजहाँ अज बन्दगाने ख़ास नीस्त

यानी जिस शख़्स के अमल में इख़्लास नहीं है वह दुनिया में खुदा के ख़ास बन्दो में से नहीं है।

हर कि रा कार अज बराये हक बुवद
कारेऊ पेवस्ता बा रौनक़ बुवद

यानी जिस शख़्स का अमल खुदा की रज़ा के लिए होता है। हमेशा उसका अ़मल बा रौनक़ रहा करता है।(अशअतुल लम्आत, जिल्द 1, सफा 36)

अल्लामा ऐनी रहमतुल्लाह अलैह ने इस हदीस की शरह में फरमाया कि " फ़ीहिल हस्सो अला नियतिल ख़ैरे मुतलक़न व इन्नहू युसाबो अलन्नियते"।

यानी इस हदीस में इस बात की तरग़ीब दी गई है कि हर हालत में नियत अच्छी होनी चाहिये। और इस हदीस से यह भी मालूम होता है कि

नियत पर सवाब दिया जाता है। (ऐनी, जिल्द 1, सफा, 368)

फ़वाइद व मसाइल : —इस हदीस से मुन्दरजा जैल फवाइद व मसाइल पर भी रौशनी पड़ती है जिनको हम नम्बर वार तहरीर करते हैं।

1. आप पढ़ चुके कि हुजूर स़ल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम ने "मुहाजिरे क़ैस" की तम्बीह और हिदायत के लिए यह ह़दीस इरशाद फ़रमायी। जिन्होनें एक औरत से निकाह करने की नियत से हिजरत की थी। बिलाशुबाह वह तम्बीह व हिदायत के क़ाबिल थे। अब इस तम्बीह व हिदायत की एक सूरत तो यह थी कि हुजूर स़ल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम उनको सामने बुलाकर मजमऐ आम में उनको उनकी ग़लती पर टोकते और डाँटते। दूसरी सूरत यह थी कि उनका तन्हाई में बुलाकर उनकी गलती पर उनको तम्बीह फ़रमा देते। तीसरी सूरत यह थी कि मजमए आ़म में तमाम मुसलमानों को वअ़ज़ व नसीहत सुनाने के ज़िमन में उनको तम्बीह फ़रमा देते। ताकि उनकी परदा पोशी के साथ उनकी तम्बीह व हिदायत हो जाती।

चुनाँचे हुजूर रहमते आलम स़ल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने इसी आख़िरी सूरत को इख़्तियार फ़रमाया कि खुतबा पढ़ते पढ़ते आम अल्फाज में और आम मुसलमानों को ख़िताब फ़रमाते हुए उनको तम्बीह फ़रमादी और"मुहाजिरे उम्मे क़ैस" जो इस खुत्बे को सुन रहे थे उन्होंने ख़ूब अच्छी तरह समझ लिया कि किसी औरत से निकाह करने की नियत से हिजरत करने में कोई अजरो सवाब नहीं है। इस जुमले से हुजूर ने मुझको तम्बीह फ़रमायी है।

नसीहत की पहली दोनों सूरतों को हुजूर स़ल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम इस लिए इख़्तियार नहीं फ़रमाया कि पहली सूरत में उनकी बड़ी बे आबरुई और रुसवाई होती और दूसरी सूरत में भी उनको इन्तिहाई नदामत व शर्मिन्दगी होती। इस लिए हुजूर स़ल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने उनकी नसीहत व इस्लाह़ के लिए यह तरीका इख़्तियार फरमाया कि मिम्बर पर खुत्बा पढते हुए उनको तम्बीह फ़रमादी। और इस अन्दाज़ में कि उनको ज़िल्लत व रुसवाई से बचाते हुए। और उनकी पर्दापोशी फरमाते हुए उनकी इस्लाह़ व हिदायत फ़रमायी।

सुब्हानल्लाह ! यह है " उदओ इला सबीले रब्बिका बिल हिकमते वल मोए ज़तिल ह स नति " का जलवा अल्लाह तआला ने अपने हबीब

सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम को कुरआन में हुक्म दिया कि ऐ महबूब! आप लोगों को अपने रब के रास्ते की तरफ़ हिकमत और अच्छी नसीहत के साथ दावत दीजिए। हुज़ूर स़ल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम का यही तरीक़ऐ दावत "हिकमत" व "मोएज़ऐ हसना" है।

2. हुज़ूर स़ल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के इस उस्वऐ ह़सना से पता चला कि किसी गुनाहगार मुसलमान को नसीहत करने में इस बात का ख़ास तौर पर लिहाज़ व ख़्याल रखना ज़रुरी है कि उस गुनहगार मुसलमान की तज़लील व तहक़ीर और उसकी बे आबरुई व रुसवाई न की जाए। न उसको ऐसे तल्ख़ व दुरुश्त लहजे में डाँट फटकार कर नसीहत की जाए कि उस ग़रीब को नदामत व शर्मिन्दगी से अर्क़ अर्क़ होना पड़े।

जो उल्माऐ किराम वाज़ व तक़रीर मे सख़्त कलामी या तल्ख़ व तुर्श लहेजा या दिलख़राश अल्फ़ाज़ इस्तेमाल करने के आ़दी हैं उनको हुज़ूर स़ल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के इस तरीक़ऐ तबलीग़ से सबक़ हासिल करना चाहिये और हुज़ूर स़ल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के उस्वए ह़स्ना को नमूनऐ अमल बनाना चाहिये।

3. अब रहा यह सवाल कि वह मख़लूत अमल जिसमें दीनो दुनिया दोनों की ग़र्जे मिली जुली हों। मसलन एक शख़्स हज के लिए जाता है और कुछ तिजारती मनफ़अ़त का पहलू भी उसके पेशे नज़र है तो इस सूरत में उसको सवाब मिलेगा या नहीं ?

तो इसका जवाब यह है कि मख़लूत अमल की चन्द सूरतें हैं। अगर अमल का बाइस व मुहर्रिक सिर्फ़ मनफ़अ़ते दुनिया है तो इबादत करता तो है मगर उसको मक़सूद नहीं बनाता। मसलन उसके सफ़रे मक्का व मदीना का असल मक़सद तिजारत ही है और उसने तिजारत ही की नियत से यह सफर किया है। इस सफर का बाइस व मुहर्रिक हज नहीं है मगर चूंकि हज का मौसम था इसलिए हज भी कर लिया। और वह भी इस नियत से कि अगर हज नही किया तो लोग बुरा भला कहेंगे। तो ज़ाहिर है इस हज मे कोई अजरो सवाब नहीं मिलेगा।

और अगर अमल का मुहर्रिक और बाइसे इबादत और नफ़ऐ आख़िरत है मगर उसके साथ तिजारत वग़ैरह दुनियावी मनफ़अत का मक़सद भी मिला हुआ है। मसलन सफरे ह़रमैन शरीफ़ैन का असल मक़सद तो हज ही

करना है। मगर यह भी ख़्याल है कि अगर कोई हलाल तिजारत का मौका मिल गया तो कुछ कारोबार और व्यापार भी कर लूँगा। तो इस सूरत में जिस कदर दुनियावी मनफ़अत की नियत शामिल होगी। उसी निस्बत से सवाब में कमी हो जाएेगी। और अगर अमल का मक़सद सिर्फ़ रज़ाऐ इलाही की तलब और ख़ालिस इबादत ही का जज़्बा है। और बाल बराबर भी दुनियावी मनफ़अत का ख़्याल नहीं। मसलन सफरे मक्का व मदीना में सिर्फ ख़ालिस हज व ज़ियारत ही की नियत है तिजारत या दुनयावी मनफ़अत का ख़्याल तक नहीं आया है तो यक़ीनन यह आला दर्जे की इबादत और इस हज व जियारत पर कामिल दर्जे का सवाब मिलेगा।

नोट :– हज के सफर बल्कि ख़ालिस अय्यामे हज में हलाल तिजारत बिला शुबा यक़ीनन जायज है। लेकिन हर हाजी को ख़ास तौर पर इसका ख़्याल रखना चाहिये कि तिजारत को इस सफ़र का मक़सूद न बनाये बल्कि ख़ालिस हज व ज़ियारत ही की नियत से यह सफर करे। यह और बात है कि अगर वहाँ कुछ ख़रीद फ़रोख़्त करके कुछ नफ़ा उठाले तो इसमें गुनाह नहीं। वल्लाहु तआला अअ़लम।

अरकाने इस्लाम

हदीस नम्बर 2

عن ابی ہریرة قال کان النبی ﷺ بارزا یوما للناس فاتاہ رجل فقال ما الایمان قال الایمان ان تومن باللہ وملٰئکتہ و بلقائہ و رسولہ و تومن بالبعث قال ما الاسلام قال الاسلام ان تعبد اللہ ولا تشرک بہ و تقیم الصلوٰة و تؤدی الزکوٰة المفروضة و تصوم رمضان قال ما الاحسان قال ان تعبد اللہ کانک تراہ فان لم تکن تراہ فانہ یراک قال متی الساعة قال ماالمسئول باعلم من السائل وساخبرک عن اشراطھا اذا ولدت الامة ربھا و اذ اتطاول رعاة الابل البھم فی البنیان فی خمس لا یعلمھن الا اللہ ثم تلا النبی ﷺ ان اللہ عندہ علم الساعة الایة ثم ادبر فقال ردوہ فلم یروا شئیا فقال ھذا جبریل جاء یعلم الناس دینھم. (بخاری باب سوال جبریل، ص۱۲)

अन अबी हुरैरता काला कानन नबीयो सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम बारेजन यौमल लिन्नासि फ़अताहु रजोलुन फ़काला मल ईमानो कालल ईमानो अन तो मिना बिल्लाहि व मलाएकतेहि व बेलिकाएही व रसूलेहि व तो मिना बिल बअ़सि, काला मल इस्लामु कालल इस्लामु अन तअ़बुदल लाह वला तुशरिक बिही व तुकीमस्सला–त व तुअद्दियज ज़कातल मफ़रुदता व तसू–म रमज़ाना, काला मल एहसानु, काला अन तअ़बुदल्लाह क–अन्नका तराहु फइल्लम तकुन तराहु फइन्नाहू यरा. काला मतस्साअ़तो काला मल मस्ऊलु बि अअ्‌ल–म मिनस्साइले व स उख़बिरु–क अन अशरातेहा इज़ा वलादतिल अ म तु रब्बहा व इज़ा अत ताव ला रआतुल एबेलिल बहमु फ़िल बुनयाने फी ख़ामिसिन लायुअल्लिमु हुन्ना इल्लल्लाहु सुम्मा तलन्नबीयो सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम इन्नल्लाह इन्दहू इल्मुस्साअतिल आयति सुम्मा अदबरा फ़काला रुद्दोहु फ़लम यरौ शैअन फ़काला हाज़ा जिबरीलो। जा आ युअल्लिमुन्ना–स दी–नहुम। (बुख़ारी बाबे सवाल जिबराईल,पेज 12)

तर्जुमा :– हज़रत अबू हुरैरा रदियल्लाहु अन्हु से रिवायत है कि उन्होंने कहा कि एक दिन हुजूर नबीऐ करीम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम लोगों से मुलाक़ात के लिए मकान से बाहर तशरीफ फ़रमा थे तो एक आदमी आया और उसने कहा कि ईमान क्या है ? हुजूर ने फ़रमाया कि ईमान यह है कि अल्लाह को.और उसके फ़रिश्तों को, और उसकी मुलाकात को और उसके रसूलों को, और मौत के बाद उठने को तू दिल से मान ले। उसने कहा इस्लाम क्या है? तो हुजूर ने फ़रमाया कि इस्लाम यह है कि तू ख़ास अल्लाह ही की इबादत करे और किसी को उसका शरीक न ठहराये। और नमाज़ क़ायम करे और ज़कात दे जो फर्ज़ है और रमज़ान के रोज़े रखे। उसने कहा कि एहसान क्या है ? तो हुजूर ने फरमाया कि एहसान यह है कि तू अल्लाह की इबादत इस तरह करे कि गोया तू अल्लाह तआला को देख रहा है। पस अगर तू उसको नहीं देखता (तो तू इस तरह इबादत कर) कि वह तुझको देख रहा है। फिर उसने कहा कि क़यामत कब आयेगी ?

तो हुजूर ने फ़रमाया कि जिस से सवाल किया गया है वह सवाल करने वाले से ज़्यादा नहीं जानता। हाँ मैं अभी तुझे क़यामत की निशानियाँ बताता हूँ जो यह हैं।

जबकि बाँदी अपने मौला को जनेगी। और ऊँटों के चरवाहे काले काले रंग वाली बड़ी बड़ी इमारतों में घमण्ड करने लगेंगे। यह इल्मे क़यामत इन पाँच चीज़ों में से हैं जिनको खुदा के सिवा कोई नहीं जानता। फिर हुजूर सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने " इन्नल्लाह इन्दहू इल्मुस्साअते" की आयत की तिलावत फरमायी। (जिसमें कियामत वग़ैरह पाँच चीज़ों का जिक्र है) फिर वह (साइल)वापस चला गया। उसके बाद हुजूर ने फ़रमाया कि उसको वापस बुला लाओ तो लोगों को कुछ नज़र नहीं आया। तो हुजूर ने फ़रमाया कि यह हज़रत जिबरईल थे जो लोगों को दीन सिखाने आये थे।

हज़रत अबू हुरैरा रदियल्लाहु अन्हु : – इस हदीस के रावी हजरत अबू हुरैरा रदियल्लाहु अन्हु बहुत ही इबादत गुजार, इन्तिहाई मुतावाज़े और परहेज़गार सहाबी है। अबू सईद का बयान है कि यह रोज़ाना बारह हजार रकअ़त नफ्ल नमाज पढ़ते थे। आप यमन के क़बीला दौस से तअ़ल्लुक रखते हैं। जमाना जाहिलयत में आपका नाम "अब्दे शम्स" था। 7 हिजरी में जंगे ख़ैबर के बाद मुसलमान हुए। इस्लाम लाने के बाद आपका नाम अब्दुर्रहमान या अब्दुल्लाह रखा गया। इनको बिल्लियों से बड़ी मुहब्बत

थी। एक दिन हुजूर ने इनकी आस्तीन में एक बिल्ली को देखा तो इनको या अबा हुरैरा(ऐ बिल्ली के बाप) कह कर पुकारा। उसदिन से आपका यह लकब इतना मशहूर हो गया कि लोग आपका असली नाम ही भूल गये। इसी लिए आपके नाम में बड़ा इख़्तिलाफ़ है। आप असहाबे सुफ़्फ़ा में से हैं। आपने एक दिन हुजूर सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम से शिकायत की कि या रसूलल्लाह! मैं आपकी हदीसों को भूल जाता हूँ। तो हुजूर ने हुक्म दिया तुम अपनी चादर को ज़मीन पर फैला दो। चुनाँचे उन्होंने अपनी चादर फैला दी। फिर हुजूर ने कुछ हदीसें बयान फ़रमायीं और उनसे इरशाद फ़रमाया कि इस चादर को समेट कर अपने सीने से लगा लो। उसके बाद हज़रत अबू हुरैरा रदियल्लाहु अन्हु का हाफ़िज़ा इतना कवी हो गया कि जो कुछ हुजूर से सुना उसको उम्र भर फ़रामोश नहीं कर सके।

आठ सौ सहाबा और ताबेईने हदीस में आपके शागिर्द हैं। आपने पाँच हज़ार तीन सौ चौहत्तर हदीसें रिवायत फ़रमाई हैं जिनमे से चार सौ छियालीस हदीसें बुख़ारी शरीफ़ में हैं। 59 हिजरी में 78 साल की उम्र पाकर मदीना मुनव्वरा में विसाल फ़रमाया और जन्नतुल बक़ीअ़ में मदफ़ून हुए।

(अकमाल, क़स्तलानी, जिल्द 1 सफा, 212 – ऐनी, जिल्द 1 सफा126)

इस हदीस की शान

1. इस हदीस को इमाम बुख़ारी अलैहिर्रहमा ने किताबुत्तफ़सीर और किताबुज़्ज़कात में भी ज़िक्र किया है और इमाम मुस्लिम और इमाम नसाई ने किताबुल ईमान में। इमाम इब्ने माजा ने सुनन व फितन में। इमाम अबू दाऊद ने "सुन्नत" में मुतअ़द्दिद सनदों और मुख़तलिफ़ लफ़्ज़ों के साथ ज़िक्र किया है। इसी तरह इमाम तिरमिज़ी व इमाम अहमद वग़ैरह मुहद्दिसीन ने भी अपनी अपनी किताबों में इस हदीस को दर्ज फ़रमाया है। इमाम बग़वी ने अपनी दोनो किताबों " मसाबीह़" और " शरहे सुन्नत" का आग़ाज इसी मज़मून की हदीस से किया है। और हज़रत अ़ल्लामा क़ाज़ी अयाज़ अ़लैहिर्रहमा ने फ़रमाया कि यह हदीस तमाम वज़ाइफ़ और ज़ाहिरी व बातिनी इबादतों की जामेअ़ है। (फ़यूज़ुल बारी जिल्द, 1 सफ़ा 187)

2. हज़रत शैख़ अब्दुल हक़ मुहद्दिस देहलवी अ़लैहिर्रहमा ने इस हदीस के बारे में फरमाया कि इस हदीस को उल्माऐ मुहद्दिसीन " हदीसे जिबरईल" हदीसे उम्मुल अहादीस या " उम्मुल जवामेअ़" कहते है। इसका

नाम हदीसे जिबरईल इसलिए है कि हज़रत जिबरईल ने एक आदमी की शक्ल में आकर हुज़ूर से सवाल व जवाब किया और उसका लक़ब उम्मुल अहादीस इस तरह हो गया कि जिस तरह कुरआन की सूरह फातिहा का नाम "उम्मुल कुरआन" रख दिया गया। "उम्म" असल और जड़ को कहते हैं जिस तरह सूरह फ़ातिहा इजमाली तौर पर तमाम कुरआनी मज़ामीन की जामेअ़ और जड़ होने की वजह से " उम्मुल कुरआन" यानी कुरआन की असल और जड कहलाती है। इसी तरह यह हदीस चूँकि तमाम अहादीसे नबविया के मज़ामीन को इजमाली तौर पर अपने दामन में समेटे हुए है इसी लिए यह"उम्मुल अहादीस"या"उम्मुल जवामेअ़" कहलाती है। यानी यह तमाम हदीसों की जड़ कहलाती है।

तौज़ीहे अल्फ़ाज़ :– इस हदीस में मुन्दरजा जैल दो अल्फ़ाज़ की तौज़ीह व तशरीह बहुत अहम और ज़रुरी है जो हस्बे ज़ैल है।

इबादत :– परस्तिश करना, पूजना, यानी इन्सान किसी को अपना खुदा मान कर उसकी इन्तेहाई ताज़ीम करे और उसके सामने अपने को इन्तेहाई ज़िल्लत और पस्ती में समझे और उसके हुज़ूर इस क़दर ज़लील और पस्त बन जाये कि जिस के बाद ज़िल्लत और पस्ती का कोई दर्जा ही न हो।

वाज़ेह रहे कि इबादत के मफ़हूम में यह बात दाख़िल है कि जिसकी इबादत की जाए उसके माबूद(खुदा) होने का ऐतिक़ाद भी हो। इबादत करने वाले को आबिद और जिसकी इबादत की जाए उसे माबूद कहते हैं।

ताज़ीम और इबादत में फ़र्क़ : – ताज़ीम और इबादत में फ़र्क़ यही है कि इबादत में ताज़ीम के साथ उस ज़ात को उलूहियत और वाजिबुल वुजूद और मुस्तहके इबादत होने का ऐतिक़ाद भी हो। और ताज़ीम में यह ऐतिक़ाद नहीं होता।

लिहाज़ा खूब अच्छी तरह समझ लीजिए कि हर इबादत ताज़ीम है और हर ताज़ीम इबादत नहीं है। और गैरुलल्लाह की इबादत तो शिर्क है मगर ग़ैर अल्लाह की ताज़ीम हरगिज हरगिज शिर्क नहीं। बल्कि बाज गैरु–ल्लाह की ताज़ीम तो फर्ज़े ऐन है। जैसे काबा मुअज़्ज़मा और हज़राते अम्बिया अलैहिमुस्सलाम वग़ैरह। यह सब गैरुल्लाह हैं। और बिला शुबा इनकी इबादत करना तो खुला हुआ शिर्क है। मगर इनकी ताज़ीम लाज़िमुल ईमान और फर्ज़े ऐन है।

जो लोग इबादत और ताज़ीम के इस फ़र्क से ना वाकिफ हैं वह किसी गैरुल्लाह की ताज़ीम करते हुए देख कर झट शिर्क का फ़त्वा लगा देते हैं। हमेशा याद रखिये कि गैरुल्लाह की ताज़ीम शिर्क और इबादत उसी वक्त क़रार दी जायेगी ज़ब किसी को खुदा समझ कर उसकी ताज़ीम की जाये। उसके अलावा गैरुल्लाह की ताज़ीम की जितनी भी सूरते हैं वह कोई भी हर गिज़ हरगिज़ शिर्क नहीं कही जा सकतीं।

शिर्क :– शिर्क के माने यह हैं कि अल्लाह के सिवा किसी दूसरे को खुदा मानना या इबादत के लायक समझना या खुदा की सिफ़ाते ख़ास्सा में किसी को शरीक ठहराना।

हज़रत शैख अब्दुल हक़ मुहद्दिस देहलवी कुद्दिदसा सिररहु ने "अशअतुल लम्आत" जिल्द 1 सफ़ा 61 पे तहरीर फ़रमाया है कि शिर्क तीन तरह होता है। एक यह कि अल्लाह की तरह किसी को वाजिबुल वुजूद माने। दूसरे यह कि अल्लाह के सिवा किसी को ख़ालिक माने। तीसरे यह कि अल्लाह के सिवा किसी दूसरे की इबादत करे।

(ताज़ीम व इबादत और शिर्क की मज़ीद तफ़सील हमारी किताब इरफ़ानी तकरीरें में पढ़ लीजिए।)

शरहे हदीस : – यह हदीस मुख़्तसर है। यही हदीस दूसरी सनदों के साथ मुफ़स्सल भी आयी है। जिनमें आसमानी किताबों, तक़दीर, नीज हज का भी ज़िक्र आया है। बहरहाल इस हदीस में जिन चीज़ों का तजकिरा आता है हम उन पर क़दरे तफ़सील के उन पर रौशनी डालते हैं

हदीस का मतलब बिल्कुल वाज़ेह और ज़ाहिर है कि एक दिन हुज़ूरे अकरम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम लोगों की मुलाक़ात की गर्ज़ से बजाऐ मकान के मैदान की खुली फ़ज़ा में तशरीफ़ फ़रमा थे। यानी हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम का दरबारे आम था और सहाबा बारगाहे रिसालत सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम में हाज़िर थे कि इतने में हजरत जिबरईल अलैहिस्सलाम एक आदमी की शक्ल में रौनक अफ़रोज़ हुए और हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम से सवाल किया कि ईमान क्या चीज़ है ? तो हुज़ूर ने जवाब में इरशाद फरमाया कि ईमान यह है कि तुम अल्लाह और उसके फ़रिश्तों और उसकी मुलाक़ात और उसके रसूलों को सिदक दिल से मान लो। और मरने के बाद जी उठने और क़ियामत क़ायम होने

पर भी सच्चे दिल से यक़ीन रखो। इसके बाद हजरत जिबरईल ने दूसरा सवाल किया कि इस्लाम क्या है ? तो हुज़ूर ने फ़रमाया कि इस्लाम यह है कि तुम अल्लाह की इबादत करो। और शिर्क न करो, और नमाज क़ायम करो और ज़कात देते रहो, और रमज़ान का रोज़ा रखो।

फिर हज़रत जिबरईल ने तीसरा सवाल किया कि एहसान क्या है? तो हुज़ूर ने जवाब दिया कि इबादत में एहसान यानी अच्छाई यह है कि तुम ख़ुदा की इबादत इस तरह तवज्जो और इख़लास के साथ करो कि गोया तुम ख़ुदा को देख रहे हो। और अगर इतनी तवज्जो और हुज़ूरे क़ल्ब तुम को हासिल न हो सके तो कम से कम यही ध्यान रखो कि ख़ुदा तुम को देख रहा है। फिर हज़रत जिबरईल अ़लैहिस्सलाम ने चौथा सवाल किया कि क़यामत कब आयेगी? तो हुज़ूर सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम ने जवाब में फ़रमाया कि इस बात को मैं तुमसे ज़्यादा नहीं जानता। बल्कि इस बारे में जितना तुमको इल्म है उतना ही मुझको इल्म है। फिर हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने हज़रत जिबरईल अलैहिस्सलाम के सामने कियामत की निशानियों में से दो निशानियों का ज़िक्र फ़रमाया। अव्वल यह कि लौंडी अपने मौला को जनेगी। दोम यह कि काले कलूटे ऊँटों के चरवाहे ऊँची ऊँची बिल्डिगों और महलों में फ़ख़रो तकब्बुर करेंगे। फिर आपने फ़रमाया कि क़ियामत का इल्म उन पाँच इल्मों में से है जिनको ख़ुदा के सिवा कोई शख़्स अपनी अक्ल व दिरायत या फ़हम व फ़िरासत से नहीं जान सकता। (हाँ अगर ख़ुदा किसी को बता दे तो वह ख़ुदा के बताने से ज़रुर जान लेगा)

फिर बतौर सुबूत के हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने सूरह लुक़मान की आख़िरी आयत तिलावत फ़रमायी कि –

इन्नल्लाह इन्दहू इल्मुस्साअति,व यनज़्ज़िलुल गैस, व यअ़लमो मा फ़िल अरहामि, वमा तदरी नफ़सुन मा ज़ा तक्सिब ग़दन, वमा तदरी नफ़सुन बिअयंइ अर्दिन तमूतो, इन्नल्लाह अ़लीमुल ख़बीर।

यानी अल्लाह ही के पास कियामत का इल्म है और वही बारिश उतारता है और वही बच्चादानियो में जो कुछ है उनको जानता है और कोई नही जानता कि वह कल क्या करेगा? और कोई नही जानता कि वह किस ज़मीन में मरेगा बेशक अल्लाह तआला जानने वाला और ख़बर देने वाला है।

इसके बाद हज़रत जिबरईल मजलिस से उठकर चले गये। फिर

हुजूर सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने सहाबा को हुक्म दिया कि उस आदमी को वापस बुलाकर लाओ। मगर जब सहाबा इस तलाश में निकले तो उन्हें दूर दूर तक कोई आदमी नजर नहीं आया। उसके बाद हुजूर ने सहाबा से फरमाया कि यह आदमी हजरत जिबरईल अलैहिस्सलाम थे। इस लिए आये थे कि तुम को तुम्हारे दीन की बातें तालीम फरमायें।

हदीस मज़कूर में खास तौर पर चार चीजों का जिक्र है, ईमान, इस्लाम, एहसान और क़ियामत। अब इन चारों के बारे में हम कुछ तफसील के साथ अर्ज़ करते हैं।

ईमान : – ईमान के माना तस्दीक करना यानी सच्चे दिल से मान लेना है। इस हदीस में पाँच चीज़ो पर ईमान लाने का ज़िक्र है। 1. अल्लाह पर 2. फरिश्तों पर, 3. अल्लाह की मुलाक़ात पर, 4. रसूलों पर, 5. मौत के बाद उठने पर।

अब ज़रा इन पाँचो की तफ़सील मुलाहिज़ा फरमाईये।

अल्लाह पर ईमान :– अल्लाह पर ईमान लाने का यह मतलब है कि अल्लाह तआला को मौजूद वाजिबुल वुजूद, वाहिद हकीकी, वहदहू ला शरीक लहु, ख़ालिके कायनात मानते हुए उसकी तमाम सिफ़ात मसलन हयात, इल्मे कुदरत,इरादा, कलाम, समअ्, बसर, तकवीन को सिदक दिल से मान कर इस पर यकीने कामिल रखा जाए। और उसके हर ऐब व नुक्स से पाक मानते हुए उसको हर सिफ़ते कमाल के साथ मुत्तसिफ़ माना जाये।

फ़रिश्तों पर ईमान : –फ़रिश्तों पर ईमान लाने से यह मुराद है कि सिद्क़ दिल से यह मान लिया जाय कि फ़रिश्ते अल्लाह तआला की एक नूरी मख़लूक़ हैं और उसके मोहतरम बन्दे हैं जिनमें गुनाहों का माद्दा ही नहीं है। वह हर छोटे बड़े गुनाहों से मासूम और पाक हैं। न वह औरत हैं न मर्द। न वह खाते हैं न पीते है। बस खुदा की बन्दगी उनकी ज़िन्दगी है। कुरआन में अल्लाह तआला ने फरिश्तों की यह सिफ़त बयान फ़रमायी है।

"ला यअ्सूनल्लाह मा अ म र हुम व यफ़अलूना मा यूअ्मरुन।

यानी वह कभी भी और किसी काम में भी और किसी हाल में अल्लाह की कोई ना फ़रमानी नहीं करते। और खुदाऐ तआ़ला जो कुछ उन्हें हुक्म देता है वही करते है। कोई वही लाता है। कोई पानी बरसाता है। कोई इन्सानों के आमाल की निगहबानी और उनकी हिफ़ाज़त करता है। कोई

मोमिनीन के लिए रहमत और मगफिरत की दुआऐं करता है।

गर्ज जिसको खुदा ने जिस काम में लगा दिया वह वही करता है और सब खुदा की इबादत व इताअत में मसरुफे अमल हैं। वाजेह रहे कि फरिश्तों के वुजूद का इन्कार करना या उनपर कोई ऐब लगाना, या उनकी तौहीन करना कुफ्र है।

लिकाऐ इलाही पर ईमान : – खुदा की मुलाकात पर ईमान का मतलब है कि मरने के बाद हश्र व नश्र और कियामत में अल्लाह तआला के हुजूर आजिजी और अपने आमाल की पेशी और जवाब देही और जन्नत दोजख़ वगैरह पर दिल से ऐतिकाद करना।

रसूलों पर ईमान : – रसूलों पर ईमान लाना ज़रुरी है कि जितने अम्बिया व मुरसलीन दुनिया में तशरीफ लाऐ वह सब अल्लाह के मुक़द्दस बन्दे और उसके बरगुज़ीदा पैगम्बर हैं। वह सब सच्चे और वह जो कुछ अल्लाह तआला की तरफ से लाये वह सब हक़ है। और उन सब नबीयों और रसूलों ने अपने फ़राइज़े नुबुव्वत को कमा हक़्कुहू अदा किया।

नोट : – वाज़ेह रहे कि किसी नबी या रसूल का इन्कार करना या किसी नबी व रसूल की अदना सी तौहीन करना या तनकीस या उनकी शान में गुस्ताख़ी व बे अदबी, या उनकी किताबों का इन्कार, या उनकी शरीअतों के किसी एक हुक्म का इन्कार, या उनकी किसी एक सुन्नत की तहकीर करना कुफ्र है। इसी तरह किसी गैर नबी को नबी मानना भी कुफ्र है।

हज़रत आदम अलैहिस्सलाम से हुजूर ख़ातिमुन्नबीईन स़ल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम तक हर नबी और रसूल की ताज़ीम व तकरीम फर्ज़े ऐन और वाजिबुल ईमान है। बल्कि तमाम फ़राइज़ की असल और जान है और हुजूर सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के बारे में ख़ातिमुन्ननबीयीन होने का अकीदा भी ज़रुरियाते ईमान में से है। जो हुजूर खातिमुन्नबीयीन के बाद किसी नबी का वुजूद माने या किसी नबी का आना जायज़ या मुमकिन ठहराये वह काफ़िर है।

इस्लाम के माना :– इस्लाम के माना लुग़त में " फरमाँ बरदार होना' हुजूर स़ल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के लाये हुए दीने बरहक को इस्लाम इसी लिए कहा जाता है कि जो इस दीन को क़ुबूल करता है वह अपने को बिल्कुल अल्लाह तआला का फ़रमाँ बरदार बना लेता है। चुनाँचे

इस हदीस में जिन आमाले इस्लाम का ज़िक्र है। यानी इबादत, नमाज जकात, रोजा और मुफस्सल हदीस में कलिमए शहादत, और नमाज रोज़ा और हज व जकात यह सब आमाल खुदा की फरमाँ बरदारी के ख़ासुल खास निशान हैं। इसी लिए हुजूर सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने इनको अरकाने इस्लाम क़रार दिया। और फरमाया कि इस्लाम की बुनियाद पाँच चीजों पर है।

1. कलिमए शहादत, 2. नमाज, 3. रोज़ा, 4. ज़कात, 5. हज,।

इन पाँचों को हर मुसलमान अच्छी तरह जानता है। थोड़ी तफ़सील हम भी यहाँ तहरीर कर देते हैं।

कलिमए शहादत : – कलिमए शहादत का मफ़हूम और मतलब यह है कि सिद्क़ दिल से अल्लाह के एक होने और माबूद होने और हज़रत मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के रसूल होने की गवाही देना। और दिल से मानते हुए ज़बान से "अशहदो अल्ला इला–ह इल्लल्लाहु वहदहू ला शरी–क लहू व अशहदु अन्न मुहम्मदन अब्दुहू व रसूलुहू" कहना। इसमें तमाम ज़रुरी अक़ाइद इस्लाम में दाख़िल हैं। क्योंकि जिसने हुजूर अकरम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम को दिल से अल्लाह का रसूल मानकर उनकी रिसालत की गवाही दे दी। हर उस चीज़ की तस्दीक़ करदी जिसको हुजूर सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ख़ुदा की तरफ़ से लाये।

नमाज़ : – ज़ुहूरे नुबुव्वत के बारहवीं साल तक शबे मेराज में नमाज फ़र्ज हुई। नाबालिग, मजनून, हैज व निफास वाली औरत के सिवा हर मुसलमान पर फर्ज ऐन है और किसी हालत में भी माफ नहीं। खड़े होकर नमाज पढ़ने की ताक़त न हो तो बैठ कर पढ़ें। बैठने की भी क़ुदरत न हो तो लेट कर सर के इशारे से पढे। इस पर भी कादिर न हो तो नमाज मोअख्खर की जाऐगी। माफ़ इस हालत में भी नहीं होगी।

नमाज की फरजीयत का इन्कार करने वाला काफ़िर है। और जो क़सदन तर्क करे। अगरचे एक ही वक्त की हो वह फ़ासिक़ है। हज़रत इमामे आज़म अबू हनीफा रदियल्लाहु अन्हु का फतवा है कि नमाज़ छोड़ने वाले को बादशाहे इस्लाम कैद करदे। यहाँ तक कि वह तौबा करे और नमाज़ पढ़ने लगे। और हजरत इमाम मालिक और इमाम शाफ़ेई का फ़तवा है कि तारिके नमाज को बादशाहे इस्लाम कत्ल कराद।

ज़कात व रोज़ा : – 2 हिजरी में मदीना मुनव्वरा के अन्दर इन दोनों की फरजियत का हुक्म नाजिल हुआ। नमाज़ की तरह जकात व रोजा की फरजियत का इन्कार करने वाला भी काफिर है। और इन दोनों को तर्क करने वाला फ़ासिक और कत्ल का मुस्तहिक है। और ज़कात अदा करने में देर लगाने वाला गुनाहगार और मरदूदुश्शहादत है।

हज : – 9 हिजरी में हज फर्ज हुआ। साहिबे इस्तिताअत पर उम्र भर में एक मर्तबा हज फर्ज है और नमाज़ और रोजा व जकात की तरह हज की फ़रज़ीयत भी कतई व यकीनी है। लिहाजा जो हज की फरज़ीयत का इन्कार करे वह काफ़िर है और बा वुजूद ताकत के इसका तारिक फ़ासिक है। और बिला उज़्र हज में ताखीर करने वाला गुनाहगार और मरदूदुश्शहादत है।

एहसान की हकीकत : – लुगत में एहसान के माने "अच्छाई" हैं। चुनाँचे हर अच्छा काम एहसान कहलाता है। और किसी के साथ अच्छा सुलूक करने को भी एहसान कहा जाता है। और कुरआन व हदीस में लफ्ज़ एहसान इस माना में बकसरत इस्तेमाल भी हुआ है। मगर इस हदीस में जो एहसान आया है। यह एहसान दर हकीकत ईमान व इस्लाम की तरह दीन का एक इस्तिलाही लफ़्ज है। जिसके माना को खुद हुज़ूरे अकरम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने अपनी ज़बाने नुबुव्वत से इरशाद फरमाया कि : –

"खुदा की इबादत इस तरह की जाए कि गोया इबादत करने वाला खुदा को देख रहा है।"

इस माना में एहसान का तअल्लुक सिर्फ़ नमाज रोजा हज जकात ही के साथ मखसूस नहीं है। बल्कि मोमिन के हर हर अमल में उसकी रुह कारफरमा होनी चाहिये। यानी हर अमल के वक्त बन्दा इस तरह हुज़ूरे कल्ब और इखलासे दिल के साथ अमल में मशगूल हो कि गोया वह खुदा को देख रहा है। इस तसव्वुर से अमल करने वाले बन्दे के दिल में ख़ौफ व खशीयते रब्बानी, और उम्मीद व रजाए रहमानी का ऐसा नूर पैदा हो जायेगा कि उसका अमल अनवारे मकबूलियत की रौशनी से पुरनूर और सरापा नूर बल्कि नूर अला नूर हो जायेगा। और रहमते किरदिगार व फजले परवरदिगार दोनों जहान में मुस्तहक व हक्के दार बन जायेगा।

कियामत की निशानियाँ : – कियामत की बहुत सी निशानियों को हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम बयान फरमा चुके हैं जो सैकडों की

तादाद में हैं और हदीसों में उनका मुफस्सल जिक्र है। जिनमें से बहुत सी निशानियाँ जाहिर भी हो चुकी हैं और जो बाकी हैं वह भी यकीनन जाहिर हो कर रहेंगी।

मसलन 1. दज्जाल का फितना, 2. इमाम मेहदी का जुहूर, 3. हजरत ईसा अलैहिस्सलाम का आसमान से उतरना, 4. याजूज माजूज का निकलना, 5. दाब्बतुल अर्द का खुरुज, 6. हजरत ईसा अलैहिस्सलाम की वफात के कुछ दिन बाद जब कि कियामत के आने में सिर्फ चालीस बरस बाकी रह जायेंगे तो एक खुश्बू दार ठण्डी हवा चलेगी और वह लोगों की बगलों के नीचे से निकलेगी। इस हवा के लगते ही तमाम ईमान वालों की वफ़ात हो जाएगी और रुए ज़मीन पर सिर्फ़ कुफ़्फ़ार ही कुफ़्फ़ार रह जाएंगे। और उन्ही अशरार पर कियामत कायम होगी वगैरह वगैरह।

यह सब कियामत की वह निशानियाँ हैं जो अभी तक ज़ाहिर नहीं हुई हैं मगर इन सबका ज़ुहूर इतना ही यक़ीनी है जितना के रात के बाद दिन का आना यक़ीनी है। क्योंकि हुजूर मुख़बिरे सादिक़ सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने इन सब अलामाते कियामत के जाहिर होने की ख़बर दी है। क्यों ? इस लिए कि –

हज़ार फ़लसफ़ियो की चुनाँ चुनी बदली
नबी की बात बदलनी न थी नहीं बदली

इस हदीस में क़ियामत की सिर्फ़ दो निशानियों का ज़िक्र है।

अव्वल : –लौण्डी अपने आक़ा को जनेगी।

दोमः– यह कि ऊँटों के सियाह फ़ाम चरवाहे ऊँचे ऊँचे महलों में फ़ख़्र करेंगें।

क़ियामत की यह दोनों निशानियाँ उन निशानियों में से हैं जो इस ज़माने में ज़ाहिर हो चुकी हैं और जिन को हर शख़्स अपनी आँखों से देख सकता है।

पहली निशानी के लौण्डी अपने आक़ा को जनेगी। शारेहीने हदीस ने उसके बहुत मआनी बयान फरमाये हैं। मगर फ़कीर राक़िमुल हुरुफ़ के नज़दीक इस हदीस का सबसे ज्यादा वाज़ेह मतलब यही है कि अव्वलन ना फ़रमान औलाद पैदा होने लगेगी। यानी लड़के अपनी माँओं के साथ ऐसा सुलूक करेंगे जैसा सुलूक मौला अपनी लौण्डी के साथ किया करता है। तो

गोया माँ ने अपने लड़के को नहीं जना, बल्कि उसके पेट से उसका मौला पैदा हुआ। चुनाँचे आज कल की औलाद माँ बाप के साथ जो सुलूक करती है वह बिल्कुल जाहिर है।

दूसरी निशानी कि " सियाह फ़ाम ऊँटों के चरवाहे महलों में फ़ख्र करेंगें। इसका मतलब यह है कि हक़ीर व ज़लील पस्त अक़वाम के लोग जिन को कभी फूँस की छप्पर मयस्सर नहीं थी वह उँची ऊँची कोठियों और शानदार बंगलो में फ़ख्र करेंगे।

यह मन्ज़र आप अ़रब में भी देखेंगे कि काले काले तकरुनी अरब बदवी जो ऊँटों के चरवाहे थे। आज अपनी अपनी कोठियों में किस ठाठ बाट के साथ मुतकब्बिराना ज़िन्दगी बसर करते हैं और अपने मुल्क में भी चरवाहे बल्कि उनसे भी कहीं बदतर लोग आज अपने अपने बंगलों में फ़िरऔन बने बैठे हैं और सूरत ऐसी जैसे मालूम होता है कि लोग अभी अभी कोयलों की बोरी डामर के पीपे में से निकले हैं।

हुकूमत की कुर्सियों पर बिराजमान होने वाले इन ना अहलों को देख कर मुझे अक्सर यह हदीस याद आ जाती है कि हुज़ूरे अकरम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम से एक सहाबी ने अर्ज़ किया कि या रसूलल्लाह! कियामत कब आयेगी? तो हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फरमाया कि जब अमानत जाय की जाने लगेगी। तो तुम क़ियामत का इन्तिज़ार करो। सहाबी ने दरयाफ्त किया कि अमानत से क्या मुराद है? और उसकी बरबादी कैसे होगी ? तो हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने इरशाद फरमाया कि " इज़ा वसिदल अमरो इला ग़ैरे अहलेही" यानी जब हुकूमत और ओहदे ना अहलों के सुपुर्द होनें लगें तो तुम क़ियामत का इन्तिज़ार करो।

क़ियामत का इल्म : – हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लभ के इल्मे ग़ैब का इन्कार करने वाले इस हदीस से बड़े तुनतुने के साथ दलील लाते हैं कि देख लो हज़रत जिबरईल अलैहिस्सलाम ने हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम से कियामत का वक्त दरयाफ्त किया। तो हुज़ूर ने यह जवाब दिया कि मैं साइल से ज्यादा नहीं जानता। फिर हुज़ूर ने सूरए लुकमान की आयत तिलावत फरमा कर साफ तौर से बता दिया कि पॉच चीजो का इल्म खुदा की ज़ात के अलावा किसी को भी नहीं है। खुदा गवाह है कि मुझे इन फ़ाज़िलों के इस इस्तिदलाल को सुनकर इन्तेहाई तअ़ज्जुब होता है।

अल्लाहु अकबर ! कितना बड़ा सितम है? कि जिस हदीस से हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के लिए कियामत का इल्म साबित होता है उसी हदीस को यह लोग हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के लिए कियामत के इल्म की नफी पर बतौर दलील के पेश करते हैं।

सीधी सी बात है कि अगर वाक़ई हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम को यही बताना था कि मुझे कियामत के बारे कोई इल्म नहीं है तो इस मफ़हूम व माना को अदा करने के लिए बहुत से अल्फाज़ हो सकते हैं। मसलन " ला अअ्लमुहा" मैं इस को नहीं जानता। "या लस्तो बेआ़लेमिहा" मैं इसका जानने वाला नहीं हूँ। " या माली बिज़ालिका मिन इल्मे" मुझे इस चीज का कोई इल्म नहीं। " या लैसा इल्मोहा इन्दी" मेरे पास इसका इल्म नहीं है। या उनके हम माअ्ना कोई दूसरा जुमला हुज़ूर इरशाद फरमा देते।

मगर हूज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने इन जुमलों में से कोई या इस किस्म का कोई जुमला इरशाद नहीं फ़रमाया। बल्कि साइल के जवाब में यह फरमाया कि " मल मसऊलु बे अअ्लम मिनस्साइल" यानी जिससे कियामत के बारे में सवाल किया जा रहा है वह सवाल करने वाले से ज़्यादा नहीं जानता।

इस इबारत का खुला हुआ और साफ़ साफ़ मतलब यही है कि ऐ जिबरईल! मैं कियामत के बारे में तुम से ज़्यादा नहीं जानता। आलिम तो खैर आलिम है। किसी अरबी ख्वाँ तालिबे इल्म से भी अगर इस जुमला के तर्जुमा करायेंगे तो यकीनन वह भी यही तर्जुमा करेगा जो मैने लिखा। अब आप ठण्डे दिल से गौर कीजिए और ईमान से कहिये कि हुज़ूर के इरशाद " मैं जिबरईल से जयादा कियामत को नहीं जानता" इस का मतलब क्या हुआ? यह मतलब हुआ कि " कियामत के बारे में मुझे और जिबरईल दोनों को इल्म है और मेरा इल्म इस मुआमले में जिबरईल से ज़्यादा नहीं है।

या यह मतलब हुआ कि " मैं और जिबरईल कियामत के बारे में कुछ नहीं जानते "।

अब आप इन्साफ कीजिए कि इस हदीस से क्या साबित होता है? यह साबित होता है कि हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम और जिबरईल दोनों को कियामत के बारे में इल्म है या यह साबित होता है कि हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम और जिबरईल अलैहिस्सलाम दोनों को कियामत का इल्म नहीं है।

वल्लाह! अगर आप में जरा भी इन्साफ का माद्दा होगा तो आप यही कहेंगे कि वाकई इस हदीस का मफहूम यही है कि " हुजूर और जिबरईल दोनो को कियामत का इल्म है"

अफसोस इन लोगों को इतना भी इल्म नहीं कि हुजूर के कौल " मल मसअूलु बे अअ्लमा मिनस्साइल" में " अअ्लम" इस्में तफजील का सेगा है। और इस्मे तफ्ज़ील की नफी से बिल्कुल ही फेल की नफी लाजिम नहीं है। अगर आप यह कहें कि जैद अमर से ज्यादा हसीन नहीं है तो उससे कब यह लाजिम आता है कि जैद में बिल्कुल भी हुस्न नहीं है। जाहिर है कि " बिल्कुल ही हुस्न वाला न होना यह और बात है और ज्यादा हुस्न वाला न होना यह और बात है।

बहर कैफ इस हदीस से हरगिज हरगिज यह साबित नहीं होता कि हुजूर सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम को कियामत का बिल्कुल ही इल्म नहीं था बल्कि हकीकत यह है कि इस हदीस से हुजूर और हज़रत जिबरईल दोनों के लिए कियामत का इल्म होना साबित होता है।

चुनॉचे अल्लामा शैख़ अहमद सादी रहमतुल्लाह अलैह ने सूरह अहज़ाब की आयत " व यस अलूनका अ़निस्साअ़ते कुल इन्नमा इल्मुहा इन्दल्लाह " की तफसीर में तहरीर फरमाया कि " फलम यखरुज नबीय युना सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम मिनद दुनिया हत्ता अत्तलाअल्लाहु अला जमीइल मुगीबाते व मिन जुमलतेहस्साअतो लाकिन उमेरा बेकतमे ज़ालिक।

यानी हुजूर सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम दुनिया से उस वक्त तक तशरीफ नहीं ले गये यहॉं तक के अल्लाह तआला ने आपको तमाम गुयूब के उलूम पर मुत्तलअ् फरमा दिया। और उन्हीं में से " कियामत" का इल्म भी है। लेकिन अल्लाह तआला ने आपको यह हुक्म दे दिया था कि " कियामत कब आयेगी" इस इल्म को आप उम्मत से छुपाये।

अब रह गया यह सवाल के हुजूर सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने सूरह लुकमान की आयत तिलावत फरमाकर यह फरमा दिया कि इन पॉंचों बातों का बजुज़्र-खुदा के किसी को इल्म नहीं। इस का क्या जवाब है। ?

तो इसके जवाब में हम यही अर्ज करेंगे कि इससे भी यह लाजिम नहीं आता कि हुजूर अकरम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम को इन पॉंचो चीजो का इल्म नहीं था। क्योंकि उन आयत का मतलब तो यह है कि उन

पाँचो चीज़ों को अल्लाह तआला ही जानता है। कोई इन्सान या जिन्न या फ़रिश्ता अगर अपनी अक्ल व फ़हम से उन पाँचो चीज़ो को जानना चाहे तो हरगिज़ हरगिज़ नहीं जान सकता।

लेकिन अगर खुदा वन्द आलम किसी को बता दे तो यक़ीनन वह जान लेगा। यह इस आयत में यह कहाँ है ? कि खुदा ही जानता है और खुदा किसी को इन पाँच चीज़ों का इल्म नहीं अता करेगा। बल्कि इस आयत के आख़िर में "इन्नल्लाह अलीमुल ख़बीर" का जुमला तो साफ़ साफ़ बता रहा है कि अल्लाह तआला उन पाँचो चीज़ों को जानता है और वह जिस को चाहता है उन पाँचों चीज़ो की ख़बर भी दे देता है। क्योंकि वह सिर्फ़ अलीम(इल्म वाला) ही नहीं है बल्कि ख़बीर (ख़बर देने वाला) भी है।

यह सिर्फ़ मेरी नाक़िस अक्ल का तीर तुक्का नहीं है। बल्कि बड़े बड़े इल्मे तफ़सीर के माहेरीने फ़न की भी यही तहक़ीक़ है। चुनाँचे हज़रत शैख़ मुहम्मद अब्दुल हक़ मुहद्दिस देहलवी अलैहिर्रहमा ने मिश्कात शरीफ़ की शरहे "अशअतुल लम्आत" जिल्द 1 सफ़ा 44 में इस हदीस की शरह फ़रमाते हुए यह तहरीर फ़रमाया है कि :–

मुराद यह है कि इन ग़ैब की चीज़ों को बिग़ैर अल्लाह के बताऐ हुए अक्ल के अन्दाज़े से कोई नहीं जान सकता। मगर वह जिसको अल्लाह तआला बा ज़रिया वही या इल्हाम बता दे वो जानता है।

इसी तरह हज़रत अल्लामा शैख़ मुल्ला जीवन (उस्ताद आलमगीर बादशाह) ने इसी आयत की तफ़सीर में तहरीर फ़रमाया कि : –

अगरचे इन पाँचों बातों को अल्लाह तआला के सिवा कोई नहीं जानता मगर यह हो सकता है कि अल्लाह अज़्ज़ा वजल अपने महबूबों और वलियों में से जिसको चाहे बता दे। क्योंकि लफ़्ज़ " ख़बीर" मुख़बिर ख़बर देने वाले के बारे में है। (तफ़सीराते अहमदिया)

खुलासऐ कलाम : – अलग़रज़ इस हदीस से हरगिज़ हरगिज़ यह साबित नहीं होता कि हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम को क़ियामत का इल्म नहीं था। बल्कि हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के कलाम का मतलब सिर्फ़ इस क़दर है कि ऐ जिबरईल! मैं तुमसे ज़्यादा नहीं जानता। यानी मुझको भी क़ियामत की खबर है और तुम को भी। लेकिन मजमए आम में इसको ज़ाहिर करना मुनासिब नहीं है। क्योंकि इल्मे क़ियामत मेरे उन

उलूम में से है जिनका अवाम से छुपाना अल्लाह तआला ने मुझ पर फर्ज फरमाया है।

बहर कैफ हजरत जिबरईल के सवाल और हुजूर सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के जवाब से हाजेरीन को सिर्फ इतना बताना मकसूद था कि कियामत का इल्मे ज़ाती सिर्फ अल्लाह तआला ही को है। और एक मोमिन के लिए सिर्फ इतना ही काफी है कि वह कियामत पर ईमान रखे। लेकिन कियामत के आने का वक्त मालूम करना यह मोमिन के लिए न तो जरुरी है और न किसी मोमिन को इस की कोशिश करना चाहिये। क्योंकि इस इल्म का बिगैर खुदा के बताये किसी को हासिल हो ही नहीं सकता।

मसाइले हदीस :– इस हदीस "उम्मुल हदीस" से बहुत से मसाइल पर रौशनी पड़ती है उनमें से चन्द यह हैं।

1. फ़रिश्ते इन्सानी शक्ल व सूरत में आ सकते हैं जैसा कि आपने पढ़ा कि हज़रत जिबरईल बारगाहे नुबुव्वत में एक आदमी की शक्ल में तशरीफ़ लाये।

2. किसी शख़्स से किसी बात के मुताअल्लिक सवाल करना यह साइल की ला इल्मी की दलील नहीं है। देखिए हज़रत जिबरईल ने हुजूर सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम से चन्द बातों का सवाल किया। हालाँकि हज़रत जिबरईल इन बातों को खूब अच्छी तरह जानते थे मगर जानने के बावुजूद हुजूर सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम से सवाल किया। ताकि लोग ज़ुबाने रिसालत से इसका जवाब सुनकर दीन का इल्म हासिल करें।

उल्माए देवबन्द का बार बार यह कहना कि अगर हुजूर सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम को फ़लाँ बात का इल्म होता तो क्यों लोगो से दरयाफ़्त करते? यह बहुत बड़ा धोका है। याद रखिए कि सवाल के बहुत से मक़ासिद होते हैं यह ज़रुरी नहीं कि सवाल सिर्फ़ इसी बात का किया जाए जो मालूम न हो। आख़िर इम्तिहान लेने वाले भी तो तालिबे इल्मों से सवाल करते हैं तो कौन अक़्लमन्द यह कह सकता है कि अगर मुम्तहिन साहब को यह बातें मालूम होतीं तो वह तलबा से क्यों पूछते ?

3. अगर किसी सवाल का जवाब ऐसा हो जो आम सामेअीन की अक्ल व फ़हम से बाला हो, या उस जवाब को अवाम से छुपाने में कोई मसलिहत हो। तो आलिमों पर यह ज़रुरी नहीं कि मजमए आम में इसका

जवाब दे। देख लीजिए हुजूर सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम को कियामत का इल्म था। मगर चूंकि हुजूर पर मिनजानिबिल्लाह फर्ज था कि कियामत का इल्म किसी पर जाहिर न फरमायें इस लिए हुजूर सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने हजरत जिबरईल अलैहिस्सलाम को वाजेह तौर पर इस सवाल का जवाब नहीं दिया। क्योंकि अवाम इस इल्म के मुतहम्मिल नहीं हो सकते थे। जाहिर है जो शरबत हाथी के लिए तैयार किया गया है वह भला एक चीटी को किस तरह और क्योंकर पिलाया जा सकता है। वल्लाहु तआला अअ्लम बिस्सवाब।

दरख़्ते ईमान की शाख़ें

हदीस नम्बर 3

عن ابی هريرة عن النبی ﷺ قال الايمان بضع وستون شعبة والحياء شعبة من الايمان. (بخاری، جلد۱، ص ۶)

" अन अबी हुरैरता अनिन नबीये सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम कालल ईमानो बिदऔं व सित्तून शुअ्बतौं वल हयाओ शुअ्बतौं मिनल ईमान"।

(बुख़ारी शरीफ़ जिल्द 1, किताबुल ईमान, सफ़ा 6)

तर्जुमा : – हज़रत अबू हुरैरा रदियल्लाहु अन्हु से रिवायत है कि हुज़ूर नबीए करीम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने इरशाद फ़रमाया कि " हया" ईमान की एक बहुत बड़ी शाख़ है।

इस हदीस को इमाम बुख़ारी के अलावा मुस्लिम, निसाई,अबू दाऊद, इब्ने माजा ने भी अपनी अपनी किताबों में तहरीर फ़रमाया है।

तौज़ीहे अल्फ़ाज़ :– बिदअ का लफ़्ज़ गिनती में तीन से लेकर नौ तक के अदद पर बोला जाता है। " शुअ्बतुन" शाख़ को कहते हैं। हया का तर्जुमा शर्म है। जिसको हिन्दी मे लाज भी कहते हैं। हज़रत अल्लामा बैज़ावी रहमतुल्लाह अलैह ने लफ़्ज़ हया की तफ़सीर फ़रमाते हुए तहरीर फ़रमाया कि :–

" अलहया इन्क़िबाजुन नफ़्से अनिल क़बीहे मख़ाफ़तज्ज़म।"

(बैज़ावी शरीफ़)

यानी मज़म्मत का ख़ौफ़ करते हुए बुरे कामों से नफ़्स का सुकड़ जाना। इस कैफ़ियत का नाम हया है।

यह दर हक़ीक़त " वक़ाहत" और " ख़िजालत" के दरमियान की एक सिफ़त है। वक़ाहत यह है कि इन्सान इस क़दर बे शर्म व बे ग़ैरत बन जाए कि उसको किसी बुरे से बुरे काम करने से भी कोई झिझक ही न हो। और ख़िजालत यह है कि इन्सान इतना शर्मीला हो जाए कि अच्छे और बुरे काम से झिझकने लगे। और हया यह है कि बुरे कामों से ख़्याल करके झिझक हो कि लोग मज़म्मत करेंगे और अच्छे कामों से कोई झिझक न हो।

वक़ाहत और ख़िजालत यह दोनों इन्सान के मज़मूम और बुरी सिफ़ते

है। और हया इन्सान की इन्तिहाई महमूद और पसन्दीदा सिफत है।

शरहे हदीस : – इस हदीस मे हुजूरे अकरम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने ईमान को एक ऐसे दरख़्त से तशबीह दी है जिसमें छोटी बड़ी बहुत सी टहनियाँ और शाखें हों। जिनकी वजह से वह दरख़्त हरा भरा सायादार, इन्तिहाई खुशनुमा, और निहायत ही हसीन व ख़ूबसूरत नजर आता है। यही मिसाल ईमान की है कि छोटी बड़ी बहुत से खसलतें हैं कि जिनकी वजह से ईमान की रौनक़ और ख़ूबी में चार चाँद लग जाते हैं और उसके असरात और समरात की बदौलत साहिबे ईमान की ज़िन्दगी दोनों जहान में हुस्न व जमाल का एक ऐसा जाजिब नज़र मुरक्कअ् बन जाती है कि वह तमाम मख़लूक़ की निगाहों में साहिबे वक़ार और क़ाबिले ऐतिबार हो जाता है और दरबारे ख़ुदावन्दी में अज़मते दारैन का हकदार बन जाता है।

चुनाँचे इरशाद फ़रमाया कि ईमान कुछ ऊपर साठ शाखें यानी ख़सलतें हैं और हया ईमान की एक निहायत ही अहम और बहुत बड़ी शाख़ यानी ख़सलत है।

अब गौर फ़रमाईये कि वह ख़ुशनुमा और बा रौनक़ दरख़्त जो अपनी बहुत सी टहनियों और शाखों की वजह से इन्तिहाई ख़ूबसूरत नज़र आता है। अगर उसकी तमाम शाख़ो को काट डाला जाए और सिर्फ उस दरख़्त के तना का " ठुन्ठ" बाकी रह जाए। तो फिर ज़ाहिर है कि वह अब दरख़्त कहलाने का ही मुस्तहक नही रहेगा। भला कौन है जो सिर्फ तना के ठुन्ठ को दरख़्त कहेगा ? जिसमें ना डालियाँ हों न टहनियाँ न शाखे हों न पत्तियाँ हों।

इसी तरह अगर दरख़्त की कुछ शाख़ों को काट कर दरख़्त को नंगा कर दिया जाए तो यकीनन दरख़्त की हसीन व ख़ूबसूरत छतरी का हुस्न व जमाल तहस नहस हो जाऐगा। और उसका साया भी कम हो जायगा। और उसके फल फूल में भी नुमायाँ कमी हो जाऐगी। और अगर दरख़्त की कोई इतनी बड़ी डाली काट डाली जाए जिसमे बहुत सी टहनियाँ और शाखें हों और वह डाल दरख़्त की नश्वो नुमा और उसकी सर सब्जी व शादाबी में मुआविन रही हो तो फिर अन्देशा है कि शायद पूरा दरख़्त ही खुश्क होकर आग का ईंधन बन जाय।

इस तरह समझ लीजिए कि ईमान की भी छोटी बड़ी बहुत सी

ख़सलतें हैं कि अगर इन तमाम ख़सलतों का वजूद खत्म हो जाए तो गोया ईमान ही का खात्मा हो जाएगा। और अगर कुछ ख़सलतें मादूम हो गईं तो जितनी ख़सलतें और जितनी जितनी अहम ख़सलतें ना पैद होती चली जायेंगी। उसी क़दर ईमान का नूर, उसकी रौनक़, उसका हुस्न व जमाल कम से कमतर होता चला जायेगा। और अगर कोई ऐसी अहम से अहमतर और ख़ासुल ख़ास शाख़ बरबाद हो गई जो ईमान का निशान, बल्कि शाने ईमान कहलाने की मुस्तहक़ थी। तो फिर तो इन्तेहाई ख़तरा है कि कहीं ईमान ही बरबाद न हो जाए।

चुनाँचे ऐसी ही एक निहायत ही अहम ख़सलते ईमान को बयान फ़रमाते हुए हुजूरे अकरम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने इरशाद फ़रमाया कि "अल हयाओ शोअ़बतुन मिनल ईमान" यानी हया ईमान की एक बहुत ही बड़ी शाख़ यानी ख़सलत है।

हया बड़ी शाख़ क्यों है ?

अब रहा ये सवाल कि आख़िर हया ईमान की बहुत बड़ी शाख़ और बहुत अहम ख़सलत क्योंकर ? और किस तरह है? तो उसका जवाब यह है कि पूरे ख़साइले ईमान और आमाले इस्लाम दो ही किस्मो में मुन्हसिर हैं। अवामिर और नवाही। यानी अच्छा काम करो और बुरा काम मत करो। और ज़ाहिर है कि जिस मुसलमान में हया की सिफ़त होगी वह तमाम बुरे कामों से फ़ितरी तौर पर रुक जाऐगा। और तमाम नवाही से बाज़ रहेगा।

तो एक सिफ़ते हया की वजह से मुसलमान तमाम शरई ममनूआत से बच जाऐगा। तो गोया ईमान की ऐसी ख़सलत हुई कि उसकी वजह से बहुत सी ईमानी ख़सलतें पाई जाऐंगी। इसलिए बिला शुबा यह दरख़्ते ईमान की शाखों में से निहायत अहम और बहुत ही बड़ी शाख़ है।

साठ या सत्तर ?

वाज़ेह रहे कि बुख़ारी शरीफ़ की इस रिवायत में तो ईमान की शाख़ों को साठ से कुछ ज़ाइद बताया गया है। मगर दूसरी रिवायतों में " बिदअ़ सबऊन" का लफ्ज़ आया है। यानी ईमान की शाख़े सत्तर से कुछ ज़्यादा है। बज़ाहिर इन दोनों हदीसों मे तआ़रुज़ नज़र आता है मगर दर हकीक़त कोई तआरुज़ नहीं है। क्योंकि क़लील कसीर में दाख़िल होता है। इस लिए

जब ईमान की शाख़े सत्तर से ऊपर हुई तो फिर साठ से ऊपर भी हुई।

इसलिए किसी रिवायत में साठ से ऊपर कह दिया गया किसी रिवायत में सत्तर से ऊपर कह दिया गया।

और बाज़ शारेहीने हदीस ने दोनों हदीसों में तआरुज़ दफ़ा करने के लिए यह फ़रमाया कि साठ से ऊपर, या सत्तर से ज़ाइद जो फ़रमाया गया। तो इन दोनों गिनतियों से तअ़इयुन व तहदीद मुराद नहीं है बल्कि तकसीर मुराद है। यानी हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम का यह मतलब नहीं कि ख़साइले ईमान गिनती में साठ से कुछ ज़ाइद ही हैं या सत्तर से ऊपर ही हैं। बल्कि इन दोनों गिनतियों से मुराद यह है कि ईमान की ख़सलतें बहुत ज़यादा हैं। जैसे हमारे उर्दू के मुहावरे में कहा जाता है कि " मैंने पचास मर्तबा तुमको हुक्म दिया" और " सत्तर मर्तबा तुमको मना किया" तो इसका यह मतलब नहीं होता कि मैंने गिन कर पचास मर्तबा तुमको हुक्म दिया और गिन कर सत्तर मर्तबा तुमको मना किया। बल्कि इसका यह मतलब होता है कि मैंने बहुत मर्तबा तुमको हुक्म दिया और बहुत मर्तबा तुमको मना किया। इस सूरत में यह ज़ाहिर है कि तआरुज़ का कोई सवाल ही पैदा नहीं होता।

अब रहा यह सवाल कि ईमान की शाख़ें यानी ख़सलतें कौन कौन सी हैं ? तो अल्लामा ऐनी वग़ैरह ने उनकी तादाद सतत्तर तहरीर की है। जिनका तज़किरा तवालत से खाली नहीं। मगर खुलासा यह है कि तमाम अहकामे इस्लाम ख़्वाह वह ऐतिक़ादी हों या क़ौली व फ़ेली, मसलन कलिमए शहादत, नमाज़ रोज़ा हज व ज़कात, हुकूकुल्लाह, हुकूकुल इबाद, यह सब के सब दरख़्ते ईमान की शाख़ें और ईमानी ख़सलतें हैं। और इनमें से हर एक ईमान के असरात व समरात हैं जिनसे दरख़्ते ईमान का हुस्न व जमाल बढ़ता है और उनमें से हर एक को तर्क कर देने से ईमान का दरख़्त अपनी खुशनुमा और बा रौनक़ ख़ूबसूरती और शादाबी से महरुम हो जाता है।

फवाइद व मसाइल : –1. इस हदीस से मालूम हुआ कि हर मुसलमान दरजात व मरातिब में बराबर नहीं। बल्कि जिस मुसलमान में ईमानी ख़साइल ज्यादा से ज़्यादा होंगी वह यक़ीनन उस मुसलमान से मरातिब व दरजात में अफ़ज़ल व अअ्ला होगा जिसमें ईमान की ख़सलतें कम होंगी।

2. ईमान असल है और आमाल उसकी फरअ् हैं। इसलिए कि इस हदीस में या दूसरी हदीसों में जहाँ जहाँ भी आमाल को ईमान कहा गया है, मजाज़ के तौर पर कहा गया है। वरना ज़ाहिर है कि अअ्माल ईमान का जुज़ नहीं हैं। क्योंकि कुरआन व हदीस में बे शुमार जगहों पर " आमेनू व अमेलुस्सालेहात" का लफ्ज़ आया है। और अमल का ईमान पर अत्फ़ किया गया है और अत्फ़ का तक़ाज़ा यही है कि मातूफ़ और मातूफ़ इलैह में तग़ायुर हो। लिहाज़ा साबित हुआ कि अमल और चीज़ है और ईमान और चीज़ है। ईमान असल है। और अअ्माल ईमान की ख़सलतें और अलामतें हैं। या यूँ कह लीजिए कि अअ्माल ईमान के असरात व समरात हैं।

3. इस हदीस ने इस हक़ीक़त की तसरीह़ करदी कि " हया" मोमिन की बड़ी अनमोल, और निहायत ही गिराँक़द्र सिफ़त है। इस लिए जिस मोमिन में ह़या न हो तो समझ लो कि इस के दरख़्ते ईमान की बहुत ही बड़ी शाख़ कट गयी। इसी लिए अरब की एक बहुत पुरानी मस्ल है जिस पर तस्दीक़े नुबुव्वत की भी मुहर लगी हुई है कि " इज़ा लम तस्तह़ी फ़स्नओ मा शेअ्ता" जिसका फ़ारसी में तर्जुमा है कि " बे हया बाश हर चे ख़्वाही कुन " यानी तुम्हारे अन्दर हया ही नहीं रही तो फिर जो चाहो करो।

कौन मुसलमान अफ़ज़ल है ?

हदीस नम्बर – 4

عن ابی موسیٰ الاشعری قال قالوا یا رسول الله ﷺ ای الاسلام افضل قال من سلم المسلمون من لسانه ویده.

(بخاری جلد ۱، ص ۶)

अन अबी मूसल अशअरी काला, कालू या रसूलल्लहि सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम अइयुल इस्लामे अफ़ज़लो काला मन सलेमल मुस्लेमूना मिल लिसानेहि व यदेहि। (बुख़ारी, जिल्द 1, किताबुल ईमान, सफ़ा 6)

तर्जुमा : – हज़रत अबू मूसा अशअरी रदियल्लाहु अन्हु से रिवायत है कि सहाबा ने अर्ज़ किया या रसूलुल्लाह! सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम, कौन सा इस्लाम अफ़ज़ल है ? तो इरशाद फ़रमाया कि उस शख़्स का इस्लाम जिसकी ज़बान और हाथ से तमाम मुसलमान सलामत रहें।

हज़रत अबू मूसा : – इस हदीस के रावी हज़रत अबू मूसा अशअरी रदियल्लाहु अन्हु बहुत ही नामवर सहाबी हैं। यमन के क़बीला अश्अर से आपका ताअल्लुक़ है। इसलिए अश्अरी कहलाते हैं। आपने मक्का मुकर्रमा में इस्लाम क़बूल किया और पहले मक्का से हिजरत करके हबशा चले गये। फिर हबशा से हिजरत करके मदीना आये। हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने उनको "ज़ुबैद" व "अदन" साहिले यमन का हाकिम मुक़र्रर फ़रमाया था।

हज़रत अमीरुल मोमिनीन उमर फ़ारुक़ रदियल्लाहु अन्हु ने अपने दौरे ख़िलाफ़त में उनको कूफ़ा व बसरा का गवर्नर बनाया। आपसे कुल तीन सौ साठ हदीसें मरवी हैं। सहाबा और ताबेअीन की बहुत बड़ी तादाद आपके शागिर्दों की फेहरिस्त में है। ख़ास कर आपके साहिबज़ादगान, अबू बरदा, अबू बक्र इब्राहीम, मूसा ने आपसे हदीसें रिवायत की हैं। बुख़ारी शरीफ़ में आपकी रिवायतों की तादाद चौवन है।

मगर अल्लामा क़स्तलानी का बयान है कि बुख़ारी शरीफ़ में सत्तावन हदीसें आप से मरवी हैं। अल्लामा क़स्तलानी फ़रमाते हैं कि आपने 41 हिजरी या 24 हिजरी या 45 हिजरी में बमुक़ाम कूफ़ा वफ़ात पायी। मगर"

अकमाल फिर्रिजाल" में तहरीर है कि 52 हिजरी में मक्का मुकर्रमा के अन्दर आपकी रेहलत हुई। वल्लाहु तआला अअ्लम।

शरहे हदीस :– इस हदीस को मुस्लिम व निसाई ने किताबुल ईमान में और तिरमिज़ी ने किताबुज़ ज़ुहुद में ज़िक्र किया है। मुस्लिम शरीफ़ में इसी मज़मून की जो दूसरी रिवायत दर्ज है उस में " अयइयुल इस्लाम अफ़ज़ल" की जगह " अयइयुल मुस्लेमीन अफ़ज़ल" का लफ़्ज़ आया है। बहर हाल इस हदीस का मतलब यह है कि मुसलमानों में अफ़ज़ल वह मुसलमान है जिसकी ज़ुबान और हाथ से तमाम मुसलमान सलामत रहें। न वह किसी मुसलमान को अपनी ज़ुबान से कोई ईज़ा पहुँचाए। न अपने हाथ से किसी मुसलमान को कोई तकलीफ़ दे।

फ़वाइद व मसाइल :– ईज़ा व तकलीफ़ तो ज़ुबान और हाथ के अलावा दूसरे आज़ा से भी पहुँचाई जा सकती है। और किसी भी अज़ू से किसी मुसलमान को कोई तकलीफ़ पहुँचाना हराम है। मगर इस हदीस में खुसुसियत के साथ ज़ुबान और हाथ का ज़िक्र इस लिए है कि इन्सान के ज्यादातर अफ़आल व आमाल ज़ुबान और हाथ ही से अन्जाम पाते हैं और हदीस में इन दोनो आज़ा में से ज़ुबान का ज़िक्र पहले और हाथ का बाद में इस लिए किया गया कि ईज़ा पहुँचाने के मामले में ज़ुबान का नम्बर हाथ से भी पहले है। क्योंकि अव्वलन तो ज़ुबान से तकलीफ़ पहुँचाना तो बहुत ही कसीरुल वुक़ूअ् और आसान है। कौन नहीं जानता कि इन्सान अपनी गालियों, इफ़्तरा परदाज़ियों, बद गोईयों, ग़ीबतों,चुग़लियों से ज़ुबान से ज़ुल्म और ना इन्साफ़ी के अहकाम देकर एक मिनट में सैकड़ों ईज़ाऐं और तकलीफ़ें हाथ और दूसरे आज़ा की तकलीफ़ो से बदरजा बढ़ कर दुख देने वाली हुआ करती हैं। किसी अरबी शायर ने इस बारे में क्या ख़ूब कहा है।

जराहातु सिनान लहत तियाम
वला यल्तामु मा जराहल लिसान

यानी बरछियों और भालों के ज़ख्म तो भर कर अच्छे हो जाया करते हैं मगर ज़ुबान के लगाये हुए ज़ख्म कभी नहीं भरा क़रते। बल्कि वह हमेशा ताज़ा ही रहा करते हैं।

फिर ज़ुबान की ईज़ा और तकलीफ़ ऐसी है दूर वाले और नज़दीक वाले सब को पहुँचाई जा सकती है। बर ख़िलाफ़ हाथ पैर वग़ैरह आज़ा के

कि इनसे सिर्फ़ उसी को तकलीफ पहुँचाई जा सकती है जो करीब हो।

बहर कैफ इरशादे नबवी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम का मकसद यह है कि जो मुसलमान किसी तरह किसी मुसलमान को तकलीफ और ईज़ा न पहुँचाऐ उस मुसलमान का इस्लाम उन मुसलमानो से अफजल व आला है जो ईज़ा पहुँचाते और दुख देते हैं।

2. यह हदीस " जवामिउल किलम" में से है। यानी इसके मुख़्तसर अल्फ़ाज़ में मआनी मज़ामीन और अहकाम व फ़रामीन का एक समन्दर मौजें मार रहा है। अगर मुसलमान सिर्फ़ एक हदीस पर सही माअनों में अमल करलें तो फिर हुकूकुल इबाद के तमाम जुजआत पर अमल की सआदत नसीब हो जायेगी। आजकल हर तरफ जुल्म ख्यानत, चोरी डाका जनी, बदकारी, चोर बाज़ारी सूद ख़ोरी, बद अहदी, बद दयानती, गीबत, चुगली, तोहमत, गालियॉं, क़त्ल व ख़ूनरेज़ी, वगैरह हजारों खुराफातें मुस्लिम मुआशरे में दाखिल होकर पूरी कौमे मुस्लिम की ईजा रसानी का बासअ बनी हुई हैं।

जिससे मिल्लते इस्लामिया का निजामे अमल इस तरह तहस नहस होकर तबाह व बरबाद हो गया है कि कोई मुसलमान ऐसा नहीं जो हुकूकुल इबाद के माखिज़ों में गिरफ्तार न हो अगर इस फरमाने मुस्तफा को मुसलमान अपने लिए हिरज़े जान और अपने और अपने आमाल व अफआल का रहनुमा निशान बना लें। तो बा खुदा यह एक ही हदीस पूरी मिल्लते इस्लामिया के अमन व चैन की जामिन है। क्यों कि जब हर मुसलमान अपनी जिन्दगी का यह दस्तूर बना लेगा कि एक मुसलमान होने की हैसियत से मेरा फर्ज है कि मेरी किसी हरकत से किसी मुसलमान को कोई तकलीफ न पहुँचे तो जाहिर है कि मुस्लिम मुआशरा अमनो अमान और राहत व आफियत का गहवारा बन जाये। न थाना पुलिस की जरुरत रहेगी। न कचहरियों में दाद रसी और फरयाद रसी की कोई हाजत बाकी रहेगी।

मगर किस कदर अफसोस नाक सानेहा कि मुसलमान अपनी कौमी बीमारियों का इलाज हुकूमत के ऐवानों और कुफ्फार व मुश्रेकीन के कवानीने,सियासी पार्टियों के दफतरों या कम्यूनिजम या सोशलजम के दारुल अमराज में ढूँढते फिरते हैं और मदीना वाले दारुशशिफा के इन तीरे ब हदफ नुस्खों और तिरयाकों को ऐसे भूले बैठे हैं कि कभी भूल कर भी उनको याद नहीं करते। हालाँकि खुदा की कसम, रहमते आलम ही की वह

ज़ाते गिरामी है जिसके बारे में पूरे अज़्म व यक़ीन और वसूक़ व एतिमाद के साथ ब बाँगे दुहल यह कहा जा सकता है कि : –

वो हाज़िक़ जिसका तन्हा नुस्ख़ा तन्ज़ीले फ़ुरक़ानी
दवा–ए जुम्ला इल्लतहा–ए– जिस्मानी व रुहानी

मोमिने कामिल

हदीस नम्बर – 5

عن انس عن النبی ﷺ قال لا یؤمن احدکم حتی یحب لاخیه ما یحب لنفسه. (بخاری، جلد۱، ص۶)

अ़न अनस अ़निन नबीये स़ल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम क़ाला ला युअ़मिनु अह़दुकुम ह़त्ता युहिब्बा लि अख़ीहि मा युहिब्बु लि नफ़सिहि।
(बुख़ारी, जिल्द 1, सफ़ा 6 किताबुल ईमान)

तर्जुमा : – हज़रत अनस रदि़यल्लाहु तआ़ला अ़न्हु से रिवायत है कि हुज़ूर नबीए करीम स़ल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम ने फ़रमाया कि तुम में से कोई मोमिन(कामिल) नहीं होगा। जब तक कि अपने भाई(मोमिन) के लिए वही चीज़ न पसन्द करे जो अपनी ज़ात के लिए पसन्द करता है।

हज़रत अनस बिन मालिक :– इस हदीस के रावी हज़रत अनस बिन मालिक रदि़यल्लाहु अ़न्हु बहुत ही जलीलुल क़द्र और सहिबे फ़ज़ीलत सहाबी हैं। इनकी कुन्नियत अबू हमज़ा है। और यह मदीना मुनव्वरा के बाशिन्दे अन्सारी हैं। दस बरस की उम्र से बारगाहे नुबुव्वत स़ल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम में ख़ादिमे ख़ास की हैसियत से रहे। और दस बरस तक मुसलसल सफ़रो हज़र में रहमते आ़लम स़ल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम की ख़िदमत का शरफ़ हासिल किया। हुज़ूर स़ल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम ने खुश होकर उनके लिए उम्र, माल,औलाद में बरकत की दुआ़ फ़रमाई। इसी दुआ का मुबारक असर था कि उनका बाग़ साल में दो मर्तबा फलता था। और बाग़ के तमाम फलों में मुश्क की ख़ुश्बू आती थी। चन्द बीवियों और बान्दियों के शिकम से उनके एक सौ बेटे हुए। सौ बरस की उम्र पायी।

93 हिजरी में "बसरा" के अन्दर वफ़ात हुई। मशहूर बा करामत मुहद्दिस हज़रत मुहम्मद बिन सीरीन ने आपको गुस्ल दिया और बसरा में हुज्जाज बिन यूसुफ गवर्नर के महल के क़रीब आप मदफ़ून हैं।

आपसे बहुत सी हदीसें मरवी हैं। सिर्फ़ सिहाहे सित्ता में दो हज़ार दो सौ छियासी हदीसें आपकी रिवायत की हुई मशहूर हैं और बुख़ारी शरीफ़ में आपकी मरवियात की तादाद दो सौ इक्यावन है।

मगर अल्लामा क़स्तलानी ने तहरीर फ़रमाया है कि बुख़ारी शरीफ़ में हज़रत अनस बिन मालिक रदियल्लाहु अन्हु की रिवायत की हुई दो सौ अड़सठ हदीसें हैं।

शरहे हदीस : – यह हदीस दर हक़ीक़त इस लिए पहले वाली हदीस का ततिम्मा और तकमिला (पूरक) है और सिलसिला हुकूकुल इबाद की दूसरी कड़ी है। पहली कड़ी तो यह थी कि एक मुसलमान पर लाज़िम है कि वह अपनी ज़िन्दगी का यह दस्तूर बनाले कि मेरी ज़ात से किसी मुसलमान को किसी तरह कोई ईज़ा न पहुँचे। और दूसरी कड़ी यह है कि मुसलमान इस ज़र्री उसूल को अपना ज़ाब्ताऐ हयात बनालें कि जो कुछ और जैसे सुलूक व मुआमलात को वह अपने लिए पसन्द करता है वही दूसरे मुसलमानों के लिए भी पसन्द करे।

मसलन हर शख़्स अपनी ज़ात के लिए यह पसन्द करता है कि कोई मुझ को नुक़सान न पहुँचाए, कोई मेरी बे आबरुई न करे, कोई मेरे साथ बदसुलूकी न करे। कोई मुझे धोका और फ़रेब न दे। कोई मुझको और मेरे रिश्तादारों और मुहब्बत वालों को न सताए। यूँ ही हर शख़्स अपने लिए यह पसन्द करता है कि मुझे इज़्ज़त आबरु, माल व दौलत और तन्दरुस्ती व सलामती मिले। मेरी हर चीज़ अच्छी हो। मेरी ज़िन्दगी अच्छी गुज़रे। मुझे हर तरह का आराम व राहत मिले, वग़ैरह वग़ैरह।

अब इस हदीस की रौशनी में हर शख़्स पर लाज़िम है कि वह अपनी ज़ात के लिए जो कुछ और जिन जिन चीज़ों को पसन्द करता है वह हर मुसलमान के लिए पसन्द करे। और ज़ाहिर है कि जब कोई मुसलमान इस तरज़े फ़िक्र और इस तरीक़े को अपनी ज़िन्दगी का दस्तूरे हयात बना लेगा तो फिर वह किसी मुसलमान की कभी भी कोई हक़ तलफ़ी नहीं करेगा। और वह हिरसो हसद, बुग्ज़ व कीना, निफ़ाक़ व शिक़ाक़, जंग व जिदाल,किश्तो क़िताल, वग़ैरह तमाम अख़्लाके रज़ीला से आईना की तरह साफ़ व शफ़्फ़ाफ़ हो जायेगा। और मुस्लिम मुआशरा आराम व राहत और अमन व चैन की एक जन्नत बन कर सारी दुनिया के लिए बाइसे कशिश और तमाम अक़वामे आलम के लिए जाज़िब नज़र बन जाऐगा।

और अमन की मुतालाशी और सुकून व इतमिनान कर भूकी प्यासी दुनिया को इस्लामी मुआशरा के दामने रहमत में पनाह मिलेगी। और फिर

हम मुसलमान इस मन्जिल में होंगे कि अलल ऐलान सारी दुनिया मे यह ऐलान नश्र कर सकेंगे।

कहदो यह एटम व साइंस के मतवालों से
थाम लो दामने हक़ अब भी संभल जाआगे

गर किया तुमने मुहम्मद(सल्ल०)की इताअत से गुरेज़
अपनी भड़काई हुई आग में जल जाओगे

फ़वाइद व मसाइल : –1. इस हदीस को इमाम मुस्लिम, तिरमिज़ी व निसाई ने भी अपनी अपनी किताबों के किताबुल ईमान में नक़ल फ़रमाया है।

2. इस हदीस में "ला योमिनों" का लफ्ज़ आया है जिसका तर्जुमा यह होता है कि उस वक्त तक कोई मोमिन होगा ही नहीं जब तक कि यह अपने मुसलमान भाईयों के लिए वही चीज़ पसन्द न करे जो अपने लिए पसन्द करता है। मगर इस बात पर तमाम शारेहीने हदीस का इत्तेफ़ाक़ है कि इस हदीस में लफ़्ज़ कामिला या इसका हम माना कोई लफ्ज़ पोशीदा है। और हदीस का मतलब यह है कि उस वक्त तक कोई कामिल व मुकम्मल मुसलमान नहीं होगा जब तक कि वह अपने मुसलमान भाईयों के लिए वही सब कुछ पसन्द न करे जो अपनी ज़ात के लिए पसन्द करता है। इस हदीस में लफ़्ज़ " कामिला" पोशीदा मानना ज़रुरी है। क्योंकि ज़ाहिर है कि अगर किसी मुसलमान में यह वस्फ़ न पाया जाए तो हर गिज हरगिज़ वह दायरऐ इस्लाम से ख़ारिज नहीं हो सकता है। इस ख़ूबी के न रहने की सूरत में भी अगर कोई शख़्स तमाम ज़रुरयाते दीन पर ईमान रखता है तो वह मुसलमान ही कहलायेगा। यह और बात है कि उसके इस्लाम की ख़ूबियों में कुछ नुक़सान रहेगा। और वह हुस्ने इस्लाम के कमाल से महरुम रहेगा। लिहाज़ा कामिल मुकम्मल दरजे का मुसलमान नहीं कहलायेगा।

एक ज़रुरी इन्तेबाह : – यहाँ एक बात खुसूसन हदीस पढने वाले और पढ़ाने वालों के लिए बहुत ही ख़ास तौर पर क़ाबिले तवज्जो है वह यह कि अक्सर हदीसों में किसी एक काम को इस्लाम का निशान क़रार दे दिया गया है। मसलन एक हदीस में है कि " मुसलमान वह है कि तमाम मुसलमान उसकी ज़बान और हाथ से सलामत रहें" और एक हदीस में है

कि " बेहतरीन इस्लाम उस शख़्स का है जो खाना खिलाए और सलाम करे " तो इन हदीसों का यह मतलब नहीं कि जिस मुसलमान में ईजा से बचने, या खाना खिलाने,या सलाम करने की सिफत पायी गई वह सिर्फ एक सिफ़त की वजह से मुसलमाने कामिल हो गया। अगरचे दूसरे आमाल व अरकाने इस्लाम की पाबन्दी न करता हो। इसी तरह इन हदीसों का मतलब यह भी नहीं कि बस यही एक इस्लामी काम ज़रुरी है और बाक़ी दूसरे आमाल ग़ैर ज़रुरी हैं। मआ़ज़ल्लाह! इन हदीसों का हरगिज़ हरगिज़ यह मतलब नहीं।

बल्कि वाकिया यह है कि किसी एक को ख़ास तौर पर निशाने इस्लाम और अ़लामते ईमान फ़रमा देने से हुज़ूर स़ल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम का यह मक़सद होता है कि हुज़ूर स़ल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम इस अमल की किसी ख़ास ऐतिबार से बहुत ज़्यादा अहमियत फ़रमाना चाहते हैं। मसलन हुज़ूर स़ल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने एक हदीस में यह फ़रमाया कि" ला सलात इल्ला बेहुज़ूरिल क़ल्ब" नहीं है कोई नमाज़ मगर हुज़ूरे क़ल्ब से। तो इस हदीस का हरगिज हरगिज़ यह मतलब नहीं कि बस हुज़ूरे क़ल्ब ही नमाज के दुरुस्त होने के लिए सब कुछ है। शराइत और अरकाने नमाज़ की कोई ज़रुरत नहीं। बल्कि इसका मतलब सिर्फ इस क़दर है कि हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम यह बताना चाहते हैं कि नमाज़ में हुज़ूरे क़ल्ब की बहुत ज़्यादा अहमियत है और हालते नमाज़ में दिल की हुज़ूरी एक बहुत ही अहम सिफ़त है।

इस तरह वह हदीसें जिनमें चन्द ख़ास गुनाहों के मुताअल्लिक़ यह फ़रमाया कि जो इन गुनाहों को करे वह मोमिन नहीं। या कुछ ख़ास आमाले सॉलेहा के बारे में इरशाद हुआ कि जो शख़्स इन आमाल को छोड़ दे वह मोमिन नहीं। तो ख़ूब समझ लीजिए कि इन हदीसों का हरगिज हरगिज यह मनशा और मकसूद नहीं है कि वह शख़्स दायरऐ इस्लाम से ख़ारिज होकर काफ़िर हो गया। बल्कि इन सब हदीसों का मक़सद सिर्फ़ यह बताना है कि उन गुनाहों को करने वाला और उन आमाले सॉलेहा का छोड़ने वाला कामिल दरजे का मुसलमान नहीं है। और एक मोमिने कामिल के आला दरजात और बुलन्द मुक़ाम से महरुम है। यह ख़ूब अच्छी तरह ज़हन नशीन कर लीजिए कि इन हदीसों का मक़सद क़ानूने शरई बयान

करना या कुफ्र का फ़तवा देना नहीं है। बल्कि इन हदीसों का मक़सद बुरे कामों की बुराईयों को बहुत शदीद कर शिद्दत के साथ उससे मुसलमानों को रोकना और अच्छे कामों की अच्छाई को बहुत ज़्यादा अच्छा बताकर उस काम पर मुसलमानों को रग़बत दिलाना है।

दर हक़ीक़त कलामे नुबुव्वत के तर्ज़े ख़िताब की ख़ुसूसियात से ना वाक़फ़ियत और उन हदीसों के असल मफ़हूम से बे ख़बरी ही का नतीजा है कि फ़िरक़ा मुअ्तज़िला और ख़्वारिज ने इन हदीसों के ज़ाहिरी माने मुराद लेकर गुनाहगार मुसलमानों को दायरऐ इस्लाम से ख़ारिज होने का फ़तवा दे दिया। और ख़ुद गुमराही के इन्तेहाई गहरे ग़ार में गिर पड़े। इसी तरह इस ज़माने के बाज़ जाहिल मुबल्लिग़ जो हदीसों का सिर्फ़ तर्जुमा पढ़ पढ़ कर तबलीग़ करने लगे हैं। वह भी अपनी जहालत से उन हदीसों का यही मतलब बताते फिरते हैं। मसलन " तारिके नमाज़ मुसलमान नहीं" जिसमें अहद व अमानत की पाबन्दी न हो वह मुसलमान ही नहीं। हालाँकि हदीस का यह मतलब बिल्कुल ही ग़लत है क्योंकि तारिके नमाज़ यक़ीनन मुसलमान है। यह और बात कि वह कामिल दरजे का मुसलमान नहीं। इसी तरह अहदो अमानत की पाबन्दी न करने वाला अगरचे गुनाहगार है मगर बिला शुबा वह मुसलमान है।

बहर कैफ़ उल्माऐ अहले सुन्नत का फ़र्ज़ है कि वह जब इस क़िस्म की हदीसों को बयान फ़रमायें तो उन की हक़ीक़ी पोज़ीशन को तफ़सील के साथ ज़रुर वाज़ेह करदें। ताकि ख़ाली ज़हन अवाम गुमराही का शिकार न हों और अवाम का फ़र्ज़ है कि वह जाहिल मुबल्लिग़ो को हरगिज़ हरगिज़ मिम्बरे रसूल सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम पर न आने दें। और कभी भी उनका वाअ्ज़ न सुनें। वरना बहुत बड़ा ख़तरा है कि उन जाहिलों की ज़बान से हदीसों का ग़लत मतबल सुनकर कहीं सामेईन का अक़ीदा ख़राब और उनका ईमान बरबाद न हो जाए। वल मौला तआला हुवल मौफ़िक़।

मनआँचे शर्ते इब्लाग़ अस्त बा तू मी गोयम
तू ख़्वाह अज़ सुख़नम पन्दगीर व ख़्वाह मलाल

अलामाते निफ़ाक़

हदीस नम्बर – 6

عن عبد الله بن عمرو ان النبی ﷺ قال اربع من کن فیه کان منافقا خالصا و من کانت فیه خصلة منهن کانت فیه خصلة من النفاق حتی یدعها اذا أوتمر خان و اذا حدث کذب و اذا عاهد غدرو اذاخاصم فجر.

अन अब्दिल्लाह इब्ने अमरिन अन्नन नबीय सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम काला, अरबाउ मन कुन्ना फ़ीहे काना मुनाफ़िक़न ख़ालिसन व मन कानत फ़ीहे ख़सलतन मिन हुन्ना कानत फीहे ख़सलतन मिनन निफ़ाके। हत्ता यदओहा इज़ा तुमेअ्ना ख़ाना व इज़ा हद्द स कज़्ज़बा व इज़ा आहदा ग़दारा। व इज़ा ख़ासम फ ज र।

तर्जुमा : – हज़रत अब्दुल्लाह बिन अम्र रदियल्लाहु अन्हु से रिवायत है कि बे शक हुज़ूर नबीए करीम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया कि जिस शख़्स में चार बातें होंगी वह ख़ालिस मुनाफ़िक़ है। और जिस शख़्स में चार बातों में से एक बात होगी। उसमें निफ़ाक़ की एक ख़सलत होगी यहाँ तक कि वह उसको छोड दे।

1. जब अमीन बनाया जाए तो ख़्यानत करे।
2. जब बात करे तो झूट बोले।
3. जब किसी से कोई अहद करे तो अहद शिकनी करे।
4. जब झगड़ा करे तो बद ज़ुबानी करे।

हज़रत अब्दुल्ला बिन अम्र . – इस हदीस के रावी हज़रत अब्दुल्लाह बिन अम्र बिन आस रदियल्लाहु तआला अन्हुमा हैं। ख़ानदाने क़ुरैश की शाख़ "बनी सहम" से ताअल्लुक़ रखते हैं इस लिए सहमी क़ुरैश कहलाते हैं। बहुत ही साहिबे मर्तबा सहाबी है। आलिम,हाफ़िज़े क़ुरआन बहुत बड़े आबिद व ज़ाहिद थे। अपने बाप हज़रत अम्र बिन आस से पहले ईमान लाए और हिजरत भी की। रातों को ख़ौफ़े इलाही से रोते रोते उनकी आँखों में आशोबे चश्म हो गया था। जिसके लिए उनकी वालिदा सुर्मा बनाया करती थी। उन्होनें हुज़ूरे अकरम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम से हदीसों के लिखने

की इजाजत तलब की थी। तो हालाँकि आम तौर पर हुजूर सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने लोगो को हदीसें लिखने से मना फरमाया था और सिर्फ कुरआन लिखने का हुक्म दिया था। ताकि कुरआन व हदीस में खलत मलत न होने पाए। मगर हुजूर सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने इनको हदीसें लिखने की इजाजत अता फरमा दी थी। क्योंकि इनकी एहतियात पर हुजूर सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम को पूरा पूरा एतिमाद था कि यह आयतों और हदीसों को खलत मलत नहीं होनें देंगे। इल्मे हदीस में इनके शागिर्दों की तादाद बहुत ज़्यादा है।

यह एक अजीब बात है कि इतने नामवर और मशहूर सहाबी की तारीखे वफ़ात और इनकी कब्र शरीफ के बारे में बहुत ज़्यादा इख़्तिलाफ है बाज का कौल है कि 63 हिजरी में बाज़ का कौल है कि 73 हिजरी में। मक्का मुकर्रमा के अन्दर आप का विसाल हुआ और बाज ने कहा कि 55 हिजरी में ताइफ़ के अन्दर आप की वफ़ात हुई और बाज यह कहते हैं कि मिस्र मे 65 हिजरी के साल आप का इन्तिकाल हुआ। वल्लाहु तआला आलम।

शरहे हदीसः – मुनाफिक़ की दो किस्में हैं(मुनाफिक़ एतिकादी और मुनाफ़िक़ अमली) मुनाफिक एतिकादी वह है कि जबान से तो इस्लाम का इज़हार करता हो मगर अपने दिल में कुफ्र छुपाए हुए हो। जैसे कि हुजूरे अकरम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के जमाने मे अब्दुल्लाह बिन अबी वगैरह मुनाफिको की एक जमाअत थी कि यह लोग बज़ाहिर कलिमा पढते थे, रोज़ा, नमाज़, हज, और ज़कात के भी पाबन्द थे। मगर दिल से इस्लाम के मुन्किर थे। यह वह लोग थे जिनके ईमान व अकीदा में ही निफाक था। मुनाफिके ऐतिक़ादी काफिर है बल्कि काफिर से भी बदतर है। कुरआन करीम का फरमान है कि " इन्नल मुनाफिकीन फिद्दर्किल असफलि मिनन नार" यानी मुनाफ़िके ऐतिक़ादी को जहन्नुम के सब से निचले तबके में डाल दिया जाएेगा।

मुनाफिक अमली वह है कि जिस के ईमान व अक़ाइद में कोई खराबी व निफ़ाक़ नहीं होता बल्कि वह जाहिर व बातिन में मुसलमान होता है। लेकिन उसके बाज आमाल और खसलतें मुनाफ़िको से मिलती जुलती है।

इस हदीस में जिस मुनाफ़िक की चार ख़सलतों का ज़िक्र है उस मुनाफिक से मुराद मुनाफिके अमली है। और चारों मुनाफ़िकाना ख़सलतों से मुराद मुनाफ़िकाना आमाल व किरदार हैं और वह चारों ख़सलतें यह हैं :–

1. जब कोई अमानत सौंपी जाए तो उसमें ख्यानत करे।
2. जब बात करे तो झूट बोले।
3. जब किसी से कोई अहद करे तो दगा करे।
4. जब किसी से किसी मामले में झगड़े तो गालियाँ दे।

बिलाशुबा यह चारों ख़सलतें हरगिज हरगिज मोमिन की ख़सलतें नहीं हैं बल्कि यह मुनाफ़िकों की ख़सलतें हैं और गुनाहे कबीरा हैं। लिहाजा जिस तरह एक मुसलमान को कुफ़्र व शिर्क और तमाम गुनाहे कबीरह से बचना जरुरी है। उसी तरह हर मुसलमान को लाज़िम है कि मुनाफ़िकों के ख़साइल और मुनाफ़िकाना आमाल व किरदार की गन्दगी और पलीदी से भी जो यक़ीनन ज़ाइल है अपने आपको बचाऐ रखे।

फ़वाइद व मसाइल :–इस बात पर तमाम उल्माऐ उम्मत का इजमाअ् व इत्तिफ़ाक़ है कि चारों ख़सलतें अगरचे मुनाफ़िकों के ख़साइल और निफ़ाक़ की अलामतें हैं मगर उसके बावुजूद अगर किसी सादिक़ुल ईमान मुसलमान में यह चारों खसलतें पायी जाऐं तो उसके बारे में यह कहना तो दुरुस्त है कि उस शख़्स में मुनाफ़िक़ों की आदतें और अलामतें पायी जाती हैं। लेकिन यह हरगिज हरगिज़ नहीं कह सकते कि यह शख़्स मुनाफ़िक़ होगा। क्यों ? इस लिए कि किसी शख़्स में मुनाफ़िक़ की आदत व अलामत का पाया जाना और बात है और उस शख़्स का मुनाफ़िक़ हो जाना यह और बात है।

इसकी मिसाल यूँ समझिये कि एक सैय्यद का बच्चा आकर खेत में से गन्ना चुरा कर और खाक धूल में लोट पोट कर और कीचड में लत पत होकर आया। और उसके बाप ने उसको डाँटते हुए यह कहा कि तेरे अन्दर तो चमारों की ख़सलतें और आदतें पायी जा रही हैं। तो चमारों की खसलतें बच्चे में पाये जाने से यह लाज़िम नहीं आता कि यह सय्यद का बच्चा चमार हो गया। इसी तरह अगर किसी मुसलमान में मुनाफ़िकों की आदतें और अलामतें पायी गई तो उस मुसलमान का मुनाफ़िक़ होना लाजिम नहीं आता।

बाज शारेह़ हदीस का कौल है कि यह इरशादे नबवी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम उन मुनाफ़िक़ो के बारे में जो ज़मानए नुबुव्वत में थे। जो सब के सब मुनाफ़िक़ एतिकादी भी थे। चुनाँचे हजरत अब्दुल्ला बिन अब्बास रदियल्लाहु तआला अन्हुमा ने फरमाया कि हम लोगों ने हुज़ूरे अकरम

सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम से इस हदीस के बारे में सवाल किया तो हुजूर सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने मुस्कुराकर फरमाया कि मैंने जो यह चारों खसाइल बयान किये हैं वह उन मुनाफिकों के बारे में हैं जिन के बारे में " इजा जाअ कल मुनफ़ेकून" की सूरह नाज़िल हुई है। क्या उन लोगों की जो हालत है वही तुम्हारी भी है ? तो हम लोगों ने अर्ज़ किया नहीं। तो इरशाद फ़रमाया कि यह हदीस तुम्हारे मुताअल्लिक नहीं है तुम इससे बरी हो।

मज़कूरा बाला रिवायत की बिना पर हदीस मज़कूर में हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने अपने ज़माने के मुनाफ़िकों की निशानियाँ बयान फ़रमाई हैं कि उन लोगों में ख़यानत, झूट,दग़ा बदजुबानी की बुरी आदतें और गन्दी ख़सलतें हैं।

बहर हाल इसमें कोई शक नहीं कि यह चारों आदतें बद से बदतर खसलतें हैं। लिहाजा इन गन्दी आदतों से हर मुसलमान को बचना इन्तिहाई जरुरी है। क्योंकि एक मोमिन के अन्दर मुनाफिक़ो की अलामतों और निशानियों का पाया जाना इसके दामने ईमान पर इतना गन्दा और घिनौना धब्बा है कि बिग़ैर तौबा व तर्क के सातों समुन्द्र भी उसको नहीं धो सकते।

अब इन चारों अलामाते निफ़ाक़ की कुछ तफ़सील भी मुलाहिज़ा फ़रमाईये।

अमानत में ख़यानत :– पहली अलामते निफ़ाक अमानत में ख़्यानत करना है। याद रखिए कि अमानत हर वह चीज़ है जो किसी की तरफ से किसी को ब ग़र्ज़े हिफाज़त सौंपी जाए। अमीन अमानत रखने वाले की इजाज़त के बिग़ैर और उसकी मंशा के ख़िलाफ़ अमानत में जो तसर्रुफ भी करेगा, वह ख़्यानत कहलायेगी।

इस सिलसिले में यह भी मलहूज़े खातिर रहना चाहिये कि अमानत सिर्फ रुपये पैसे या सामानों ही की नहीं हुआ करती बल्कि बात,राज,ज़िम्मादारी वग़ैरह भी अमानत हैं। मसलन आपसे किसी ने कोई राज़ की बात कह दी और आप से उसने यह भी कह दिया कि ख़बरदार यह बात अमानत है आप इसको किसी से ज़िक्र न करें। तो यह बात भी अमानत हो गई और आप उसके अमीन हो गये। अगर आपने इस बात को किसी से कह दिया तो आप ने अमानत में ख़यानत की।

इसी तरह अल्लाह तआला ने अपने बन्दों को माल,अक्ल,इख़्तेयार,आँख कान,हाथ पाँव, वगै़रह जिस्मानी आज़ा और क़िस्म क़िस्म की ताक़तें सौंप

कर हुक्म दिया कि मेरी इन अमानतों को मेरे हुक्म के मुताबिक इस्तेमाल करना। तो इन सब अमानतों में भी अगर खुदावन्दी हुकूक को अदा नहीं किया है तो यह भी ख़यानत ही कहलायेगी। इसी लिए कुरआन मजीद में रब्बुल आलमीन का फ़रमान है कि " इन्नस समअ् वल ब स र वल फ़ुवाद कुल्लु उलाएका काना अन्हु मसऊला"।

यानी कान, आँख दिल हर चीज़ के बारे में पूछ गछ होगी कि खुदा की इन अमानतों में कोई ख़यानत तो नहीं हुई।

हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया कि " अल मुसतशारो मोअ तमन "। यानी जिस शख़्स से कोई मशवरा लिया जाए वह आमीन हो जाता है अगर उसने जान बूझ कर ग़लत मशवरा दिया तो वह ख़यानत करने वाला कहलायेगा।

ग़र्ज़ ख़यानत का दायरा बहुत वसीअ् है। तमाम हकदारों के हुकूक भी अमानत हैं किसी हक़दार का हक़ न अदा करना भी अमानत में खयानत है। बिस्तरे जिमाअ् पर मियाँ बीवी की गुफ़्तगू और मुआमलात, यह भी अमानत हैं और मियाँ बीवी एक दूसरे के अमीन हैं। अगर किसी ने इस राज़ को फाश कर दिया तो यह भी अमानत में ख़यानत कहलायेगी। मुलाज़िम अपनी ड्यूटी का, हाकिम रईयत के साथ अपने फराइज़ का अमीन है। अगर मुलाज़िम ने अपनी ड्यूटी पूरी नहीं की या हाकिम ने जुल्म किया तो यह भी अमानत में ख़्यानत है। ग़र्ज़ अमानत में ख़यानत की बहुत सी सूरतें हैं। और हर किस्म की अमानतों में ख़यानत हराम व गुनाह है। कुरआन करीम में ग़फ़ूरुर रहीम का इरशाद है कि –

या अय्योहल लज़ीना आमनू ला तख़ूनूल्लाह वर्रसूल व तख़ूनू अमानातेकुम व अन्तुम तअ्लामून।

यानी ऐ ईमान वालो! तुम अल्लाह व रसूल के साथ ख़यानत मत करो और अपने आपस की अमानतों में भी ख़यानत मत करो और तुम जानते हो।

झूट :– यह बहुत ही मलाऊन आदत, सख़्त हराम और गुनाहे कबीरा है। कुरआन मजीद में" उलाएका हुमुल काज़ेबीन" कहीं मुशरिकों की सिफत बतायी गयी है, कहीं काफ़िरो की, कहीं मुनाफ़िकों की, कहीं फ़ासिकों की। बुख़ारी व मुस्लिम की हदीस है कि "तुम लोग अपने से झूट को बचाऐ रखो। इस लिए कि झूट बदकारी की तरफ रहनुमाई करता है। और बदकारी

जहन्नुम मे खींच कर ले जाती है। और आदमी हमेशा झूट बोलता और झूट का मुतलाशी रहता है। यहाँ तक कि दफ्तरे खुदावन्दी में वह " कज्जाब" लिख दिया जाता है। (मिशकात, बाबुल हिफ्जुल लिसान)

एक हदीस में है कि हुजूरे अकरम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम से किसी ने सवाल किया कि क्या मोमिन बुजदिल हो सकता है ? हुजूर सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने इरशाद फ़रमाया कि हाँ। फिर उसने अर्ज किया कि मोमिन बख़ील हो सकता है ? इरशाद फरमाया कि हाँ, फिर उसने दरयाफ़्त किया कि क्या मोमिन झूटा हो सकता है ? तो हुजूर सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने इरशाद फ़रमाया कि नहीं।

अहद शिकनी :— किसी से कोई मुआहिदा या वादा करके बिला किसी उज्र शरई के इस मुआहिदा और वादे से फिर जाना यह अहद शिकनी और दगा बाज़ी है। जो शरअन ह़राम व गुनाह है। कुरआन मजीद में रब का फ़रमान है " या अय्योहल लज़ीना आमनू औफुल बिल उकूद " यानी ऐ ईमान वालो ! अपने अहदों और वादों को पूरा करो।

वाज़ेह रहे कि जिस तरह किसी मख़लूक़ से अहद शिकनी ह़राम व गुनाह है उसी तरह अपने ख़ालिक व मालिक अल्लाह तआला से भी अहद शिकनी व बद अहदी इससे कहीं बढ़कर ह़राम व गुनाह है। अल्लाह तआला ने हर इन्सान से अपनी तौहीद के इक़रार का अहद लिया है और उल्माऐ किराम से खुसूसी तौर पर अहद लिया है कि वह कभी भी और किसी हाल में भी हक़ को न छुपाऐं। इस लिए जो मुसलमान या उल्माऐ किराम अपनी किसी दुनियावी मसलेहतों की बिना पर मुश्रेकीन की खुशनूदी के लिए शिर्क के काम कर बैठते हैं। या कलिमए ह़क़ को छुपाते हैं या उसको बयान करने से सुकूत करते हैं वह भी अह्द शिकनी और खुदा के साथ दगा करने के मुजरिम हैं।

गाली : — गाली गलौच और बद गोई व बद ज़ुबानी खुसूसन अपने मुसलमान भाई के साथ इन्तिहाई क़बीह ख़सलत और निहायत मायूब और घिनौनी आदत है। गाली गलौच तो कुजा ? किसी मुसलमान से इस तरह की हँसी मज़ाक़ करना जिससे उसकी दिल आज़ारी हो, या किसी मुसलमान को ऐसे अल्क़ाब से याद करना जिससे उसको ईज़ा पहुँचती हो। खुदावन्दे आलम ने कुरआन मजीद में उसको हराम क़रार दिया। सूरह हुजरात की

इस आयत को निगाहे इबरत से देखिए और मुनाफिकाना सीरतों और फासिकाना आदतों से तौबा कीजिए। इरशादे खुदावन्दी है कि " या अय्योहल लजीना आमनू ला यसखर कौमन मिन कौमिन असा अयं यकूनू खैरम मिनहुम वला निसाउन मिन निसाइन असा अयं यकूना खैरम मिनहुन्ना।

ऐ ईमान वालो! न मर्द मर्दो का मजाक उड़ाये, अजब नहीं कि वह हँसी उड़ाने वालों से बेहतर हों। और न औरतें औरतों से हँसी ठट्टा करें। हो सकता है कि उन हँसने वालियों से वह बेहतर हों।

" वला तलमिजू अनफुसाकुम वला तना वजू बिल अलकाब "

और आपस में एक दूसरे का ताना मत मारो, और न एक दूसरे के बुरे नाम रखो।

"बेअ्सल इस्मुल फुसूक़ बअ् दल ईमाने व मल लम यतुबा, फा उलाइका हुमुज्ज़ालेमून।"

क्या ही बुरा नाम है मुसलमान होकर फ़ासिक़ कहलाना, और जो तौबा न करें वही लोग ज़ालिम हैं।

इबरत : – अल्लाहु अकबर ! जब किसी मोमिन से इस क़िस्म का मज़ाक़ भी जायज़ नहीं है जिससे उसकी दिल आजारी होती हो और न किसी मोमिन को ऐसे बुरे अल्क़ाब से पुकारना जाइज है जिसमें उसकी अहानत का पहलू हो। तो फिर भला किसी मोमिन को गालियाँ देना किस तरह जाइज़ हो सकता है। एक हदीस शरीफ में आया है कि " सबाबुल मुस्लिमि फुसूकुन व क़ितालोहू कुफरुन" यानी किसी मुसलमान से गाली गलौच करना फिस्क़ है और किसी मुसलमान से जंग करना यह काफ़िरों का काम है। बहरहाल किसी मुसलमान को गालियाँ दे कर, या उसके सामने बेहूदा अल्फ़ाज़ जुबान से निकाल कर ईजा देना, यह मुनाफिकों की ख़सलत और उनका तरीक़ा है। गाली देना, बेहूदा बकना, फहश कलामी करना, हरगिज़ हरगिज़ मोमिन का काम और मोमिन की ख़सलत नहीं। **वल्लाहु तआला अअ्लम।**(1)

---

(1)अल्बत्ता अल्लाह तआला कीजात के मुन्किर या गुस्ताखे रसूल सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम, गर्ज कि किसी भी बे दीन शख्स के मुकाबले पर बाज वक्त जोश में मोमिन के मुँह से कोई गाली निकल जाए तो यह उसके ईमान की निशानी है। कि गुस्ताखे रसूल को सूरह नून में दस गालियाँ(ऐब जाहिर किये) जिनमें आखिरी हराम जादा। इसी तरह कामिल सूरह तब्बत और सूरह कौसर की आखिरी आयत से जाहिर है कि उनके ऐब बयान करने फर्ज, और नफरत ईमान की जिला, उनसे और अल्लाह और उसके रसूल सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के लिए बुग्ज व अदावत आला तकवा है।

मुश्तबाह चीज़ों से बचो

हदीस नम्बर — 7

عن عامر قال سمعت النعمان بن بشير يقول سمعت رسول الله ﷺ يقول الحلال بين والحرام بين و بينهما مشتبهات لا يعلمها كثير من الناس فمن اتقى المشبهات استبرا لدينه و عرضه ومن وقع في الشبهات كراع يرعى حول الحمى يوشك ان يواقعه الا و ان لكل ملك حمى الا ان حمى الله في ارضه محارمه الا و ان في الجسد مضغة اذا صلحت صلحا الجسد كلهٔ و اذا فسدت فساد الجسد كلهٔ الا وهي القلب. (بخاری، جلد اول، ص ۱۳)

अन आमिरिन काला समिअ्तुन नोअ्मान बिन बशीरिन यकूलो समेअ्तो रसूलल्लाहि स़ल्लल्लाहु तआला अलैहि वसल्लम यकूलु हलालो बय्यना वल ह़रामो बय्यना व बयनाहुमा मुशतब्बेहातुन ला यअ् लमुहा कसीरुम मिनन नासि, फ़ मनित्तक़ल मुशब्बाहाते इस्तबरन ले दीनेही व इरदेही व मन वक़ाआ फ़िश्शुब्बाहाते कराइन यरई हौलल ह़िमा यूशिकु अयं युवाकेऐहू अला व इन्ना लि कुल्ले मलिकिन हिमा अ़ला इन्ना हिमल्लाहि फ़ी अरदेहि महारिमोहु अला व इन्ना फ़िल जसदि मुद़गतन इज़ा स़लह़तो स़लह़ल जसादो कुल्लुहू व इज़ा फ़सादत फ़सादल जसादो कुल्लोहू इल्ला व हियल क़ल्ब।

(बुख़ारी जिल्द 1 सफ़्ा 13)

तर्जुमा : — आमिर (शुअ्बी) से रिवायत है उन्होनें कहा कि मैंने हज़रत नोमान बिन बशीर रदि़यल्लाहु अ़न्हु से सुना। वो कहते थे कि मैनें रसूलुल्लाह स़ल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम को यह फ़रमाते हुए सुना कि हलाल जाहिर है और ह़राम ज़ाहिर है और इन दोनों के दरमियान कुछ मुश्तबह चीजें हैं जिन को बहुत से लोग नहीं जानते। तो जो कोई शुबा की चीज़ों से बच गया उसने अपने दीन और अपनी आबरु को बचा लिया। और जो कोई शुबा की चीज़ों में पड़ गया तो उसकी मिसाल उस चरवाहे की है जो बादशाह की महफूज़ चरागाह के आस पास अपने जानवरों को चराये। तो हो सकता है कि वह जानवर शाही चरागाह में दाख़िल हो जायें।

सुन लो! हर बादशाह की एक हिमा (महफूज़ मख़सूस चरागाह) होती

है और अल्लाह का हिमा उसकी ज़मीन में वह चीज़ें हैं जिनको उसने हराम ठहराया है। खबरदार! बदन में एक गोश्त की बोटी ऐसी है कि अगर वह दुरुस्त है तो सारा बदन दुरूस्त है। और अगर वो फ़ासिद हो गई तो सारा बदन बिगड़ गया। सुन लो वह दिल है।

हज़रत नोमान बिन बशीर :– इस हदीस के रावी नोमान बिन बशीर अन्सारी रदियल्लाहु अन्हु मशहूर सहाबी हैं। उनके वालिदैन भी सहाबी हैं हिजरत के बाद क़बीलऐ अन्सार में जो सब से पहला बच्चा पैदा हुआ वह आप हीं हैं। हुजूरे अकरम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की वफ़ात के वक्त आप की उम्र आठ बरस सात माह की थी।

हज़रत अमीर मुआविया रदियल्लाहु अन्हु के दौरे हुकूमत में आप कूफ़ा के गर्वनर थे। आपसे कुल एक सौ चौदह हदीसें मरवी हैं। 64 हिजरी या 65 हिजरी में शहरे हमस के अन्दर आपकी शहादत हुई। सहाबा किराम में तक़रीबन तीन आदमियों का नाम " नोमान" है, मगर नोमान बिन बशीर यही एक हैं।(अकमाल व फ़ुयूज़ल बारी, जिल्द, 1 सफ़ा 202)

शरहे हदीस :– इस हदीस का मतलब यह है कि कौन कौन सी चीज़ें हलाल हैं? और कौन कौन सी चीज़ें हराम हैं ? यह तो बिल्कुल वाज़ेह और ज़ाहिर है और इसको हर आलिम जानता है कि कुरआन व हदीस ने जिन जिन चीज़ों को हराम क़रार दिया यह हलाल हैं। जैसे पानी गेहूँ,चावल, मेवा वगैरह और जिन जिन चीजो को हराम ठहरा दिया यह हराम हैं। जैसे शराब, मुरदार ख़िनज़ीर वग़ैरह। लेकिन कुछ चीज़े ऐसी हैं जिनका हलाल या हराम होना मुश्तबह है। और दलाइल में तआरुज़ होने की वजह से बहुत से लोग उसके हराम या हलाल होने के बारे में नहीं जानते।

लिहाज़ा जो शख़्स हराम को छोड़ने के साथ साथ उन मुश्तबह चीज़ों को भी छोड़ देगा। उसका दीन महफ़ूज़ और उसकी आबरु सलामत रहेगी। और जो शख़्स मुश्तबह चीज़ों से परहेज़ नहीं करेगा वह कभी न कभी हराम में भी ज़रुर मुबतला हो जाएगा। उस शख़्स की मिसाल ऐसी है कि जैसे कोई चरवाहा अगर अपने जानवरों को बादशाह की मख़सूस चरागाह के इर्द गिर्द चराएगा। तो कभी न कभी उसके जानवर बादशाह की महफ़ूज़ चरागाह में भी ज़रुर दाख़िल हो जायेंगे। और यह चरवाहा ग़ज़बे सुल्तानी की सज़ा में गिरफ्तार हो जाएगा।

हुज़ूरे अकरम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम यह एक मिसाल देकर समझाते हैं कि जिस तरह हर बादशाह की एक महफ़ूज व मखसूस चरागाह होती है। जिसमें किसी जानवर को चराने की इजाजत नहीं होती और उसको हिमा कहते हैं। इसी तरह तमाम बादशाहों के बादशाह अल्लाह तआला ने भी कुछ चीज़ों को हराम ठहरा कर हर शख़्स को मना फ़रमा दिया है कि ख़बरदार कोई इसके क़रीब न जाए। तो यह हराम चीज़े गोया अल्लाह तआला की हिमा हैं कि जिस तरह बादशाह की हिमा में किसी को दाख़िल होने इजाज़त नहीं होती उसी तरह अल्लाह तआला की हराम की हुई चीज़ों के पास किसी को फटकने की इजाज़त नहीं है। ख़ुलासा यह है कि मुसलमान को हराम और मुश्तबह चीज़ों से बचना और परहेज़ करना ज़रूरी है।

फिर आगे इरशाद फ़रमाया कि इन्सान के बदन में गोश्त का एक लोथड़ा ऐसा है कि वह अगरचे एक छोटी सी गोश्त की बोटी है मगर उसकी इतनी अहमियत है कि अगर वह दुरुस्त और ठीक रहा तो सारा बदन दुरुस्त और ठीक रहेगा। और अगर वह बिगड़ गया तो सारा बदन बिगड़ जायेगा। इसलिए कि हर अच्छा और बुरा ख़्याल और जज़्बा इसी दिल में ही पैदा होता है। और बदन का हर एक अज़ू इसी दिली ख़्यालात व जज़्बात के मुताबिक ही अपने अमल में मशग़ूल हुआ करता है। तो दिल गोया तमाम आज़ाऐ बदन का हाकिम बल्कि बादशाह है।

लिहाज़ा अगर दिल में नेकी का जज़्बा और ख़्याल पैदा हो तो बदन का हर हर अज़ू और जोड़ जोड़ नेकी के आमाल में मशग़ूल हो जाएगा। और अगर दिल में बदी का ख़याल और जज़्बा पैदा हुआ तो फिर बदन का एक एक अज़ू और जिस्म की एक एक बोटी बदी और गुनाह की हरकतों में मसरुफ़े अमल हो जायेगी। तो पता चला कि पूरे बदन की इस्लाह व फ़साद का दारोमदार क़ल्ब ही पर है। इसी लिए तमाम उल्माऐ शरीअत व अरबाबे तरीक़त का इस हकीक़त पर इजमाअ व इत्तिफ़ाक है कि क़ल्ब अशरफुल आज़ा बल्कि पूरे बदन का बादशाह है। लिहाजा हर मुसलमान पर लाज़िम है कि वह अपने क़ल्ब की इस्लाह करे।

और दर हकीकत तमाम अक़ाइदे इस्लामिया और सूफ़ियाऐ किराम के अज़कार व मुराक़बात इसी दिल ही की इस्लाह के लिए हैं। और जिस दिल की इस्लाह हो गई तो वह क़ल्बे सलीम कहलाने का मुस्तहिक़ हो गया। तो

उसको अगर आफ़ताब की तरह आलमे आश्कार है। हज़रत मौलाना आसी अलैहिर्रहमा ने इसी दिल के बारे में इरशाद फ़रमाया कि : –

बुते पिन्दार जब इसमें से जुदा होता है
यही दिल रुतबे में काबे से जुदा होता है

OOOO

दिल जो है खास घर उसका न बनाया अफ़सोस
मस्जिद व दैर बनाया करो क्या होता है ?

इसी तरह किसी दूसरे आरिफ़ ने भी " क़ल्बे मोमिन" की अज़मत का खुतबा पढ़ते हुए क्या खूब कहा है ।

दिल का भी एक मुक़ाम है वाइज़
मस्जिदो ख़ानक़ाह से पहले

फ़वाइद व मसाइल : – 1. इस हदीस को इमाम बुख़ारी व मुस्लिम व निसाई ने किताबुल बूयूअ् में भी ज़िक्र किया है और इब्ने माजा इस हदीस को किताबुल फ़ितन में तहरीर किया है।

2. अल्लामा ख़िताबी अलैहिर्रहमा ने फ़रमाया कि इस हदीस में " ला यअ्लमोहा कसीरुम मिनन नास" के अलफ़ाज़ से मालूम हुआ कि अक्सर लोग यानी अवाम तो मुश्तबेहात के हुक्म को नहीं जानते। मगर बाज़ लोग यानी आइम्मए मुजतहेदीन अपने इजतिहादे इल्मी की बसीरत से दलाइल के तआरुज़ को छान बीन कर मुश्तबेहात को खूब अच्छी तरह जान पहचान लेते हैं कि वह हराम है या हलाल। मुश्तबेहात उन ही लोगो के लिए मुश्तबह हैं जो अवाम हैं और इजतिहादी बसीरत से महरुम हैं। लेकिन हाँ यह मुमकिन है कि मुजतहिद भी बावुजूद दलाइल में इन्तिहाई ग़ौर व फ़िक्र करने के बाज मुश्तबेहात के हुक्म को न पहचान सके। चुनाँचे मशहूर है कि खजूर की नबीज़ के मुतअल्लिक़ इमामे आज़म रहमतुल्लाह अलैहि फ़रमाया करते थे कि मैं ख़ुद इसको इस्तेमाल नहीं कर सकता। लेकिन उसके हराम होने का फ़तवा भी नहीं दे सकता। हज़रत इमाम के इस क़ौल की यही वजह है कि आप को इस हुक्म के बारे में इश्तिबाह था। इसलिए तक़वा का तक़ाज़ा यही था कि मुश्तबह चीजों से भी परहेज़ किया जाए।

3. इस हदीस से मालूम हुआ कि हर वह चीज़ जिसके हलाल व हराम होने में शुबा हो उससे परहेज़ ही करना चाहिये। वल्लाहु तआला अअ्लम।

उल्माऐ दीन

हदीस नम्बर – 8

قال حميد بن عبد الرحمن سمعت معاوية خطيبا يقول سمعت النبي ﷺ يقول من يرد الله به خيرا يفقهه في الدين و انما انا قاسم والله يعطي ولن تزال هذه الامة قائمة على امر الله لا يضرهم من خلفهم حتى ياتي امر الله. (بخاری، جلداول، ص ۱۶)

क़ाला हमीदुन बिन अ़ब्दुर्रहमान समेअ़तु मुआ़विया ख़तीबयं यक़ूलु समेअ़तुन्नबीय स़ल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम यक़ूलो मयं युरेदिल्लाहु बिहि ख़ैरन युफ़क़्क़िहहु फ़िद्दीनि व इन्नमा अना क़ासिमुन वल्लाहु योअ़ती वलन तज़ाला हाज़िहिल उम्मतु क़ाएमतुन अला अमरिल्लाहि ला युदिर्रोहुम मन ख़लफ़हुम हत्ता यातिया अमरुलल्लाह। (बुख़ारी जिल्द, 1 सफ़ा 16)

तर्जुमा :– हमीद इब्ने अ़ब्दुर्रहमान कहते हैं कि मैनें हज़रत अमीरे मुआ़विया को बहालते ख़ुतबा यह कहते हुए सुना कि हुज़ूर नबीए करीम स़ल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम फ़रमाते थे कि अल्लाह तआला जिसके साथ भलाई का इरादा फ़रमाता है उसको दीन की समझ अता फ़रमाता है। और मैं तक़सीम करने वाला हूँ। और अल्लाह अ़ता फ़रमाता है और उस उम्मत की एक जमाअत हमेशा अल्लाह तआला के दीन पर क़ायम रहेगी। उनके मुख़ालेफ़ीन उनको कोई नुक़सान नहीं पहुँचा सकेंगे। यहाँ तक कि अल्लाह का अम्र आ जाए।

हज़रत अमीरे मुआ़विया : – इस हदीस के रावियों में हज़रत अमीरे मुआविया रदियल्लाहु अ़न्हु की हस्ती क़ाबिले ज़िक्र है। आप सरदारे मक्का अबू सुफ़यान रदियल्लाहु तआ़ला अन्हु के फ़रज़न्द है। आपकी वालिदा माजिदा का नाम " हिन्दा" था। 8 हिजरी फ़तेह मक्का के साल आप ने इस्लाम क़बूल किया और दरबारे रिसालत में इतने मुअ़तमद सहाबी क़रार पाये कि हुज़ूर स़ल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने " कातिबे वही" का ओहदा उनको अता फ़रमाया। ख़िलाफ़ते राशिदा के दौर में शाम के गवर्नर रहे फिर तमाम आलमे इस्लाम के बादशाह हो गये। रजब 60 हिजरी 78

बरस की उम्र पाकर वफ़ात पायी। आपसे 136 हदीसें मरवी हैं।

(फुयूजुल बारी, जिल्द, 1 सफा 226)

शरहे हदीस : – इस हदीस के तीन जुज़ हैं। पहले जुज़ का मतलब यह है कि अल्लाह तआला जिस शख़्स को दीन में "फक़ीह" बनाता है। यानी उसको इतना इल्म अता फ़रमाता है कि वह अपनी इल्मी बसीरत से दीन को ईमानी मअ्रिफ़त के साथ समझने लगता है तो फिर यह समझ लेना चाहिये बल्कि यक़ीन कर लेना चाहिये कि अल्लाह तआला ने उस शख़्स के साथ भलाई फ़रमाने का इरादा फ़रमा लिया है। क्योंकि अल्लाह तआला जिसके साथ भलाई करने और ख़ैर अता फ़रमाने का इरादा फ़रमाता है उसको दीन का इल्म और दीन को समझने का फहम अता फ़रमाता है।

इस हदीस का दूसरा जुज़ यह है कि मैं ख़ुदा की नेअ्मतों को तक़सीम करने वाला हूँ। और अल्लाह तआला नेअ्मतों का अता फ़रमाने वाला है। मतलब यह है कि अल्लाह तआला ने अपनी नेअ्मतों की तक़सीम मेरे सुपुर्द फ़रमायी है। इस लिए मेरे वसीले और वास्ते के बिगैर किसी को ख़ुदा की कोई नेअ्मत नहीं मिल सकती है।

इस हदीस का तीसरा जुज़ यह है कि हुज़ूरे अकरम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम एक ग़ैब की ख़बर दे रहे हैं और वह यह है कि हुज़ूरे अकरम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की उम्मत में हर दौर के अन्दर एक जमाअत ऐसी ज़रूर रहेगी जो हमेशा और हर हाल में दीन पर पूरी इस्तिक़ामत के साथ क़ायम रहेगी। और उसके मुख़ालेफीन लाख उनको नुकसान पहुँचाना चाहें मगर उन लोगों को कोई नुक़सान नहीं पहुँचा सकेंगे। और हज़ारो जुल्म व जोर के बावुजूद बाल बराबर भी इस जमाअत को सिराते मुस्तकीम से न हटा सकेंगे।

फ़वाइद व मसाइल : –

1. फिका के दो माने होते हैं एक लुगवी, दूसरे इस्तेलाही। फिकह के लुगवी माने फहम, इल्म, समझ हैं और इस्तेलाही माना की तफ़सील यह है कि अहकामे शरीअत की दो किस्में हैं। अव्वल अहकामे शरईया ऐतिकादिया यानी वह मसाइल जिन का ताअल्लुक सिर्फ अकाइद से है जैसे तौहीद व रिसालत और क़ियामत वग़ैरह पर ईमान लाना। दोम अहकामे शरीआ अमलिया यानी वह मसाइल जिन का ताअल्लुक ऐतिकाद के बाद अमल से

भी है। जैसे नमाज रोजा, और हज व ज़कात वगैरह।

पहली किस्म यानी अहकामे शरीअत एतिकादिया के जानने को "इल्मे कलाम" कहते हैं और दूसरी किस्म यानी अहकामें शरईया अमलिया के जानने का नाम " इल्मे फ़िकह" है। इस हदीस में फ़िका के लुग़वी माने मुराद है।"युफ़क्किहहु फ़िद्दीन" के माना यह है कि अल्लाह तआला उसको दीन की फहम, यानी दीन को समझने का इल्म अता फरमाता है।

2. इन्नमा अना क़ासिमुन वल्लाहु युअ्ति" के दोनों जुमलों पर अहले इल्म को ग़ौर करना चाहिये कि क़ासिम और युअ्ति दोनों का मफ़अूल महज़ूफ़ क्या है ? यानी रसूल किन किन चीज़ों को बाँटते हैं। और अल्लाह कौन कौन सी चीजे़ अता फ़रमाता है। इस हदीस में इसका ज़िक्र नहीं है। अब सवाल यह है कि वह मफ़ऊले महज़ूफ़ क्या है ? इस सवाल को हल करना है तो इसमें तो कोई शक व शुबाह नहीं कि " युअ्ति" का मफ़ऊल यक़ीनन " कुल्लो शैइन" है। यानी अल्लाह तआला हर हर चीज का देने वाला है। तो ज़ाहिर है कि जो" युअ्ति" का मफ़ऊल होगा वह " क़ासिम" का भी मफ़ऊल होगा।

लिहाज़ा सबित हुआ कि इस हदीस का साफ़ साफ़ हासिले मतलब यही है कि अल्लाह तआला हर हर चीज़ का देने वाला है और मैं अल्लाह की दी हुई हर हर चीज़ का तक्सीम करने वाला हूँ। इस लिए मालूम हुआ कि अल्लाह की अता की हुई नेअ्मतों और दौलतों में से कोई नेअ्मत और दौलत किसी को बिगैर हुजूरे अकरम स़ल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम के वसीले के नहीं मिल सकती है। सुब्हानल्लाह।

बे उनके वास्ते के खुदा कुछ अता करे
हाशा ग़लत ग़लत यह हवस बे बसर की है

3. इस हदीस में " मयं युरिदिल्लाहो ख़ैरन" के जुम्ले में लफ्ज़ "ख़ैरन" नकरह है। और उसकी तनकीर या तो नोअ् के लिए या ताज़ीम के लिए। अगर इस तन्कीर को नोअ् के लिए माना जाए तो हदीस शरीफ़ का यह मतलब होगा कि " जिस शख़्स के साथ एक खास किस्म के ख़ैर और भलाई का खुदावन्द तआला इरादा फ़रमाता है उसको इल्मे दीन अता फ़रमाता है।

बहर हाल इस हदीस से उल्माए हक़ की बहुत बड़ी फ़ज़ीलत साबित

होती है और रहमते आलम के इस फ़रमान में उल्माए हक़ के लिए बहुत बड़ी बशारत, और तस्कीने क़ल्ब का सामान भी है। और वह यह कि जब अल्लाह अज्ज़वजल ने उल्माऐ दीन के साथ एक ख़ास क़िस्म की भलाई या बहुत बड़ी भलाई का इरादा फ़रमा लिया है। तो फिर किसी इन्सान या शैतान का शर, खुदा के ख़ैर पर कभी भी और कहीं भी ग़ालिब नहीं हो सकता। इस लिए साबित हो गया कि उल्माए दीन के साथ शर और बुराई का बर्ताव करने वाला कभी हरगिज़ हरगिज़ फ़लाह नहीं पा सकता।

इल्मे दीं है शम्ऐ हक़, इसको बुझा सकता है कौन ?
जिस का हामी हो खुदा उसको मिटा सकता है कौन ?

लिहाज़ा उल्माए किराम को लाज़िम है कि वह कभी भी अहसासे कमतरी में मुब्तला न हों और ग्रेजुएटों और दौलतमन्दों के सामने कभी हरगिज़ हरगिज़ मरऊब न हों। और हुज़ूरे अकरम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के इस इरशाद पर नज़र रखें और एक दूसरी हदीस भी हमेशा पेशे नज़र रखें। खुदा के महबूब सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम का फ़रमान है कि :-

रश्क के काबिल फ़क़त दो ही आदमियों की ज़िन्दगी है एक तो वह मालदार जो खुदा की राह में अपना माल ख़र्च करता है। और दूसरा वह आ़लिम जिसको अल्लाह तआला ने हिकमत (इल्मे दीन) अता फ़रमाया। और वह उससे फ़ैसला करता है और दूसरों को इल्म सिखाता है।

देख लीजिए कि मालदार सख़ी और आ़लिमे दीन की ज़िन्दगी के सिवा किसी अमीर व वज़ीर या बादशाह की ज़िन्दगी को भी हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने काबिले रश्क नहीं फ़रमाया है।

लिहाज़ा यह पता चला कि उल्माए दीन की मुक़द्दस ज़िन्दगी सारी दुनिया के लिए क़ाबिले रश्क है। तो फिर उल्माऐ किराम इसके लिए अहसासे कमतरी का कोई सवाल ही नहीं है। उल्माए हक़ बिला शुबा खुदा की ज़मीन पर चमकते हुए चिराग़े हिदायत हैं खुदावन्द करीम ने उनको अपने ख़ैरे अज़ीम के साथ नवाज़ा है इसी लिए ज़मीन पर दरिन्दे, चरिन्दे, परिन्दे चीटियाँ अपने बिलों में मछलियाँ दरयाओं में उनके लिए दुआऐ रहमत को अपना वज़ीफ़ा बनाये हुए हैं। फ़रिश्तों की मुक़द्दस जमाअत उन तालिबाने इल्मे दीन की रज़ा जोई के लिए अपने पर बिछा देती है। सुब्हानल्लाह! सुबहानल्लाह! जब ख़ालिके कायनात का फ़ज़्लोकरम और कायनाते आलम

की दुआऐं मलाएका के बिछे हुए पर, उल्माए दीन का एजाज बढ़ा रहे हैं तो अगर चन्द मुरदार किस्म के दुनियादार उल्माए रब्बानीन को हिकारत की नजर से देखें तो इस का क्या गम है ? जो लोग आज उल्माए किराम को हिकारत की नजर से देख रहे हैं यह वही लोग हैं जिन्होंने अल्लाह तआला के मुकद्दस रसूल सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के फरमानों से मुँह मोड़ लिया है। और दुनिया की दौलत पर मगरुर होकर और अल्लाह के नेक बन्दों की तहकीर व तजलील करके अपनी आखिरत को खराब कर रहे है।

उल्माए हक को लाजिम है कि इन मगरुर बद खिसाल जहान की ईज़ा रसानियों पर सब्र करें और हरगिज हरगिज दिल शकिस्ता होकर एअ़ला–ए कलिमतुल हक के मन्सबे जलील से अलग न हों। खुदा वन्द कुद्दूस ने अपने हबीब सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम को यह हुक्म दिया कि " खुजिल अफवा वामुर बिल उरफ़े वाअ़ रिद् अनिल जाहेलीन।" यानी ऐ महबूब! आप लोगों की ख़ताओं को मुआफ फ़रमा दें। और नेकी का हुक्म देते रहें और जाहिलों से ऐअ़राज़ करते रहें।

---

(1) अलबत्ता जो उल्मा अल्लाह और उसके रसूल सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के गुस्ताख है दर असल वह उल्मा नही बल्कि अजहल है। हैवानों से बदतर है कि किसी हैवान ने अल्लाह व रसूल की बे अदबी नहीं की।

हदीस गढ़ने वाला जहन्नुमी है

हदीस नम्बर – 9

سمعت ربعی بن حراش یقول سمعت علیا یقول قال النبی ﷺ لا تکذبوا علی فانه من کذب علی فلیلج النار.

समिअ़तु रुबई इब्ने हिराश यकूलो समेअ़तो अ़लीयन यकूलो कालन्नबीयो सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ला तकजिबू अलय्या फ इन्नहु मन क ज ब अ़लय्या फलयलिजिन्नार। (बुख़ारी, जिल्द, एक, सफ़ा 21)

तर्जुमा : – रबई बिन हिराश कहते हैं कि मैंने हजरत अली रदियल्लाहु अन्हु को यह कहते हुए सुना कि नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फरमाया : मुझ पर झूट मत बाँधो, क्योंकि जो मुझ पर झूट बाँधेगा वह जरुर जहन्ननुम में दाख़िल होगा।

इस हदीस के रावियों में " रबअ़ी बिन हिराश" और " हजरत अली रदियल्लाहु अन्हु" खास तौर पर काबिले ज़िक्र हैं। लिहाज़ा यह हदीस की शरह पढने से पहले इन दोनों मुकद्दस बुर्जुगो के अहवाल के मुतालअ से अपनी बसारत को पूरनूर कर लीजिए।

रबई बिन हिराश :– कूफ़ा के रहने वाले बहुत ही जलीलुल कदर ताबअी मुहद्दिस हैं। हजरत उमर, हजरत अली, हजरत अब्दुल्ला इब्ने मसऊद वग़ैरह सहाबा किराम रदियल्लाहु अन्हुम के शार्गिदे रशीद हैं। बहुत ही मुत्तकी, इबादत व रियाजत में मुमताज, जिन्दगी भर में कोई झूट आपकी जुबान पर नही आया। आपकी और आपके भाई रबीअ बिन हिराश की एक मशहूर करामत यह है कि दोनो भाइयों ने कसम खा ली थी कि हम उस वक्त तक नहीं हँसेंगे जब तक हमें यह मालूम न हो जाए कि हम जन्नती हैं। चुनाँचे तमाम उम्र में यह दोनों कभी नहीं हँसे। मगर इन्तेकाल के बाद गुस्ल देने वालों और दूसरे हाजेरीन का बयान है कि जब तक इन दोनों को गुस्ल दिया जाता रहा यह दोनों लगातार मुस्कुराकर हँसते रहे। रबई बिन हिराश की वफात 101 हिजरी या 104 हिजरी में हुई।

हज़रत अली रदियल्लाहु तआला अ़न्हु : – हजरत अमीरुल

मोमिनीन अली इब्ने अबी तालिब रदियल्लाहु तआला अन्हु जलीलुश्शान सहाबी और हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के ख़लीफ़ा–ए– चहारुम हैं। बच्चों में सबसे पहले आप ईमान लाए। मदीना हिजरत की। जंगे तबूक के सिवा तमाम गज़वात में हुज़ूरे अकरम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के साथ शरीके जिहाद रहे। जंगे ख़ैबर के दिन आप ही के हाथ में हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने झण्डा अता फ़रमाया। और आप ही ने ख़ैबर को फतह किया।

अमीरुल मोमिनीन हज़रत उस्मान ग़नी रदियल्लाहु तआला अन्हु की शहादत के बाद आप ख़लीफ़ा हुए। तक़रीबन पाँच बरस तक ख़िलाफ़त के फ़राजइज़ अन्जाम देते रहे। तिरसठ साल की उम्र पाकर कूफ़ा में 19 रमज़ान 40 हिजरी को इब्ने मुल्जिम ख़ारजी की ज़हर आलूद तलवार से आपकी श्हादत हुई। आप ने पाँच सौ छियासी हदीसें हुज़ूरे अक़दस सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम से रिवायत की हैं। आप के फ़ज़ाइल व मनाक़िब बहुत ज़्यादा हैं। मुफ़स्सल तज़किरा हमारी किताब " हक़्क़ानी तक़रीरें" में पढ़िये।

शरहे हदीस : – इस हदीस का मतलब यह है कि खुद झूट बोलना या किसी दूसरे की तरफ़ झूट की निस्बत कर देना कि उस ने वह बात नहीं कही मगर ख़्वाह मख़्वाह उस बात को उसके सर थोप देना। हर जगह हर हाल में हर शख़्स के लिए हराम व ना जाइज़ और गुनाहे कबीरा है। लेकिन हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की तरफ़ किसी झूटी बात को निस्बत करना यानी हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने जिस बात को नहीं फ़रमाया उस बात के बारे में झूट मूट यह कहना कि हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया। यह तमाम बडे बड़े कबीरा गुनाहों में सब से बड़ा गुनाहे कबीरा है। और बिला शुबा इस गुनाह का मुरतकिब क़हर व क़ह्हार ग़ज़बे जब्बार का सजावार, जहन्नुमी और अज़ाबे नार का हक़दार है।

इसकी वजह यह है कि हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की तरफ़ जिस बात की निस्बत की जाएगी वह शरीअत और ख़ुदा के दीन का जुज़ क़रार पायेगी। इस तरह हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम पर झूट बाँधना, खुदा पर भी झूटी तोहमत लगाना हो जाएगा। और ज़ाहिर है कि अल्लाह और रसूल पर इफ़्तिरा करना और झूटी तोहमत लगाना कितना बड़ा और किस क़दर ख़ौफ़नाक गुनाह है।

इसलिए ऐसे मरदूद और खबीस शख्स का ठिकाना जहन्नुम के सिवा और कहाँ होगा? इसी लिए हुजूर सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फरमाया कि जो शख्स मुझ पर कोई झूट बोले, यानी मेरी न कही हुई बात को ख्वाह मख्वाह मेरी तरफ मन्सूब करे और कहे कि इस बात को हुजूर सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया है तो वह जहन्नुम में जाएगा।

फवाइद व मसाइल :– 1. इस हदीस को मुस्लिम ने अपने मुक़द्दमा–ए– किताब में, तिरमिज़ी ने किताबुल इल्म और मनाकिब में और इब्ने माजा ने नियत में ज़िक्र किया है।

2. इस हदीस की बाज़ रिवायतों में "मुअ़तमिद्द" का लफ्ज़ भी आया है। यानी क़सदन और जान बूझ कर जो हुजूर पर झूट बोलेगा वो जहन्ननुमी है। इससे मालूम हुआ कि अगर भूल चूक में गलती से किसी ने ऐसा किया तो वह इस वअ़ीद का मुस्तहक़ नहीं होगा।

3. हुजूर नबीए करीम स़ल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम पर झूट बाँधने का गुनाह किसी दूसरे आदमी पर झूट बाधंने से बदरजा बढ कर बड़ा गुनाह है। इसी लिए हज़रात सहाबा किराम इस गुनाह से इस क़दर डरते थे कि जब तक उनको किसी हदीस के बारे में बिल्कुल क़तई और यक़ीनी इल्म नहीं हो जाता था। हरगिज़ हरगिज़ उस हदीस को कभी भी अपनी ज़ुबान पर नहीं लाते थे। चुनाँचे बुख़ारी शरीफ़ में इसी हदीस के नीचे एक दूसरी हदीस में है कि हजरत अब्दुल्ला बिन ज़ुबैर रदियल्लाहु तआला अन्हु ने अपने वालिद माजिद हज़रत ज़ुबैर बिन अवाम रदियल्लाहु तआला अन्हु से अर्ज किया कि अब्बा जान ! मैंने आप को इस कसरत से हदीसें सुनाते हुए नहीं देखा जिस तरह फलाँ फलाँ सहाबा हदीसें सुनाया करते हैं। तो हज़रत ज़ुबैर इब्नुल अवाम रदियल्लाहु तआला अन्हु ने फरमाया कि मैं कभी किसी मौक़ा पर भी हुजूर स़ल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम से जुदा तो नहीं हुआ। मगर मैनें हुजूर को फ़रमाते हुए सुना है कि जो मुझ पर झूट बोले वह अपना ठिकाना जहन्नुम में बना ले।

हजरत ज़ुबैर बिन अवाम रदियल्लाहु तआला अन्हु का मतलब यह था कि मैं इस वईद के ख़ौफ से हदीसों के बयान करने में बहुत एहतियात करता हूँ और सिर्फ़ उन्ही हदीसों को सुनाता हूँ जो मुझे अच्छी तरह याद हैं और जिनके बारे में पूरे वसूक़ और यक़ीन के साथ मैं जानता हूँ कि यह फ़रमाने

रसूल है। बाक़ी दूसरे सहाबा किराम जो मुझ से ज़ियादा हदीसें बयान करते हैं चूँकि वह मुझ से ज़्यादा हदीसों को याद किये हुए हैं इस लिए वह मुझ से ज़्यादा तादाद में हदीसें सुनाया करते है।

इस तरह मशहूर सहाबी हज़रत अनस बिन मालिक रदियल्लाहु अन्हु ने भी फ़रमाया कि :—

"मुझको ज़्यादा तादाद में हदीसें बयान करने से यह बात रोकती है कि हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया कि जो मुझ पर झूट बोले वह जहन्नुम में अपना ठिकाना बना ले।"

इसी तरह अमीरुल मोमिनीन हज़रत उमर रदियल्लाहु तआला अन्हु का तो यह तरीक़ा था कि अगर कोई शख़्स उनको कोई हदीस सुनाता और वह हदीस उनके इल्म में न होती तो आप उस शख़्स से उस हदीस पर गवाह तलब फ़रमाते थे और हुक्म देते थे कि तुम गवाहों से साबित करो कि यह रसूल सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की हदीस है।

इसी तरह बाज़ सहाबा हदीस सुनाने वालों से कसम खाने का मुतालबा करते थे और फ़रमाते थे कि तुम क़सम खाकर कहो कि यह रसूल सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की हदीस है।

यह सब कुछ इसी एहतियात के लिए था कि कोई शख़्स अपनी तरफ़ से गढ़ कर झूटी हदीस(1) न सुनाऐ। इसी तरह हज़रात ताबेईन और तबेअ् ताबेईन बल्कि तमाम मुअतमद मुहद्दिसीन का यही तरीक़ा था कि हदीसों के बयान करने में बे हद एहतियात से काम लेते थे। एक लफ़्ज के अदल बदल को भी गवारा नहीं कर सकते थे। क्योंकि हदीस गढ़ लेने का कितना गुनाह और अज़ाब है। इस ख़ौफ़ से हर वक़्त यह लोग लरज़ा बर अन्दाम रहते थे ।

इसी लिए ज़मानए हाल के उल्मा व वाएज़ीन को भी लाज़िम है कि वह हदीसों को बयान करने में पूरी पूरी एहतियात से काम लें। जो असल मजमूने हदीस है उसी को वाअ्ज़ों में बयान करें। और हर गिज़ हरगिज़ अपनी तरफ से हदीस में किसी लफ़्ज़ की कमी बेशी न करें। हाँ अल्बत्ता हदीस पेश करने के बाद उसकी तौज़ीह व तशरीह करना और अल्फ़ाज़े हदीस से इस्तिदलाल करते हुए मसाइल व मआरिफ़ और नुकात को बयान करना जाइज़ है। बल्कि यह निहायत ही पसन्दीदा तर्ज़ और सल्फ़े सालेहीन का तरीक़ा है।

4. झूटी और मनगढंत हदीसों को मुहद्दिसीन की इस्तिलाह में " हदीसे मौजूअ्" कहा जाता है और झूटी हदीस गढ लेने वाले को " वाजे हदीस" या " विज़ाउल हदीस" कहते हैं। झूटी हदीसे गढ़ने वालों को सुल्ताने इस्लाम बतौर ताज़ीर कोड़ों की मार की सज़ा देगा। वल्लाहु तआला अअ्लम।

फ़रज़ी हदीस :– " काफ़िर को भी काफ़िर नहीं कहना चाहिये।"

जो लोग हैरान हों कि किस तरह हदीस गढ़ते हैं। उनकी मालूमात के वास्ते अर्ज़ है कि आज के दौर में " मआज़ल्लाह" हदीस बहुत आम करदी गई है। कि हुज़ूर ने फरमाया कि " काफिर को भी काफिर नही कहना चाहिये।" जिसके दिल में ज़रा भी हुज़ूर की मुहब्बत की झलक है वह फौरन जाान जायेगा कि यह हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम पर तोहमत है।कि तसलीम भी है कि है तो काफ़िर मगर कहो नहीं। इस तरह चोरों का गिरोह भी कल को हदीस बयान करेगा कि हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया कि चोर को चोर नहीं कहना चाहिये। कमाल की बात यह है कि जब वजह दरयाफ़त करो तो कहते हैं कि क्या ख़बर जिस काफ़िर को आज काफिर कह रहे हो उसका मरते वक़्त इस्लाम पर ख़ातिमा हो। कोई उनसे दरयाफत करे कि इस तरह तो किसी मुसलमान को भी मुसलमान न कहना चाहिये क्या ख़बर कि मरते वक़्त कुफ़्र पर ख़ातिमा हो। चोर की चोरी पकड़नी हो तो उनसे दरयाफत करो कि यह हदीस कहाँ है? तो फिर पलटी खाऐगे कि हज़रत उमर का कौल है। जब उस चोर का पीछा करो और उसका ही हवाला तलब करो तो फ़रार अख़्तयार करेंगे। इन अक़्ल के दुश्मनों से पूछो कि काफिर को काफ़िर न कहेंगें तो क्या मुसलमान को काफ़िर कहेंगे? अल्लाह तआला ने काफ़िरों का लफ़्ज़ किस लिए फ़रमाया है। दर असल जिन हज़रात ने खुद अल्लाह व उसके महबूब सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की शाने पाक में गुस्ताख़ियाँ, गालियाँ किताबों में लिखीं जिस की वजह से तमाम दुनिया के मुसलमानों ने फ़तवा दिया कि ऐसे अक़ीदा रखने वाले मुसलमान नहीं उनके पीछे नमाज़ न होगी तो यह फ़रज़ी हदीस गढ़ी " काफ़िर को भी काफ़िर न कहो।

अज़ाबे क़ब्र

हदीस नम्बर – 10

عن ابن عباس قال مر النبی ﷺ بقبرین فقال انهما لیعذبان وما یعذبان فی کبیرِ اما احدهما فاکان لا یستتر من البول و اما الاخر فکان یمشی بالنمیمة ثم اخذ جریدة رطبة فشقها بنصفین ثم غرزنی کل قبر و احدة قالوا یا رسول اللهﷺ لم صنعت هذا فقال لعله ان یخفف عنهما ما لم ییبسا. (مشکوٰہ، بخاری، جلد اول، ص ۳۴)

अन इब्ने अब्बासिन क़ाला मर्रन नबीयो स़ल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम बि क़बरैने फ़क़ा ल इन्नहुमा लियुअज़्ज़ेबाने वमा युअज़्ज़ेबान फ़ी कबीरिन अम्मा अहदोहुमा फ़काना ला यस्ततिरो मिनल बौले,वअम्मल आख़रो फ़काना यमशी बिन्नमीमति सुम्मा अख़ज़ा जरी दतन र त ब त फशक़्क़ाहा बि निस्फ़ैने सुम्मा ग़रज़नी कुल्ले क़बरिन वाहिदतन क़ालू या रसूलल्लाह लिमा सनअ़त हाज़ा फ़क़ाला ल अ़ल्लहु अयं युख़फ़्फ़फ़ अन्हुमा मा लम यबीसा।

(मिशकात, जिल्द 1, सफ़ा 34)

तर्जुमा : – हज़रत इब्ने अ़ब्बास रदियल्लाहु तआ़ला अ़न्हु से रिवायत है। उ़न्होंने कहा कि हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम दो क़बरों के पास से गुज़रे तो इरशाद फ़रमाया कि यक़ीनन यह दोनों अज़ाब में मुबतिला हैं और किसी ऐसे गुनाह में अज़ाब नहीं दिया जा रहा है जिससे बचना ज़्यादा दुश्वार हो। इन में एक तो पेशाब के वक़्त परदा नहीं करता था और दूसरा चुग़ल ख़ोरी करता था। फिर आप स़ल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने खजूर की एक हरी टहनी ली और उसको चीर कर दो टुकड़े किये फिर हर क़ब्र में एक एक टुकड़ा गाढ़ दिया। सहाबा ने अर्ज़ किया कि या रसूलल्लाह! आप ने ऐसा क्यों किया? तो हुज़ूर ने फ़रमाया कि इस लिए कि जब तक यह टहनियाँ ख़ुश्क़ न होंगी उन दोनों के अज़ाब में तख़्फ़ीफ़ हो जाऐगी।

हज़रत इब्ने अ़ब्बास : – इस हदीस के रावियों में हज़रत इब्ने अ़ब्बास रदियल्लाहु तआ़ला अन्हुमा बहुत ही मुमताज़ और साहिबे फज़ीलत सहाबी हैं। यह हुज़ूर स़ल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के चचा हज़रत अ़ब्बास

रदियल्लाहु तआला अन्हु के फरजन्दे अरजुमन्द हैं। इन का नाम अब्दुल्लाह है। यह दौरे सहाबा के सब से कम उम्र मुफस्सिर हैं। हुजूर सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने उनके हक में यह दुआ फरमाई कि या अल्लाह! इनको हिकमत और कुरआन की तफ़सीर का इल्म अता फरमा। चुनाँचे इसी दुआए नबवी का असर है कि बड़े बड़े जलीलुल कदर सहाबा ने आपके इल्म व फ़ज़्ल का ऐतिराफ़ किया है। यहाँ तक कि अमीरुल मोमिनीन हजरत उमर रदियल्लाहु तआला अन्हु बाज मुश्किल मसाइल में आप से मशवरा लेते थे। इमाम अहमद बिन हम्बल रहमतुल्लाह अलैह का कौल है कि सहाबा किराम में छः शख़्सों ने बहुत ज्यादा हदीसें रिवायत की हैं और उनके नाम यह है।

1. हज़रत आयशा रदियल्लाहु तआला अन्हा, 2. हज़रत अब्दुल्लाह इब्ने अब्बास रदियल्लाहु तआला अन्हु, 3. हजरत अब्दुल्ला इब्ने उमर रदियल्लाहु तआला अन्हु, 4. हजरत अबू हुरैरा रदियल्लाहु तआला अन्हु, 5. हज़रत जाबिर रदियल्लाहु तआला अन्हु, 6. हज़रत अनस रदियल्लाहु तआला अन्हु,।

हज़रत अब्दुल्लाह इब्ने अब्बास से एक हजार छः सौ साठ हदीसें मरवी हैं। हुजूर नबीए करीम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की वफ़ात के वक्त आपकी उम्र 13 या 14 साल की थी। सत्तर साल की उम्र मे बुमकाम ताइफ 68 हिजरी में आपने वफात पायी। हज़रत मोहम्मद इब्ने हनीफ़ा ने नमाजे जनाज़ा पढ़ाकर मजमऐ आम में बड़ी हसरत के साथ यह कहा कि हाऐ अफ़सोस! आज इस उम्मत का मुफस्सिर दुनिया से उठ गया।

(फुयुजुल बारी, जिल्द, 1 सफ़ा 81)

शरहे हदीस : — इमाम बुख़ारी ने इस हदीस को इस उन्वान के तहत बयान फ़रमाया कि " बाब मिनल कबाइर अन ला यसततिर मिनल बौल" इससे इमाम मौसूफ़ का मक़सद यह है कि पेशाब के वक्त पर्दा न करना और लोगों के सामने शर्मगाह खोल कर पेशाब करना यह गुनाहे कबीरा है। और बाज़ रिवायतों में "ला यसततिर" की जगह " ला यसतनज़्ज़ा" का लफ़्ज़ आया है। जिसका मतलब यह होगा कि पेशाब से अपने बदन और कपड़ों को महफूज़ न रखना यह गुनाहे कबीरा है। क्योंकि इसी हदीस में पेशाब से न बचने वाले को क़ब्र मे अज़ाब दिया जाना बयान किया गया है। इस लिए यह साबित हो गया कि अपने बदन और कपड़ों को पेशाब से न बचाना गुनाहे कबीरा और बाइसे अज़ाब है।

गुनाहे कबीरा कौन– कौन हैं? :– गुनाहे कबीरा कौन कौन और कितने हैं? इसमें इख़्तिलाफ़ है। हज़रत अबू हुरैरा रदियल्लाहु अन्हु की रिवायत है कि जिसको इमाम बुख़ारी ने रिवायत किया है। इससे यह पता चलता है कि गुनाहे कबीरा की तादाद सात है। और वह यह हैं। 1. शिर्क,2. जादू, 3. ख़ूने नाहक़, 4. सूद ख़ोरी, 5. यतीम का माल खाना , 6. जिहादे कुफ़्फ़ार से भाग जाना, 7. पाक दामन मोमिन औरतों को ज़िना की तोहमत लगाना। (मिश्कात बाबुल कबाइर)

यह सातो वह गुनाह हैं जिनके बारे में हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया कि सात हलाक कर देने वाले गुनाहों से बचो।

और हाकिम की रिवायत में है कि गुनाहे कबीरा की तादाद नौ है। और बाज़ रिवायात में इससे ज्यादा तादाद भी बताई गयी है। हज़रत इब्ने अब्बास रदियल्लाहु तआला अन्हु से किसी ने कहा कि क्या गुनाहे कबीरा सात हैं ? तो आपने फ़रमाया कि गुनाहे कबीरा की तादाद सात सौ तक है। आपका मतलब यह था कि जिस तरह एक छोटी सी नेकी को ख़ुलूसे नियत के साथ अगर कोई करे तो उसका अजर व सवाब बहुत बढ़ जाता है उसी तरह गुनाहे सग़ीरा यानी छोटे छोटे गुनाहों को अगर कोई बेबाकी और बे ख़ौफ़ी के साथ करता रहे। तो वह गुनाहे सग़ीरा भी गुनाहे कबीरा हो जाता है। क्योंकि हर गुनाहे सग़ीरा पर जब इसरार किया जाए तो वो गुनाहे कबीरा बन जाता है।

हज़रत शैख़ अबू तालिब मक्की से मन्क़ूल है कि गुनाहे कबीरह सत्तराह हैं। चार वह है जो दिल से ताअल्लुक रखते हैं। 1. शिर्क, 2. गुनाहों पर इसरार, 3. अल्लाह की रहमत से ना उम्मीद हो जाना, 4. अल्लाह के अज़ाब से बे ख़ौफ़ हो जाना।

और चार वह हैं जिनका ताअल्लुक़ ज़ुबान से है। 1. झूटी गवाही देना, 2. पाक दामन को तोहमत लगाना, 3. जादू करना, 4. हरमे काबा में गुनाह करना,। और तीन वह हैं जिनका ताअल्लुक़ शिकम से है। 1. शराब पीना, 2. यतीम का माल खाना , 3. सूद खाना,। दो वह हैं जिनका ताअल्लुक़ शर्मगाह से हैं ।1. ज़िना, 2. लवातत, । एक वह है जिसका तअल्लुक़ पाँव से हैं। 1. जिहाद से भागना, । दो वह है जो हाथ से तअल्लुक़ रखते हैं। 1. ख़ूने नाहक़, 2. चोरी। (शरहे अक़ाइद, व हाशिया, सफ़ा 82)

वाजेह रहे कि मुख्तलिफ रिवायतों में जो गुनाहे कबीरा की तादाद बतायी गई वह हस्र के लिए नहीं है कि गुनाहे कबीरा सात ही है। या नौ ही है या सत्तरह ही हैं। बल्कि यह मिसाल के तौर पर है कि किसी रिवायत में मिसाल के तौर पर सात का जिक्र आ गया। किसी रिवायत मे नौ का और किसी रिवायत मे सत्तरह का। वरना जाहिर है कि मजकूरा वाला गुनाहों के सिवा और भी बहुत से गुनाहे कबीरा हैं। मसलन नमाज रोज़ा और हज व ज़कात को छोड देना, जुल्म करना, डाका डालना, झूट बोलना, चुग़ली खाना, दो मुसलमानों को आपस में लड़ाना, नाच देखना, औरतों का बेपर्दा होकर फिरना, नाप तोल में कमी करना, जुआ खेलना, हैज़ व निफ़ास की हालत में बीवी से सोहबत करना, माँ–बाप को तकलीफ देना। सैकड़ों गुनाहे कबीरा हैं।

गुनाहे कबीरा किस को कहते हैं ? : – गुनाहे कबीरा हर उस गुनाह को कहते हैं जिससे बचने पर खुदावन्द आलम ने मग़फ़िरत का वादा फ़रमाया। और बाज़ उल्माए किराम ने फ़रमाया कि हर वह गुनाह जिसके करने वाले पर अल्लाह व रसूल ने वओद सुनाई या लानत फ़रमाई या अज़ाब व गज़ब का ज़िक्र फ़रमाया वह गुनाहे कबीरा है।

(फ़ुयूज़ुलबारी, जिल्द 1, सफ़ा 405)

चुग़ली क्या है ? हदीस में लफ़्ज़ " नमीमा" आया है। जिसका तर्जुमा उर्दू में "चुग़ली" किया है। अल्लामा ऐनी ने फ़रमाया कि किसी की बात को दूसरे तक पहुँचाने के क़स्द से ले जाना। यह चुग़ली है और गुनाहे कबीरा है क्योकि यह मुसलमानों में ख़िलाफ़ व शिक़ाक और जंग व जदाल का ज़रिया है।

दूसरी निजासतों और गुनाहों से भी बचो :– हदीस मज़कूर में अगरचे अज़ाब पर सबब यह बताया गया है कि वह दोनों क़ब्र वाले एक तो इन मे से पेशाब से नहीं बचता था और दूसरा चुग़ली खाता था लेकिन इस हदीस से यह साबित होता है कि इस ख़ुसूस में अपने पेशाब ही की कोई ख़ुसूसियत नहीं है बल्कि हर किस्म की निजासत गोबर पाख़ाना ख़ून वग़ैरह निजासतों से भी परहेज़ न करना अज़ाबे क़ब्र का बाअिस बन सकता है। इस लिए हर मुसलमान को हर क़िस्म की निजासतों से हर वक़्त पाक व साफ़ रहना चाहिये।

इसी तरह अजाबे कब्र का सबब बनने में सिर्फ "चुग़ली" ही की कोई खुसुसियत नहीं है बल्कि इस किस्म के दूसरे गुनाहे कबीरा मसलन गीबत झूट जुल्म वगैरह भी अजाबे कब्र का सबब बन सकते हैं। लिहाज़ा मुसलमानों को गुनाह कबीरा की तमाम किस्मों से इज्तिनाब व परहेज़ करना लाज़िम है।

आलमे बरज़ख़ का इल्म : – इस हदीस से यह साबित होता है कि हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम आलमे बरज़ख़ के वाकेआत को देखते सुनते और जानते थे इस लिए कि अज़ाबे कब्र आलमे बरज़ख के अहवाल में से है। बुख़ारी शरीफ़ की रिवायत " फ़समेअ् सौता इन्सानैन यो अज़्ज़ेबान" के अल्फाज हैं कि हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम को उन दो कबरों के मुर्दों के अजाब का इल्म वही के ज़रीओ नहीं हुआ था। बल्कि हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने सुन कर और देखकर अजाबे कब्र का हाल मालूम फरमाया था।

इससे यह पता चला कि हज़रात अम्बिया कराम अलैहिमुस्सलाम के देखने और सुनने बल्कि उन की तमाम कुव्वतों को आम इन्सानों के कवाए जिस्मानिया और बदनी ताकतों पर क़यास नहीं कर सकते। हम आम इन्सान चीज़ों को अपने हवासे ज़ाहिरी यानी आँख कान, वगैरह से देखते सुनते हैं और हजरात अम्बिया अलैहिमुस्सलाम अपनी बातिनी कुव्वतों से देखते और सुनते हैं। अल्लाहु अकबर! कहाँ हमारे जाहिरी हवास? और कहाँ अम्बिया अलैहिमुस्सलाम की बातिनी कुव्वतें ?

" चे निस्बत रा बा आलमे पाक "

आरिफ़ रुमी ने इसी हकीकत की तरफ इशारा करते हुए क्या खूब कहा है :–

फलसफी को मुनकरे हिनाना अस्त
अज हवासे अम्बिया बेगाना अस्त

यानी फलसफी जो " सुतूने हनाना" के रोने और आवाज़ सुनाई देने के मोजिजे से इन्कार करता है तो उसकी वजह यह है कि फलसफी अम्बिया अलैहिमुस्सलाम के हवास की बे पनाह बातिनी कुव्वतों से ना वाकिफ है वरना हकीकत तो यह है कि

नुत्के ख़ाक व नुत्के आब व नुत्के गुल
हस्त महसूस हवास अहले दिल

यानी मिट्टी पानी कीचड़ की बोलियों को भी अहले दिल के हवास

महसूस करते हैं और जान लेते हैं।

क़ब्र पर फूल : – इस हदीस में लअल्लाहु अयं यु खफ्फफा" यानी खजूर की तर शाख़ों को क़ब्र पर डालने की हिकमत हुजूर सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने यह बताई कि इन गीली और हरी टहनियों की तस्बीह से उनके अज़ाब में तख़फ़ीफ़ होगी। इससे साबित होता है कि क़बरों पर ताजा फूल और हरी पत्तियों को डालना हर गिज बिदअत नहीं है बल्कि हुजूर अक़्दस सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की इसी हदीस पर अमल है लिहाज़ा यह सुन्नत है। चुनाँचे बुख़ारी शरीफ़ में है कि हजरत बरीदा अस्लमी सहाबा रदि़यल्लाहु तआला अन्हु ने यह वसीयत फ़रमायी कि मेरी क़ब्र में दो गीली टहनियां डाल दी जाएं।

क़ब्र के पास तिलावत : – अल्लामा ख़िताबी अलैहिर्रहमा ने फ़रमाया कि जब सब्ज़ टहनियों की तस्बीह से मय्यत के अज़ाब में तख़्फ़ीफ़ हो जाती है तो क़ब्र के पास आकर अगर कोई मुसलमान कुरआन मजीद की तिलावत करे तो बदरजऐ ऊला उससे मय्यत के अज़ाब में तख़्फ़ीफ़ होगी। क्यों कि ज़ाहिर है कि तिलावते कुरआन बरकत व फ़ज़ीलत में शाख़ों और टहनियों की तस्बीहात से कहीं ज्यादा बढ चढ कर है।

ईसाले सवाब :– हज़रत इमाम आजम अबू हनीफ़ा रदि़यल्लाहु तआला अन्हु और इमाम अहमद रहमतुल्लाह अलैह का यही मसलक है कि कुरआन मजीद की तिलावत का अजर व सवाब मय्यत को पुहँचता है चुनाँचे इस सिलसिले में बकसरत अहादीस भी वारिद हुई हैं। मसलन अबू बक नज्जार नें अपनी किताबुस्सुनन में हज़रत अली रदि़यल्लाहु तआला अन्हु से रिवायत किया कि " जो कोई क़ब्रिस्तान में गुज़रे और ग्यारह मर्तबा कुल हुवल्लाहु पढ कर उसका सवाब मुर्दों को बख़्श दे तो अल्लाह तआला उस क़ब्रिस्तान के मुर्दों की तादाद में उसको सवाब अता फ़रमायेगा। इसी तरह हज़रत अनस रदियल्लाहु तआला अन्हु ने हुजूर सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम से रिवायत किया है कि जो क़ब्रिस्तान में जाए और सूरह यासीन पढ़कर उसका सवाब मय्यत को पहुँचाए तो अल्लाह तआला उस मय्यत के अज़ाब में तख़्फ़ीफ़ फ़रमाएगा।

इसी तरह हज़रत अमीरुल मोमिनीन अबू बक्र सिद्दीक़ रदि़यल्लाहु तआला अन्हु से मरवी है कि हुजूर सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया

कि " जो शख्स अपने वालिदैन की कब्र की जियारत करे और वहां सूरह यासीन पढ़े तो अल्लाह तआला उनकी बख्शिश फरमायेगा।

सवाल व जवाब : – कोई कह सकता है कि हूज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम को तो मालूम हो गया था कि इन दोनों मुर्दो को अज़ाब हो रहा था। इस लिए इन दोनों के अज़ाब की तख्फ़ीफ के लिए गीली हरी शाखों को उनकी क़ब्रो में गाढ़ दिया। लेकिन हम लोगों को क्या मालूम ? कि कौन सी क़ब्र वाले को अज़ाब हो रहा है और कौन सी क़ब्र वाले को नहीं। इस लिए हम क्यों किसी क़ब्र पर गीली शाख़ या ताज़ा फूल या हरी पत्ती डालें।?

इस सवाल का जवाब यह है कि सब्ज़ पत्तियों और ताज़ा फूलों की तस्बीहात से जब अज़ाबे क़ब्र में तख़्फ़ीफ़ हो जाना हदीस से साबित है तो यक़ीनन उन की तस्बीहों से मय्यत को उन्स भी हासिल होगा और सुकून व राहत भी पहुंचेगी। तो अगर हम किसी ऐसी क़ब्र पर फूल या पत्ती डालें जिस क़ब्र वाले को अज़ाब नहीं हो रहा है तो उसको उन्स और सुकून व राहत की नेअमत तो मिल ही जाएगी।

बहर हाल क़ब्रो पर फूल पत्ती डालना हर सूरत में बाइसे ख़ैर व बरकत, और मोजिबे रहमत ही होगा। साहिबे क़ब्र को भी इससे फ़ायदा पहुँचेगा। और ज़ायरीने क़ब्र भी इसकी ख़ुशबू से फ़ायदा मन्द होंगे। हर हाल में इससे फ़ायदे की ही उम्मीद है इसमें नुक़सान का तो कोई अन्देशा ही नहीं है। लिहाज़ा जो लोग क़ब्रो पर फूल पत्ती डालते हैं ख़्वाह मख़्वाह उनको बिदअती कहकर लोगो को इस कारे ख़ैर से हरगिज़ हरगिज़ मना नहीं करना चहिये। क्योंकि जैसा कि गुज़र चुका हदीस से उसका सुबूत मिलता है और याद रखिये कि जिस चीज की असल कुरआन व हदीस से साबित हो वह हरगिज़ हरगिज़ ममनूअ् नहीं हो सकती। न उसको बिदअत कहना सही हो सकता है। दर हकीक़त वहाबियों का यह एक बहुत बड़ा ज़ुल्म व सितम है कि वह बात बात पर ख़्वाह मख़्वाह मुसलमानों को मुशरिक व बिदअती बनाते रहते हैं और खुदा की हलाल की हुई चीज़ों को बिला किसी दलील के हराम ठहरा कर अल्लाह और रसूल सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम पर इफ्तरा करते हैं। वल्लाहु तआला अअ्लम।

ईमान की मिठास

हदीस नम्बर – 11

عن انس عن النبی ﷺ قال ثلث من کن فیه وجد حلاوة الایمان ان یکون الله و رسوله احب الیه مما سواهما وان یحب المرء لا یحبه الا لله و ان یکره ان یعود فی الکفر کما یکره ان یقذف فی النار. (بخاری، جلد اول، ص ۷)

अन अनसिन अनिन नबीऐ सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम काला स ल स मन कुन्न फीहे व जदा हलावतल ईमान अयं यकूनल्लाहु व रसूलुहू अहब्बा इलैहि मिम्मा सिवाहुमा व अयं योहिब्बुल मर आ, ला युहिब्बुहू इल्ला लिल्लाहि व अयं यकराह अयं यऊद फ़िल कुफ़रि कमा यकरहु अयं युक़ज़फ़ फ़िन्नार। (बुख़ारी जिल्द, 1 सफ़ा 7)

तर्जुमा :– हज़रत अनस रदियल्लाहु अन्हु से रिवायत है कि हुजूर सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया कि तीन चीज़ें जिस शख़्स में हों वह ईमान की मिठास पायेगा।

1. जिसको अल्लाह व रसूल सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम इन दोनों के मा सिवा(सारे जहान) से ज़्यादा महबूब हों।
2. और जो किसी आदमी से ख़ास अल्लाह ही के लिए मुहब्बत रखता हो।
3. जो इस्लाम कबूल करने के बाद फिर कुफ्र में जाने को इतना बुरा जाने जितना के आग में झोंक दिये जाने को बुरा जानता हो।

शरहे हदीस :– इस हदीस का हासिल मतलब यह है कि जिस तरह 'शकर'' और चीज़ है और शकर की मिठास और चीज़ है। उसी तरह ईमान और चीज़ है और ईमान की लज्ज़त और चीज़ है। जिस शख़्स के मुँह का ज़ायका बिल्कुल दुरुस्त हो वह अगर शकर खायेगा तो उसको शकर की मिठास का लुत्फ व मज़ा भी महसूस होगा। लेकिन अगर कोई सफ़रावी बुख़ार का मरीज़ जिसके मुँह का ज़ायका बिगड़ कर तल्ख़ हो चुका हो। अगर वह शकर खायेगा तो उसको शकर की मिठास महसूस नहीं

होगी। जाहिर है कि पहला शख्स तो शकर खाने वाला भी कहलाऐगा और शकर की लज्जत पाने वाला भी होगा। और दूसरा शख्स अगरचे शकर खाने वाला तो कहलायेगा मगर शकर की मिठास की लज्जत से महरुम होगा।

बस बिल्कुल यही मिसाल ईमान की है। जो शख़्स कलिमा पढ़ कर मोमिन हो गया और ईमान के बाद उसमें तीन ख़सलतें पैदा हो गईं तो वह शख़्स ईमान की मिठास यानी ईमानी लज़्ज़त का लुत्फ व मजा पा लेगा। और जिस शख़्स में यह तीनों लज़्ज़तें नहीं पैदा हुई तो वह शख़्स अगरचे साहिबे ईमान तो होगा मगर ईमान की मिठास, यानी ईमान की लज़्ज़ते खास के लुत्फ़ व मज़े से महरुम रहेगा।

वह तीन चीजे जिन पर ईमान की मिठास और लज्ज़त का पाया जाना मौकूफ़ है वह कौन कौन हैं? अब उनकी कुछ तफ़सील मुलाहिज़ा फ़रमाईये। और इन्तिहाई जज़्बए इख्लास के साथ इन्तिहाई जद्दो जहद और पूरी पूरी कोशिश कीजिए कि आप में यह तीनों ख़सलतें पैदा हो जाएं ताकि आप ईमान की मिठास, यानी ईमान की लज़्ज़ते ख़ास से लुत्फ अन्दोज़ हो सकें।

अल्लाह व रसूल स़ल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम की मुहब्बत :– अल्लाह व रसूल स़ल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की मुहब्बत सारे आलम से बढ़कर होने का मतलब यह है कि मोमिन के दिल की गहराईयों में अल्लाह व रसूल सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की मुहब्बत इस तरह घर कर जाए और इस कदर मज़बूत व मुस्तहकम हो जाए कि अपने आबाओ अजदाद, अज़वाज व औलाद,मकान व दुकान,माल व सामान,जिस्म व जान,यहाँ तक कि सारे जहान को अल्लाह व रसूल स़ल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की राह में कुरबान कर देने का सच्चा जज़्बा पैदा हो जाए।

अल्लामा क़ाजी अयाज़ रहमतुल्लाह अलैह ने फ़रमाया कि अल्लाह व रसूल स़ल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की मुहब्बत का मतलब यह है कि अल्लाह तआला व उसके रसूल सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की फ़रमाँबरदारी में ऐसी इस्तिकामत और अवामिर व नवाही ही ताअ़मील मे ऐसा इल्तिज़ाम हो कि किसी हाल मे भी जज्बए इस्तिकामत और जोशे इल्तिज़ाम मुतज़लज़ल न हो।

हुब्ब फ़िल्लाह : – सूफ़ियाऐ किराम ने फ़रमाया कि "हुब्ब फ़िल्लाह" और " बुग्ज़ो लिल्लाह" यानी अल्लाह ही के लिए दोस्ती, और अल्लाह की के लिए दुश्मनी, यह तसव्वुफ़ की जान है। एक मोमिन के ईमाने

कामिल की यह एक बहुत बडी निशानी है कि वह अगर किसी से दोस्ती करता है तो अपनी किसी गरज़े नफ़सानी के लिए नहीं बल्कि खालिस रज़ाऐ इलाही के लिए दोस्ती करता है। और अगर वह किसी से दुश्मनी रखता है तो महज़ अल्लाह की रज़ा, और उसकी खुशनूदी के लिए दुश्मनी रखता है।

मसलन हम लोग अम्बिया, सिद्दीकीन शोहदा और सॉलिहीन, से जो मुहब्बत रखते हैं तो इसलिए नहीं कि यह लोग हमारे रिश्ता दार हैं या यह लाग हमारी माली मदद कर चुके हैं बल्कि सिर्फ इसलिए कि हम इन हज़रात से मुहब्बत करते है कि यह लोग अल्लाह के महबूब बन्दे हैं।

और अगर हम अबू जहल और दूसरे काफ़िरों या मुनाफ़िकों या बद मजहबों से दुश्मनी रखते हैं तो इस लिए नही कि इन लोगों ने हम लोगों को मारा पीटा है, या हम लोगों का माल व असबाब लूट लिया है बल्कि हम इन ज़ालिमों से सिर्फ इस लिए दुश्मनी रखते हैं कि यह अल्लाह के दुश्मन हैं।

अल्लाह ही के लिए दोस्ती और अल्लाह ही के लिए दुश्मनी इसी का दूसरा नाम इख़्लास है। मोमिन के लिए हर अमल में इख़्लास व लिल्लाहियत का जज़्बा रखना यह ईमान की लज़्ज़त पा लेने की दूसरी शर्त है और याद रखिये कि मोमिन के जज़्बए इख़्लास की वह ताक़त है कि उसकी रुहानी तवानाईयों के मुक़ाबले में हज़ारों शैतानों की ताऊनी ताक़तें लरज़ा बर अन्दाम रहती हैं। शैतान खुद ही खुदा के दरबार से यह कह कर निकला है कि " इल्ला इबादका मिन हुमुल मुख़लेसीन" यानी ऐ अल्लाह! मैं क़यामत तक औलादे आदम को गुमराह करता रहूँगा। तेरे इख़लास वाले बन्दों पर मेरा जादू नहीं चल सकेगा।

हिकायत :– अल्लाहु अकबर! इख़लास की ताक़त का क्या कहना ? बुजुर्गो ने फ़रमाया है कि एक आबिद को पता चला कि फ़लाँ जंगल में एक दरख़्त को लोग पूजते हैं(1) आबिद को लोगों के इस शिर्क पर बडा जलाल और बेहद गुस्सा आया। जोशे जिहाद से सरशार होकर आबिद ने एक कुल्हाड़ी ली और यह अज़्म करके चल पडा कि उस दरख़्त को जड से काट कर इस शिर्क की जड़ ही काट दूँगा। मगर अभी चन्द ही कदम चला था कि शैतान एक पहलवान की शक्ल में सामने आ गया और कहने लगा कि कहां चले? आबिद ने कहा कि मैं जंगल में फलॉ दरख़्त को काटने की लिए जा रहा हूँ। शैतान ने कहा कि मै उस दरख़्त का निगेहबान हूँ। भला तुम्हारी

मजाल है कि तुम उस दरख़्त को काट सकोगे? आबिद जोशे जिहाद में शैतान से लड पड़ा और शैतान को जमीन पर पछाड़ कर उसके सीने पर सवार हो गया और शैतान बिल्कुल ही आजिज व लाचार हो गया। जब शैतान हार गया तो आबिद से कहने लगा भाई! मैं तुम्हारे आगे हाथ जोड़ता हूँ तुम इस दरख़्त को मत काटो। उस दरख़्त को काटने से तुम को क्या फ़ायदा होगा? ख्वाह मख्वाह थक जाओगे। और रात को नमाज़े तहज्जुद भी न पढ़ सकोगे। तुम उस दरख़्त को काटने के ख़्याल से बाज़ आ जाओ। मैं इसके बदले में रोज़ाना तुमको एक अशरफ़ी दिया करुँगा। तुम खुद भी आराम से खाना पीना और उसमें से फुकरा व मसाकीन को सदक़ा भी देते रहना। और इन्तिहाई इतमीनाने क़ल्ब के साथ खुदा की इबादत मे मशगूल रहना। आबिद पर शैतान का जादू चल गया और रोज़ाना एक अशरफ़ी का नाम सुनकर उस पर लालच का भूत सवार हो गया। आबिद ने वादा कर लिया कि जाओ अब मैं उस दरख़्त को नही काटूँगा।

---

(1) इस्लाम मे दो शिर्क है। 1. खुदा के अलावा किसी को खुदा समझना। 2. ग़ैर खुदा को खुदा न समझते हुए सिर्फ़ इबादत के लायक ही समझे तब भी शिर्क है। अब दरखत हो,मजार हो, पत्थर हो, पानी हो, ग़र्ज कि कागज ही क्यो न हो। जब तक आम हालत में है कोई उसको बोसा नहीं देता जैसे ही कुरआन शरीफ़ की आयात तहरीर कीं काबिले एहतिराम हो गया। इसी तरह पानी को हज़रत इस्माईल अलैहिस्सलाम की ऐढ़ी से निस्बत हो जाए तो, आबे ज़मज़म। पत्थर को हुज़ूर के लबे मुबारक से निस्बत हो जाऐ तो बोसा गाहे फ़ारूके आजम। बैअंते रिजवान में दरख़्त को हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम से निस्बत हो जाए तो फ़ारूके आजम उसकी इतनी इज़्ज़त फरमायें कि उसके करीब ही दूसरा दरख्त था उसको कटवा दें कि कहीं मुगालते में अस्ल दरख्त नज़र अन्दाज़ न हो जाए। इन निस्बतों से पता चला कि किसी शै की परस्तिश करना और बात है और किसी निस्बत से उसकी इज्जत करना और बात है।

अल्हमदो लिल्लाह मुसलमान ऐसी चीज़ों को शआइरिल्लाह यानी अल्लाह की निशानियों की बुनियाद पर इज़्ज़त करते हैं। ख्वाह सफ़ा मरवा की पहाड़ियां हों या अरफ़ात का मैदान। आबे ज़मज़म हो या संगे असवद। उसको खुदा या इबादत के लायक नहीं समझते। वह लोग एहतियात करें जो हाथ बाँध कर किसी के रुबरू खड़े होने से लेकर गैरुल्लाह से माँगने तक को शिर्क कहते हैं और वह अपने अक़ीदे के उल्मा के सामने हाथ बाँध कर खड़े होने से लेकर कोई काम कोई चीज़ ऐसी नहीं जो ग़ैरुल्लाह से न लेते हों न माँगते हों।

चुनाँचे चन्द दिनों तक तो शैतान आबिद के पास रोजाना एक अशरफी पहुँचाता रहा लेकिन फिर एक दम बन्द कर दिया। जब कई दिन तक अशरफी नहीं आयी तो आबिद को बड़ा गुस्सा आया कि कम्बख्त शैतान ने मुझे धोका दिया। फिर कुल्हाड़ी उठायी कि चल कर दरख्त को काट डालूँ। चुनाँचे घर में से निकला ही था कि शैतान बसूरत पहलवान सामने आ गया। और रास्ता रोक कर खड़ा हो गया। और आबिद से कहने लगा कि ख़बरदार! तुम उस दरख़्त को कभी हरगिज़ हरगिज नहीं काट सकते। आबिद ने तड़प कर कहा कि मैं ज़रुर काटूँगा यहाँ तक कि दोनो गुत्थम गुत्था हो गये। लेकिन इस बार शैतान ने इस जोर से आबिद को ज़मीन पर दे मारा कि आबिद का सारा इन्जर पिन्जर ढीला हो गया। और शैतान आबिद के सीने पर सवार हो गया।

आबिद लाचार होकर कहने लगा कि यार! मैं समझ नहीं सका कि पहले दिन तो मैंने बहुत ही मामूली ज़ोर लगाकर तुम को पछाड़ दिया था मगर आज मैं अपनी पूरी ताकत लगाने के बावुजूद तुम्हारी पीठ नहीं लगा सका। बल्कि खुद ही चित्त हो गया। आख़िर मामला क्या है ? उस वक्त शैतान ने कहा कि मियाँ जी! होश की दवा करो। पहली मरतबा जो तुम दरख्त काटने चले थे तो सिर्फ़ खुदा की रजा जोई और इख़लास की नियत ले कर चले थे इसलिए मैं तुम पर काबू नहीं पा सका था। क्योंकि मैं हमेशा खुदा के मुख्लिस बन्दों से ही आ़जिज़ व लाचार रहता हूँ। मगर अब की मरतबा तुम इख़लास के साथ दरख़्त काटने के लिए नहीं चले थे बल्कि इस गुस्से में चले थे कि मैने अशरफ़ी नहीं दी थी। सुन लो जब तक तुम्हारे अन्दर इख़लास की ताकत कार फ़रमा थी मैं तुम से आ़जिज़ था। अब जब कि इखलास की ताकत से तुम महरूम हो गये तो अब कयामत तक तुम मुझ पर कभी ग़लबा नहीं पा सकोगे।

कुफ्र और आग में जाने के बराबर :– तीसरी चीज़ जिसपर ईमान की लज्ज़त व हलावत का पाया जाना मौकूफ है वह यह है कि आदमी कुफ्र से उतना ही बेज़ार और मुतनफ्फ़िर हो जितना कि आग के शोलों में डाले जाने से बेज़ार और मुतनफ्फ़िर रहता है। मतलब यह है कि जिस तरह कोई इन्सान कभी किसी हालत में भी इसको गवारा नहीं कर सकता कि कोई उसको जलती हुई आग के शोलों में झोंक दे। इसी तरह किसी हालत

में भी एक सच्चा मोमिन कुफ़्र करने को भी हरगिज हरगिज़ गवारा नही कर सकता। कुफ्र करना और आग मे दाख़िल होना दोनो इसके नज़दीक बराबर हों जब किसी मोमिन को कुफ़्र से इतनी नफरत व बेज़ारी पैदा हो जाए तो उसको हलावते ईमान का मज़ा नसीब हो जाएगा।

अल्लाह तआला हर मोमिन को हलावते ईमान की लज़्ज़त से लुत्फ़ अन्दोज़ फरमाऐ। आमीन

फ़वाइद व मसाइल :– 1. यह हदीस मुस्लिम शरीफ, तिरमिज़ी शरीफ़ और निसाई शरीफ़ में भी मज़कूर है।

2. अगर किसी मुसलमान को काफ़िरों ने कुफ़्र करने करने पर मजबूर कर दिया कि उसको अपनी जान का ख़तरा यक़ीनी तौर पर नज़र आने लगा। तो अगरचे कुरआन हकीम के हुक्म " इल्ला मन उकरेहा व कल्बोहु मुतमइन्ना बिल ईमान" से उस मुसलमान के लिए रुख़सत है कि वह कुफ़्र की बात ज़बान से कह दे। बशर्ते कि उसका दिल ईमान के साथ मुतमइन हो लेकिन अगर वह मुसलमान इस हालत में कुफ़्र की बात जबान पर न लाए और जान दे दे तो बिला शुबा वह बहुत ही अफ़ज़ल व आला दरजे की शहादत से सरफराज़ होगा।

चुनाँचे सहाबाकिराम और बहुत से शोहदाए इस्लाम का यही उस्वए हसना है कि उन ख़ासाने खुदा को जब काफ़िरों ने कुफ्र करने पर मजबूर कर दिया और उनकी गर्दनों पर तलावारें रख दीं। तो उन हज़रात ने अपनी जानें कुरबान कर दीं मगर कुफ़्र की बात अपनी ज़बानों पर नहीं लाए। बल्कि दीने इस्लाम पर इस्तेक़ामत का पहाड़ बने हुए, अपने ख़ून का आख़िरी क़तरा और अपनी ज़िन्दगी की आख़िरी साँस खुदा की राह में कुरबान करके शहादत के ऐज़ाज़ से सरफ़राज़ हो गये। सुब्हानल्लाह!

बना करदन्द ख़ुश रस्मे बख़ाक व ख़ूँ गलतीदन
ख़ुदा रहमत कुनद ई आश्किाने पाक तीनत रा

रसूल की बैअत

हदीस नम्बर – 12

عن عبادة بن الصامت وكان شهد بدر اوهو احدالنقباء ليلة العقبة ان رسول الله ﷺ قال وحوله عصابة من اصحابه بايعوني على ان لا تشركوا بالله شيئا ولا تسرقوا ولا تزنوا ولا تقتلوا اولا دكم ولا تاتوا بهتان تفترونه بين ايديكم وارجلكم ولا تعصوا في معروف فمن وفي منكم فاجره على الله ومن اصاب من ذلك شيئا فعوقب في الدنيا فهو كفارة له ومن اصاب من ذلك شيئا ثم ستره الله فهو الى اله ان شاء عفا عنه و ان شاء عاقبه فبا يعناه على ذلك.

अन इबादा बिन सामित व काना शहेदा बदरुन औहुवा अहदुन नुकबाअ् लैलतुल उकबता अन्ना रसूलल्लाहि सल्लल्लाहु तआला अलैहि वसल्लम काला व हौलहु अ़स्बता मिन असहाबिहि बायऊनी अला अनला तश्रकू बिल्लाहि शैआ वला तसरकु वला तज़न्नू व ला तकतुलू औलादकुम वला तातू बोहतान तफतरुनहु बैना ऐदीयकुम व अरजुलकुम वला ताअ़सौ फी मारुफे फमन व फी मिनकुम फअजरोहू अ़लल लाहि व मन अस़ाबा मिन ज़ालिका शैअन फऊकब फिद् दुनिया फहुवा कुफ्फ़ारतुन लहु व मन अस़ाबा मिन ज़ालिक शैअन सुम्मा सतरल्लाहु फहुवा इला इलाहि इन शाअ अफा अन्हु व इन शाअ आकेबाह फबा या अनाहु अला ज़ालिक।

तर्जुमा :– हजरत उबादतुब्ने सामित रदियल्लाहु तआला अन्हु (जो बदर की लड़ाई में शहीद शरीक हुए और लैलातुल उकबा के नक़ीबों में से एक हैं) से रिवायत है कि रसूलल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने इस हाल में जब कि आप के गिर्द सहाबा की एक जमाअ़त थी यह फरमाया कि तुम लोग मुझ से बैअत करो। इन बातो पर :–

1. अल्लाह तआला के साथ किसी को शरीक न ठहराओगे।
2. चोरी नहीं करोगे।
3. जिना नहीं करोगे।
4. अपनी औलाद को क़त्ल नहीं करोगे।

5. अपने हाथ पाँव के दरमियान गढ़ कर किसी पर बोहतान न बाँधोगे।
6. किसी शरअई हुक्म में ना फ़रमानी नहीं करोगे।

तो जिस अहदो पैमान को पूरा करेगा। इस का अज्र अल्लाह तआला के ज़िम्मे है और जो इन गुनाहों में से कुछ कर बैठे और उसको दुनिया में इसकी सज़ा मिल जाए। तो यह उसके लिए कफ़्फ़ारा है। और जिसने उन गुनाहो में से किसी गुनाह को कर लिया और अल्लाह तआला ने उस गुनाह को छुपाऐ रखा तो उस का मामला अल्लाह के हवाले है। वह चाहेगा तो उसको माफ़ फ़रमा देगा या आख़िरत में उसको सज़ा देगा। तो हम सब लोगों ने हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम से इस पर बैअत की।

उ़बादा बिन सा़मित :– ह़दीस मज़्कूर के रावी हज़रत उबादा बिन सामित रदि़यल्लाहु तआ़ला अन्हु बहुत नामी गिरामी अन्सारी और सहाबी रसूल हैं। बहुत ही हसीन व ख़ूबसूरत और निहायत ही क़द आवर, कवी –ए– हैकल और मज़बूत बदन के आदमी थे। उक़बा ऊला, उक़बए सानिया, जंगे बदर, जंगे उहद, बैअ़तुर रिज़वान वग़ैरह तमाम मशाहिद और लड़ाईयों में शरीक हुए। सबसे पहले फ़िलिस्तीन के ह़ाकिम यही बनाये गये। अमीरुल मोमिनीन हज़रत उमर रदि़यल्लाहु तआला अ़न्हु ने उनको शाम का काजी बना दिया था। यह शहर हमस में मुक़ीम हो गये थे। फिर फिलस्तीन चले आये। और 34 हिजरी में बमुक़ाम रमला बहत्तर बरस की उमर पाकर विसाल फ़रमाया।

आप ने एक सौ इक्यासी हदीसें रिवायत फ़रमायी हैं। उबादा नाम के बारह सहाबी है। मगर उबादा बिन सामित आप के सिवा किसी सहाबी का नाम नहीं हैं। बुख़ारी शरीफ़ में आपकी रिवायत की हुई ह़दीसों की तादाद कुल नौ है।

तौज़ीहे अल्फ़ाज़ :– हदीस मज़्कूर के चन्द अल्फ़ाज़ की तशरीह हस्बे ज़ैल है।

बदर :– मदीना मुनव्वरा से अस्सी मील दूर एक गाँव का नाम है ज़माना जाहिलियत में यहाँ सालाना एक मेला लगता था। यहाँ एक कुआँ था जिसको बदर नाम के एक शख़्स ने बनवाया था। चुनाँचे उसी शख़्स के नाम पर उस गाँव का नाम बदर रख दिया गया था। यही वह तारीख़ी मुकाम है जहाँ 17 रमज़ान 2 हिजरी में कुफ़्र व इस्लाम का पहला मारका हुआ। जो

जंगे बदर के नाम से मशहूर है। इस जंग में शरीक होने वाले सहाबा का दरजा बहुत ही बुलन्द है । इसी एजाज़ को जाहिर करने के लिए रावी ने हज़रत उबादा बिन सामित के तआरुफ़ में यह कहा कि " वकाना शहेदा बदरन" कि यह जंगे बदर में शरीक थे।

नुक़बा :– यह नक़ीब की जमा है। इसक माना हैं सरदारे कौम, या क़ौम का ज़िम्मादार, जिसको मुखिया भी कहते हैं।

लैलतुल उक़बा :– इस लफ़्ज़ का तर्जुमा है " घाटी की रात" मगर तारीख़े इस्लाम में यह एक तारीख़ी जगह और तारीख़ी रात का नाम है।

हुज़ूर स़ल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम का यह तरीक़ा था कि हर साल हज के मौके पर आप क़बाइले अरब के सामने दावते इस्लाम पेश फ़रमाया करते थे। पहले साल मिना की घाटी में जहाँ मस्जिदे उक़्बा बनी हुई है। मदीना के छः शख़्सों ने रात की तारीकी में छुप कर इस्लाम क़बूल किया। इन खुश नसीबो के नाम यह है – 1. अबूल हैसम बिन तैहान 2. असद बिन ज़ुरारह,(एक हिजरी में वफ़ात पा गये) 3. औफ़ बिन हारिस, 4. राफ़ेअ़ बिन मालिक,(यह जंगे उहुद सन् 3 हिजरी में शहादत से सरफ़राज़ हुए,) 5. कुत्बा बिन आमिर,(यह जंगे यमामा में शहीद हुए,) 6. जाबिर बिन अ़ब्दुल्लाह, रदि़यल्लाहु तआला अन्हुम अजमईन।

यह साहिबान मिना की घाटी में इस्लाम क़बूल करने के बाद अपने अपने घरों को रवाना हो गये। और वहाँ इस्लाम की तबलीग़ करने लगे। दूसरे साल हज के मौसम में बारह आदमी मदीना मुनव्वरा से आये और उन लोगों ने भी मिना की उसी घाटी में रात के वक़्त हुज़ूर स़ल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम के दस्ते हक़ परस्त पर बैअ़त की और इस्लाम पर क़ायम रहने का अहदो पैमान किया। यही वह बैअत है जो सीरतुन नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की तारीखो में बैअ़ते उक़बए ऊला के नाम से मशहूर है। इन बारह अशख़ास ने बैअ़त करने के बाद यह ख़्वाहिश ज़ाहिर की अहकामे इस्लाम की तालीम के लिए कोई एक मोअ़ल्लिम उनके साथ मदीना भेज दिया जाए।

चुनाँचे हुज़ूर स़ल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम ने हज़रत मुसअब बिन उ़मैर रदि़यल्लाहु तआला अन्हु को उन लोगो के साथ ही मदीना भेज दिया। फिर उससे अगले बरस सत्तर या बहत्तर हजरात मदीने से हज के लिए आये और वह सब लोगों ने मिना की उसी घाटी में मुशरर्फ़ बा इस्लाम हुए। हुज़ूर

सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने इस गिरोह में से बारह शख्सो को नकीब (सरदारे कौम) मुन्तख़ब फरमाया। नौ अशख़ास कबीला खजरज के और तीन साहिबान कबीला औस के. उन्हीं मे से एक नकीब हजरत उबादा बिन सामित रदियल्लाहु तलाआ अन्हु भी थे। इसी लिए रावी ने उन के तआरुफ में यह कहा कि " व हुव अहदुन्नुकबाअ लैलतुल अकबा" यानी हज़रत उबादा घाटी की रात में मुन्तख़ब होने वाले नकीबों में से एक नकीब हैं। और इसी रात का नाम तारीख़े इस्लाम में " लैलतुल अकबा " है।

शरहे हदीस :— इस हदीस का मतलब तर्जुमा ही से ज़हिर है। जिसका ख़ुलासा यह है कि हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने हजिरीने मजलिस में से छः चीज़ों पर बैअत ली और सहाबा किराम ने बैअत करके उन गुनाहों के तर्क कर देने का सच्चा वादा और मुसम्मम अहद किया कि।(1) शिर्क नहीं करेंगे (2) चोरी नहीं करेंगें (3) जिना नहीं करेंगे (4) अपनी औलाद को मुफ़लिसी की वजह से या लड़कियों को आर समझ कर कत्ल न करेंगे। (5) किसी पर तोहमत न लगायेगें। (6) किसी शरई हुक्म की नाफ़रमानी नहीं करेगे।

वाज़ेह रहे कि यह सब वह गुनाहे कबीरा हैं जो हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की निगाहे नुबुव्वत में इतने ख़ौफ़नाक और भयानक गुनाह हैं कि ख़ास तौर पर इन गुनाहों से बचने पर हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने सहाबा किराम से बज़रिया बैअ़त अ़हद लिया। इस लिए हर मुसलमान पर लाज़िम है कि इन सब गुनाहों को जहन्नम का दहकता हुआ अंगारा समझ कर उन से दूर भागता रहे।

पीरी मुरीदी :— इस हदीस शरीफ़ से साबित होता है कि गुनाहों को छोड़ने और आमाले सालेहा करने पर बैअ़त लेनी हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की सुन्नत है और मशाइख़े किराम की बैअ़ते तरीकत । दर हकीकत इसी मुकद्दस सुन्नत पर अमल है यह हदीस दर हकीकत उन मुनकेरीने तसव्वुफ के लिए ज़बरं दस्त ताज़ियानाए इबरत है जो यह कहते फिरते हें कि " मशाइख़ की पैरवी मुरीदी बिदअ़त है"। लिल्लाह कोई इन साहिबों से पूछे कि आख़िर हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने सहाबा किराम से जो गुनाहों के तर्क करने पर बैअ़त ली। इसमें और पीराने किबार की बैअ़त में क्या फ़र्क है?-दोनों बैअ़तें गुनाहों के छोड़ने पर ही हैं। फिर क्या

वजह है कि पीराने किबार की बैअ़त बिदअ़त करार दी जाऐगी? मगर बड़ी मुश्किल तो यह है कि समझना और समझाना। तो उस शख्स के लिए होता है जो समझने के लिए तैयार भी हो। यह लोग तो सब कुछ समझते हुए भी न कुछ समझने को तैयार हैं न कुछ मानने को।?

मस्ल मशहूर है कि " सोते को जगाना बहुत आसान है मगर जागते को जगाना बहुत मुश्किल है "। जाहिल जो सादा वर्क की तरह ख़ाली ज़हन होता है उसके सामने अगर कोई हकीकत उजागर कर दी जाए तो उसका दिल व दिमाग़ बहुत आसानी के साथ इस हकीकत की तस्दीक और एतिराफ़ कर लेता है और सच्चे दिल से उनको मान लेता है। मगर वह पढे लिखे लोग जिन्होनें अपनी आँखों पर तअस्सुब की ऐनक लगा रखी है और इनाद व इन्कार ओर बहस व तकरार की आग ने जिन के दिल व दिमाग़ में फ़हम व बसीरत के आशयानों को जला कर भस्म कर दिया है उनके सामने लाख मरतबा किसी हक़ीक़त के चेहरे से नक़ाब कुशाई कर दीजिए मगर न वह हक़ को देखते हैं और न हक़ को सुनते हैं और न हक़ का एतिराफ़ करते हैं। ऐसे ही लोगों के बारे में कुरआन मजीद में इरशाद फ़रमाया कि " सुम्मुम बुकमुन उमयुन" कि वह बहरे गूँगे और अँधे हैं। और कहीं यह फरमाया कि " ला ताअमल अबसारु वला किन तअ़मल कुलूबुल लती फ़िस्सुदूर " यानी सर की आँखे अंधी नहीं होतीं। लेकिन उन के सीनों में छिपे हुए दिल अंन्धे हो जाते हैं। यानी आँखों की बसारत तो रहती है मगर दिलों की बसीरत ख़त्म हो जाती है। वल्लाहु तआला अअ़लम।

दुनिया में लिबास और आख़िरत में नंगी

हदीस – 13

عن ام سلمة قالت استيقظ النبی ﷺ ذات ليلة فقال سبحان الله ماذا انزل الليله من الفتن وما ذا فتح من الخزائن ايقظوا صواحب الحجر فرب كاسية فى الدنيا عارية فى الاخرة.

अन् उम्मे सल्मता क़ालत इस्ते कज़न नबीयो स़ल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ज़ाता लैलतुन फक़ाला सुब्हानल्लाहि माज़ा अन्ज़लल लैलता मिनल फ़ित्ने व माज़ा फ़तहो मिनल ख़ज़ाइने ऐक़ज़ू सवाहिबुल हुजरे फरुब्बा कासियतुन फ़िद्दुनिया आरियता फ़िल आख़िरता।

तर्जुमा :– हज़रत उम्मे सलमा रद़ियल्लाहु तआला अ़न्हा ने कहा कि एक रात हुजूर स़ल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम बेदार हुए तो फ़रमाया कि सुब्हानल्लाह! इस रात में कैसे कैसे फित्ने उतारे गये? और कैसे कैसे ख़ज़ाने खोले गये? इन हुजरे वालियों को (इबादत कि लिए) जगाओ। क्योंकि बहुत सी औरतें दुनिया में लिबास पहने हुए हैं मगर वह आख़िरत में नंगी होंगी।

उम्मे सलमा :– इस हदीस को रिवायत करने वाली उम्मुल मोमिनीन बीबी उम्मे सलमा रद़ियल्लाहु तआ़ला अ़न्हा हैं उनका असली नाम हिन्दा या रमला है। और यह अबू उमय्या की साहबज़ादी हैं। यह पहले अबू सलमा रद़ियल्लाहु तआ़ला अन्हु की बीवी थीं। हज़रत अबू सलमा इनको और अपने बच्चे को साथ लेकर हिजरत के लिए रवाना होने लगे तो बीबी उम्मे सलमा को उनके मायके वालों ने रोक लिया। और बच्चे को हज़रत उम्मे सलमा के ख़ानदान वालों ने छीन लिया। हज़रत अबू सलमा बीवी बच्चों को छोड़ कर तन्हा मदीना चले गये। फिर कुछ दिनों बाद बी बी उम्मे सलमा अपने बच्चे को हमराह लेकर अकेली हिजरत करके मक्का से मदीना गईं। हज़रत अबू सलमा रद़ियल्लाहु तआ़ला अन्हु जब 3 हिजरी में वफ़ात पा गये तो हुजूरे अकरम स़ल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने हज़रत बीबी उम्मे सलमा से अक़्द फ़रमा कर उनको उम्माहातुल मोमिनीन में शामिल फ़रमा

लिया। 378 हदीसें इन्होंने हुजूर सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम से रिवायत की हैं। 59 हिजरी में 84 बरस की उम्र पाकर मदीना मुनव्वरा में वफात पायी। और जन्नतुल बकीअ् मे मदफून हुई।

फवाइदे हदीस :– 1. इस हदीस को हजरत इमाम बुखारी अलैहिर्रहमा ने इसके अलावा मुन्दरजा जैल अबवाब में भी जिक्र फरमाया है। सलातुल लैल, अलामतुल नुबुव्वत, किताबुल अदब, किताबुल लिबास, किताबुल फितन, और इमाम तिरमिज़ी ने इस हदीस को सिर्फ किताबुन फितन में दर्ज किया है।

2. खुदावन्द आलम जल्ला जलालुहू ने हुजूर सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम को आइन्दा होने वाले फित्नों और फुतूहात के खजानों को ख्वाब में या बेदारी में मुशाहिदा कराया। और आपने उनकी कसरत को देखकर तअज्जुब का इजहार फरमाते हुए यह इरशाद फरमाया कि सुब्हानल्लाह आज की रात में किस कदर ज्यादा फितने और खजाने आसमान से ज़मीन पर उतारे गये।

बुख़ारी शरीफ की एक दूसरी रिवायत में यूँ भी आया है कि हुजूर सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने यह इरशाद फरमाया कि मैं तुम्हारे घरों में इस तरह फितनों को गिरते हुए देख रहा हूँ कि जिस तरह बारिश के कतरात मुसलसल और लगातार ज़मीन पर गिरते है।

3. बुख़ारी शरीफ के हवाशी में है कि फित्नों से मुराद " अज़ाब" और खज़ानों से मुराद " रहमतें" हैं और बाज़ शारेहीने हदीस ने फरमाया कि फित्नों से मुराद आइन्दा होने वाले फसादात और लड़ाईयां जो इस उम्मत के लिए बाइसे फ़ितना है। जैसे हजरत उस्मान ग़नी रदियल्लाहु तआल अन्हु की शहादत जंगे जमल,जंगे सिफ्फीन जंगे हुर्रा, जंगे करबला वगैरह जिन से बहुत ज़्यादा फितने फैले और मुसलमानों का बेहद जानी व माली नुकसान हुआ। और ख़जानो से मुराद वह फुतूहात हैं जो खुलफाऐ राशेदीन या उनके बाद आने वाले मुस्लिम सलातीन को हासिल हुई। कि फारस व रोम बल्कि यूरोप एशिया के ख़ज़ाने मफतूह होकर इस्लामी बैतुल माल में पहुँच गये। वल्लाहु तआला अअ्लम।

4. इसके बाद हुजूर सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने " हुजरे वालियों" यानी अपनी अजवाजे मुताहरात को जगाने का हुक्म फरमाया। ताकि वह

उठ कर नमाजे तहज्जुद पढ़े। हुजूर सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम का यह मुबारक तरीका और आदते करीमा थी कि जब कोई खौफनाक मन्जर आप देखते थे तो फौरन नमाज मे मशगूल हो जाते थे। और दूसरों को भी उसका हुक्म देते थे। चूँकि उस वक्त अज़वाजे मुताहरात ही नजरों के सामने थी। इसलिए आपने उनको जगाने का हुक्म दिया। ताकि खुद भी हुजूर इबादत में मसरुफ हो जाएं। और उम्मत की माँए भी ख़ुदा की इबादत में लग जायें।

5. हुजूर सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने अपनी मुकद्दस बीवियों को इबादत के लिए जगाने का हुक्म दिया और उसका सबब यह बताया कि बहुत सी औरतें जो इस दुनिया में किस्म किस्म के लिबासों में मलबूस नजर आती हैं। कियामत के दिन नेकियों और आमाले सालेहा से नंगी होंगी। क्योंकि आख़िरत में लिबास और जन्नत की पोशाक मिलने का दारोमदार नेक आमाल पर ही है। तो जिन औरतों ने दुनिया में नेकियों का ज़खीरा नहीं जमा किया और अच्छे आमाल से खाली हाथ आख़िरत में गईं तो भला उन्हे आख़िरत में कहां से लिबास मिलेगा ? इस लिए वह दुनिया में तो अगरचे किस्म किस्म के लिबासों में मलबूस रही हैं मगर आखिरत में बिल्कुल ही नंगी होंगी। इस लिए हुजूर सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने इस हदीस में खुसूसी तौर पर अपनी बीवियों और दूसरी औरतों को आमाले सॉलेहा की तरग़ीब दी ताकि वह दुनिया में खुदा की इबादत करके आख़िरत के लिबास का सामान करलें।

मसाइले हदीस :– इस हदीस से मुन्दरजा ज़ैल मसाइल पर रौशनी पड़ती है।

1. रात में अपने अहलो अयाल को इबादत के लिए जगाना मुस्तहब है। खुसूसन ऐसी सूरत में जब कि किसी अहम वाकिया का जुहूर हुआ हो।

2. ताअज्जुब के मवाक़ेअ पर " सुब्हानल्लाह" कहना हुजूर सल्लल्लाहो तआला अलैहि वसल्लम की सुन्नत है।

3. रात में भी नेकियों का हुक्म देना, और बुराईयों से मना करना और लोगों को मसाइले दीन बताना जाइज़ है।

4. ख़ासकर अपने अहलो अयाल को नसीहत करना और उनको तरग़ीब व तरहीब सुनाना भी जाइज है।

5. फक़त औरतों ही को वाअज सुनाना भी जाइज़ है।

6. अगर किसी शख़्स को किसी फ़ित्ना या किसी ख़ुशख़बरी की इत्तेलाअ हो जाए तो लोगों को उससे आगाह कर देना जाइज़ है। वल्लाहु तआ़ला अअ्लम।

ख़ूने ना हक़

हदीस नम्बर – 14

عن جرير ان النبي ﷺ قال له في حجة الوداع استنصت الناس فقال لا ترجعوا بعدى كفارا يضرب بعضكم رقاب بعض.

अन जरीर अनिन नबीयो सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम क़ाला लहू फ़ि हज्जतुल विदाअ़े असतनससुन नास फ़क़ाला ला तरजेऊ बाअ़दी कुफ़्फ़ारेन यदरिबु बअ़दोकुम रिक़ाबा बअ़दिन।

तर्जुमा :– हज़रत जरीर रदियल्लाहु तआ़ला अ़न्हु से रिवायत है कि उनसे हुजूर स़ल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने " हज्जतुल वदाअ़" में फरमाया कि तुम लोगों को ख़ामोश करो। फिर हुजूर सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया कि तुम लोग मेरे बाद पलट कर कुफ़्फ़ार मत हो जाना कि तुम्हारा बाज़, बाज़ की गरदन मारे।

हज़रत जरीर :– इस हदीस के रावी हज़रत जरीर बिन अब्दुल्लाह सहाबी रदियल्लाहु तआ़ला अ़न्हु हैं। यह मशहूर बा करामत मुहद्दिस अबू ज़रआ के दादा हैं। हज़रत जरीर बहुत ही ख़ूबसूरत और दराज़ कद थे। इतने लम्बे थे कि ऊँट की कोहान तक उनका सर पहुँचता था। और उनका जूता एक हाथ लम्बा होता था। 10 हिजरी में हुज्जतुल वदाअ़ से पहले मुशर्रफ बा इस्लाम हुए। आपसे एक सौ हदीसें मरवी हैं और आप के शागिर्दों की तादाद बहुत ज़्यादा है आप कूफ़ा से कुरैश चले गये थे। वहीं 51 हिजरी में आपकी रहलत हुई।

हज्जतुल वदाअ़ :– इस हदीस में हज्जतुल वदाअ़ का ज़िक्र आया है इसकी तौज़ीह व तशरीह यह है कि हुजूर स़ल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने 10 हिजरी में आख़िरी हज फ़रमाया । इसी हज को हज्जतुल वदाअ़ इस लिए कहते हैं कि वदाअ़ के माना रुख़सत करने के हैं। चूँकि हुजूर सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने इस हज में तमाम कबाइले अरब को इस तरह रुख़सत फ़रमाया जैसे कि दुनिया से सफ़र करने वाला अपने पसमान्दगान को रुख़सत किया करता है। उस हज का नाम हज्जतुल वदाअ़ हो गया।

शरहे हदीस :– यह हदीस हुजूर सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के एक तवील खुत्बे का एक टुकड़ा है। मुस्लिम शरीफ़ की रिवायत में है कि हुजूर ने अपने आखिरी हज हुज्जतुल वदाअ् के मौके पर जब कि लोग मिना में जमरों को कन्करी मारने के लिए जमा थे उस वक्त यह खुत्बा इरशाद फरमाया था।

हाशिया बुख़ारी शरीफ़ में है कि इस हदीस में सिर्फ़ दो ही जुमले हैं। एक " ला तरजऊ बाअदी कुफ्फ़ारा" दूसरा " यदरिबो बअ्दोकुम रकाबा बअ्दिन" अब दो हाल से खाली नहीं या तो दूसरा जुमला पहले जुमले का बयान है या दो अलग अलग मुस्तकिल जुमले हैं। अगर दूसरा जुमला पहले जुमले का बयान हो तो हदीस का मतलब यह होगा कि तुम लोग मेरे बाद काफ़िरों जैसा काम यानी एक दूसरे की गरदन मारना। यह धन्धा कभी हरगिज नहीं करना। और अगर दूसरा जुमला पहले जुमले का बयान न करार दिया जाए। तो हदीस का हासिल मफ़हूम यह होगा कि हुजूर सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने इस हदीस में अपनी उम्मत को दो बातों से मना फ़रमाया। एक बात तो यह कि तुम लोग मेरे बाद काफ़िर मत हो जाना। बल्कि आख़िरी दम तक इस्लाम पर कायम रहना। और दूसरी बात यह कि तुम एक दूसरे को नाहक़ क़त्ल मत करना।

फ़वाइदे मसाइल :– 1. इस हदीस को इमाम बुख़ारी ने मुग़ाज़ी और दय्यात में भी जिक्र फरमाया है। और इमाम मुस्लिम ने किताबुल ईमान में और निसाई ने किताबुल इल्म में और इब्ने माजा ने किताबुल फ़ित्न में तहरीर फ़रमाया है।

2. मुसलमान के क़त्ल को हलाल समझ कर किसी मुसलमान का ख़ून कर देना कुफ्र है। और मुसलमान के क़त्ल को हराम जानते और मानते हुए किसी मुसलमान को नाहक़ क़त्ल कर देना गुनाहे कबीरा है। जिसपर कुरआन मजीद में अजाबे शदीद की वअ़ीद आयी है।

3. आलिमों की तक़रीर के लिए बात चीत करने वाले मजमाअ् को खामोश कराना जाइज़ है।

4. वाअ्ज व तक़रीर के वक्त हाज़ेरीने मजलिस को खामोश होकर सुकून व इत्मीनान के साथ वाअज और खुत्बा सुनना लाज़िम है। वल्लाहु तआला अअ्लम।

कुत्ते को पानी पिलाने वाला

हदीस नम्बर –15

عن ابی هريرة عن النبی ﷺ ان رجلا رای كلبا ياكل الثری من العطش فاخذ الرجل خفه فجعل يغرف له حتی ارواه فشكر الله له فادخله الجنة. (بخاری جلد اول، ص ٢٩)

अन अबी हुरैरता अनिन नबीयो सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम इन्ना रजुलन राया कलबन याकुलु सरा मिनल अतशे फखजर रजूलु खुफ्फहु फजआला यग़रिफु लहु हत्ता अरवाह फश्कुरुल्लाह लहु फ़दखहुलुल जन्नता।

तर्जुमा :– हज़रत अबू हुरैरा रदियल्लाहु तआला अन्हु से रिवायत है कि हुज़ूर नबीऐ करीम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फरमाया कि एक आदमी ने एक कुत्ते को देखा जो प्यास की वजह से गीली मिट्टी चाट रहा था। तो उस शख़्स ने अपना मोज़ा लिया और उसमें चुल्लू से पानी भरकर उस कुत्ते को पिलाया। यहाँ तक कि वह सैराब हो गया। तो अल्लाह तआला को उसका यह काम पसन्द आया और उसको जन्नत में दाखिल कर दिया।

फ़वाइद व मसाइल :– 1. यह हदीस बुख़ारी शरीफ में है शर्ब, मज़ालिम,अदब, ज़िक्र बनी इसराईल के बाबों मे भी मज़कूर है। और मुस्लिम ने बाबुल हैवान और अबू दाऊद ने किताबुल जिहाद में भी नकल फ़रमाया है।

2. यह हदीस बुख़ारी शरीफ की एक रिवायत में यूँ भी आयी है कि इस हदीस को सुनकर सहाबा किराम ने अर्ज किया कि या रसूलल्लाह ! क्या चौपायों के साथ अच्छा सुलुक करने में भी हम को सवाब मिलेगा ? तो इरशाद फ़रमाया कि हाँ " फी कुल्ले कबदिन रतबतिन अजरिन" हर गीले जिगर में यानी जानदार के साथ अच्छा सुलूक करने में सवाब है। और यही हदीस इन्हीं हज़रत अबूहुरैरा रदियल्लाहु तआला अन्हु से इसी बुख़ारी शरीफ़ में इस तरह भी आयी है कि :–

" एक शख़्स पर रास्ता चलते हुए प्यास का ग़लबा हुआ तो उसको एक कुआँ मिला। उसनें कुएँ मे उतर कर पानी पी लिया। फिर जब वह कुएँ

से बाहर निकला तो नागहाँ यह देखा कि एक कुत्ता ज़बान निकाले हुए गीली मिट्टी चाट रहा है। तो उस आदमी ने दिल में सोचा कि जैसी प्यास मुझको लगी थी ऐसी ही प्यास इस कुत्ते को भी लगी है तो वह कुऐं में उतर कर अपने मोज़े मे पानी भरकर लाया। फिर कुत्ते को पिलाया। तो उसका यह अमल खुदा को पसन्द आ गया। और उसको बख़्श दिया। यह सुनकर सहाबा ने कहा कि या रसूलल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ! क्या हमारे लिए चौपायों के साथ एहसान करने में सवाब है ? तो इरशाद फ़रमाया कि हाँ। हर गीले जिगर में यानी हर जानदार के साथ एहसान करने में सवाब है।

3. इस रिवायत में तो यह वाकिया बनी इसराईल के एक मर्द का है। बुख़ारी शरीफ़ की एक दूसरी रिवायत में इसी किस्म का एक वाकिया ज़िना कार औरत का भी बयान हुआ है। चुनाँचे उस हदीस के अल्फ़ाज़ यह हैं :–

" एक ज़िनाकार औरत की मग़फ़िरत इस तरह हो गई कि वह एक कुत्ते के पास से गुज़री जो एक कुऐं के पास ज़बान निकाले हुए था। और करीब था कि प्यास की शिद्दत उस को मार डाले। तो उस औरत ने अपना मोज़ा निकाला और उसको अपने दुपट्टे में बाँधकर कुऐं में से पानी भरकर पिलाया। तो अल्लाह तआला ने इस अमल के अज्र में उसको बख़्श दिया।

4. इस हदीस में तमाम मख़लूक पर रहम व करम करने की अहमियत को बयान किया गया है। और यह कि अल्लाह तआला फ़ाइले मुख़्तार है। वह चाहे तो एक बहुत ही अदना से नेक अमल करने वाले को अपने फ़ज़्लो करम से बख़्श दे। उसके दरबार में अमल के वज़न और मिक़दार को नहीं देखा जाता बल्कि उसकी द.रगाह में ख़ुलूसे नियत और इख़्लासे अमल की कद्र है। बहुत की मामूली अमल अगर बन्दा इख़्लास व नेक नियती के साथ करे तो वह रब्बे करीम उस अमल के सवाब में बन्दे को अपने रिज़वान व ग़ुफ़रान की नेअ्मतो से सरफ़राज़ फ़रमा कर उसको जन्नतुल फ़िरदौस का मकीन बना देता है।

रहमते हक बहाना मी जोयद
रहमते हक बहा नमी जोयद

खुदा की रहमत बन्दों का बख़्शने का बहाना ढूँढती है, खुदा की रहमत बन्दों से मग़फ़िरत की कीमत नहीं तलब करती हैं

5. इमाम नोवी ने हदीस मज़कूर के तहत में फ़रमाया कि

" इस हदीस में हर मखलूक़ के साथ एहसान करने की जो तरग़ीब दिलाई गयी है उससे वही मखलूक मुराद है जो अल्लाह तआला के नजदीक मोहतरम और काबिले ऐज़ाज़ है वरना वह मखलूक जो अल्लाह तआला के नज़दीक मोहतरम और क़ाबिले इज़्ज़त नहीं है जैसे काफ़िर हरबी, और लोगों को काटने वाला कुत्ता। इनके साथ एहसान करने में कोई अजरो सवाब नहीं है।

6. जब जानवरों के साथ एहसान और नेक सुलूक का यह दरजा है कि एक प्यासे कुत्ते को पानी पिला देने वाला जन्नत में दाखिल हो गया। तो भूके प्यासे मोमिनों को खाना पानी से सैराब करने वाला कितने बड़े बड़े अजरे अज़ीम का मुस्तहक़ होगा। और अल्लाह तआला उसको जन्नत में कैस कैसे मदारिज व मनाजिल अता फ़रमायेगा। उसकी कैफ़ियत व कम्मीयत को भला " अल्लामुल गुयूब" के सिवा और कौन जान सकता है। अल्लाह का फज़लो करम बहुत बड़ा है।

बिल्ली को भूक से मारने वाली

हदीस नम्बर – 16

عن ابن عمر عن النبی ﷺ قال دخلت امراۃ النار فی هرۃ ربطتها فلم تطعمها ولم تدعها تاکل من خبشاش الارض.

अन इब्ने उ़मर अ़निन नबीयो स़ल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम काला दख़लतो इमरातिन नार फ़ी हिर्रति रबततहा फ़लम ततअमोहा वलम तदअहा ताअकुलो मिन ख़बशाशिल अरद।

तर्जुमा : – हजरत अब्दुल्लाह बिन उमर रदियल्लाहु तआला अन्हु रिवायत करते हैं कि हुजूर नबीए करीम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फरमाया कि एक औरत एक बिल्ली के मामले में जहन्नम में दाखिल हुई। उसने एक बिल्ली को बाँध रखा था। न तो उसको कुछ खिलाया न उसको छोड़ा कि वह हश्रातुल अर्द को खाती। यहाँ तक कि वह भूकी मर गई।

हज़रत इब्ने उ़मर :– इस हदीस के रावी हज़रत इब्ने उमर रदियल्लाहु तआला अन्हुमा हैं इन का नाम अब्दुल्लाह है और यह अमीरुल मोमिनीन हजरत उमर रदियल्लाहु तआला अन्हु के नामवर फरजन्द हैं। बचपन ही में अपने वालिद माजिद के साथ मुशर्रफ बा इस्लाम हुए। और हिजरत करके मदीना गये। जंगे खन्दक और बैअ़तुर रिजवान वगैरह वगैरह में शरीक हुए। इन्तेहाई आबिद व जाहिद और मुत्तकी परहेजगार सहाबी है। अपनी जिन्दगी में एक हजार से जाइद गुलामों को खरीद कर आजाद किया। हजरत जाबिर बिन अब्दुल्ला सहाबी रदियल्लाहु तआला अन्हु फरमाया करते थे कि हम में से हर एक शख्स के पास दुनिया आ गई मगर हजरत अब्दुल्लाह और उनके वालिद अमीरुल मोमिनीन हजरत उमर फारुके आजम रदियल्लाहु तआला अन्हु के पास से दुनिया का गुजर नहीं हुआ। मैमून बिन मेहरान ताबेई कहा करते थे कि मैंने इब्ने उमर से बढकर मुत्तकी ओर इब्ने अब्बास से बढकर इल्म वाला किसी को नही देखा। एक हजार छ. सौ तीस हदीसें ऐसी हैं जो सिर्फ मुस्लिम शरीफ मे हैं। इल्मे फिकह व हदीस में इनका मर्तबा बहुत बुलन्द है और इनके शागिर्दो की फहरिस्त बहुत लम्बी है। जिनमे हजरत सालिम व हमजा उबैदुल्लाह व

इमाम नाफ़ेअ् जैसे बुलन्द पाया फुकहा व मुहद्दिसीन हैं। हुजाज बिन यूसुफ सकफी जालिम गर्वनर को आप हज के मसाइल और दूसरे शरई मामलात में टोकते रहते थे। उस ज़ालिम को यह नागवार हुआ और उसने अपने एक सिपाही के ज़रिये ज़हर आलूद बरछी से आपके पाँव के तलवे में ज़ख्म लगवा दिया। जिससे सारे बदन में ज़हर का असर फैल गया। और आप मक्का मुकर्रमा में अ़लील हो गये। तो मक्कार हुजाज बिन यूसुफ ज़ालिम आपकी बीमार पुरसी के लिए आया आप उसी अ़लालत में हज़रत अब्दुल्लाह बिन ज़ुबैर रदियल्लाहु तआला अन्हु की शहादत के तीन माह बाद 73 हिजरी में चौरासी या छियासी साल की उमर में विसाल फरमा गये। और मक्का मुकर्रमा के कब्रिस्ताने मुहाजिरे ज़ी तवा में मदफून हुए।

फ़वाइद व मसाइल :– यह हदीस बुखारी शरीफ़ व मुस्लिम वगैरह में है मुताअ़द्दिद रिवायतों और मुख़्तलिफ़ लफ्ज़ों के साथ बहुत जगह आयी है एक रिवायत में यह भी है कि हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया कि मैने जहन्नुम में देखा कि वह बिल्ली उस औरत को नोच रही हं।

2. जिस तरह इससे पहले वाली हदीस में जानवरों पर रहम व अहसान करने की अहमियत को ज़ाहिर किया गया है इस तरह इस हदीस में जानवरों पर ज़ुल्म करने और बुराई और उसके बुरे अन्जाम को जिक्र किया गया है। कि यह औरत एक बिल्ली को मार डालने की वजह से जहन्नम में गई।

3. इमाम नोवी ने फ़रमाया कि इस हदीस से साबित होता है कि बिल्ली या किसी जानवर को भूका प्यासा बांधे रहना या क़ैद में रखना हराम है। क्योंकि यह औरत बावुजूद मुसलमान होने के इसी गुनाह की वजह से जहन्नम में दाखिल हो गई। और इस हदीस से यह निकलता है कि जानवरों का चारा पानी मालिक के ऊपर वाजिब है। अगर मालिक अपने जानवरों को भूका प्यासा रखेगा तो गुनाहगार होगा।

4. गैर मूज़ी जानवरों पर किसी किस्म का ज़ुल्म करना हराम है। जो लोग घोड़ों गधों पर उनकी ताक़त से ज़्यादा बोझ लादते हैं। या बिला वजह मारते पीटते हैं या तफ़रीह के तौर पर बिला ज़रुरत जानवरों को मारते हैं। इन लोगों के लिए इस हदीस में लरज़ा बरअन्दाम करने वाली और इबरत खेज वईद हैं। अल्लाह तआला हर मुसलमान को ज़ुल्म के

गुनाह से महफूज रखे आमीन।

हज़रत अबू हुरैरा रदियल्लाहु तआला अन्हु ने एक शख़्स को यह कहते हूए सुना कि ज़ालिम अपनी ही ज़ात को नुक़सान पहुँचाता है तो हज़रत अबू हुरैरा रदि़यल्लाहु तआला अन्हु ने फ़रमाया कि क्यों नहीं ? ज़ालिम के ज़ुल्म की नहूसत से बारी तआला बारिश बन्द फ़रमा देता है। तो हिबारा(एक परिन्दा) अपने घोसलें में लाग़र होकर ज़ालिम के ज़ुल्म से मर जाती है।

बहर हाल ज़ुल्म ख़्वाह किसी इन्सान पर हो, या किसी जानवर पर, बहर हाल हराम और जहन्नम में दाख़िल होने का सबब है। वल्लाहु तआला अअ्लम।

वाअ़्ज़ के लिए दिन मुक़र्रर करना

हदीस नम्बर – 17

عن ابی وائل کان عبد الله یذکر الناس فی کل خمیس فقال له رجل یا ابا عبد الرحمن لوددت انک ذکرتنا کل یوم قال اما انه یمنعنی من ذلک انی اکره ان املکم وانی اتخولکم بالموعظة کما کان النبی ﷺ یتخولنا بها مخافة السامة علینا.

अन अबी वाइल काना अब्दुल्लाह यज़कुरुन्नासा फी कुल्ले खमीसिन फकाला लहु रजुलुन या अबा अब्दुर्रहमान लवददता इन्नका ज़कर तना कुल्लु यौमिन काला अमा अन्नहु मनअ़नी मिन ज़ालिक इन्नी अकराहु इन अमलकुम व इन्नी अतख़व्वलकुम बिल मोइज़ते कमा कानन नबीयो सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम यतख़व्वलना बिहा मुखाफ़तस साम्मति अलैना।

तर्जुमा :– हज़रत अबू वाइल (शफीक बिन सलमा) से रिवायत है कि हज़रत अब्दुल्लाह बिन मसऊद रदियल्लाहु तआ़ाला अन्हुमा हर जुमेरात के दिन वाअ़्ज़ फ़रमाया करते थे। तो एक आदमी ने उनसे कहा कि ऐ अबू अब्दुर्रहमान ! मेरी तमन्ना है कि आप रोज़ाना हम को वअ़्ज़ सुनाया करें। तो आप ने फरमाया कि रोजाना वअ़्ज़ कहने से जो चीज मुझे रोकती है वह यह है कि मैं तुम लोगों को तंगी में डालना नहीं चाहता। और मैं तुम्हारी फुर्सत का ख़्याल रखता हूँ। जैसे कि नबी स़ल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम वअ़्ज़ सुनाने में हमारी फुर्सत का ख़्याल रखते थे। इस ख़ौफ से कि हम उक्ता न जाऐं।

हज़रत अब्दुल्लाह बिन मसऊ़द :– इस हदीस के रावियों में हजरत अब्दुल्लाह बिन मसऊद सहाबी रदियल्लाहु तआला अन्हु बहुत से जामेअ़् फ़जाइल व कमालात हैं। इब्तिदा ही में इस्लाम कबूल कर लिया था। इस लिए साबेक़ीन अव्वलीन में आपका शुमार है। यहाँ तक कि बाज़ माअर्रेख़ीन ने लिखा है कि आप छटे मुसलामन हैं। मक्का से हबशा और हबशा से मदीना दोनों हिजरतों का शरफ हासिल है। आपकी कुन्नियत अबू अब्दुर्रहमान और लकब साहिबुन नालैन वल वसादतु वल मतरिही है। यानी हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की नालैन और मसनद नीज वज़ू का

बरतन और मिस्वाक वगैरह आप ही की तहवील में रहती थीं। जंगे बदर और दूसरी लड़ाईयों में भी शरीके जिहाद रहे। और उम्र भर हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की ख़िदमत में इस तरह हाज़िर बाश और राजदार रहे कि बाहर से आने वाले लोग आप को हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के घर का एक फर्द समझते थे।

आप बहुत दुबले पतले और पस्ता कद थे। हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने आपको जन्नत की बशारत दी। और यह फ़रमाया कि मैं अपनी उम्मत के लिए वही पसन्द करता हूँ जो यह पसन्द करें और उसको नापसन्द समझता हूँ जिसको यह नापसन्द करें। अमीरुल मोमिनीन हज़रत उमर रदियल्लाहु तआला अन्हु और अमीरुल मोमिनीन हज़रत उस्मान ग़नी रदियल्लाहु तआला अन्हु के दौरे ख़िलाफ़त में कूफ़ा के क़ाज़ी और बैतुल माल के मैनेजर रहे। आठ सौ अड़तालीस हदीसें आपसे मरवी हैं फ़िक़ा हनफ़ी का दारोमदार ज़्यादातर आप ही की रिवायात पर है। आख़िरी उम्र में आप कूफ़ा से मदीना चले आये। और 22 हिजरी में साठ साल से ज़्यादा उम्र पाकर विसाल फ़रमाया और जन्नतुल बक़ीअ़ में मदफ़ून हुए।

फ़वाइद व मसाइल :– 1. इस हदीस को इमाम बुख़ारी ने इसके अ़लावा किताबुद दावात में और मुस्लिम ने बाबे तौबा में और तिरमिज़ी ने बाबे इस्तिज़ान में ज़िक्र किया है।

2. हदीस का मतलब वाज़ेह रहे कि हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ऐसे वक्त में वाअ़ज़ फ़रमाया करते थे। जब लोग अपने काम धन्धे से फ़ुरसत पाकर इत्मीनान से सुन सकें। इस लिए हज़रत अ़ब्दुल्ला बिन मसऊद रदियल्लाहु तआला अन्हुमा हफ्ते में एक ही मरतबा जुमेरात के दिन अपने वअ़ज़ का प्रोग्राम रखते थे। ताकि लोग उस दिन अपने कारोबार से फ़ारिग़ होकर और फ़ुर्सत पाकर सुकून व इत्मीनान के साथ वअ़ज़ सुन सकें। और इसमें कोई शक नही कि वअ़ज़ के जलसों के लिए वक़्त और दिन मुक़र्रर कर देनें में सामेअ़ीन को बडी आसानी हुआ करती है। क्योंकि जब लोगों को पहले से मालूम होता है कि फ़लाँ दिन और फ़लाँ वक्त वअ़ज़ होने वाला है तो लोग अपने कामों से फ़ारिग़ होकर और फ़ुर्सत का वक्त निकाल कर शौक से वअ़ज़ के जलसों में शामिल होते हैं। और उनके कारोबार का प्रोग्राम भी नहीं बिगड़ता।

3. इस हदीस से साबित होता है कि महफिले मीलाद शरीफ जलसए रजबी शरीफ जलसऐ बारहवीं शरीफ जलसए ग्यारवी शरीफ वगैरह के लिए वक्त और दिन मुक़र्रर करना हरगिज़ हरगिज़ बिदअत और गुनाह नहीं है। बल्कि एक जलीलुल क़द्र सहाबी हज़रत अब्दुल्लाह बिन मसऊद रदियल्लाहु तआला अन्हुमा का तरीक़ा है कि आपने जुमेरात के दिन को वअ़ज़ के लिए मुअय्यन और मुकर्रर फरमा दिया था।

जो लोग मीलाद शरीफ़ में तअ़य्युने वक्त और तदाई (एक दूसरे को दावत देने) से चिढ़ते और मुँह बिगाड़ते हैं। और उनको बिदअ़त क़रार देते हैं। अगर वह तअ़स्सुब और हठ धर्मी की ऐनक उतार कर इस हदीस को देख लें तो उन पर भी इस हक़ीक़त का इन्किशाफ़ हो जायेगा। कि किसी जाइज़ काम को दिन मुक़र्रर करके करना न सिर्फ जाइज़ बल्कि इख़्लास व नीयते ख़ैर के साथ हो तो मुस्तहिब व मुस्तहसन भी है।

4. इस हदीस से यह भी समझ में आता है कि उ़ल्माए किराम का फर्ज़े मन्सबी है कि वह अपने मवाइज़ और तक़रीरों के ज़रीआ़ अवाम में तबलीग़ व तज़्कीर करते रहें। सहाबा किराम और ताबेअ़ीन व तबेअ ताबेअ़ीन बल्कि उनके बाद के उल्मा भी बराबर अवाम की इस्लाह और तबलीगे इस्लाम की गर्ज़ से वअ़ज व तक़रीर फ़रमाते रहे। यहाँ तक कि हज़रत अबू ज़र गफ़्फ़ारी रदियल्लाहु तआला अन्हु का क़ौल था कि –

"अगर तुम लोग मेरी गर्दन पर तलवार रख दो और इस हालत में भी अगर यह समझ लूँ कि गरदन कटने से पहले मैं एक बात जो मैंने हुज़ूर स़ल्लल्लाहो तआला अलैहि वसल्लम से सुनी है। इस को तुम लोगों तक पहुँचा सकूँ तो उसको ज़रुर पहुँचा दूँगा।

5. इस हदीस में " इन्नी अकराह अन उमल्लिकुम" के जुमला से यह मसअला समझ में आता है कि आ़लिमों को अपने वअ़ज़ो में इस का ख़्याल रखना चाहिये कि लोग वअ़ज़ से उक्ता कर रंज व मलाल में न पड़ जाऐं। लिहाज़ा इतनी ही देर वअ़ज़ बयान करना चाहिये। जब तक लोग निशात और शौक के साथ सुनते रहें। वअ़ज़ को इतना तवील नहीं करना चाहिये कि लोग घब्रा कर बद दिली के साथ सुनेंगे। वरना अल्लाह व रसूल के कलाम व अहकाम को सुनने में बे रग़बती का गुनाह लाज़िम आयेगा। वल्लाहु तआला अअ़लम।

फ़ितनों का सैलाब

हदीस नम्बर -18

عن ابی سعید الخدری انه قال قال رسول الله ﷺ یوشک ان یکون خیر مال المسلم غنم یتبع بها شعف الجبال و مواقع القطر یفر بدینه من الفتن. (بخاری،جلداول،ص۷)

अन अबी सईद ख़ुदरी इन्नहू काला काला रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम यूशकु अयंकूना ख़ैरा माले मुस्लिम गनमुनयत तबिउ बिहा शअ़फ़िल जिबाले व मवाक़िइल क़तरि यफ़िर्रु बिदीनेहि मिनल फ़ितनि।

तर्जुमा :- हज़रत अबू सईद ख़ुदरी रदियल्लाहु तआ़ला अन्हु से रिवायत है कि उन्होंने कहा कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने इरशाद फ़रमाया है कि अन्क़रीब वह ज़माना आयेगा कि मुसलमान का बेहतरीन माल बकरियाँ होंगी। जिन के पीछे पीछे वह पहाड़ियों की चोटियों और बारिश के मकामात पर भागता हुआ चला जायेगा ताकि वह अपने दीन को फ़ितनों से बचा ले।

हज़रत अबू सईद ख़ुदरी :- इस हदीस के रावी अबू सईद ख़ुदरी रदियल्लाहु तआला अन्हु सहाबी हैं। उनका नाम सअ़द बिन मालिक है। और यह अन्सार के कबीला ख़ज़रज से तअ़ल्लुक रखते हैं इनके मोरिसे आला का नाम "ख़ुदरा" था इसलिए ख़ुदरी कहलाते है। 74 हिजरी में चौरासी बरस की उम्र पाकर इन्तिक़ाल फ़रमाया और जन्नतुल बक़ीअ़ में मदफ़ून हुए।

तेरह गज़वात में हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के साथ शरीके जिहाद रहे। एक सौ सत्तरह हदीसें आप से मरवी हैं। और बुखारी शरीफ में बासठ हदीसें आपकी रिवायत की हुई मज़कूर हैं। मगर अल्लामा कस्तलानी ने लिखा है कि बुखारी शरीफ़ में आपकी रिवायत से छियासठ हदीसें है।

तौज़ीहे अल्फ़ाज़ :- इस हदीस के चन्द अल्फ़ाज़ की तौज़ीह हस्बे ज़ैल है।

गनम बकरी को कहते हैं इस्मे मोअन्नस है नर व मादा के लिए यह

लफ्ज बोला जाता है। शेअफ पहाड़ की चोटी को कहते हैं। इसकी जमा शुआफ है। फितन फितना की जमा है। इसके मुन्दरजा जैल माने आते हैं।

आजमाइश,गुमराही,शिर्क,रुसवाई,रंज, दीवानी, इबरत, अजाब, मर्ज हाल व औलाद, व इख़्तिलाफ जंग व जिदाल।

मगर इस हदीस में और आम तौर पर किताबुल फितन की हदीसों में फितना से मुराद इख़्तिलाफे उम्मत और फसादात हैं। जो दीन में खराबी पड़ जाने का बाअिस हैं।

शरहे हदीस :– हुज़ूर सलल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम इस हदीस में गैब की ख़बर दे रहें हैं। कि मेरे बाद अन्क़रीब मेरी उम्मत में बहुत से फितने पैदा हो जायेंगे। उस वक्त मुसलमान का बेहतरीन माल बकरियाँ होंगी। कि मुसलमान उनको अपने साथ लेकर अपने दीन के फितनों से बचाने के लिए पहाड़ों की चोटियों पर जाकर गोशा नशीन हो जायेगा। बकरियों का दूध पीता रहेगा। और खुदा की इबादत करता रहेगा। उस ज़माने में रुपया पैसा मोमिन का बेहतरीन माल नहीं रहेगा। क्योंकि पहाड़ों की चोटियों पर रुपया पैसा कुछ काम नहीं आयेगा। और शहरो का जहाँ रुपयों पैसों से काम चलता है इस कदर फितनें होंगे कि एक मोमिन के लिए आबादियों में अपने दीन को फितनों से बचाना बहुत दुश्वार हो जायेगा।

इस हदीस में ख़ास तौर पर पहाड़ों की चोटियों पर मोमिन के जाने का ज़िक्र इस लिए फ़रमाया कि ऐसे मुक़ामात उमूमन फित्ना फ़साद से महफ़ूज़ रहते हैं।

और मवेशियों में से खुसूसियत के साथ बकरियों का तज़किरा इसलिए फ़रमाया कि ऊँटों गायों भैंसों की बनिस्बत बकरियाँ लेकर पहाड़ों की चोटियों पर जाना, और वहाँ उनकी निगाहदाशत बहुत आसान है। क्योंकि बकरी बहुत मिस्कीन सिफत जानवर है। उसमें बिदक कर भागने व सरकशी व ईज़ा रसानी की सिफ्त नहीं है। इसका दूध भी बे ज़रर है। और यह बहुत ही बाबरकत जानवर भी है। क्योंकि खुदा के हर नबी ने बकरियाँ चराई हैं। इसलिए बकरियों को चराना सुन्नत भी है। वरना फितनों से बचने के लिए गोशा नशीनी के वास्ते बकरियों को ही ले जाना ज़रुरी नही है। चुनाँचे हज़रत अबूबक्र रदियल्लाहु तआला अन्हु की रिवायत में आया है।

जिनके पास ऊँट हों वह अपने ऊँटों के पास चरागाह में चला जाये

और जिनके पास बकरियाँ हों वह अपनी बकरियों के रेवड में चला जाये। और जिसके पास ज़मीन हो वह अपनी ज़मीन पर चला जाये।

फ़वाइद व मासइल :– हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने इसके अलावा दूसरी सैकड़ों हदीसों में अपनी उम्मत को इन फ़ित्नों से आगाह फ़रमाया है और ज़मानए नुबुव्वत के बाद वुकूअ़ पज़ीर होने वाले हैं और इन फ़ित्नों से पनाह माँगने और इनसे बचने की ताकीद फ़रमायी है। चुनाँचे सैकड़ों हदीसों में से सिर्फ़ दो हदीसें पेश करता हूँ।

1. अन्करीब कुछ ऐसे फ़ितने रुनुमा होंगे कि इन फ़ितनों के वक्त में बैठने वाला खड़े होने वालों से बेहतर होगा। और खड़ा होने वाला चलने वाले से बेहतर होगा। और चलने वाला दौड़ने वाले से बेहतर होगा। और जो फ़ितनों का सामना करेगा फ़ितने उसपर ग़ालिब आजायेंगे। लिहाज़ा जो शख़्स कोई ठिकाना या जाये पनाह पा जाये। तो उसको चाहिये कि वह वहाँ जाकर फ़ितनों से बच जाए।

2. हज़रत अबू हुरैरा रदियल्लाहु तआला अ़न्हु कहते हैं कि हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया कि इन फ़ितनो के आने से पहले ही जल्दी जल्दी आमाले सॉलेहा करलो। जो फ़ितने अँधेरी रात के टुकड़ों के मिस्ल होंगे उन फ़ितनों में आदमी सुबह को मोमिन और शाम तक काफ़िर हो जायेगा। और शाम को मोमिन रहेगा तो सुबह तक काफ़िर हो जायेगा। दुनिया के हक़ीर सामानों के बदले अपना दीन बेच डालेगा।

ग़र्ज़ फ़ितनों के बारे में इस किस्म की बहुत सी अहादीस वारिद हुई हैं। हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फ़ितनों के दौर मे ईमान की हिफ़ाज़त के लिए इस हदीस में एक तदबीर बताई है कि जब इस किस्म के फ़ितने नमूदार हों कि बस्तियों और आबादियों में दीन के ख़राब होने का अन्देशा पैदा हो जाए तो मोमिन को चहिये कि गोशा नशीनी इख़्तियार कर ले ताकि फ़ितनो से महफ़ूज रहे।

गोशा नशीनी :– इस मसअ़ला में इख़्तिलाफ़ है कि फ़ितनों के दौर में मोमिन के लिए गोशा नशीनी बेहतर है ?या आबादियों में रहकर फ़ितनों का मुकाबला करना बेहतर है ? हज़रत इमाम शाफ़ेई रहमतुल्लाहि अलैहि ने फ़रमाया कि फ़ितनों के वक़्त में गोशा नशीनी नहीं करनी चाहिये। क्योंकि ऐसा करने में तालीम व तअल्लुम का दरवाज़ा बन्द हो जायेगा। और

आदमी जुमा व जमाअत की फजीलत से महरुम हो जायेगा।

और दूसरे आलिमों का कौल है कि फितनों के दौर में गोशा नशीनी ही बेहतर है। ताकि आदमी फितनों से महफ़ूज़ रहे। मगर हक़ यह है कि इस मसअ्ला का दारोमदार अह़वाल व माहौल और फितनो की नौईयत पर है। अगर फितने इस क़दर शदीद हैं कि यह न उनको दफ़ा कर सकता है न उनका मुक़ाबला कर सकता है बल्कि शदीद ख़तरा है कि यह ख़ुद फितनों के तूफान में अपना दीन खो बैठेगा। तो ज़ाहिर है कि ऐसी हालत में उस शख़्स के लिए गोशा नशीनी ही बेहतर है। और अगर यह शख़्स फितनों का मुकाबला करके फितनों को ख़त्म कर सकता है या ख़ुद फितनों से बचकर उम्मते रसूल को भी बचा सकता है तो जाहिर है उस शख्स के लिए गोशा नशीनी हरगिज़ हरगिज जाइज़ नहीं हो सकती। बल्कि उस शख़्स पर वाजिब है कि शहरों और कस्बों मे रहकर फितनों का मुकाबला करे। और उन फितनों को दफ़ा करने की सई बलीग़(कोशिश) करता रहे। इस हदीस में बकरियों को साथ लेकर पहाड़ों की चोटी पर चले जाने का जो ज़िक्र है इसी सूरत में है जबकि मोमिन को फितनों की मुवाफ़क़त की ताक़त न हो। बल्कि ख़ुद फितनों में मुबतला होने का यक़ीन या ज़न्ने ग़ालिब हो चुका हो।

चुनाँचे इस सिलसिले में तिरमिज़ी और इब्ने माजा की हदीस है जो इस मज़मून पर शाहिद आदिल है जो हज़रत अबू सालबा ख़शनी रदियल्लाहु तआ़ला अन्हु से लोगों ने इस आयत के बारे में सवाल किया कि " अलैकुम अन्फुसाकुम ला य़दुर्रोकुम मन द़ल्ला इज़ा हदैतुम' ।

तो लागों ने फ़रमाया कि मैंने इस आयत के बारे में हुज़ूर स़ल्लल्लाहो तआला अलैहि वसल्लम से सवाल किया था तो हुज़ूर स़ल्लल्लाहो तआला अलैहि वसल्लम नें यह फ़रमाया कि तुम लोग हमेशा नेकी का हुक्म देते रहो और बदी से मना करते रहो। यहाँ तक कि जब तुम यह देख लो कि हर शख़्स बुख़्ल का पैरोकार बन गया है और सब दुनिया को दीन पर तरजीह देने लगे और हर शख़्स अपनी राय को सबसे बेहतर समझने लगा। और तुम ऐसे फितनो को देख लो कि उनसे बचना दुशवार हो जाये तो फिर तुम लोग अपनी ही ज़ात को लाजिम पकड़ लो और अवाम के मामले को बिल्कुल छोड दो। (यानी गोशा नशीन हो जाओ) क्योंकि तुम्हारे बाद सब्र के दिन

आ रहे हैं जो इन दिनों में सब्र करेगा गोया कि हाथ में आग का अंगारा लेगा। उन दिनों में जो नेक आमाल करेगा उसको पचास आदमियों के आमाले सालेहा करने का सवाब मिलेगा। सहाबा ने अर्ज़ किया कि या रसूलल्लाह ! इन लोगों में से पचास आदमियों के आमाले सॉलेहा का अज्र उसको मिलेगा ? या हम सहाबा के पचास आदमियों के आमाले सालेहा का सवाब उसको मिलेगा ? तो इरशाद फ़रमाया कि तुम(सहाबा) में के पचास आदमियों के आमाले सालेहा का सवाब उसको मिलेगा। वल्लाहु तआला अअ्लम।

आक़ा और गुलाम एक लिबास में

हदीस नम्बर – 19

عن المعرور قال لقيت اباذر بالربذة و عليه حلة و على غلامه حلة فسئلته عن ذالك فقال انى سابيت رجلا فعيرته بامه فقال لى النبى ﷺ يا اباذر اعيرته بامه انك امرو فيك جاهلية اخوانكم خولكم جعلهم الله تحت ايديكم فمن كان اخوه تحت يده فليطعمه مما ياكل وليلبسه مما يلبس ولا تكلفوهم ما يغلبهم فان كلفتموهم فاعنوهم. (بخارى جلد اول، ص ٩)

अनिल मअरुरि क़ाला लक़ीतु अबा ज़र बिर रबज़ति व अलैहि हिल्लतुन व अला गुलामि हिल्लतु फसअलतहू अन ज़ालिक फ़क़ाला इन्नी सअबीतु रजुलन फ़ईरतहु बिउम्मेही फक़ाला लियन नबीयो सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम या अबा ज़र अईरतुहू बिउम्मेही इन्नका अमुर्रु व फीका जाहिलियतुन इख़्वानिकुम ख़ूलाकुम जअलाहु मुल्लाहु तहत एयदिकुम फमन काना अख़्वाहु तहता यदेही फलयतअमहु मिम्मा याकुल व लयलबसहू मिम्मा यबिस वला तुकल्लिफ़ूहुम मा यग़ल्लिबाहुम फ़इन्ना कलफ़तुमूहुम फअनूहुम।

तर्जुमा :– हज़रत मारुर से रिवायत है कि उन्होंने कहा कि मैंने हज़रत अबू ज़र गफ़्फारी रदियल्लाहु तआला अन्हु से रुबजा में मुलाक़ात की। वह और उनका गुलाम एक ही जैसा जोड़ा पहने हुए थे। तो मैने उसके बारे में उनसे सवाल किया। तो हज़रत अबू ज़र ने फरमाया कि मैंने एक शख़्स से गाली गलौच की और उसकी माँ को गाली दी। तो हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया कि ऐ अबू ज़र तुमने उसकी माँ को गाली दी तुम ऐसे हो कि तुम्हारे अन्दर जाहिलयत की ख़सलत है। तुम्हारे लौंडी गुलाम तुम्हारे (दीनी) भाई है। अल्लाह तआला ने उन लोगों को तुम्हारा मातहत बना दिया है तो जिसका भाई उसके मातहत हो उसको चाहिये कि जो खुद खाए उसको खिलाए। और जो खुद पहने उसको पहनाये। और तुम उन खादिमों को ऐसे कामों की तकलीफ मत दो जो उन्हे लाचार करदे। और अगर तुम ऐसी तकलीफ दो तो खुद भी काम में उनकी मदद करो।

हज़रत अबूजर गफ़्फ़ारी :– यह बहुत की कदीमुल इस्लाम सहाबी हैं यहाँ तक कि बाज लोगों का कौल है कि इस्लाम कबूल करने में बाहरी लोगो के अन्दर इनका पाँचवाँ नम्बर है। इनके मुसलमान होने का पूरा हाल बुख़ारी शरीफ में मुफ़स्सल मज़कूर है। इस्लाम लाने के बाद सत्तरह दिनों तक यह सिर्फ आबे जम जम पी पीकर मस्जिदे काबा में मुकीम रहे। रोजाना चिल्ला चिल्ला कर मजमए कुफ्फार में अपने इस्लाम का ऐलान करते थे। और कुफ्फारे मक्का उनको इस कदर मारते थे कि यह लहूलूहान होकर बेहोश हो जाते थे। मगर होश में आने के बाद फिर अपने इस्लाम का ऐलान करते थे। इनका इस्मे गिरामी जुन्दूब बिन जुनादा है। बहुत ही आबिद ज़ाहिद और इन्तेहाई मुत्तकी सहाबी हैं। दो सौ इक्यासी हदीसें आपने रिवायत की हैं। 36 हिजरी में हजरत उस्मान ग़नी रदियल्लाहु तआला अन्हु के दौरे खिलाफत में बमुकाम रुब्ज़ा आपका विसाल हुआ। और हजरत अब्दुल्ला इब्ने मसऊद रदियल्लाहु तआला अन्हु ने आपकी नमाजे जनाजा पढ़ायी।

रुब्ज़ा :– मदीना मुनव्वरा से तीन मन्ज़िल दूर पर एक जगह का नाम है। हुजूर सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के विसाल पर ग़म ज़दा होकर हज़रत अबूज़र मदीना मुनव्वरा से मुल्के शाम चले गये थे। वहाँ शाम के गवर्नर हजरत अमीर मुआविया रदियल्लाहु तआला अन्हु से उनका एक मरअला में इख़्तिलाफ़ हो गया। तो हज़रत अमीरुल मोमिनीन उस्मान ग़नी रदियल्लाहु तआला अन्हु ने हज़रत अबूज़र को मुल्के शाम से बुलाकर रुब्ज़ा मे कयाम करने का हुक्म दे दिया। चुनाँचे आख़िरी दम तक रुब्ज़ा ही में रहे।

शरहे हदीस :– हदीस मज़कूर का खुलासा मतलब यह है कि जनाब माअ्रुर जब हज़रत अबूजर की मुलाकात के लिए रुब्ज़ा हाज़िर हुए तो यह मन्ज़र देखा कि आपके और आपके गुलाम के बदन पर बिल्कुल एक ही किस्म का जोड़ा है। आका और गुलाम दोनों का लिबास यकसाँ देखकर कुदरती तौर पर जनाब माअ्रुर के दिल में इस सवाल ने सर उठाया कि आख़िर ऐसा क्यों है ? कि आका और गुलाम दोनों एक ही किस्म के लिबास में मलब्बिस हैं। तो आपने हज़रत अबूज़र रदियल्लाहु तआला अन्हु से इसके मुतअल्लिक सवाल किया तो हज़रत अबू ज़र रदियल्लाहु तआला

अन्हु ने इसका यह जवाब दिया कि मैंने एक शख़्स को एक मरतबा माँ की गाली दे दी। उस शख़्स ने हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम से मेरी शिकायत कर दी। तो हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने सरज़निश(सज़ा) के तौर पर मुझ से फ़रमाया कि क्या तुमने इस को माँ की गाली दी है ? ऐ अबू ज़र! मुसलमान होने के बाद भी तेरे अन्दर ज़माना–ए– जाहिलियत की ख़सलत बाकी है। इसके बाद हुज़ूर ने मुझको यह नसीहत फ़रमायी कि तुम अपने लौंडी गुलामों और नौकरों चाकरों को हरगिज हरगिज़ हकीर व जलील मत समझो। बल्कि यह समझो कि यह तुम्हारे दीनी भाई हैं। जिनको खुदा ने तुम्हारे मातहत बनाकर तुम्हारे कब्जा में दे दिया है। लिहाज़ा अगर तुम्हारा कोई दीनी भाई तुम्हारा मातहत और तुम्हारा गुलाम हो तो उसके साथ बिरादराना सुलूक करो। यहाँ तक कि जो तुम खुद खाते हो वही उसको खिलाओ। और जो तुम खुद पहनते हो वही उसको भी पहनाओ। और उन लोगों से उनकी ताकत से ज़्यादा मशक्कत का काम न लो। और अगर कोई मशक्कत का काम उन लोगो के सुपुर्द करो तो तुम ख़ुद भी उन लोगों की मदद करो। इस लिए मैंने हुज़ूर की नसीहत पर अमल करते हुए अपना यह दस्तूर बना लिया है कि मैं जो खाता हूँ वह अपने गुलाम को भी खिलाता हूँ। और जिस किस्म का जोड़ा खुद पहनता हूँ उसी किस्म का जोड़ा अपने गुलाम को भी पहनाता हूँ। यही वजह है कि तुम मेरा और मेरे गुलाम का मिज़ाज एकसा देख रहे हो।

हज़रत अबूज़र गफ़्फ़ारी रदियल्लाहु तआला अन्हु का एक शाहकार :–

हज़रत अबूज़र गफ़्फ़ारी रदियल्लाहु तआला अन्हु ने जिस शख़्स को माँ की गाली दी थी वह हज़रत बिलाल रदियल्लाहु तआला अन्हु हैं। क्या गाली दी थी ? बस इतना कह दिया था कि(ऐ काली औरत के बेटे) हज़रते बिलाल ने जब दरबारे रिसालत में उसकी शिकायत की तो सरकारे मदीना सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने हज़रत अबू ज़र को डाँटा और नसीहत फ़रमायी । उसके बाद हज़रत अबूज़र पर इसका रददे अमल हुआ? यह बहुत लरज़ा बरअन्दाम कर देने वाली दास्तान है। इसको बार बार पढ़ते रहिये और खुदा के ख़ौफ से डरते रहिये।

दरबारे रिसालत सल्लल्लाहु तआला अलैहि वसल्लम की मलामत

सुनकर फौरन ही हजरत अबूजर हजरत बिलाल की खिदमत में नदामत के साथ हाज़िर हुए। और एक दम अपना हसीन रुख़सार ज़मीन पर रख कर इन्तिहाई लजाजत के साथ रोते और गिड़गिड़ाते हुए यह कहा कि ऐ बिलाल! जब तक तुम अपने क़दम के तलवे से मेरे इस रुख़सार को ना रौंदोगे मैं उस वक्त तक अपना यह चेहरा हरगिज़ हरगिज ज़मीन से न उठाऊँगा। हज़रत अबूज़र गफ़्फारी रदियल्लाहु तआला अन्हु के शदीद इसरार से मजबूर होकर हज़रत बिलाल ने बा दिले ना ख़्वास्ता अपना क़दम हजरत अबूज़र के चेहरे पर रखकर फ़ौरन ही हटा लिया। और हज़रत अबूज़र रदियल्लाहु तआ़ला अन्हु को माफ़ कर दिया।

अ़ल्लामा क़स्तलानी ने इस वाक़िये के बारे में यह भी तहरीर किया है कि हजरत अबू ज़र ने यह आर दिलाने वाली बात हज़रत बिलाल के लिए उस वक़्त कही थी जबकि हजरत अबूज़र रदियल्लाहु तआला अन्हु को इस किस्म के अल्फ़ाज़ की हुरमत का इल्म नहीं हुआ था। वरना हजरत अबूजर रदियल्लाहु तआला अन्हु जैसे पैकरे तक़्वा व परहेज़गारी से ऐसा तसव्वुर भी नही किया जा सकता। इसी लिए हुजूर स़ल्लल्लाहु तआला अलैहि वसल्लम ने सिर्फ यह लफ्ज कहकर उनकी सरज़निश फरमायी "तुम्हारे अन्दर अभी जाहिलियत की ख़सलत बाक़ी है " और यह ज़जरो तौबीख़ भी उनके बुलन्द मरातिब की वजह से हुई कि इतने बड़े आदमी की ज़बान से इतनी छोटी और गिरी हुई बात नहीं निकलनी चाहिये थी।

मसाइले हदीस :– 1. किसी मुसलमान अगरचे वह लौण्डी,गुलाम या नौकर चाकर ही क्यों न हो गाली देना ह़राम है। एक दूसरी हदीस में है कि सिबाबुल मुस्लिमि फुसूकुन व क़ितालुहु कुफरुन" यानी किसी मुसलमान से गाली गलौच करना फासिक का काम है। और किसी मुसलमान से जंग व क़िताल करना काफ़िर का काम है।

2. गुलामों और नौकरों को महज़ उनकी गुलामी और नौकरी की बिना पर हक़ीर व ज़लील समझना जाइज़ नहीं है। इसलिए कि बुजुर्गी का दारोमदार ज़ात, ख़ानदान या दौलत व हुकूमत पर नहीं है। बल्कि " इन्ना अकर मकुम इन्दल्लाहि अतकाकुम" के फ़रमाने इलाही ने हमेशा के लिए इस मसअला पर मुहरे तस्दीक सब्त कर दी है कि बुजुर्गी का दारोमदार तक़्वा और परहेजगारी पर है। तो हो सकता है कि गुलाम आक़ा से ज्यादा

परहेजगार और खुदा के नजदीक इज्जत वाला हो।

3. हदीस मज़कूर में " फ़लयतअमाहु मिम्मा याकुलो कुल्ल वल यलबसाहु मिम्मा यलबिसो" का अम्र वजूबी नहीं है बल्कि यह अम्र इरशादी अम्र इसतेहबाबी है। लिहाज़ा आका जो खाए और जो पहने वही गुलामों को भी खिलाए और पहनाये। यह वाजिब नहीं है बल्कि मुस्तहब है और कारे सवाब है। लेकिन बहरहाल इस हदीस से इतनी बात तो वाज़ेह हो जाती है कि गुलामों और नौकरों को बहुत ज्यादा ख़राब खाना और कपड़ा नहीं देना चाहिये। बल्कि अपने गुलाम व नौकर की हैसियतो का लिहाज करते हुए मुनासिब दरजे का खाना, कपड़ा देना आक़ा पर लाजिम है । वल्लाहु तआला अअ्लम।

ज़मीन की पीठ बेहतर या पेट ?

हदीस नम्बर – 20

عن ابی هريرة قال قال رسول الله ﷺ اذا كان امراء كم خياركم اغنياء كم سمحاء كم وامركم شورى بينكم فظهر الارض خير لكم من بطنها و اذا كان امراء كم شراركم واغنياء كم بخلا ئكم واموركم الى نساء كم فبطن الارض خير لكم من ظهرها.

अन अबी हुरैरा क़ाला क़ाला रसूलल्लाहि सल्लल्लाहु तआला अलैहि वसल्लम इज़ा काना उमराउ कुम ख़ियाराकुम अग़नियाएकुम समहाउ कुम व अमरोकुम शौरा बैनाकुम फ़जहरल अरदु ख़ैरुलकुम मिन बतनेहा व इज़ाकाना उमराउ कुम शरारकुम व अग़नियाउकुम बुख़लाउकुम व उमूरोकुम इला निसाइ कुम फबतनुल अरदे ख़ैरु लकुम मिन ज़हरेहा।

तर्जुमा :– हज़रत अबू हुरैरा रदियल्लाहु तआला अन्हु से रिवायत है कि उन्होंने कहा कि रसूलल्लाह सल्लल्लाहु तआला अलैहि वसल्लम ने फरमाया कि जब तुम्हारे उमरा(सरदार) तुम में के बेहतरीन लोग हों। और तुम्हारे मालदार सख़ी हों। और तुम्हारा मामला आपस के मशवरों से तय होता रहे। तो तुम्हारे लिए ज़मीन की पीठ, ज़मीन के पेट से बेहतर है। और जब तुम्हारे उमरा बदतरीन लोग हों और तुम्हारे मालदार बख़ील हों और तुम्हारे मामलात तुम्हारी औरतें तय करने लगें तो तुम्हारे लिए ज़मीन का पेट ज़मीन की पीठ से बेहतर है।

शरहे हदीस :– 1. इस हदीस में ज़मीन की पीठ से मुराद "ज़मीन के ऊपर ज़िन्दा रहना" और ज़मीन के पेट से मुराद "मरकर ज़मीन में दफन हो जाना है। ज़ाहिर है कि जब सल्तनत के उमरा और हुकूमत के हुक्काम नेक और सालेह लोग होगें तो उनके अदल व इन्साफ से ज़मीन पर अमन व अमान व सुकून व इत्मीनान का दौर दौरा होगा। ज़ुल्म व तुग़यान सरकशी व इसयान, गर्ज़ हर किस्म के जराइम का नाम व निशान मिट जायेगा। और दिन रात ज़मीन पर रहमते इलाही का नुज़ूल होता रहेगा।

इसी तरह जब मालदार सख़ी होंगे तो वह अपनी दौलत को नेक कामों में ख़र्च करेगें और मसाजिद व मदारिस और दूसरे दीनी इदारे और

इस्लामी मरकजों की रौनक व तरक्की बढेगी। कोई नंगा भूकानही रहेगा। गुरबा मालदार से मुहब्बत करेंगें। अमीरी फकीरी की जंग खत्म और तबकाती कशमकश का ख़ातमा हो जाएगा। इसी तरह जब उमरा हुक्काम का तकर्रुर और तमाम कौमी मामलात आपस के मशवरों से तय पाते रहेंगे तो बुगज व कीना और हसद का रुए जमीन से जनाजा निकल जाऐगा। और हर शख्स को सुकून व इतमीनान के साथ नेकियों और आमाले सालेहा में मसरुफ व मशगूल रहने का मौका मिलेगा।

ऐसी सूरत में जब कि रुऐ ज़मीन का चप्पा चप्पा अमन व चैन और सुकून व राहत की जन्नत बना हुआ हो। और हर तरफ़ तिजारते आखिरत के बाजार में चहल पहल और रौनक़ ही रौनक नज़र आ रही है तो बिलाशुबा यकीनन एक मुसलमान की जिन्दगी उस की मौत से बदरजा खुश्तर और ज़मीन की पीठ ज़मीन के पेट से बेहतर होगी।

बर खिलाफ इसके जब हुकूमत के उमरा व हुक्काम बदकार व हराम कार और अय्याश व बदमाश होंगे तो ज़ाहिर है कि अदल व इन्साफ न होने से ज़मीन पर हर तरफ फ़ितना व फ़साद का बाजार गर्म होगा। और हर चहार जानिब रुए ज़मीन पर निराज बल्कि शैतान का राज होगा।

इसी तरह जब मालदार बख़ील हो जायेंगे और सदक़ात व ख़ैरात का दरवाज़ा बन्द हो जायेगा। तो गुरबा व मसाकीन नंगे भूके होंगे। मज़दूर व सरमायादार की जंग शुरु हो जायेगी। और तबक़ाती कशमकश का अज़दहा मुँह फाड़े हुए ज़मीन पर लहराता होगा। मसाजिद और मदारिस की रौनक में कमी और दीनी इदारों की बहारें नजरे खिजा और इस्लामी मराकिज के गुलशनों में वीरानी के उल्लू बोल रहे होंगे। दीनदारी मजलिसों के चराग़ बूझ चुके होंगे। और हर तरफ़ अंधेरा ही अंधेरा होगा।

इसी तरह जब लोग तमाम मामलात में औरतों के मशवरों को दख़ील बना लेगें। तो ज़ाहिर है कि यह नाक़साते अक्ल व दीन ऐसा ही मशवरा देंगी जो तबाही और बरबादी का सिगनल और दीन व दुनिया की खराबियों के लिए हरी झण्डी होगी। और मुल्क व मिल्लत की सारी शान व शौकत गारत होकर रह जायेगी। गर्ज़ सारी दुनिया तरह तरह के जराइम व मफ़ासिद का भयानक जंगल और पूरी ज़िन्दगी दीनी व दुनियावी हलाकतों और बरबादियों का जहन्नम बनकर रह जायेगी। ऐसी सूरत में बिलाशुबा

यक़ीनन एक मुसलमान की मौत उसकी ज़िन्दगी से बदरजा अच्छी और ज़मीन का पेट जमीन की पीठ से हजारों दरजा बेहतर होगा।

इसलिए एक हदीस शरीफ़ में हुज़ूर सल्लल्लाहो तआला अलैहि वसल्लम ने इरशाद फ़रमाया :–

" मै उस ज़ात की कसम खाता हूँ जिसके कब्ज़े कुदरत में मेरी जान है कि दुनिया उस वक्त तक नहीं जायेगी। यहाँ तक कि आदमी कब्र पर जाकर लोटेगा और कहेगा कि काश इस क़ब्र वाले की जगह पर मैं होता।

तौबा तौबा ! नऊज़ो बिल्लाह। हम इन फितनों से तेरी पनाह माँगते हैं।

पाँच गुनाह, पाँच अज़ाब

हदीस नम्बर – 21

عن ابن عباس قال ما ظهر الغلول فى قوم الا القى الله فى قلوبهم الرعب. ولا فشا الزنا فى قوم الا كثر فيهم الموت. ولا نقص قوم المكيال الميزان الا قطع عنهم الرزق. ولاحكم قوم بغير حق الا فشافيهم الدم. ولا ختر قوم باالعهد الا سلط عليهم العرو.

अन इब्ने अब्बास काला मा ज़हारल गुलूल फी कौमिन इल्ला अलकियल्लाहु फी कुलूबेहिमु रोंअबि । वला फशज़्ज़िना फी कौमिन कसोर फीहिमल मौत। वला नक़स कौमिल मिकयालिल मीज़ान इल्ला कताउन अनहुमुर्रिज़क। वला हकमा कौमिन बेगैरिन हक्के। इल्ला फशाफीहिमिददम। वला ख़तरा कौमिन बिल अहद। इल्ला सलाता अलैहिमल उरवि।

तर्जुमा :– हज़रत अब्दुल्ला इब्ने अब्बास रदियल्लाहु अन्हुमा से रिवायत है उन्होने फ़रमाया कि जब किसी कौम में ख़ियानत ज़ाहिर और खुल्लम खुल्ला होने लगती है तो अल्लाह तआला उस कौम के दिल में उसके दुश्मनों का ख़ौफ़ और डर डाल देता है। और जब किसी कौम में ज़िनाकारी फैल जाती है तो उस कौम में बकसरत मौतें होने लगती हैं। और जो कौम नाप तौल में कमी करने लगती है तो उस कौम की रोज़ी काट दी जाती है। और जो कौम ना हक़ फैसला करने लगती है तो उस कौम में खून रेज़ी फैल जाती है। और जो कौम अहद शिकनी और बद अहदी करने लगती है उस कौम पर उसके दुश्मन को ग़ालिब व मुसल्लत कर दिया जाता है।

शरहे हदीस :– जिस तरह दवाओं और गिजाओं में खुदावन्द कुद्दूस ने किस्म किस्म की तासीरात पैदा फरमायी हैं कि जहर मार डालता है तिरयाक जहर के असरात को जाइल कर देता है बाज़ गिज़ाऐं सेहत को बरबाद करती है और बाज़ गिजाऐं तन्दरुस्ती को बढ़ाती हैं। इसी तरह इन्सान के अकवाल व अफआल में भी कुदरत ने किस्म किस्म की तासीरात रख दी हैं। मसलन आप की गाली दुनिया भर के इन्सानों को आपका दुश्मन बना देती है और आपकी दुआ दुनिया भर को आपका दोस्त

बना देती है। इसी तरह अगर आप किसी को मुक्का दिखायें तो वह आप पर गजबनाक हो जाता है और अगर आप किसी के आगे हाथ जोडे हो तो वह आप पर रहम दिल हो जाता है।

इसी तरह समझ लीजिए कि इन्सान के हर कौल व अमल में कुदरत ने किस्म किस्म की तासीरें और तरह तरह के असरात पैदा फरमाये हैं। नेक आमाल और अच्छे अच्छे अक्वाल की तासीरात व असरात भी अच्छे हुआ करते हैं और बुरे आमाल पर बुरे अकवाल की तासीरात व असरात भी बुरे हुआ करते हैं। हुजूरे अकरम सल्लल्लाहु तआला अलैहि वसल्लम ने इस हदीस में पाँच बुरे आमाल व उनकी बुरी तासीरों को बयान फरमाया है।

1. ख़ियानत की तासीर यह है कि जो क़ौम अमानत में ख़ियानत करने लगेगी। तो वह कौम अपने दुश्मनों से ख़ाइफ़,डरपोक और बुज़दिल हो जायेगी।

2. और जो कौम ज़िनाकारी की लानत में गिरफ़्तार हो जायेगी। तो उस कौम पर तरह तरह की बलाऐं बीमारियाँ और वबाऐं आयेंगी। और बकसरत लोग मरने लगेंगे। बाज़ बुज़ुर्गो ने फ़रमाया कि जहाँ ज़िना वहाँ फना।

3. और जो कौम नाप तौल में कमी करने लगेगी तो उसका यह असर होगा कि उनकी रोज़ियों की बरकत कट जायेगी। वह उम्र भर रोज़ी कमाने के लिए दर बदर की ठोकरें खाते फिरेंगे। और हज़ारों लाखों कमाऐंगे भी मगर उनके दिल को चैन और रुह को सुकून और दौलत से क़रार नहीं हासिल होगा। और कुछ पता नहीं चलेगा कि दौलत कहाँ से आयी? और किधर चली गयी?

4. और जो काम नाहक फैसला करने की ख़ूगर हो जायेगी तो उस गुनाह का यह असर होगा कि उस कौल में क़त्ल व ख़ून रेज़ी की बला फैल जायेगी। और रोजाना रात दिन हर तरफ़ क़त्ल ही होते रहेंगे।

5. इसी तरह जो क़ौम अहद शिकनी और बद अहदी की राह पर चल पडेगी। उस कौम की इज्जत व इकबाल और उसकी सल्तनत के जाह व जलाल का ख़ात्मा हो जायेगा। और उस कौम पर उसके दुश्मनों का ग़लबा व इक़तिदार हो जायेगा।

चूँकि उन गुनाहों की यही तासीरात हैं और कोई चीज़ भी अपना खलकी असर दिखाऐ बग़ैर नहीं रह सकती। लिहाजा गुनाहों के वही

असरात होगें जो ऊपर बयान किये गये। आग पर उँगली रखकर लाख चिल्लाऐ मगर उँगली जरुर जल जायेगी। क्योंकि आग की तासीर ही जला देना है।

वाजेह रहे कि उन गुनाहों का यह अजाब सिर्फ दुनियावी अजाब है जो इस हदीस में बयान किया गया है। बाकी आख़रित का अजाब उसके अलावा है और अजाबे जहन्नम है।

नबी का इल्म मा काना वमा यकून

हदीस नम्बर – 22

عن عمر وبن اخطب الانصاری قال ﷺ بنا رسول الله ﷺ
یومان الفجر وصعد علی المنبر فخطبنا حتی حضرت الظهر فنزل
فصلی ثم صعدا المنبر فخطبنا حتی حضرت العصر ثم نزل فصلیٰ ثم
صعدا المنبر حتی غربت الشمس فاخبرنا بما هو کائن الی یوم القیمة
قال فاعلمنا احفظنا. (مشکوٰۃ،ص ۵۴۳)

अन अम्र बिन अख़्तबिल अन्सारी काला सल्लल्लाहु तआला अलैहि वसल्लम बिना रसूलल्लाह सल्लल्लाहु तआला अलैहि वसल्लम यौमानिल फजरे व सअिद अलल मिम्बरि फ़खतबना हत्ता हजरते ज़ोहर फनज़ला फसल्ला सुम्मा सअिदन मिम्बर फखतबना हत्ता हज़रतिल असरे सुम्मा नज़ला फसल्ला सुम्म सइदल अल मिम्बर हत्ता गरबितिश शम्सु फअखबरना बिमा हुव काइनुन इला यौमिल क़ियामति काला फअ़ालमना अहफ़ज़ना।

तर्जुमा :– हज़रत अम्र बिन अख़्तब अन्सारी रदियल्लाहु तआला अन्हु से मरवी है उन्होंने कहा कि एक दिन हम लोगों को रसुलल्लाह सल्लल्लाहु तआला अलैहि वसल्लम ने फज्र की नमाज पढ़ाई और मिम्बर पर चढ़ गये और ज़ोहर की नमाज़ तक खुतबा पढ़ते रहे। फिर उतरे और नमाज पढ़कर फिर मिम्बर पर चढ़ गये और खुतबा देते रहे। यहाँ तक कि अस्र की नमाज का वक़्त आ गया। फिर उतरे और नमाज पढ़ी। फिर मिम्बर पर चढ़ गये। और सूरज डूबने तक खुतबा पढ़ते रहे। (उस दिन भर के खुत्बे में) हम लोगो को हुजूर सल्लल्लाहु तआला अलैहि वसल्लम ने तमाम उन चीजों और बातों की ख़बर दे दी जो कियामत तक होने वाली हैं। तो हम सहाबा में सब से बडा आलिम वही है जिसने सबसे ज़यादा उस खुत्बे को याद रखा।

हज़रत अम्र बिन अख़तब :– इस हदीस के रावी हज़रत अम्र बिन अख़तब रदियल्लाहु तआला अन्हु है। यह अन्सारी हैं और इनकी कुन्नियत अबू ज़ैद है। और मुहद्दिसीन के नज़दीक इनकी कुन्नियत इनके नाम से ज़यादा मशहूर है।

यह हुज़ूरे अकरम सल्लल्लाहु तआला अलैहि वसल्लम के साथ बहुत से गजवात में शरीके जिहाद रहे। हुजुर सल्लल्लाहु तआला अलैहि वसल्लम ने एक मरतबा मुहब्बत और प्यार से उनके सर पर हाथ फेर दिया और उनकी ख़ूबसूरती के लिए दुआ फरमायी जिसका यह असर हुआ कि उनकी सौ बरस की उम्र हो गयी थी मगर सर और दाढ़ी के चन्द बाल ही सफेद हुए थे। और आख़िरी उम्र तक चेहरे का हुस्न व जमाल बाकी रहा।

शरहे हदीस् :– 1. यह हदीस मुस्लिम शरीफ में भी है। इस हदीस का खुलासा यह है कि हुज़ूर सल्लल्लाहु तआला अलैहि वसल्लम नमाज़े फज्र से गुरुब आफ़ताब तक बजुज़ जोहर व अस्र पढने के, बराबर दिन भर खुत्बे में ही मशगूल रहे। और सामेअीन सुनते रहे। और उस ख़ुत्बे में हुज़ूर सल्लल्लाहु तआला अलैहि वसल्लम ने क़ियामत तक के होने वाले तमाम वाक़िआत तमाम चीज़ों और तमाम बातों की सामेअीन को ख़बर दे दी। सहाबा किराम में से जिस क़दर ज़्यादा इस ख़ुतबे को याद रखा। उतना ही बड़ा वह आलिम शुमार किया जाता है।

2. यह हदीस हुज़ूर सल्लल्लाहु तआला अलैहि वसल्लम के मोजिज़ात में से है कि क़ियामत तक के करोड़ों वाकिआत को हुज़ूर सल्लल्लाहु तआला अलैहि वसल्लम ने सिर्फ़ दिन भर के ख़ुतबे में बयान फरमा दिया। सही हदीसों से साबित है कि हज़रत दाऊद अलैहिस्सलाम को ख़ुदावन्द आलम ने यह मोअ्जिज़ा अता फ़रमाया था कि आप घोड़े पर ज़ीन कसने को हुक्म देते थे। और साइस घोडे की ज़ीन बाँधकर दुरुस्त करता था। इतनी देर में आप एक खत्म 'जबूर शरीफ़'' की तिलावत कर लेते थे। तो हुज़ूर नबी आख़िरुज़्ज़मा सल्लल्लाहु तआला अलैहि वसल्लम मोअ्जिज़ात के जामेअ् हैं। अगर दिन भर में क़ियामत तक कि तमाम अहवाल व वाकिआत को बयान फरमा दें तो उसमें कौन सा तअज्जुब का मुकाम है ?

इस हदीस से मुन्दरजा ज़ैल मसाइल पर रौशनी पड़ती है।

1. हुज़ूर सल्लल्लाहु तआला अलैहि वसल्लम को ख़ुदावन्द आलम ने जिस तरह बहुत से मोजिज़ाना कमालात से नवाज़ा और तमाम अम्बिया और रसूलों में आप को मुमताज़ फ़रमाकर 'सय्यदुल अम्बिया और अफ़ज़लुल रसूल बनाया। इस तरह इल्मी कमालात का भी आपको वह

कमाल बख्शा कि " मा काना वमा यकून" यानी रोजे अजल से कियामत तक के तमाम उलूम का खजाना आपके सीना नुबुव्वत मे भर दिया। चुनाँचे इस मजमून की बहुत सी आयात व अहादीस हमने अपनी किताब "कुरआनी तकरीरे" में तहरीर कर दी हैं। यहाँ भी दो हदीसों का तरजुमा पढ लीजिए। मिशकात शरीफ की हदीस यह है --

हुज़ूर सल्लल्लाहु तआला अलैहि वसल्लम ने फरमाया कि मैंने अपने रब अज्जवजल को बेहतरीन सूरत में देखा तो उसने मुझ से फरमाया कि ऊपर वाली जमाअत किस चीज़ में बहस कर रही है ? तो मैंने अर्ज़ किया कि या अल्लाह ! तू ही इसको ज्यादा जानने वाला है। फिर खुदा वन्द आलम ने अपनी (कुदरत) की हथेली को मेरे दोनों शानों के दरमियान रख दिया तो मैंने उसकी ठन्डक को अपनी दोनो छातियों के दरमियान में पाया और जो कुछ आसमान व ज़मीन में है सब को मैने जान लिया है।

2. अल्लाह अज्ज़वजल ने मेरे लिए दुनिया को उठा कर इस तरह मेरे सामने पेश फरमा दिया कि मैं तमाम दुनिया को और उसमें कियामत तक जो कुछ भी होने वाला है उन सब को इस तरह देख रहा हूँ जिस तरह मैं अपने हाथ की हथेली को देख रहा हूँ।

3. जिस तरह हूज़ूर सल्लल्लाहु तआला अलैहि वसल्लम " अफज़लुल खल्क" हैं उसी तरह आप सल्लल्लाहु तआला अलैहि वसल्लम " अअ्लमुल ख़ल्क" भी हैं। कि तमाम जिन व इन्सान और मलाइका के उलूम से बढकर आप का इल्म है। यहाँ तक कि हज़रत अल्लामा बूसीरी रहमतुल्लाह अलैहि ने अपने कसीदा बुरदा शरीफ़ में फरमाया कि :--

यानी रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु तआला अलैहि वसल्लम दुनिया और उसकी सोकन यानी आख़िरत यह दोनों आपकी सख़ावत के समरात में से हैं। और लौह व कलम का इल्म आपके उलूम का एक जुज है। वल्लाहु तआला अअ्लम।

नात ख़्वानी का एहतिमाम

हदीस नम्बर – 23

عن عائشة قالت كان رسول الله ﷺ يضع لحسان منبرا فی المسجد يقوم عليها قائما يفاخر عن رسول الله ﷺ او ينافح ويقول رسول الله ﷺ ان الله يؤيد حسان بروح القدس ما فافح او فاخر عن رسول الله ﷺ. (مشکوٰۃ، ص ۴۱۰)

अन आयशता क़ालत काना रसूलुल्लाह स़ल्लल्लाहु तआला अ़लैहि वसल्लम यदिउ लि हस्सान मिम्बर फ़िल मस्जिद यक़ूमु अलैहा काएमन यफाखुर अ़न रसूलिल्लाह स़ल्लल्लाहु तआला अलैहि वसल्लम औ यना फह व यक़ूलु रसूलल्लाहि स़ल्लल्लाहु तआला अलैहि वसल्लम इन्नल लाहा युअइईदु हस्सान बिरुहिल कुदसि मा फ़ाफह औ फ़ाख़िर अ़न रसूलिल्लाहि स़ल्लल्लाहु तआला अलैहि वसल्लम।

तर्जुमा :– हज़रत बीबी आयशा रदि़यल्लाहु तआला अन्हा से रिवायत है कि उन्होने बयान किया कि रसूलुल्लाह स़ल्लल्लाहु तआला अलैहि वसल्लम हज़रत हस्सान के लिए मस्जिद नबवी में मिम्बर रखते थे। और हज़रत ह़स्सान उस पर चढ़कर खड़े खड़े रसूलुल्लाह स़ल्लल्लाहु तआला अलैहि वसल्लम की शान के बारे में फ़खरिया अशआर पढ़ते। या हुज़ूर स़ल्लल्लाहु तआला अलैहि वसल्लम की तरफ़ से मुशरेकीन की हिजो (बुराई करने) का जवाब देते थे। और हुज़ूर स़ल्लल्लाहु तआला अलैहि वसल्लम फरमाया करते थे कि जब तक हस्सान मेरी तरफ से मुदाफिआना जवाब देते या मेरे बारे में फ़खरिया अशआर पढ़ते रहते है हजरत जिबरईल अलैहिस्सालम उनकी मदद फरमाते रहते है।

हज़रत आयशा :– इस हदीस की रिवायत करने वाली उम्मुल मोमिनीन हज़रत बीबी आ़यशा रदि़यल्लाहु तआला अन्हा अमीरुल मोमिनीन हजरत अबू बक्र सिद्दीक रदियल्लाहु तआ़ला अ़न्हु की नूरे नज़र और दुखतर नेक अख्तर हैं। इनकी वालिदा का नाम " उम्मे रोमान" है। हुज़ूर अकदस सल्लल्लाहु तआला अलैहि वसल्लम ने नुबुव्वत के दसवीं साल शव्वाल के महीने में हिजरत से तीन साल क़ब्ल बी बी आयशा

रदियल्लाहु तआला अन्हा से मक्का में निकाह फरमाया। और शव्वाल 2 हिजरी में मदीना मुनव्वरा के अन्दर यह काशाना–ए–नुबुव्वत में दाखिल हो गई। और नौ बरस हुजूरे अक्दस सल्लल्लाहु तआला अलैहि वसल्लम की सोहबत से मुशर्रफ रही। उम्माहातुल मोमिनीन में सबसे ज़्यादा बारगाहे रिसालत में महबूब तरीन थीं।

हुजूर सल्लल्लाहु तआला अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया कि किसी बीवी कि लिहाफ़ में मुझ पर वही नहीं उतरी मगर हज़रत बीबी आयशा जब मेरे साथ बिस्तरे नुबुव्वत पे सोती हैं तो उस हालत में भी मुझ पर वही नाज़िल होती है।

फिकह व हदीस के इल्म में उनका दरजा बहुत ही बुलन्द है। और दो हज़ार दो सौ हदीसें उन्होंने हुजूर सल्लल्लाहु तआला अलैहि वसल्लम से रिवायत की हैं। उनकी रिवायत की हुई हदीसों मे से एक सौ चौहत्तर हदीसें ऐसी हैं जो बुख़ारी व मुस्लिम दोनों किताबों में हैं। और चौवन हदीसें ऐसी हैं जो सिर्फ बुख़ारी शरीफ़ में हैं। और अड़सठ हदीसें वह हैं जिन को सिर्फ़ मुस्लिम ने अपनी किताब में तहरीर किया है। हज़रत कासिम बिन मुहम्मद बिन अबूबक्र सिद्दीक रदियल्लाहु तआला अन्हु का बयान है कि हज़रत बीबी आयशा हमेशा रोज़ाना तहज्जुद पढ़ने की पाबन्द थीं। और हजरत उमर बिन जुबैर कहते हैं कि फिकह व हदीस के उलूम के अलावा मैने हजरत बीबी आयशा रदियल्लाहु तआला अन्हा से बढ़कर किसी को अशआरे अरब का जानने वाला भी न पाया । आपके शागिर्दों में सहाबा व ताबेअीन की एक बहुत बड़ी जमाअत है। 17 रमजान सह शुम्बह(मंगल) 57 हिजरी या 58 हिजरी में मदीना मुनव्वरा के अन्दर वफ़ात हुई। हज़रत अबू हुरैरा रदियल्लाहु तआला अन्हु ने आप की नमाज जनाजा पढाई और आपकी वसीयत के मुताबिक रात में लोगों ने आप को जन्नतुल बकीअ़ के कब्रिस्तान में दूसरी उम्माहातुल मोमिनीन के पहलू में दफन किया।

हज़रत हस्सान बिन साबित :– यह दरबारे रसूल सल्लल्लाहु तआला अलैहि वसल्लम के खासुल ख़ास शाइर और मददाहे रसूल हैं। उनकी कुन्नियत अबुल वलीद है। इनके वालिद का नाम "साबित" और उनके दादा का नाम मुन्ज़िर और परदादा का नाम हराम है। और इन चारों के बारे में एक तारीख़ी लतीफ़ा है कि इन चारों की उम्रें एक सौ बीस की हुई। जो अजाएबाते आलम में से हैं। हजरत हस्सान की एक सौ बीस बरस

की उम्र में साठ बरस जाहिलियत में और साठ बरस इस्लाम में गुजरे। यह अन्सार के कबीला खज़रज से तअल्लुक रखते है। यह शोअरा–ए– अरब मे बहुत मशहूर हैं। बल्कि अबू उबैदा ने यहाँ तक फरमाया कि अरब के शहरी शाइरों में यह सब से ऊँचे दरजे के शाइर है। अमीरुल मोमिनीन हजरत अली रदियल्लाहु तआला अन्हु के दौरे ख़िलाफत में 40 हिजरी से कब्ल आपकी वफ़ात हुई।

फ़वाइद व मसाइल :– 1. यह बुख़ारी शरीफ की हदीस है यह हदीस उन वहाबियों और देवबन्दियों के लिए ताज़यानए इबरत है जो हम सुन्नियों की महफिले मीलाद शरीफ या नात ख़्वानी की मजालिस का मज़ाक उड़ाते हैं। और हम पर फब्तियाँ कसते रहते हैं। और कहा करते हैं। कि इससे कहीं ज्यादा बेहतर है कि लोग जितनी देर तक मीलाद शरीफ़ पढ़ते रहते या नात ख़्वानी करते रहते हैं इतनी देर तक कुरआन शरीफ की तिलावत करें। हम कहते हैं कि तिलावते कुरआन करीम के अजरो सवाब पर हमारा ईमान है। मगर खुदा के लिए उल्माए देवबन्द का कोई बडे से बड़ा मुहद्दिस मुझको बता दे। कि क्या तिलावते कुरआन के लिए भी कभी हुज़ूरे अकरम सल्लल्लाहु तआला अलैहि वसल्लम ने यह एहतिमाम फ़रमाया कि किसी कारी या हाफिज के लिए खास तौर पर मस्जिदे नबवी में मिम्बर बिछाया हो। और वह कारी या हाफिज जब कुरआन पढ रहा हो तो हुजूर सल्लल्लाहु तआला अलैहि वसल्लम ने उसको यह फरमा कर दाद दी हो कि जिबरईल इसकी मदद कर रहे हैं।

2. मुझे उम्मीद है कि अगर यह लोग बुख़ारी की इस हदीस को दीदए इबरत से देखेंगे और उनमे नूरे सआदत की अदना सी किरन भी होगी तो इन्शा अल्लाह तआला उनके सीनों के बन्द दरवाजे खुल जायेगें। और वह मीलाद शरीफ़ और नात ख़्वानी की अहमियत का ऐतराफ करके या तो खुद भी इन महफिलों को सुन्नत समझ कर उनमें शिरकत करने लगेंगे। या कम अज कम उन महफिलों की बुराई और मज़ाक उड़ाना छोड देंगे। और अगर खुदा न ख़्वास्ता उनके दिलों पर शकावत की मुहर लग चुकी होगी जब तो यह एक हदीस क्या ? पूरी हदीसों के दफतर और पूरा कुरआन भी इनके लिए ज़रीआ हिदायत नहीं बन सकता।

दुनिया निगाहे नुबुव्वत में

हदीस नम्बर – 24

عن ابن مسعود ان رسول ﷺ نام علی حصیر فقام وقد اثر فی جسده فقال ابن مسعود یا رسول اللہ ﷺ لو امرتنا ان نبسط لک و نعمل فقال مالی والدنیا ما انا والدنیا الا کراب استظل تحت شجرۃ ثم راح و ترک. (مشکوۃ،ص ۴۴۲)

अ़न इब्ने मसऊदिन इन्न रसूलल्लाहि सल्लल्लाहु तआला अलैहि वसल्लम नामा अला ह़सीरिन फक़ामा व कद असर फी जसदिहु फकाला इब्ने मसऊदिन या रसूलल्लाहि सल्लल्लाहु तआला अलैहि वसल्लम लौ अमरतना अन्ना नबसतालक सा व नअ्मला फकाला माली वद्दुनिया मा अना वद्दुनिया अल इकराबु इसतज़ाला तह़ता शजरता सुम्मा राह व तरका।

तर्जुमा :– हज़रत अ़ब्दुल्लाह बिन मसऊद रदियल्लाहु अन्हुमा से रिवायत है कि रसूलल्लाह सल्लल्लाहु तआला अलैहि वसल्लम एक चटाई पर सोकर जब उठे तो आप सल्लल्लाहु तआला अलैहि वसल्लम के जिस्मे मुबारक पर चटाई का निशान पढ़ गया था। अ़ब्दुल्लाह बिन मसऊद ने अर्ज़ किया कि या रसूलल्लाह सल्लल्लाहु तआला अ़लैहि वसल्लम काश आप सल्लल्लाहु तआला अलैहि वसल्लम हम लोगों को हुक्म फरमाते कि हम लोग आप सल्लल्लाहु तआला अलैहि वसल्लम के लिए बिछौना बिछा देते। और आप सल्लल्लाहु तआ़ला अ़लैहि वसल्लम की राहत का सामान कर देते तो हुजूर सल्लल्लाहु तआला अलैहि वसल्लम ने इरशाद फ़रमाया कि मुझे दुनिया से क्या मतलब ? मेरी और दुनिया की मिसाल तो ऐसी है जैसे कोई सवार किसी दरख़्त के साये में कुछ देर बैठ जाता है फिर उस दरख़्त को छोड़ कर चल देता है।

फवाइद व मसाइल :– 1 इस ह़दीस को इमाम अहमद तिरमिज़ी और इमाम इब्ने माजा ने भी अपनी अपनी किताबो में भी जिक्र किया है।

2. इस हदीस में हुज़ूर सल्लल्लाहु तआ़ला अलैहि वसल्लम की दुनिया से बे रगबती ऐश व आराम से नफरत और मुतावाज़ेआना जिन्दगी

की एक ऐसी तस्वीर नजर आती है कि उसके तसव्वुर से ही हम दुनियादारों के कल्ब पर चोट लगती है कि अल्लाह अल्लाह! दोनो आलम के सरदार महबूबे परवदिगार! हुजूर अहमदे मुख्तार सल्लल्लाहु तआला अलैहि वसल्लम एक खुरदुरी चटाई पर बिगैर बिछौने के सोते थे। यहाँ तक कि चटाईयों की तीलियों से महबूबे खुदा के जिस्में नाजुक पर निशान पड जाते थे।

हजरत अब्दुल्लाह बिन मसऊद इस रुह फरसा मन्जर की ताब न ला सके। बिलबिला उठे और चटाई पर बिछौना बिछा देने की तमन्ना ज़ाहिर की तो शहंशाहे कौनैन की तरफ से जवाब मिलता है कि मुझ को दुनिया के ऐशो आराम से क्या मतलब ? और मुझे दुनिया से क्या तअल्लुक़? मेरी दुनियावी जिन्दगी की मिसाल तो ऐसी ही है जैसे कोई सवार सफर में अपनी मन्ज़िले मक़सूद की तरफ जा रहा है रास्ते में कोई साया दार दरख़्त मिल गया। तो वह थोड़ी देर उस दरख़्त के साये मे बैठ गया। फिर उस दरख़्त को छोड़ कर चल दिया। यही मिसाल दुनिया की है कि हम सब आलमे आख़िरत के मुसाफिर है। और ज़माने के तेज़ घोड़े पर सवार हैं। आलमे आख़िरत को जाते हुए यह आलमे दुनिया एक साया दार दरख़्त की तरह रास्ते में मिल गई है इसके साये में चन्द दिन बैठ कर फिर उसको छोडकर अपनी मन्ज़िले मकसूद यानी आलमे आख़िरत की तरफ रवाना हो जाना है। तो जिस तरह साये दार दरखत के साये में चन्द दिन बैठ कर फिर उसको छोड़कर अपनी मन्ज़िले मकसूद यानी आलमे आख़िरत की तरफ़ रवाना हो जाना है। तो जिस तरह साये दार दरखत के साये में बैठने वाला मुसाफिर न वहाँ पलंग बिछाता है न बिछौना बिछाता है न मकान बनाता है न कोई ऐशो व आराम का सामान करता है इसी तरह मैं भी इस दुनिया में बजुज़ बकदरे जरुरत सामान के ऐशो व आराम का कोई साज़ व सामान पसन्द नहीं करता।

3. हुजूर सल्लल्लाहु तआला अलैहि वसल्लम को अमीराना जिन्दगी बिल्कुल भी पसन्द न थी। बार बार फरमाया करते थे कि मैं कोई बादशाह नही हूँ कि बादशाहों की तरह जिन्दगी बसर करूँ । मै तो ख़ुदा का रसूल और खुदा का बन्दा हूँ। मै एक बन्दे की तरह खाता हूँ एक बन्दे की तरह उठता बैठता हूँ। एक बन्दे की तरह जिन्दगी बसर करता हूँ।

4. आपको मिस्कीनों की जिन्दगी से बेहद मुहब्बत थी। चुनांचे हज़रत अनस रदियल्लाहु तआला अन्हु का बयान है कि आप सल्लल्लाहु तआला अलैहि वसल्लम इस तरह दुआ माँगा करते थे कि :—

اللهم احینی مسکینا و امتنی مسکینا و احشرنی فی زمرة المساکین۔

या अल्लाह मुझको एक मिस्कीन की ज़िन्दगी इनायत फ़रमा और एक मिस्कीन की मौत अता फरमा। और मिस्कीनों की जमाअत में मेरा हश्र फरमा।

यह दुआ सुनकर उम्मुल मोमिनीन हजरत आयशा रदियल्लाहु तआला अन्हा सब्र न कर सकीं और अर्ज किया या रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु तआला अलैहि वसल्लम ! आप इस तरह की दुआ क्यों माँग रहे हैं ? तो इरशाद फरमाया :—

انهم یدخلون الجنة قبل اغنیاء هم باربعین خریفا یا عائشة لا تردی المسکین ولو بشق تمرة یا عائشة احبی المساکین و قربیهم فان الله یقربك یوم القیامة۔

यकीनन यह(मिस्कीन) लोग मालदारों से चालीस बरस पहले जन्नत में दाख़िल हो जायेंगे। ऐ आयशा तू मिस्कीन को ख़ाली हाथ मत लौटा दे। कुछ न हो तो खजूर का एक टुकड़ा ही दे दे। ऐ आयशा! तू मिस्कीनों से मुहब्बत कर और उनको अपने कुर्ब में जगह दे! तो अल्लाह तआला तुझ को कियामत के दिन अपना कुर्ब अता फरमायेगा।

इसी तरह हज़रत अब्दुल्लाह बिन उमर सहाबी कहते हैं कि एक दिन हुज़ूर सल्लल्लाहु तआला अलैहि वसल्लम ने जज्बए मुहब्बत में मेरे कन्धे पर हाथ रख कर फरमाया कि :—

तुम दुनिया में एक परदेसी की तरह रहो। और अपनी ज़ात को कब्र वालों में शुमार करो।

मतलब यह है कि परदेसी आदमी या रास्ता चलने वाला मुसाफिर जिस तरह बहुत ठाठ बाट और साज व सामान से गिरांबार नहीं होता और परदेस या रास्ता से कोई ज्यादा दिलचस्पी और लगाव नहीं रखता।इसी तरह तुम भी दुनिया के साज व सामान से ज्यादा तअल्लुक और कल्बी लगाव मत लगाओ।

5. वाजेह रहे कि जिन खास खास सहाबा को हुजूर ने मिस्कीनों की जिन्दगी बसर करने का हुक्म दिया यह कोई वुजूबी हुक्म नहीं था बल्कि यह इस्तेहबाबी हुक्म था। यह हुजूर सल्लल्लाहु तआला अलैहि वसल्लम का कमाले करम है कि खुद तो मिस्कीनों की जिन्दगी गुजारी मगर अपनी उम्मत को हर किस्म की हलाल राहतो और जाइज साज़ो सामान रखने की इजाज़त अता फरमायी है। और इस बारे मे अपनी उम्मत को कुदरत का यह फरमान बारहा सुनाया है कि " ऐ महबूब आप लोगों को सुना दीजिए कि किसने अल्लाह की उस ज़ीनत को हराम किया है जो उसने अपने बन्दों को नफ़ा उठाने के लिए पैदा फरमाया है। और कौन है जो हलाल और पाकीजा रिज़्क को हराम ठहराये।?

बहर हाल हर किस्म के आराम व राहत के सामानों को बशर्ते कि वह हलाल व जाइज़ हों हुजूर सल्लल्लाहु तआला अलैहि वसल्लभ ने अपनी उम्मत को उसके इस्तेमाल करने और उससे नफा उठाने की इजाजत दी है। लिहाज़ा एक मुसलमान के लिए हर किस्म का सामाने राहत रखना और बरतना जाइज़ है। बस शर्त यही है कि वह हलाल व जाइज़ हो । वल्लाहु तआला अअ्लम।

जन्नत की गारण्टी

हदीस नम्बर – 25

عن عبادة بن الصامت النبي ﷺ قال اضمنوا لي ستا من انفسكم اضمن لكم الجنة اصدقوا اذا حدثتم و اوفوا اذا وعدتم وادوا اذا ائتمنتم واحفظوا فروجكم وغضوا ابصاركم وكفوا ايديكم. (مشكوٰة، ص ۴۱۵)

अन उबादा बिन सामितनिन नबीयो सल्लल्लाहु तआला अलैहि वसल्लम काला असनम नू इला सता मिन अनफुसाकुम अजमन लकुमुल जन्नता असदकू इजा हददसतुम व औ फू इजा वाअददतुम वददू इजा तमनतुम वहफ़ज़ू फुरुजाकुम व गदू अबसाराकुम व कुफ़ू ऐदियकुम।

तर्जुमा :– हजरत उबादा बिन सामित रदियल्लाहु तआला अन्हु रिवायत करते है कि नबी सल्लल्लाहु तआला अलैहि वसल्लम ने फरमाया कि तुम लोग अपनी तरफ से मेरे लिए छः चीजों की जिम्मेदारी कबूल करलो। तो मैं तुम्हारे लिए जन्नत की ज़िम्मेदारी लेता हूँ। (1) जब बात करो तो सच बोलो। (2) जब कोई वादा करो तो उसको पूरा करो (3) जब कोई अमानत तुम को सौंपी जाए तो उस अमानत को अदा करो। (4) अपनी शर्मगाहों की हिफाजत करो (5) अपनी निगाहों को नीची रखो। (6) अपने हाथों को (हर जुल्म व माअ्सीयत) से रोके रखो।

फवाइद व मसाइल :– हुज़ूर सल्लल्लाहु तआला अलैहि वसल्लम को अल्लाह अज्ज़वजल ने "जवामिउ़ल कलिम" का मोजिजा अता फरमाया है कि हुज़ूर सल्लल्लाहु तआला अलैहि वसल्लम के अल्फाज व कलिमात देखने में तो बहुत ही मुख़्तसर होते हैं मगर वह अपने दामन में इतने कसीर माने व मतालिब का खजाना रखते है कि गोया एक कूज़ा में पूरा समुन्दर समाया होता है। चुनाँचे इस हदीस में बजाहिर तो कुल छः ही चीजे मजकूर हैं। मगर यह छः चीजे ऐसी हैं कि अगर इन्सान इन पर मुकम्मल तौर पर आमिल हो जाय तो वह छः हजार बल्कि छः लाख बल्कि तमाम गुनाहों से बच जायेगा। और तमाम नेकियों का खजाना उसके नामऐ

आमाल में जमा हो जायेगा।

मसलन पहली चीज कि जबान से सच के सिवा कुछ न बोलना। जाहिर है कि जबान तमाम क़ौली गुनाहों का मम्बाअ् और तमाम क़ौली इबादतों का सरचश्मा है। अब जो शख़्स इसकी जिम्मेदारी ले ले कि वह सच के सिवा जबान से कुछ न बोलेगा तो सुन लीजिए कि तौहीद रिसालत क़यामत और तमाम अक़ाइदे इस्लाम का इक़रार, तिलावते कुरआन, तमाम दुरुद वज़ाइफ अच्छी बातों का हुक्म देना, बुरी बातों से रोकना, गर्ज हर छोटी बड़ी क़ौली इबादत सच ही तो है। लिहाज़ा सच बोलने वाला तमाम क़ौली इबादतों पर आमिल होगा। और कुफ़्र व शिर्क, बोहतान, फरेब, वादा ख़िलाफ़ी, झूटी शहादत, गलत बातें, झूटी ख़बरें। गर्ज जबान से सादिर होने वाले हज़ारों लाखों गुनाह यह सब झूट ही तो हैं। तो गौर कर लीजिए एक सच बोलने का अहद कर लेने में तमाम क़ौली इबादतो के करने और तमाम क़ौली गुनाहों से बचने की गारण्टी है।

इस तरह हर वादे को पूरा करना। यह भी एक ही अमल ऐसा है कि इसके अन्दर हज़ारों नेकी करने और हज़ारों गुनाहों से बचने की जमानत है। जाहिर है कि बन्दों का वादा दो क़िस्म का है एक अल्लाह से दूसरा मख़लूक़ से। अल्लाह तआला ने हर इन्सान से रोज़े अज़ल में " अलस्तु बिरब्बेकुम क़ालू बला शहिदना" के ज़रीआ अपनी रबूबियत का इकरार और अपनी फरमाँ बरदारी का वादा ले लिया। और फिर यह भी हुक्म दिया कि " औफ़िल बिल उक़ूद" ऐ बन्दो तुम अपने तमाम वादों को पूरा करो। तो अब नमाज़ रोजा और हज व ज़कात गर्ज तमाम आमाले सालेहा का करना यह अल्लाह से किये हुए वादों को पूरा करना है। और अल्लाह के किसी हुक्म से नाफ़रमानी करना यह वादा ख़िलाफ़ी करना है। मालूम हुआ कि एक वादा पूरा करने की जिम्मेदारी में तमाम हुक़ूकुल्लाह की अदायगी दाख़िल है।

इसी तरह मख़लूक़ से वादा पूरा करने में मख़लूक़ को राहत पहुँचाना। उसकी हाजतों को पूरी करना, मोमिनों का दिल खुश करना, गर्ज हज़ारों नेक काम उसके ज़िमन में हो जाते हैं। और वादा ख़िलाफ़ी में मोमिनों की ईज़ा रसानी उनकी हाजतो को रवा करना, वग़ैरह वग़ैरह सैकड़ो हज़ारों मुफ़ासिद व मुआसी जमा हो जाते हैं।

इसी तरह शर्मगाहों की हिफाजत में जिना लवातत वगैरह से बचना। और जाइज तरीके से साहिबे औलाद होना। अगर खुदावन्द तआला नेक व सॉलेह औलाद अता फरमादे तो माँ बाप के लिए दुनिया व आख़िरत में बेहतरी का बेहतरीन सामान है।

इसी तरह खुदा की ह़राम की हुई चीजों से निगाह नीची रखना उसमें सैकडों नेकियों पर अमल और सैकड़ों गुनाहो से बचना है। बुजुर्गों ने फरमाया कि आँख दिल का झरोखा है निगाह पडने से ही दिल में नेकी व बदी का ख्याल आता है। फिर दिल अगर सुधरा तो सारा बदन सुधरा। और दिल अगर बिगड़ा तो सारा बदन बिगड़ा। अब समझ लीजिए कि खुदा के महारिम से निगाह नीची रखने पर कितनी नेकियों और कितने अमल और कितने गुनाहों से बचत हो जायेगी।

इसी तरह अमानतों में ख़्यानत से परहेज़ करने में भी। चूँकि खुदा की अमानतें सब अदाये अमानत में दाख़िल होती हैं। इसी लिए अमानतों के अदा करने में हुक़ूकुल्लाह और हुक़ूकुल इ़बाद सब पर अमल हो जाता है।

इसी तरह अपने हाथों को तमाम मजालिम और गुनाहों से रोके रहने में जाहिर है कि कितनी नेंकियाँ होंगी? और कितने गुनाहों से इन्सान बच जायेगा।

बहर हाल छः चीजे़ बहुत ही अहम हैं। और हर मोमिन को इन की पाबन्दी लाज़िम है। क्योंकि हुजू़रे अकरम स़ल्लल्लाहु तआ़ला अलैहि वसल्लम ने इन छः बातों पर अ़मल करने वालों के लिए जन्नत में दाख़िल होने की गारन्टी दी है।

लती़फा :– मैं एक मरतबा धौराजी के अन्दर नदी के मैदान में वअ़ज बयान करके अपनी कयामगाह मदरसा मिस्कीनीया में जा रहा था। तो जामा मस्जिद के छत्ते के नीचे एक मस्त फकीर ने मुझ को मुखातिब करके यह कहा कि ऐ मौलवी इतना लम्बा वअ़ज मत कहा कर। बस लोगों से इतना कह दं कि " जबान और फलान की हिफाजत करो" उस वक्त तो मैं हँस कर चल दिया और उस जुमले को कोई अहमियत न दी। लेकिन जब दौरए हदीस पढाते हुए बुखारी शरीफ की इस हदीस पर नज़र पडी :–

" जो शख़्स मेरे लिए अपने दोनों गलों के दरमियान वाली चीज (जबान) और दोनों टाँगो के दरमियान वाली चीज़ (शर्मगाह) का ज़ामिन हो

जायगा मैं उसके लिए जन्नत का जामिन हूँ।

तो मेरी आँखे खुल गई कि वाकयी उस मस्त फकीर ने जो कुछ मुझ से कहा था वह फरमाने रसूल सल्लल्लाहु तआला अलैहि वसल्लम की एक दिलचस्प ताबीर थी।

रास्तों का हक़

हदीस नम्बर – 26

عن ابی سعید الخدری ان النبی ﷺ قال ایاکم والجلوس بالطرقات فقالوا یا رسول الله مالنا من مجالسنا بد نتحدث فیھا قال فاذا ابیتم الا المجلس فاعطوا الطریق حقه قالوا ما حق الطریق یا رسول الله قال غض البصر و کف الاذی ورد السلام و الامر بالمعروف والنھی عن المنکر. (بخاری، ص ۹۲۰)

अन अबी सईदुल खुदरी अन्नन नबीयो सल्लल्लाहु तआला अलैहि वसल्लम काला इय्याकुम वल जुलूस बित्तरकाते फ़कालू या रसूलल्लाह मा लना मिन मजालिसिना बुदद नतहद्दसा फ़ीहा काला फइजा अबीतुम इल्ला मजलिसु फअ्तुत तरीक़ हक्क़हू कालू मा हक्कत तरीक। या रसूलल्लाह काला गद्दल बसरो व कफ्फल अज़ा व रद्दा सलाम वल अमरे बिल मअ्रुफि वन नही अनिल मुनकर।

तर्जुमा :– हज़रत अबू सईद खुदरी रदियल्लाहु तआला अन्हु रावी हैं कि हुज़ूर नबीए करीम सल्लल्लाहु तआला अलैहि वसल्लम ने फरमाया कि तुम लोग रास्ते में बैठने से बचो। तो सहाबा ने कहा कि या रसूलल्लाह! रास्तों में बैठने से तो हम लोगों का चारा ही नहीं है क्योंकि इनही जगहों में हम लोग बैठ कर बात चीत करते हैं तो हुज़ूर सल्लल्लाहु तआला अलैहि वसल्लम ने फरमाया कि अगर तुम लोग रास्तों में बैठने से बाज़ नही रह सकते तो बैठो। लेकिन रास्ते का हक़ देते रहो। सहाबा ने अर्ज़ किया कि या रसूलल्लाह सल्लल्लाहु तआला अलैहि वसल्लम ! रास्ते का हक़ क्या है ? तो इरशाद फरमाया कि (1) नीची निगाह रखना, (2) किसी को ईज़ा न देना? (3) लोगों के सलाम का जवाब देना, (4) अच्छी बातों का हुक्म देना। (5) बुरी बातों से मना करना।

फवाइद :– 1. अ़ल्लामा क़स्तलानी ने फरमाया कि हुज़ूर सल्लल्लाहु तआला अलैहि वसल्लम का यह हुक्म कि "तुम लोग रास्ते पर बैठने से बचो। यह हुक्म वजूबी नहीं था। बल्कि इस्तिहबाबी था। क्योंकि

अगर यह हुक्म वजूबी होता तो सहाबा इसके जवाब में हरगिज हरगिज कभी यह न कहते कि हमारे लिए तो रास्तों पर बैठने से चारा ही नहीं है। न हुज़ूर सल्लल्लाहु तआला अलैहि वसल्लम यह फरमाते कि अच्छा तुम लोग बैठो तो रास्तों का हक देते रहो।

2. मजकूरा बाला पाँचो बातों को हुज़ूर सल्लल्लाहु तआला अलैहि वसल्लम ने रास्ता का हक करार दिया है और मोमिन पर अज़रुए शरअ् हर हक वाले का हक अदा करना वाजिब है। लिहाजा जो लोग रास्तों पर बैठें उन पर वाजिब है कि इन पाँचों बातों पर अमल करें।

3. बिला ज़रुरत रास्तों पर बैठना अगरचे रास्तों के हुकूक अदा न करने की सूरत में हराम और गुनाह तो नहीं मगर चूँकि यह कोई अच्छी खसलत भी नहीं है लिहाज़ा जहाँ तक हो सके मुसलमानों को इससे परहेज ही करना चाहिये। खुसूसन इस ज़माने में जब कि बेपर्दगी बल्कि उरयानी (नंगापन) फैशन बन चुकी है। सड़कों और रास्तों पर लोगों का बैठना बहुत से मफ़ासिद(बुराईयों) का पेश खेमा है। लिहाज़ा इससे ख़ास तौर पर परहेज़ करना चाहिये।

4. रास्तों के पाँचो हुकूक की कदरे तफ़सील यह है। अव्वल निगाहों को नीची रखना। चूँकि रास्तों पर औरतें और मर्द भी गुज़रेंगे। इसलिए बैठने वालों पर अज़रुए हुक्मे शरीअत वाजिब है। कि न गैर महरम औरतों पर नज़र डालें न लोगों के उन उयूब को देखें जिन को रास्ते चलने वाले लोगों से छिपाना चाहते हैं। मसलन कोढ़ी या सफेद दाग वाले। या लंगड़े लूले को घूर घूर कर बार बार न देखें कि इससे उन लोगो की दिल आज़ारी होगी।

दोम किसी को ईज़ा(तकलीफ) न देना। यानी इस तरह रास्तों पर न बैठा करें कि रास्ता तंग हो जाए और गुज़रने वालों को ईज़ा पहुंचे। यूँ ही रास्ता चलने वालों का मजाक न उड़ायें रास्ता चलने वालों की तहकीर और ऐब जोई(बुराई ढूँढना) न करें। सफर करने वालों की जासूसी न करें कि कौन कौन ?कहाँ कहाँ ?जाता है और क्यों जाता है ? गर्ज रास्तों पर बैठने वाले अपने किसी कौल व फ़ेल से गुज़रने वालों को तकलीफ और ईज़ा न पहुँचाऐ।

सोम हर गुज़रने वाले के सलाम का जवाब देते रहें।

चहारुम रास्ता चलने वालों को अच्छी बातें बताते रहें मसलन आगे

रास्ता में कोई खतरा हो या रास्ते में रुकावट हो तो इससे रास्ता चलनें वालों को आगाह करते रहें। रास्ता भूलने वालों या नावाकिफों को रास्ता बताते रहें और रास्ता चलने के शरअी आदाब लोगों को बताते और सिखाते रहें।

पंजुम ख़िलाफ़े शरीअत और बुरी बातों से लोगों को मना करते रहें। ताकि रास्ता चलने वाले सफर में कोई ख़िलाफ़े शरीअ़त काम न करने पायें। वल्लाहु तआला अअ़्लम।

जन्नत का बाग़

हदीस नम्बर – 27

عن ابی هریرة عن النبی ﷺ قال ما بین بیتی و منبری روضة من ریاض الجنة ومنبری علی حوضی. (بخاری، جلد اول، ص ۱۵۹)

अन अबी हुरैरता अनिन नबीये स़ल्लल्लाहु तआला अलैहि वसल्लम काला मा बैना बैती व मिम्बरी रौजतुम मिन रियाजिल जन्नति व मिम्बरी अ़ला हौज़ी।

तर्जुमा :– हज़रत अबू हुरैरा रदियल्लाहु तआ़ला अ़न्हु रिवायत करते हैं कि हुज़ूर नबीए करीम स़ल्लल्लाहु तआला अ़लैहि वसल्लम ने फ़रमाया कि ज़मीन का जो हिस्सा मेरे घर और मेरे मिम्बर के दरमियान में है वह जन्नत के बागों में से एक बाग़ है और मेरा मिम्बर मेरे हौज पर है।

फवाइद व मसाइल :– अल्लामा ऐनी ने फरमाया कि इस हदीस की सही रिवायत यही है बाज़ रिवायतों में इस जगह " मा बैना हुजरती व मुसल्लायी " का लफ्ज़ आया है। और बाज़ रिवायतों में " मा बैना क़बरी व मिम्बरी" भी वारिद हुआ है। बहर हाल तीनो रिवायतों का मुद्दआ और हासिल एक ही है।

2. यह हदीस मुख़्तलिफ़ सनदों के साथ बुख़ारी शरीफ में चन्द जगह मजकूर है। साहिबे मजमउ़ल बिहार और अल्लामा ऐनी व अल्लामा किरमानी वग़ैरह ने इस हदीस की शरह में तहरीर फरमाया है कि यहाँ दो एहतिमाल हैं। हदीस में या तो माने हक़ीकी मुराद हैं या मजाज़ी। माने हक़ीकी तो यह हैं कि यह ज़मीन का टुकड़ा और हक़ीक़त जन्नत ही का एक टुकड़ा है और यह बेऐनेहि एक बाग़ बना कर जन्नत में पहुँचा दिया जाएगा। और यह मेरा मिम्बर बेऐनेहि हौजे कौसर पर रख दिया जायेगा।

और माने मजाज़ी यह है कि इस ज़मीन के टुकड़े में इबादत करना जन्नत में जाने का सबब है और इस मिम्बर के पास इबादत करना हौजे कौसर से सैराब होने का ज़रीआ है। जैसा कि हुज़ूर स़ल्लल्लाहु तआ़ला अलैहि वस़ल्लम ने कहीं यह फरमाया कि ज़िक्र के हल्के जन्नत के बाग़ हैं। कहीं यह फरमाया कि जन्नत तलवार के साये के नीचे है। यानी ज़िक्रे

इलाही के हल्कों में बैठ कर इबादत करना दखूले जन्नत का सबब है। और तलवार के साये में जिहाद करना या शहीद होना जन्नत में दाख़िल होने का जरिआ है।

या मानी मजाज़ी यह हैं कि ज़मीन का टुकड़ा जन्नत के बाग़ के मिस्ल है कि जिस तरह जन्नत के बाग़ में हर वक़्त रहमते इलाही का नुज़ूल होता रहता है। इसी तरह इस जमीन के टुकड़े में भी बहुत ज़्यादा रहमते इलाही नाज़िल हुआ करती है।

लेकिन हज़रत अल्लामा शैख़ अब्दुल हक़ मुहद्दिस देहलवी कुद्दिसा सिर्रोहु ने लम्आत शरह मिशकात" में तहरीर फरमाया कि उल्माए मुहक्केकीन का यही कौल है कि हुज़ूर सल्लल्लाहु तआला अलैहि वसल्लम का यह कलाम हक़ीक़ी माना पर महमूल है और इस हदीस का यही मतलब है कि ज़मीन का यह टुकड़ा हक़ीक़ी मानों में जन्नत के बाग़ का एक टुकड़ा है। और क़्यामत के दिन ज़मीन का यह टुकड़ा बेऐनेहि जन्नत में पहुँचा दिया जाएगा। और रुए ज़मीन के दूसरे टुकड़ो की तरह यह बरबाद नहीं किया जाएगा।(हाशिया बुख़ारी जिल्द 1, सफा 159)

हज़रत इमाम मालिक रहमतुल्लाह अलैहि का यही क़ौल है और अल्लामा इब्ने हजर मक्की ने भी यह फरमाया कि"व हाज़ल अलैहिल अकसर" यानी अक्सर उल्मा का यही क़ौल है।

और हक़ीक़त भी यही है क्योंकि अगर इस कलाम के माने मजाज़ी मुराद हों। उस ज़मीन के टुकड़े को जन्नत का बाग़ कहना इस माने करके हो कि इसमें इबादत करना जन्नत मे दाख़िल होने का सबब व ज़रीआ है। या यह ख़ैर व बरकत में मिस्ल जन्नत के है। तो फिर इस बात में ज़मीन के इस टुकड़े की खुसूसियत ही क्या रह जाती है ? इस माना में तो हर मस्जिद जन्नत का बाग़ है हर ज़िक्र की मजलिस जन्नत का बाग़ है। हर मैदाने जिहाद जन्नत का बाग़ है। फिर मुक़ामे मदह में ख़ास तौर पर इस ज़मीन के टुकड़े को ज़िक्र करने का क्या फ़ायदा।

फिर एक ख़ास बात यह है कि बाज़ उल्माए किराम ने इस हदीस से साबित किया है कि " मदीना मुनव्वरा तमाम दुनिया के शहरों से ज़्यादा अफज़ल है। जाहिर है कि यह इस्तिदलाल उसी वक़्त दुरुस्त होगा जबकि उसके हक़ीक़ी माने मुराद लिए जाऐं कि मदीना का यह टुकड़ा चूँकि जन्नत

इलाही के हल्कों में बैठ कर इबादत करना दखूले जन्नत का सबब है। और तलवार के साये में जिहाद करना या शहीद होना जन्नत में दाख़िल होने का जरिआ है।

या मानी मजाजी यह हैं कि ज़मीन का टुकड़ा जन्नत के बाग़ के मिस्ल है कि जिस तरह जन्नत के बाग़ में हर वक़्त रहमते इलाही का नुजूल होता रहता है। इसी तरह इस ज़मीन के टुकड़े में भी बहुत ज्यादा रहमते इलाही नाजिल हुआ करती है।

लेकिन हज़रत अल्लामा शैख़ अब्दुल हक़ मुहद्दिस देहलवी कुद्दिसा सिर्रोहु ने लम्आत शरह मिशकात'' में तहरीर फरमाया कि उल्माए मुहक्केकीन का यही कौल है कि हुजूर सल्लल्लाहु तआला अलैहि वसल्लम का यह कलाम हक़ीकी माना पर महमूल है और इस हदीस का यही मतलब है कि ज़मीन का यह टुकड़ा हक़ीकी मानों में जन्नत के बाग़ का एक टुकड़ा है। और क़यामत के दिन ज़मीन का यह टुकड़ा बेऐनेहि जन्नत में पहुँचा दिया जाएगा। और रुए ज़मीन के दूसरे टुकडो की तरह यह बरबाद नहीं किया जाएगा।(हाशिया बुख़ारी जिल्द 1, सफा 159)

हज़रत इमाम मालिक रहमतुल्लाह अलैहि का यही कौल है और अल्लामा इब्ने हजर मक्की ने भी यह फरमाया कि''व हाज़ल अलैहिल अकसर'' यानी अक्सर उल्मा का यही क़ौल है।

और हकीक़त भी यही है क्योंकि अगर इस कलाम के माने मजाज़ी मुराद हों। उस ज़मीन के टुकड़े को जन्नत का बाग़ कहना इस माने करके हो कि इसमें इबादत करना जन्नत मे दाख़िल होने का सबब व ज़रीआ है। या यह ख़ैर व बरकत में मिस्ल जन्नत के है। तो फिर इस बात में ज़मीन के इस टुकड़े की खुसूसियत ही क्या रह जाती है ? इस माना में तो हर मस्जिद जन्नत का बाग़ है हर ज़िक्र की मजलिस जन्नत का बाग़ है। हर मैदाने जिहाद जन्नत का बाग़ है। फिर मुक़ामे मदह में ख़ास तौर पर इस ज़मीन के टुकड़े को ज़िक्र करने का क्या फ़ायदा।

फिर एक ख़ास बात यह है कि बाज उल्माए किराम ने इस हदीस से साबित किया है कि '' मदीना मुनव्वरा तमाम दुनिया के शहरों से ज़्यादा अफज़ल है। जाहिर है कि यह इस्तिदलाल उसी वक़्त दुरुस्त होगा जबकि उसके हकीकी माने मुराद लिए जाएं कि मदीना का यह टुकड़ा चूँकि जन्नत

ही का एक टुकड़ा है और मदीना मुनव्वरा के सिवा दुनिया भर के किसी शहर में ऐसा कोई जमीन का टुकड़ा नहीं है। इसलिए मदीना मुनव्वरा तमाम शहरों से इस खुसूसियत के ऐतबार से अफज़ल व आला है वरना माना मजाज़ी के लिहाज़ से आप पढ़ चुके कि बहुत से मुक़ामात और जगहें जन्नत का बाग है।

इस तरह अल्लामा क़स्तलानी ख़ताबी ने फरमाया है कि इस हदीस का मकसद लोगों को मदीना मुनव्वरा की सुकूनत पर तरग़ीब दिलाता है। (हाशिया बुख़ारी, सफ़ा 975)

ज़ाहिर है कि लोगों को मदीना मुनव्वरा में सुकूनत की रगबत इसी वक़्त ज़्यादा होगी जब लोग यह समझेंगें कि वाक़ई हुज़ूर सल्लल्लाहु तआला अलैहि वसल्लम के मिम्बर और कब्रे अनवर के दरमियान में ज़मीन का टुकड़ा हक़ीक़त में और हक़ीक़ी तौर पर जन्नत का बाग़ है। वरना महज़ इतनी सी बात से क्या रग़बत हासिल होगी।? कि वहाँ इबादत करने से जन्नत मिलेगी। या वहाँ जन्नत जैसी ख़ैर व बरकत है क्योंकि इतनी सी बात तो दुनिया में और भी बहुत सी जगहो में पायी जाती है।

बहर हाल मुहक्क़ेक़ीन के कौल के मुताबिक इस हदीस के यही माने राइज हैं कि हर शख़्स को सह ईमान रखना चाहिये कि मिम्बर और कब्रे अनवर के दरमियान की जमीन वाकई सचमुच और हक़ीक़त में जन्नत का बाग़ है और कियामत में यह ज़मीन का टुकड़ा मदीना मुनव्वरा से उठाकर जन्नत में पहुँचा दिया जाएगा।

वसीला

हदीस नम्बर – 28

عن انس بن مالک ان عمر بن الخطاب رضی الله عنه كان اذا قحطوا استسقى بالعباس بن عبد المطلب رضی الله تعالیٰ عنه فقال اللّٰهم انا كنا نتوسل اليك نبينا فتسقينا و انا نتوسل بعم نبينا فاسقنا فيسقون. (بخاری، ص ۱۳۷)

अन अनस बिन मालिक अन्न उ़मर बिन ख़त्ताब रदियल्लाहु तआ़ला अ़न्हु काना इज़ा कहतू इस्तिस्का बिल अब्बासि बिन अब्दुल मुत्तलिब रदियल्लाहु तआला अन्हु फ़क़ाला अल्लाहुम्मा इन्ना काना नतवस्सलु इलैका नबीयना फतसकीना व इन्ना नतवस्सलु ब अम्मि नबीयना फसकना फयसकून।

तर्जुमा :– हज़रत अनस बिन मालिक से रिवायत है कि हज़रत उमर बिन ख़त्ताब अमीरुल मोमिनीन रदियल्लाहु तआला अ़न्हु जब लोग कहत साली में मुबतला होते थे तो हजरत अब्बास बिन अब्दुल मुत्तलिब के वसीले से बारिश की दुआ माँगा करते थे। और यूँ कहते थे कि या अल्लाह ! हम तेरी बारगाह में अपने नबी को वसीला बनाया करते थे। उस वक़्त हम को बारिश से सैराब फरमाता था। और अब हम अपने नबी के चचा को तेरी बारगाह में वसीला बनाते हैं लिहाज़ा तू हम सब को सैराब फरमा दे। तो लोग सैराब कर दिये जाते थे। (यानी बारिश हो जाती थी।)

फ़वाइद व मसाइल :– और बुख़ारी शरीफ़ की यह हदीस खुली हुई दलील है कि खुदा से दुआ माँगते वक्त हजरात अम्बिया व औलिया और दूसरे सुल्हाए उम्मत का वसीला पकड़ना और उनके वसीलों से अपनी मुरादों को बारगाहे इलाही से तलब करना यह एक मसअला है कि इस पर तमाम सहाबा किराम का इजमाअ् व इत्तिफाक़ है क्योंकि ज़ाहिर है कि नमाज़े इस्तिस्का में हुज़ूर अमीरुल मोमिनीन फ़ारुके आ़ज़म रदियल्लाहु तआला अ़न्हु के साथ हज़ारो सहाबा दुआ मे शरीक होते रहे होगें। और इस दुआ को सुनते रहे होगें। अगर खुदा नख़्वास्ता वसीलों के साथ दुआ माँगना शिर्क या गुनाह होता तो न हज़रत अमीरुल मोमिनीन फ़ारुके आज़म इस तरह दुआ माँगते न सहाबा इस दुआ को पसन्द करते। अगर बाल बराबर भी यह

दुआ खिलाफे शरीअत होती तो हजारों सहाबा हरगिज हरगिज इसको बरदाश्त नही कर सकते थे। बल्कि हजरत फारुके आजम रदियल्लाहु तआला अन्हु को टोक देते। मगर जब हजरत फारुके आजम रदियल्लाहु तआला अन्हु ने इस तरह दुआ माँगी और तमाम सहाबा ने इस दुआ को पसन्द करके इस पर आमीन कहा। तो यह इजमाअ् हो गया। कि बिला शुबा इस तरह दुआ का का माँगना जाइज़ बल्कि मुस्तहब है।

2. हज़रत अ़ल्लामा ऐनी ने तहरीर फरमाया कि अबू सालेह की रिवायत करदा हदीस में यह भी आया है कि हज़रत उ़मर रदियल्लाहु तआ़ला अ़न्हु ने हज़रत अ़ब्बास रदियल्लाहु तआ़ला अन्हु को अपने साथ मिम्बर पर खड़ा किया और पहले ख़ुद इस तरह दुआ माँगी।

या अल्लाह! हम सब तेरे नबी के चचा के वसीले से तेरी तरफ मुतावज्जे हुए हैं। लिहाज़ा तू हम लोगों को बारिश से सैराब फरमा दे। और हम को ना उम्मीद न फरमा।

इस के बाद हज़रत फारुके आज़म रदियल्लाहु तआ़ला अ़न्हु ने हजरत अ़ब्बास रदियल्लाहु तआ़ला अन्हु से फरमाया कि ऐ अबुल फज्ल! तुम भी दुआ माँगो। तो हज़रत अ़ब्बास रदियल्लाहु तआ़ला अ़न्हु ने इस तरह दुआ माँगी कि :–

" या अल्लाह! हर बला गुनाहों के बाअिस ही उतारी जाती है और बिगै़र तौबा के कोई बला दफ़ा नहीं की जाती। सारी कौम मेरे वसीले से तेरी तरफ मुतावज्जे हुई है क्योंकि मुझको तेरे नबी से एक ख़ास तअ़ल्लुक है। यह हमारे गुनाहगार हाथ और हमारी तौबा करने वाली पेशानियाँ तेरे हुज़ूर में हाज़िर हैं। लिहाजा तू हम लोगों को सैराब फरमा दे।

रावी का बयान है कि हज़रत अब्बास रदियल्लाहु तआला अन्हु की दुआ के बाद पहाड़ों की तरफ़ बदलियाँ हर चहार तरफ से आ गईं और ख़ूब बारिश हुई। यहाँ तक कि ज़मीन सैराब होकर सर सब्ज़ व शादाब हो गई (हाशिया बुख़ारी, सफ़ा, 137)

3. हज़रत फ़ारुके आज़म रदियल्लाहु तआ़ला अ़न्हु ने अपनी इस दुआ में यह तसरीह फरमा दी कि पहले हम तेरे नबी स़ल्लल्लाहु तआला अलैहि वसल्लम को वसीला बना कर दुआ माँगा करते थे। और अब हम तेरे नबी के चचा को वसीला बना कर दुआ माँगते है।

इससे साबित हो गया कि नबी और गैर नबी, जिन्दों और वफ़ात पाने वालों सबको दुआओं में वसीला बनाना जाइज है। वल्लाहु तआला अअ्लम।

तबुर्रकाते नुबुव्वत

हदीस नम्बर – 29

عن ابی بردة قال قدمت المدينة فلقيني عبد الله بن سلام فقال لی انطلق الی المنزل فاسقيک فی قدح شرب فيه رسول الله ﷺ و تصلی فی مسجد صلی فيه النبی ﷺ فانطلقت معه فاسقانی سويقا واطعمنی تمرا وصليت فی مسجده. (بخاری، جلددوم، ص۱۰۹۱)

अन अबी बरद काला क़द्दमतुल मदीनता फलक़ीनी अब्दुल्लाहि बिन सलाम फक़ाला ली उन्तलका इलल मन्ज़िल फअस्की क फी क़दहिन शरिब फीहि रसूलिल्लाह सल्लल्लाहु तआला अलैहि वसल्लम व तुसल्ली फी मस्जिदिन सल्ला फीहिन्न नबीयु सल्लल्लाहु तआला अलैहि वसल्लम फनतलाक़तु मअ़हु फसक़ानी सवीक़न व अतअमनी तमरन व सल्लैतु फी मस्जिदेही।

तर्जुमा :– अबू बरदा से रिवायत है उन्होनें कहा कि मैं मदीना आया तो मुझसे हज़रत अब्दुल्लाह बिन सलाम रदियल्लाहु तआला अन्हु ने मुलाक़ात की फिर फरमाया कि तुम घर चलो मैं तुम को उस प्याले में कुछ पिलाऊँगा। जिस प्याले में रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु तआला अलैहि वसल्लम ने पिया था। और तुम उस मस्जिद में नमाज पढ़ोगे जिस में नबी सल्लल्लाहु तआला अलैहि वसल्लम ने नमाज़ पढ़ी थी। चुनाँचे मैं उनके साथ गया तो उन्होंने मुझको (उस प्याले) सत्तू पिलाया। और मैंने उनकी मस्जिद में नमाज़ पढ़ी।

हज़रत अबू बरदा :– इन का नाम आमिर है यह बहुत मशहूर ताबेई और एक मशहूर सहाबी हजरत अबू मूसा अशअरी रदियल्लाहु तआला अन्हु के फरज़न्द है। यह हदीस में अपने वालिद और हजरत अली रदियल्लाहु तआला अन्हु वगैरह दूसरे जलीलुल क़द्र सहाबा के शागिर्द हैं। क़ाजी शरीह के बाद यह कूफ़ा के क़ाज़ी बना दिये गये थे। मगर अब्दुल

मलिक बिन मरवान के गवर्नर हिजाज बिन यूसुफ जालिम ने उनको माजूल कर दिया।

हज़रत अ़ब्दुल्लाह बिन सलामः– बहुत ही नामवर और मशहूर सहाबी हैं। यह यहूदियों के सबसे बड़े आलिम ओर तूरैत और इन्जील के बहुत ही माहिर थे। मदीना ही के बाशिन्दे थे। मदीना ही में मुशर्रफ बा इस्लाम हुए। यहूदी उनके बहुत बड़े दुश्मन थे। क्योंकि यह यहूदियों के अक्सर खुद साख्ता मसाइल के डोल का पोल खोल दिया करते थे। हुजूर सल्लल्लाहु तआ़ला अ़लैहि वसल्लम ने उनको जन्नत की बशारत दी थी। 43 हिजरी में मदीना मुनव्वरा में इनका विसाल हुआ।

फवाइद व मसाइल :– 1. मुहद्दिस अब्दुर्रज्जाक़ ने इस हदीस को इस तरह बयान किया है कि हज़रत अबू बरदा के वालिद हज़रत अबू मूसा अशअरी ने ख़ास तौर पर अबू बरदा को मदीना मुनव्वरा हजरत अ़ब्दुल्लाह बिन सलाम की ख़िदमत में इल्म हासिल करने के लिए भेजा था। चुनाँचे जब हजरत अब्दुल्लाह बिन सलाम से उनकी मुलाकात हुई तो उन्होंने मरहबा कहा। और फिर फरमाया कि तुम मेरे मकान पर चलो मैं तुम्हारी इस शान के साथ मेहमान नवाजी करूँगा। कि मैं तुमको उस मुकद्दस प्याले में कुछ पिलाऊँगा जिसमें हुजूर रहमते आ़लम सल्लल्लाहु तआ़ला अ़लैहि वसल्लम ने पानी नोश फरमाया था। और तुम मेरी मस्जिद में नमाज पढ़ोगे जिसमें हुजूर सल्लल्लाहु तआ़ला अ़लैहि वसल्लम ने नमाज पढ़ी थी। चुनाँचे जब अबू बरदा उनके मकान पर गये तो उन्होनें खजूर खिलाकर उसी मुतबर्रक प्याले में सत्तू घोल कर पिलाया।

तबर्रुकाते नुबुव्वत की ताज़ीम :– 1. इस हदीस से साबित होता है कि हुजूर सल्लल्लाहु तआ़ला अ़लैहि वसल्लम के तबर्रुकात की ताजीम व तकरीम और उनके साथ वालिहाना मुहब्बत सहाबा किराम का मुकद्दस तरीका है चुनाँचे अहादीस से साबित है कि हजरात सहाबा किराम हर उस चीज़ की ताजीम व एहतिराम करते थे जिसको हुजूर सल्लल्लाहु तआ़ला अ़लैहि वसल्लम से कोई निस्बत व तअ़ल्लुक़ हो। बुख़ारी शरीफ में मजकूर है कि हजरत मुहम्मद बिन सीरीन मशहूर बा बरकत उम्मते ताबेई मुहद्दिस ने उबैदा मुहद्दिस से कहा कि मेरे पास हुजूर नबीए करीम सल्लल्लाहु तआ़ला अ़लैहि वसल्लम के चन्द मूए मुबारक

हैं जो हजरत अनस रदियल्लाहु तआला अन्हु सहाबी के घर वालों ने मुझे अता किये है। यह सुनकर उबैदा ने कहा कि अगर मेरे पास उन मुकद्दस बालों मे से एक बाल भी होता तो वह मेरे नज्दीक तमाम दुनिया व माफीहा से बढ़कर महबूब होता।

हजरत अनस रदियल्लाहु तआला अन्हु सहाबी का बयान है कि जब हुजूर नबीए करीम सल्लल्लाहु तआला अलैहि वसल्लम ने हज्जतुल विदाअ् के मौके पर मिना में अपने सर के बाल उतरवाये थे तो सबसे पहले हज़रत अबू तलहा ने हुजूर सल्लल्लाहु तआला अलैहि वसल्लम के मुकद्दस बालों को बतौर तबर्ररुक ले लिया। (बुखारी जिल्द 1, सफा 29)

इस तरह सहाबा किराम हुजूर सल्लल्लाहु तआला अलैहि वसल्लम के कपड़ो को भी इन्तेहाई मुअज़्ज़म व मुतबर्रक समझते थे। हजरत अमीरुल मोमिनीन अबू बक्र सिद्दीके अकबर रदियल्लाहु तआला अन्हु की साहिबजादी अस्मा के पास हुजूर सल्लल्लाहु तआला अलैहि वसल्लम का एक जुब्बा था। वह बीमारों को इसका धोबन पिलाती थीं और शिफा हासिल होती थी। मुस्लिम शरीफ में है कि खालिद बिन वलीद रदियल्लाहु तआला अन्हु अपनी टोपी में हुजूर सल्लल्लाहु तआला अलैहि वसल्लम के मुए मुबारक का तबर्ररुक रखते थे। और फरमाते कि हर जंग मे इन्हीं मुकद्दस बालों की बरकत से मुझे फतह व नुसरत हासिल होती है। बुखारी शरीफ में मुतअद्दिद जगह यह हदीस है कि सहाबा किराम हुजूर सल्लल्लाहु तआला अलैहि वसल्लम के गिसाला वजू(वजू का धोवन) को लूट लेते थे। और बरकत के लिए अपने चेहरों पर मल लेते थे। इसी तरह हुजूर के लोआबे दहन और खन्खार को भी सहाबा ज़मीन पर नहीं गिरने देते थे। बल्कि अपने हाथों में लेकर अपने चेहरे पर और ऑखो पर मल लिया करते थे।

हजरत अनस सहाबी ने यह वसीयत फरमायी थी कि मेरी मौत के बाद मेरे बदन और कफन में वही खुशबू लगायी जाए जिसमें हुजूर सल्लल्लाहो तआला अलैहि वसल्लम का पसीना मिला हुआ है। इस तरह की बहुत सी हदीसों को अल्लामा शौकानी ने नीलुल औतार में जिक्र फरमा कर यह तहरीर किया कि हुजूर सल्लल्लाहो तआला अलैहि वसल्लम ने हजरत जाबिर पर अपने वुज़ू का पानी डाला और सहाबा ने जो हुजूर के गिसाला वुज़ू को अपने जिस्मों पर मला और हुजूर सल्लल्लाहु तआला

अलैहि वसल्लम ने मना नही किया। फरमाया तो इससे जमहूर उलमा ने यह इस्तिदलाल किया कि हुज़ूर सल्लल्लाहु तआला अलैहि वसल्लम के वुजू के पानी को तबर्रुक बनाना चाहिये।(नीलुल औतार जिल्द 1, सफा 19)

बहर कैफ हुज़ूर सल्लल्लाहु तआला अलैहि वसल्लम के तमाम तबर्रुकात की ताज़ीम करनी चाहिये और उनको मुतबर्रक समझकर उनका अदब व एहतिराम करना चाहिये।

मूए मुबारक की ज़ियारत :– लिहाजा इस ज़माने में भी जिन बालों और जुब्बों के मुतअल्लिक मशहूर है कि यह हुज़ूर सल्लल्लाहु तआला अलैहि वसल्लम का मूए मुबारक और जुब्बा शरीफा है। हरगिज़ हरगिज़ न उसकी तकज़ीब करना चाहिये न तौहीन न बे अदबी। बल्कि इन्तेहाई वालेहाना अकीदत के साथ उन को तबर्रुक समझकर ज़ियारत करना चाहिये। क्योंकि दो हाल से ख़ाली नहीं या वाकेअ़ में वह हुज़ूर सल्लल्लाहु तआला अलैहि वसल्लम के मूए मुबारक होंगे या नहीं। अगर वाकई में जैसा कि मशहूर है वह हुज़ूर ही के मुकद्दस बाल हैं जब तो जाहिर है कि उनकी तकज़ीब या तौहीन व तनकीस से आदमी यकीनन कहरे कहहार व गजबे जब्बार में गिरफतार हो जायेगा। कि तौबा नऊज़ो बिल्लाह। वह हुज़ूर के मुकद्दस बाल की तौहीन के वबाल में पड़ गया और अगर वाकई में हुज़ूर सल्लल्लाहु तआला अलैहि वसल्लम के मुबारक बाल नहीं है। बल्कि लोगो ने ख़्वाह मख़्वाह मशहूर कर दिया है तो भी उसकी ताज़ीम व तकरीम करने में कोई दीनी नुकसान नहीं बल्कि नेक नीयती और अकीदत की बिना पर सवाब ही की उम्मीद है। क्योंकि अमल के सवाब का दारोमदार नियत पर है। और अल्लाह तआला अपने बन्दों की नेक नियतों का जानने वाला और उनके आमाल का देखने वाला है।

लतीफ़ा :– इस सिलसिले में अहमदाबाद का एक वाकेआ मेरी जिन्दगी की एक नाकाबिले फरामोश दास्तान है। बारहवीं शरीफ के महीने में आम तौर पर अहमदाबाद में बहुत सी जगहों पर मूए मुबारक की ज़ियारत करायी जाती है। एक मरतबा गालिबन वली चकला या किसी दूसरे मुहल्ले में किसी जगह मूए मुबारक की ज़ियारत का जलसा था। लोग ज़ियारत कर रहे थे कि ना गहाँ एक वहाबी अकीदा का नौजवान अकड़ गया और अहले मुहल्ला से मुतालबा किया कि इस बाल के मुए मुबारक

होने का क्या सुबूत है ? मैं किस तरह तसलीम कर लूँ कि यह हुजूर सल्लल्लाहु तआला अलैहि वसल्लम ही का मुकद्दस बाल शरीफ है? इस पर बहुत ज्यादा तू तू मैं मैं हुई। चुनाँचे मुहल्ला के लोग उस नौजवान को लेकर मेरे पास दारुल उलूम शाह आलम में आये। उस नौजवान ने बड़ी बेबाकी और बड़ी बे अदबी के साथ मुझ से गुफतगू शुरु की। और मुझसे भी यही मुतालबा किया कि आप साबित कीजिए कि शहर अहमदाबाद में जितनी जगहों पर मूए मुबारक हैं वह वाकई हुजूर सल्लल्लाहु तआला अलैहि वसल्लम ही के बाल शरीफ हैं इसका क्या सुबूत है ?

उस वक्त कुदरती तौर पर मुझे यह जवाब समझ में आया कि मैंने उस से इन्तिहाई नरमी और मुहब्बत के लहजे में पूछा कि तुम्हारा नाम क्या है ? उसने कहा अब्दुल कादिर फिर मैनें पूछा तुम्हारे वालिद का क्या नाम है ? तो उसने कहा कि अब्दुल्लाह भाई। मैं एक मिनट ख़ामोश रहा फिर मैंने उससे पूछा कि क्या तुम अब्दुल्लाह भाई के बेटे हो? उसने कहा जी हाँ। मैं फिर एक मिनट ख़ामोश रहा और मैंने फिर उससे पूछा कि क्या तुम अब्दुल्लाह भाई ही के बेटे हो? मेरे इस सवाल पर वह भड़क उठा और चिल्ला कर कहा कि क्या आप बार बार मुझसे सवाल करते हैं कि तुम अब्दुल्लाह भाई ही के बेटे हो ?मैं चुप रहा। जब उसका गुस्सा बहुत तेज हो गया तो मैंने कहा कि मैं नहीं मानता कि तुम अब्दुल्लाह भाई के बेटे हो। तुम्हारे पास कौनसा ऐसा सुबूत है कि तुम अब्दुल्लाह भाई ही के बेटे हो? जब तक तुम इसका सुबूत पेश नहीं करोगे मै हरगिज़ हरगिज तुमको अब्दुल्लाह भाई का बेटा नहीं मान सकता। यह सुनकर वह ख़ामोश हो गया। अब मैंने डाँटते हुए तड़प कर कहा कि बोलते क्यों नहीं ? क्या सुबूत है कि तुम अब्दुल्लाह भाई के बेटे हो।? फिर भी वह चुप रहा मगर उसका चेहरा उतर गया। मैंने जब महसूस कर लिया कि यह अब लाजवाब हो चुका है तो मैंने खुद उससे कहा कि भाई इसके सिवा तुम्हारे पास और क्या सुबूत है कि तुम्हारी माँ ने यह बताया है कि तुम अब्दुल्लाह ही के बेटे हो। तुम्हारी माँ के सिवा तुम्हारे अब्दुल्लाह का बेटा होने पर दुनिया भर में न कोई गवाह है न कोई सुबूत। मगर तुम महज़ अपनी माँ के कहने पर अब्दुल्लाह के बाप होने का इतना पक्का यकीन रखते हो कि खानाए काबा के अन्दर, सर पर कुरआन रखकर भी तुम यही कहोगे कि मैं अब्दुल्ला का

बेटा हूँ। तो अजीजे मन! फकत एक औरत के कह देने से तुम ने मान लिया और यकीन कर लिया कि तुम्हारा बाप अब्दुल्लाह है। तो आज सैकड़ों बरस से हजारों लाखों इन्सान यह कहते चले आये कि अहमदाबाद के तमाम मूए मुबारक हुजूर सल्लल्लाहु तआला अलैहि वसल्लम ही के बाल शरीफ हैं तो अगर हम लोग इस बात का यक़ीन कर लें कि यह हुजूर सल्लल्लाहु तआला अलैहि वसल्लम ही का बाल है तो इसमें ऐतराज़ की क्या गुन्जाइश है ? एक औरत तो झूट बोल सकती है मगर सैकड़ों बरस के हजारो लाखों मुसलमानों के बारे में यह क्योंकर बावर किया जा सकता है कि यह सब झूटे हैं ?

मेरी यह जज्बात से भरी हुई गुफ्तगू सुनकर वह इस कदर मुतअस्सिर हुआ कि रो पड़ा। यहाँ तक कि वह मेरे घुटनों पर सर रखकर रोने लगा और कहा कि हुजूर! मैं तौबा करता हूँ कि अब कभी भी मै उन मुक़द्दस बालों की तकज़ीब या तौहीन व तनक़ीस नहीं करूँगा। और मुझे यकीन हो गया कि वाक़ई हज़ारों लाखों मुसलमानो की बात झूट और गलत नहीं हो सकती।

इसके बाद वह नौजवान कहने लगा कि हुजूर! लेकिन एक शुबा मेरे दिल में और है जो काँटे की तरह खटक रहा है उसके बारे में भी हुजूर कुछ रौशनी डालें। तो मैं बहुत ही ममनून रहूँगा। शायद मेरा यह शुबा भी दूर हो जाए मैंने कहा कि वह क्या है? तो कहने लगा कि रहमते आलम सल्लल्लाहु तआला अलैहि वसल्लम को इस दुनिया से तशरीफ ले गये साढ़े तेरह सौ बरस से ज़ाइद हो गये हैं। इस तवील मुददत और इतने लम्बे ज़माने में बाल तो बाल कोई हड्डी भी अपनी असली हालत पर बदस्तूर क़ायम नहीं रह सकती क्या कोई बाल साढ़े तेरह सौ बरस तक बिगैर गले सड़े ज्यों का त्यों अपनी असली हालत पर बाकी रह सकता है?

मैंने चुमकार कर उसको जवाब दिया कि बेटा ! तुम बिल्कुल ठीक कहते हो। मेरे और तुम्हारे बाल साढ़े तेरह सौ बरस क्या? बरस दो बरस भी एक हालत पर सलामत और बाकी नहीं रह सकते। लेकिन हुजूर सल्लल्लाहु तआला अलैहि वसल्लम का इरशाद है कि" अल्लाह तआला ने ज़मीन पर हराम फरमा दिया है कि वह नबीयों के बदन को खाये। अल्लाह के सब नबी ज़िन्दा हैं। और उनको रोज़ी दी जाती है।

इस हदीस से साबित होता है कि हुजूरे अक़दस सल्लल्लाहु तआला

अलैहि वसल्लम जिन्दा हैं लिहाजा उनके मुकद्दस जिस्म का गलना सडना मुहाल है। और हुजूर सल्लल्लाहु तआला अलैहि वसल्लम के बाल शरीफ हुजूर ही के जिस्म का एक जुज हैं। तो अल्लाह तआला ने हुजूर सल्लल्लाहु तआला अलैहि वसल्लम के इन बालों को भी यह फजीलत अता फरमा दी है कि वह हुजूर के जिस्मे मुबारक की तरह कभी गल सड नहीं सकते। तुम देख लो कि सैकडों बरस से अहमदाबाद के इन तमाम मुकद्दस बालों का एक ही हालत में कायम रहना यह भी एक खुली हुई दलील है कि यह सब हुजूर सल्लल्लाहु तआला अलैहि वसल्लम ही के मूए मुबारक हैं। वरना अगर किसी दूसरे के यह बाल होते तो कभी के गल सड कर फना हो चुके होते। यह सुनकर वह नौजवान फिर आबदीदा हो गया और कहने लगा कि खुदा की कसम मेरे तमाम शुबहात दूर हो गये। और मुझको यकीने कामिल हो गया कि यह मूए मुबारक बिल्कुल असली हैं। मैंने खुदा का शुक्रिया अदा किया। लोग भी बहुत खुश हुए और वह नौजवान भी वहाबियत से मुतनफ्फिर होकर पुख्ता सुन्नी हो गया।

तस्वीरें

हदीस नम्बर – 30

عن سعید بن ابی الحسن قال کنت عند ابن عباس اذجاء ہ رجل فقال یا ابن عباس انی رجل انما معیشتی من صنعة یدی و انی اصنع ھذہ التصاویر فقال ابن عباس لاحدثک الا ما سمعت من رسول اللہ ﷺ سمعته یقول من صور صورة فان اللہ معذبهٔ حتی ینفخ فیه الروح ولیس بنافخ فیها ابدا افربا الرجل ربرة شدیدة واصفر وجهه فقال ویحک ان ابیت الا ان تصنع فعلیک بهذا الشجر و کل شئی لیس فیه روح. (مشکوٰة، باب التصاویر)

अन सईद बिन अबिल हसन क़ाला कुन्तो इन्दा इब्ने अब्बासिन इज़ा जाअ् रजुलुन फ़क़ाला या इब्न अब्बास इन्नी रजुलुन इन्नमा मईशती मिन सनअतिन यदी व इन्नी अस्नअु हाजेहित तसावीर फक़ाला इब्नु अब्बास ला उहद्दि्द इल्ला मा समेअ्तु मिन रसूलिल्लाहि सल्लल्लाहु तआला अलैहि वसल्लम समेअ्तुहु यकूलु मिन सुवरे सूरतिन फइन्नलाह मुअज्जेबहु हत्ता युनफखु फ़ीहिर रुह व लैसा बिनाफ़ख़िन फ़ीहा अबादन अफ़राबर रजुलु रबरतन शदीदा। वसफ़र वजहहु फ़क़ाला व युहिक्को इन्ना अबीता इल्ला अन तस्नअ़ फ़अलैका बेहाज़श शजर व कुल्ला शैइन लैसा फीहे रुह।

तर्जुमा :– सईद बिन अबिल हसन रावी हैं उन्होनें कहा कि मैं हज़रत इब्ने अब्बास रदियल्लाहु तआला अन्हुमा के पास था कि ना गहाँ उनके पास एक आदमी आया और कहा कि ऐ इब्ने अब्बास! मैं ऐसा आदमी हूँ कि मेरी रोज़ी मेरी हाथ की कारीगरी से चलती है और मैं इन तस्वीरों को बनाता हूँ । तो इब्ने अब्बास ने फरमाया कि तुम से वही हदीस बयान करता हूँ जिसको मैंने खुद रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम से सुना है। मैंने हुजूर रसूलल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम को फरमाते सुना है कि जो शख़्स तस्वीर बनायेगा अल्लाह तआला उसको उस वक़्त तक अजाब देगा जब तक कि वह उस तस्वीर में रुह न फूँक दे। और वह उस त[illegible]रि में कभी भी रुह न फूँक सकेगा। तो उस आदमी ने लम्बा साँस खींच[illegible] (खौफ)

से पीला पड गया। फिर इब्ने अब्बास ने फरमाया कि तेरा नास हो। अगर तू उसके बनाने से बाज़ नहीं रह सकता तो उन दरख्तों और बेजान वाली चीजों की तस्वीर बनाया कर।

हज़रत सईद बिन हसन :– इस हदीस के रावी सईद बिन अबिल हसन बसरी ताबेई मुहद्दिस हैं और इल्मे हदीस में हज़रत अबू हुरैरा रदियल्लाहु अन्हुम के शागिर्दे रशीद हैं और इनके शागिर्दों की फेहरिस्त में कतादा और औन जैसे हदीसों के पहाड़ हैं। 109 हिजरी में इन का विसाल हुआ।

शरहे हदीस :– यह बुख़ारी शरीफ़ की हदीस है इस हदीस का मतलब बिल्कुल ही वाज़ेह है कि जानदार चीज़ों की तस्वीर बनाने वाले को खुदावन्द कह्हार व जब्बार यह फरमाँ कर अजाब देगा कि तुम अपनी बनायी हुई तस्वीरों में रुह फूँक कर इन को ज़िन्दा करो। जब तक तुम इन तस्वीरों में रुह न फूँकोगे अज़ाब में गिरफ्तार होगे। और जाहिर है वह इन तस्वीरों में कभी भी रुह न फूँक सकेगा। इसलिए वह उस वक्त तक अज़ाब में मुबतला रहेगा जब तक अल्लाह तआला उसके गुनाह को मुआफ फरमा कर उसको बख़्श न दे।

फवाइद व मसाइल :– 1. इस दौरे पुरफितन की दीनी मुसीबतों में से एक बहुत बड़ी मुसीबत यह भी है कि हर किस्म के सामानों पर जानदार मखलूकात की तस्वीरें उमूमन नज़र पड़ती हैं। एक तरफ़ तो मुस्लिम नौजवानों का यह हाल है कि वह एक्टरों और एक्ट्रेस या लीडरों की तस्वीरों से अपने मकानों को सजा कर हर हर कमरे को बुत खाना बनाये हुए हैं। दूसरी तरफ जाहिल सूफी कहलाने वालों की यह हरकत है कि वह बुजर्गो की कुछ असली और कुछ नकली तस्वीरें अपने घरों में रखे हुए हैं। रोजाना उन पर हार फूल चढाते हैं और बाज इन तस्वीरों के सामने मुराकबा करते हैं। जो सरा सर गुमराही है। वाजेह है कि इन तस्वीरों का रखना सख्त हराम व ना जाइज़ और गुनाहे कबीरा है। लिहाज़ा उल्माए किराम और पाबन्दे शरअ् मशाइख का फर्ज है कि इन जाहिल और बिदअ्ती सूफी बनने वाले बाबाओं को हमेशा झाड़ते फटकारते और लताड़ते रहें। और अवाम को उन बे शरअ लोगो से दूर रहने की तलकीन करते रहें। और जिन घरो में भी तस्वीरें हों उल्माए किराम को चाहिये कि हरगिज़

हरगिज न उन घरों में कयाम करें न उन घरों में खाना खायें। ताकि लोगों को इबरत हो।

2. कैमरा या पेन्सिल या क़लम से किसी जानदार मख़लूक की तस्वीर बनाना या बनवाना या ख़रीदना या बेचना या घर में रखना सख़्त हराम व गुनाह है।

3. ग़ैर जानदार चीज़ों की तस्वीरें बनाने में शरअन कोई हर्ज नहीं है।

4. हज फर्ज़ या तब्लीग़े इस्लाम या हुक़ूकुल इबाद की अदायगी या दूसरे ज़रुरी दीन के मसाइल के लिए सफर के लिए पास पोर्ट पर तस्वीर लगाना ब वजहे ज़रुरत और मजबूरी उसके जाइज़ होने का फतवा दिया जायेगा । बशर्ते कि तस्वीर लगाने वाला उससे राज़ी न हो। और बादिले नाख़्वास्ता मजबूरी की बिना पर तस्वीर बनवाता और लगाता है।

ज़मीन के ख़ज़ाने

हदीस नम्बर – 31

عن عقبة ان النبی ﷺ خرج یوما فصلی علی اهل احد صلواتهٔ علی المیت ثم انصرف علی المنبر فقال انی فرط لکم وانا شهید علیکم وانی والله لا نظر الی حوضی الان وانی اعطیت مفاتیح خزائن الارض وانی والله ما اخاف علیکم ان تشرکوا بعدی ولکنی اخاف ان تنافوا فیها. (بخاری، جلد دوم، ص ۹۷۵)

अन उक़्बता अनिन नबीयो सल्लल्लाहु तआला अ़लैहि वसल्लम ख़रजा यौमन फ़सल्ली अ़ला अहले उहुदिन सला वातुहू अ़लल मय्यिति सुम्मन सफारा अ़लल मिम्बरि फ़क़ाला इन्नी फ़रतु लकुम व इन्ना शहीदु अ़लैकुम व इन्नी वल्लाहि लअ नज़र इला हौज़ी अलआन व इन्नी उअ़तीता मफातीहा ख़ज़ाएनुल अरदि। व इन्नी वल्लाहि मा अख़ाफु अ़लैकुम अन तुश्रकू बाअ़दी वलाकिन्नी अख़ाफु अन तनाफू फ़ीहा।

तर्जुमा :– हज़रत उक़बा से रिवायत है कि हुज़ूर सल्लल्लाहु तआला अलैहि वसल्लम एक दिन घर से बाहर तशरीफ ले गये। और शोहदाए उहुद की कबरों पर इस तरह नमाज़ पढ़ी जैसे मय्यत पर नमाज़ पढ़ी जाती है। फिर पलट कर मिम्बर पर रौनक़ अफरोज़ हुए और इरशाद फरमाया कि मैं तुम्हारा पेश रो और तुम्हारा गवाह हूँ। और मैं खुदा की क़सम अपने हौज़ को इस वक़्त देख रहा हूँ। और बेशक मुझको ज़मीन के ख़ज़ानों की कुन्जियाँ दे दी गयी हैं। और मैं बा खुदा यक़ीन के साथ कहता हूँ कि मुझ को तुम लोगों के बारे में ज़रा भी यह डर नहीं है कि तुम लोग मेरे बाद मुशरिक हो जाओगे। लेकिन मुझे यह ख़ौफ़ है कि लोग दुनिया से रग़बत और एक दूसरे से हसद करोगे।

हज़रत उक़्बा :– उक़्बा बिन आमिर जोहनी सहाबी हैं यह हज़रत अमीर मुआविया रदियल्लाहु तआला अन्हु के दौरे हुकूमत में मिस्र के गवर्नर थे। फिर गवर्नरी से माज़ूल कर दिय गये। और मिस्र ही में रहे। 58 हिजरी के साल इन का विसाल हुआ। सहाबा और ताबेईन की बहुत बडी जमाअत

ने उनसे हदीसों की रिवायत की।

फवाइद व मसाइल :– इस हदीस से मुन्दरजा जैल फवाइद व मसाइल पर रौशनी पड़ती है।

1. हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम शोहदाए उहुद की शहादत के आठ साल बाद उनकी कब्रों की जियारत के लिए तशरीफ ले गये इससे साबित होता है कि खास जियारत के कस्द से कबरों पर जाना खुसूसन शोहदा और सॉलेहीन की कबरो की जियारत करनी हो तो यह हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की सुन्नत है।

जो लोग कब्रों की जियारत के सफर को शिर्क या मअसियत(गुनाह) ठहराते हैं वह सराहतन इस हदीस की मुखालफत करते हैं। और सरासर गुमराही और बद अकीदगी के वबाल में गिरफ्तार हैं अल्लामा सावी रहमतुल्लाह अलैहि ने आयत " बवतगू इलैहिल वसीलता" की तफसीर में तहरीर फरमाया कि :

औलिया अल्लाह के मकाबिर की जियारत करने वाले मुसलमान को इस ख्याल से काफिर कहना कि जियारते कुबूर गैरुलल्लाह की इबादत है। यह बिल्कुल खुली हुई गुमराही है। औलिया अल्लाह की कब्रों की जियारत हरगिज़ हरगिज़ गैरुल्लाह की इबादत नहीं है बल्कि यह अल्लाह के बारे में मुहब्बत रखने की एक निशानी है।

2. इस हदीस के बारे में दो कौल हैं। अल्लामा किरमानी ने फरमाया कि इससे मुराद यह है कि नमाज़े जनाज़ा में जिस मय्यत के लिए दुआ पढ़ी जाती है इसी तरह हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने शोहदाए ओहद के लिए कबरो के पास दुआ माँगी।

लेकिन दूसरे शारेहीने हदीस ने फरमाया कि आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने पूरे आठ बरस के बाद शोहदाए ओहद की कब्रों पर ठीक उसी तरह नमाज़े जनाज़ा अदा फरमायी जिस तरह आप दूसरी अमवात की नमाज़े जनाज़ा पढ़ते थे। इस सूरत में यह हूज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के ख़साइस में से शुमार किया जाएगा। कि आठ बरस के बाद किसी मय्यत की कब्र पर नमाज़े जनाज़ा पढ़ी जाए। दूसरे लोगों के लिए ऐसा करना जाइज़ नहीं।

3. हुजूर सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने मिम्बर पर यह फरमाया कि (इन्नी फरतुन लकुम) कि मैं तुम लोगों के लिए पेश रौ हूँ। फर्त अरबी जबान में उस शख़्स को कहते हैं जो कही जाने वाली जमाअत से पहले ही पहुँच कर उस जमाअत के तमाम जरुरियात का इन्तिजाम मुहय्या किया करता है। हुजूर सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने अपने बारे में फरमाया कि मैं तुम तमाम उम्मतियों के लिए फर्त हूँ। यानी तुम से पहले आलमे आखिरत में पहुँच कर तुम्हारी शफ़ाअत और तुम्हारी मगफिरत का तुम्हारे आने से पहले ही इन्तिज़ाम करुँगा।

4. इस हदीस में (व इन्ना शहीदा अलैकुम) फ़रमाकर हुजूर सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने यह ऐलान फरमा दिया कि मैं तुम तमाम उम्मतियों का कियामत में गवाह हूँ। यानी तुम लोगो के ईमान और आमाल व अफ़आल के मुतअल्लिक मैं खुदावन्द आलम जल्ला जलालुहू के हुजूर गवाही दूँगा।

इस हदीस से यह मसअ्ला साफ हो गया कि हुजूर सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम कयामत तक आने वाले अपने एक एक उम्मती और उनके आमाल व अफ़आल से बा ख़बर है। और सब कुछ उनके इल्म में है। वरना जाहिर है कि बिग़ैर देखे और बिग़ैर जाने किसी बात की गवाही देना शरअन हराम व नाजाइज़ है। इस लिए यह क्योंकर मुमकिन है कि हुजूर सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम बे जाने कियामत में अपनी उम्मत के लिए गवाही देंगे।?

5. इस हदीस में हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने यह भी फरमाया कि खुदा की कसम मैं इस वक़्त अपने हौज़े कौसर को देख रहा हूँ।

इससे साबित होता है कि हुजूर सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की निगाहे नुबुव्वत इतनी मोजिज़ाना थी कि आलमे दुनिया में अपने मिम्बर पर रौनक अफरोज होते हुए आलमे आख़िरत में जन्नत के अन्दर अपने हौजे कौसर को देख लिया। इस हदीस से यह मसअला आफताबे नीम रोज की तरह रौशन हो गया कि जिस तरह हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की जात व सिफात तमाम मख़लूक़ात में बे मिस्ल और बे मिसाल है। लिहाज़ा हुजूर के आजाए शरीफ़ा की मोजिज़ाना ताकतों को कोई अगर अपने आजा की ताकतो पर कयास करे तो यह बहुत बड़ी गुमराही और जिहालत है।

कहाँ हुजूर सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम और कहाँ हम उ़यूब व नकाइस के पुतले ? चे निस्बत खाक रा बा आलमे पाक।

6. इस हदीस में हुजूर सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने इरशाद फरमाया कि "जमीन के खज़ानों की कुन्जियाँ मुझे अ़ता की गयी हैं। मतलब यह है कि अल्लाह तआला ने जमीन के तमाम खज़ानो की कुन्जियाँ मेरे हाथ में दे दी हैं। ख़जाने की कुन्जियों को किसी के हाथ में दे देना इसका क्या मतलब होता है? तमाम दुनिया जानती है कि जब कोई शख़्स यह कहता है कि मैंने तो ताला कुन्जी फलाँ के हाथ में दे दिया है। तो इसका मतलब यही हुआ करता है कि मैंने फलाँ शख्स को अपने ख़जानो में तसर्रुफ का मालिको मुख़्तार बना दिया है। अब काबिले ग़ौर यह बात है कि जमीन के ख़ज़ानो से यहाँ क्या मुराद है? तो बाज़ शारेहीने हदीस ने यह फरमाया कि इससे मुराद आपकी वह फुतूहात हैं जो आपको या ख़ुल्फाए राशिदीन या उनके बाद के उमरा व सलातीन को हासिल हुई। कि सल्तनत रोम व फारस वग़ैरह के तमाम ख़ज़ाने मुसलमानों के हाथ में आये। चुनाँचें हज़रत अबू हुरैरा रदियल्लाहु तआला अन्हु इस हदीस को सुनाकर फरमाया करते थे। कि ज़मीन के ख़ज़ाने जो हुजूर सल्लल्लाहु तआला अलैहि वसल्लम को अता किये गये तुम लोग उसको निकाल रहे हो और हासिल कर रहे हो।

और बाज़ शारेहीने हदीस ने फरमाया कि ख़ज़ानों के अलावा सोना चाँदी हीरे जवाहिरात, लोहा ताँबा पीतल वग़ैरह किस्म किस्म की धातें और तेल पेट्रोल वगैरह के खज़ाने भी मुराद हैं कि सब खज़ाने हुजूर स़ल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की बदौलत हुजूर की उम्मत को मिल गये।

7. फक़ीर राक़िमुल हुरुफ का ख़्याल है कि शारेहीने हदीस ने ज़मीन के ख़ज़ानों के बारे में इस्लामी फुतूहात या ज़मीन की क़िस्म क़िस्म की कानों का जो तज़किरा किया गया है मिसाल के तौर पर है। वरना ख़ज़ाइनुल अर्द सिर्फ़ यही सब और इतनी चीज़े ही नहीं है। बल्कि ख़ज़ाइनुल अर्द में वह चीजे दाख़िल हैं जो ज़मीन से निकलती हैं। इस बिना पर तमाम जमादात नबातात और हैवानात सभी ज़मीन के ख़ज़ाने हैं। ज़ाहिर है कि हर क़िस्म की सब्जियाँ गल्ले फल क़िस्म क़िस्म के ज़ायके और ग़िजाऐं और तरह तरह की दवाऐं यह सब ज़मीन ही में से निकलती

हैं। जानदारों के नुत्फे भी ज़मीन से निकली हुई गिजाओं ही की पैदावार हैं। क्योंकि अगर जानदार ज़मीन से निकली हुई गिजाएं न खाते तो उनकी जिन्दगी कहाँ होती? उनके जिस्म में ख़ून कहाँ से पैदा होता? और बिला ख़ून के नुत्फा और मनी कहाँ से पैदा होती ? गर्ज तमाम जानवर और जानदारों की जिन्दगानी का सारा साजो सामान ज़मीन ही से निकलता है। इस लिहाज़ से "खज़ाइनुल अर्द" में तमाम हैवानात नबातात जमादात दाख़िल हैं। बल्कि ज़मीन व आसमान के दरमियान की कायनात भी ज़मीन के ख़ज़ानों में शमिल हैं क्योंकि बदली, बारिश ओले कौसे कज़ह, हाला रअ्द, बर्क गर्ज तमाम फज़ाई कायनात ज़मीन ही से निकले बुख़ारात की पैदावार हैं।

लिहाज़ा अब इस हदीस का यह मतलब हुआ कि ज़मीन की सारी कायनात और तमाम मख़लूक़ात जो सब ज़मीन के ख़ज़ाने हैं अल्लाह तआला ने मुझे इन सब का मालिक व मुख़्तार बना दिया है। जब हदीस के अन्दर लफ्ज़ " ख़ज़ाइनुल अर्द" में कोई तनकीद या तखसीस मौजूद नहीं है बल्कि जमा की इज़ाफ़ते इस्तेगराक़ का इफ़ादा कर रही है तो फिर इस सूरत में जाहिर है कि यकीनन इस लफ्ज को इस के उमूम ही पर बाकी रखा जायेगा। और इसके आम होने ही की सूरत में यह हदीस मुक़ामे मदह में हुज़ूर स़ल्लल्लाहु तआला अलैहि वसल्लम के शायाने शान रहेगी। अल्लाह तआला ने अपने महबूब को कुल कायनात ज़मीन का मुख़्तार बना दिया है। वल्लाह तआला अअ्लम।

8. हूज़ूर स़ल्लल्लाहु तआला अलैहि वसल्लम ने इस हदीस में यह भी फरमाया कि" ख़ुदा की क़सम मैं यकीन के साथ कहता हूं कि मुझे अपने बाद में तुम्हारे मुशरिक हो जाने का कोई ख़ौफ़ नहीं है। हुज़ूर स़ल्लल्लाहु तआला अलैहि वसल्लम इस हदीस में ग़ैब की खबर दे रहे हैं कि मेरी उम्मत क़ियामत तक मुशरिक नहीं होगी और इस उम्मत में शिर्क नहीं फैलेगा।

अगर बाज़ हदीसों में यह आया है कि उस वक़्त क़ियामत नहीं क़ायम होगी जब तक कि " कबीला दोस" की औरतें बुतो का तवाफ़ न करेंगी। इन दोनों हदीसो में ततबीक़ इस तरह की जायेगी कि हुज़ूर स़ल्लल्लाहु तआला अलैहि वसल्लम के इरशाद का यह मतलब है कि हुज़ूर की सारी उम्मत एक दम मुशरिक हो जायेगी। ऐसा तो कयामत तक नहीं होगा। लेकिन कहीं कहीं कुछ बस्तियों वाले या कुछ अफ़राद शिर्क में

मुबतला हो जायेगें।

ऐसा हो सकता है। चुनॉचे कबीला दौस की औरतों में शिर्क फैल जायेगा। जैसा कि बाज हदीसों में आया है।

9. हदीस का आखिरी टुकड़ा (वला किन्नी अखाफो अलैकुम अन तनाफुसू बिहा) का यह मतलब है कि मुझे यह खौफ और डर है कि मेरी उम्मत वाले दुनिया की मुहब्बत में गिरफ्तार होकर इस तरह दुनिया की रगबत में फँस जायेंगे कि एक दूसरे से बुग्ज व हसद करेंगे। और जंग व जिदाल किश्त व किताल का बाजार गर्म करेंगें। चुनाँचे बाज रिवायतो में भी आया है कि जैसे अगली उम्मते दुनिया की रगबतों में फँस कर हलाक हो गई। उसी तरह मेरी उम्मत भी दुनियावी रगबतों का शिकार होकर हलाकत के गार में गिर पडेगी।

चुनाँचे हुजूर सल्लल्लाहु तआला अलैहि वसल्लम ने सैकड़ों बरस पहले जो गैब की खबर दी थी। आप की यह पेशीन गोई हर्फ ब हर्फ पूरी हुई कि सहाबा व ताबेईन व तबअे ताबेअीन के बाद दुनियावी रगबतों के बाअिस उम्मते रसूल सल्लल्लाहु तआला अलैहि वसल्लम में तहासुद व तबागुज (हसद और कीना रखने) का दौर दौरा इस शिद्दत और तेजी के साथ रुनुमा हो गया कि मुसलमान के दरमियान जंग व जिदाल व किश्त व किताल का बाजार गर्म हो गया। और रोज़ बरोज़ मुसलमानों का मर्ज इस तेजी के साथ बढता चला जा रहा है कि कुछ भी नहीं कहा जा सकता। कि आइन्दा कौमे मुस्लिम का क्या हाल होगा? मुसलमानों के हर तबके में हिर्स व हवस और बुग्ज व हसद की बीमारी इस तरह फैल गई है कि मुस्लिम मुआशरा अकवामे आलम की निगाहों में इस कदर जलील व ख्वार हो चुका है कि गैर मुस्लिमों का बच्चा बच्चा मुसलमानों के करतूत और किरदार से मुतनफ्फिर व बेजार नजर आ रहा है। घर घर में सामानों और जायदादों के झगडों की कशमकश और दुनियावी इक्तिदार की जंग से मुस्लिम मुआशरा जंग व जिदाल की आमाजगाह और किश्त व किताल का मैदाने कारजार बना हुआ है। जिसका नतीजा नजरों के सामने है। मुस्लिम कौम हलाकत व तबाही के ऐसे अमीक गार में गिरती चली जा रही है कि अब नुसरते खुदावन्दी के सिवा इस कौम की सलाह व फलाह की कोई सूरत नजर नहीं आ रही है।

उल्मा की दस्त बोसी

हदीस नम्बर –32

عن زارع وكان فى وفد عبد القيس قال لما قدمنا المدينة فجعلنا نتبادر من رواحلنا فنقبل يد رسول الله صلى الله عليه وسلم ورجله رواه ابو داؤد. (مشكوٰۃ، ص ۴۰۲)

अन जारिइ व काना फी वफ्दे अब्दिल कैस काला लिमा कदिमनल मदीनता फजअलना नतबादिर मिन रवाहिलिना फनकब्बल यद रसूलिल्लाहि सल्लल्लाहु तआला अलैहि वसल्लम व रिजुलिहु रवाहु अबु दाऊद।

तर्जुमा :– हजरत जारेअ् जो कबीला अब्दुल कैस के नुमाइन्दों में शामिल थे। फरमाते हैं कि जब हम मदीना में आये तो हम लोग जल्दी जल्दी अपनी सवारियों से उतर पड़े और हम हुजूर सल्लल्लाहु तआला अलैहि वसल्लम के हाथ और पाँव को बोसा देने लगे।

हजरत जारेअ् :– जारेअ बिन आमिर रदियल्लाहु अन्हु सहाबी हैं और कबीला अब्दुल कैस के जो नुमाइन्दे हुजूर सल्लल्लाहु तआला अलैहि वसल्लम की खिदमत में हाजिर हुए थे। यह उस वफ्द में शामिल थे मुहद्दिसीन ने इन को बसरी मुहद्दिसीन की फेहरिस्त में दाखिल किया है। और इन की हदीसें आम तौर पर बसरी मुहद्दिसीन ही के पास हैं।

फवाइद व मसाइल :– 1. इस हदीस से साबित हुआ कि उल्माए किराम व मशाइख और सुल्हाऐ उम्मत के हाथ पाँव को अकीदत व मुहब्बत से चूमना जाइज है। चुनाँचे हजरत शैख मुहम्मद अब्दुल हक मुहद्दिस देहलवी रहमतुल्लाहि अलैहि ने तहरीर फरमाया कि :–

अगर उल्मा और बादशाह के हाथ को उनके इल्म और दीनदारी नीज दीन की ताजीम की नियत से कोई चूम ले तो इसमें कोई हर्ज नहीं है। हाँ अगर किसी दुनियावी गर्ज के लालच में ऐसा करे तो यह सख्त मकरुह है। (अश्अतुल लम्आत, जिल्द 4, सफा 23)

2. उल्मा का हाथ चूमने पर तअ्ना जनी करने वालों के लिए इस हदीस और शैख मुहक्किक की तसरीह मे यकीनन हिदायत का बहुत बड़ा सामान है। बशर्ते कि उनके दिलों पर इनाद व इन्कार की मुहर न लग चुकी हो।

मगर हकीकत जो यह है कि उल्माए किराम के एजाज व वकार और उन के असर व इकतिदार को हासिदाना निगाहों से देखने वाले कभी भी और कहीं भी और किसी तरह भी अपनी ज़बानों को ऐतराज की गन्दगी से नही बचायेंगे। क्योंकि हसद एक ऐसी आग है कि तमाम समुन्दरों का पानी भी इस आग को नही बुझा सकता। और इस आग को बुझाने की इसके सिवा कोई सूरत ही नही है। कि हासिद की ज़िन्दगी का चराग ही बुझ जाए। हजरत शैख सअदी अलैहिर्रहमा ने बड़े पते की बात लिख दी है।

"ऐ हसद करने वाले! तू मर जा क्योंकि तेरा हसद एक ऐसा रंज है कि तू उसकी मशक्कत से बिगैर मरे हुए छुटकारा नहीं पा सकता।

तीन मुन्ज़ीयात, तीन मुहलिकात

हदीस नम्बर – 33

عن ابی هريرة ان رسول الله ﷺ قال ثلث منجيات و ثلث مهلكات فاما المنجيات فتقوى الله فى السر والعلانية والقول بالحق فى الرضا والسخط والقصد فى الغنى والفقر و اما المهلكات فهوى متبع وشح مطاع واعجاب المرء بنفسه وهى اشد هن.

हज़रत अबू हुरैरा रदियल्लाहु तआला अन्हु रावी हैं कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु तआला अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया कि तीन (ख़सलतें) निजात दिलाने वाली और तीन (ख़सलतें) हलाकत में डालने वाली हैं। निजात दिलाने वाली ख़सलतें यह हैं।?

1. ज़ाहिर व बातिन में अल्लाह से डरना।
2. खुशी व नाराजगी में हक़ बोलना।
3. मालदारी और फ़कीरी में दरमियानी चाल चलना।

और हलाकत में डालने वाली तीन ख़सलते यह हैं।

1. नफ़सानी ख्वाहिशों की पैरवी करना।
2. बख़ीली की इताअत करना।
3. अपनी ज़ात पर घमण्ड करना।

और यह इन तीनों में सबसे ज़्यादा सख़्त है।

फवाइद व मसाइल :– हुज़ूर सल्लल्लाहु तआला अलैहि वसल्लम के इस इरशादे गिरामी का मकसद बिल्कुल वाज़ेह है कि तीन ख़सलतें वह हैं जो दुनिया व आख़िरत के अज़ाबों से निजात दिलाने वाली हैं। और तीन ख़सलते ऐसी हैं जो इन्सान को दुनिया व आख़िरत दोनों जगहों में हलाक कर देने वाली हैं।

निजात दिलाने वाली ख़सलतों की फ़ेहरिस्त यह है।

तक़वा :– ज़ाहिर व बातिन में खुदा से डरना, जाहिर है कि ख़ौफ़े इलाही तमाम नेकियों के करने और तमाम गुनाहों से बचने का सर चश्मा है। जब तन्हाई और मजमअ़ ज़ाहिर व बातिन हर जगह हर हाल में बन्दा

खुदा से डरता रहेगा तो यकीनन वह हर जगह और हर हाल में वह वही काम करेगा जिससे अल्लाह तआला खुश हो। और उन तमाम बातों से बचेगा जिनसे अल्लाह तआला नाराज़ हो। जाहिर है कि जिस शख़्स का यह हाल होगा। वह इन्शा अल्लाह तआला जरुर दोनों जहान के अजाब से निजात पा जायेगा।

हक़ बोलना :— इसी तरह जो शख़्स इस ख़सलत का आदी बन जायेगा कि वह ख़ुशी की हालत में हो या नाराज़गी की हालत में हर जगह हर हाल में वह हक़ बात ही बोलेगा। तो वह गुनाह की बातों से हमेशा महफूज रहेगा। और अपनी इस हक़ गोई पर जिहाद् के सवाब का मुस्तहक होगा। इन्शा अल्लाह तआला वह अज़ाबे दारैन से निजात पायेगा।

दरमियानी चाल :— इसी तरह अमीरी और फक़ीरी दोनों हालतों में जो दरमियानी चाल चलेगा तो ज़ाहिर है कि वह दोनों हालतों में गुनाहों से बचेगा। जिस का समरा दोनों जहान के अज़ाबों से बचना है । वल्लाहु तआला अअ्लम।

हलाक कर देने वाली ख़सलतों की फेहरिस्त यह है।

ख़्वाहिशे नफ़्स की पैरवी :— नफ़्से अम्मारा की पैरवी यही तमाम गुनाहों की जड़ है। कुरआन मजीद ने बहुत ही वाजेह लफ्ज़ों में इरशाद फरमाया कि " नफ़्से अम्मारा का यह काम ही है कि वह इन्सान को हमेशा गुनाहों का हुक्म देता रहता है और गुनाहों पर उभारता रहता है। और ज़ाहिर है कि मअ़सियत और गुनाह हलाकत के सिवा और किस चीज़ का सबब बन सकती है ?

बख़ीली की इताअ़त :— इसी तरह बख़ीली की इताअत भी हर किस्म की नेकियों से रोकने वाली है। और बख़ील को दुनिया वा आख़िरत में कहीं भी आराम व राहत नसीब नहीं हो सकता। दुनिया में भी वह तरह तरह की तकलीफ़े उठाता है और आख़िरत में तो जहन्नम से सिवा उसका कोई ठिकाना ही नहीं है।

अपनी ज़ात पर घमण्ड करना :— इसी तरह अपनी ज़ात पर घमण्ड यानी अपने को सब से अच्छा समझना यह भी अज़ाबे दारैन का सबब है। और यह तो वह हौलनाक गुनाह और ख़ौफनाक मअ़सियत है कि इबलीस इसी के घमण्ड में मारा गया। और ज़लील करके जन्नत से

निकाला गया। और कियामत तक ख़ालिके कायनात और उसकी तमाम मख़लूकात की लानतों मे गिरफ्तार रहेगा।

ग़ीबत ज़िना से बदतर

हदीस नम्बर – 34

عن ابی سعید و جابر قال قال رسول الله ﷺ الغیبة اشد من الزنا قالوا یا رسول الله و کیف الغیبة اشد من الزنا قال ان الرجل لیزنی فیتوب الله علیه و فی روایة فیتوب فیغفر الله له و ان صاحب الغیبة لا یغفر له حتی یغفر ها له صاحبه.(مشکوٰۃ،ص ۴۱۵)

अन अबी सईदिन व जाबिरिन काला काला रसूलल्लाहि सल्लल्लाहु तआला अलैहि वसल्लम अलग़ीबतु अशद्दु मिनज़्ज़िना कालू या रसूलल्लाह व कैफ़ल ग़ीबता अशद्दु मिन ज़िना काला इन्नर रजुला लियज़िनी फ़यतूबल्लाहि अलैहि व फ़ी रिवायतिन फ़यतूबा फ़यग़फ़िरल्लाह लहू व इन साहिबल ग़ीबति ला यग़फ़िरु लहु हत्ता यग़फ़िरहा लहु साहिबहु।

तर्जुमा :– हज़रत अबू सईद खुदरी व हज़रत जाबिर रदियल्लाहु तआला अन्हुमा से मरवी है कि रसुलल्लाहि सल्लल्लाहो तआला अलैहि वसल्लम ने फरमाया कि ग़ीबत ज़िना से ज़्यादा सख़्त गुनाह है। तो सहाबा ने कहा कि या रसूलल्लाह सल्लल्लाहु तआला अलैहि वसल्लम ! ग़ीबत ज़िना से ज़्यादा सख़्त(गुनाह) किस तरह है ?

तो हुज़ूर सल्लल्लाहु तआला अलैहि वसल्लम ने फरमाया कि आदमी ज़िना करता है तो फिर तौबा कर लेता है तो अल्लाह तआला उसकी तौबा कबूल फ़रमा लेता है। और उसको बख़्श देता है। लेकिन ग़ीबत करने वाले को खुदा वन्द तआला उस वक़्त तक नहीं बख़्शेगा जब तक उसको वह शख़्स माफ न करदे जिसने उसकी ग़ीबत की है।

हज़रत जाबिर :– हजरत जाबिर बिन अब्दुल्लाह अन्सारी रदियल्लाहु तआला अन्हु बहुत ही मशहूर सहाबी हैं इनसे बकसरत अहादीस मरवी हैं। उनकी कुन्नियत अबू अब्दुल्लाह है जंगे बदर और उसके बाद अठारह लड़ाईयों में हुज़ूर सल्लल्लाहो तआला अलैहि वसल्लम के साथ शरीके जिहाद रहे। शाम और मिस्र भी तशरीफ ले गये थे। उनके शागिर्दों की

तादाद बहुत ज्यादा है। मदीना मुनव्वरा में 74 हिजरी के साल 94साल की उम्र पाकर विसाल फरमाया। सब से आखिरी सहाबी जिनका मदीना में जाकर विसाल हुआ यही जाबिर बिन अब्दुल्लाह अन्सारी हैं। रदियल्लाहु तआला अन्हु।

फवाइद व मसाइल :– 1. गीबत उन गुनाहों में से एक है जो सबसे ज्यादा कसीरुल वुकूअ है। और बावजूद यह कि इन्तेहाई सख्त गुनाहे कबीरा है। यहाँ तक कि ज़िना से भी बदतर है मगर इस जमाने में बहुत ही कम लोग है जो इस गुनाह से महफूज़ हैं। अवाम तो अवाम जुहाल तो जुहाल,बड़े बड़े उल्मा और मशाइख़ और आबिद व ज़ाहिद लोगों का दामन इस गुनाह से आलूदा नज़र आता है। ग़ज़ब यह है कि लोग इस तरह गीबत के आदी हो गये हैं कि गोया ग़ीबत उनके नजदीक कोई गुनाह ही नहीं है। शायद ही कोई मजलिस ऐसी हो जो इस गुनाह की नहूसत से ख़ाली हो।

ग़ीबत क्या है ? :– किसी को ग़ायबाना बुरा कहना या पीठ पीछे उसका कोई ऐब बयान करना यही (ग़ीबत)है। चुनाँचे मिश्कात शरीफ में एक हदीस है कि खुद हुज़ूरे अकरम सल्लल्लाहु तआला अलैहि वसल्लम ने सहाबा से फरमाया कि :

क्या तुम लोग जानते हो ? कि ग़ीबत क्या चीज़ है ? सहाबा ने कहा कि अल्लाह व उसके रसूल सल्लल्लाहु तआला अलैहि वसल्लम ज्यादा जानने वाले हैं। हुज़ूर सल्लल्लाहु तआला अलैहि वसल्लम ने फरमाया तुम्हारा अपने दीनी भाई की उन बातों को बयान करना जिनको वह नापसन्द समझता है यही ग़ीबत है। सहाबा ने कहा कि यह बताइये कि अगर मेरे दीने भाई में वाकई वह बातें मौजूद हों (तो क्या उन बातों को कहना भी गीबत होगी) तो हुजूर सल्लल्लाहु तआला अलैहि वसल्लम ने फरमाया कि अगर उसके अन्दर वह बातें होंगी जभी तो तुम उसकी गीबत करने वाले कहलाओगे। और अगर उसमें वह बातें न हो जब तो तुम उस पर बोहतान लगाने वाले हो जाओगे (जो एक दूसरा गुनाहे कबीरा है)

और अगर किसी शख्स का कोई ऐब उसको ज़लील करने की नियत से उसके मुँह पर कह दिया जाए तो यह ईज़ा रसानी है। और ग़ीबत और बोहतान की तरह यह ईज़ा रसानी भी गुनाहे कबीरा है।

हाँ अगर इस्लाह की नियत से किसी का कोई ऐब उसके सामने नसीहत करते हुए बयान किया जाए तो यह न गीबत है न बोहतान न ईज़ा रसानी। बल्कि यह अम्र बिल मारुफ और नही अनिल मुनकर(अच्छाई का हुक्म देना बुराई से मना करना) है। यानी नेकियों का हुक्म देना और बुराईयों से रोकना है। और बहुत ही बड़े सवाब का काम है।

किन किन लोगों की ग़ीबत जाइज़ :– हज़रत अल्लामा अबू जकरिया मुहीयुद्दीन बिन शरफ नोवी (मुतवफ्फा 676 हिजरी) ने मुस्लिम शरीफ की शरह में फरमाया कि शरई अगराज़ व मक़ासिद के लिए किसी की गीबत करना जाइज़ और मुबाह है और इसकी छः सूरतें हैं।

अव्वल – मज़लूम का हाकिम के सामने किसी ज़ालिम के ज़ालिमाना उयूब का बयान करना ताकि उसकी दाद रसी हो सके।

दोम – किसी शख़्स को बुराई से रोकने के लिए किसी साहिबे इक़्तिदार के सामने उसकी बुराईयों को ज़िक्र करना ताकि वह साहिबे इक़्तिदार अपने रोअ़ब व दाब से उसको बुराईयों से रोक दे।

सोम – मुफ़्ती के सामने फ़तवा तलब करने के लिए किसी के उयूब को पेश करना।

चहारुम – मुसलमानों को शर व फसाद और नुकसान से बचाने के लिए किसी कि उ़यूब को बयान कर देना। मसलन झूटे रावियों झूटे गवाहों बदमज़हब मुसन्निफों और वाइज़ो के झूट और बदमजहबी को लोगों से बयान कर देना ताकि लोग गुमराही के माहौल से महफूज़ रहें। या शादी के बारे में मशवरा करने वाले से फ़रीके सानी के उ़यूब को बता देना। या खरीदार को नुक़सान से बचाने के लिए सामान या सौदा बेचने वाले के उ़यूब से बाखबर कर देना।

पन्जुम – जो शख़्स अलल ऐलान फ़िस्क़ व फुजूर और बिदआत व मअ़ासियात का मुरतकिब हो। उसके उयूब को बयान करना।

शशुम – किसी शख़्स की शिनाख़्त और पहचान कराने के लिए उसके किसी मशहूर ऐब को उसके नाम के साथ ज़िक्र कर देना जैसा मुहद्दिसीन का तरीक़ा है कि एक ही नाम के चन्द रावियों में इम्तियाज़ और उनकी शिनाख़्त के लिए "चुन्धा" लँगड़ा या अन्धा और लम्बा वगैरह उ़यूब को उनके नामो के साथ ज़िक्र कर देते हैं। जिस का मक़सद हरगिज़

हरगिज न तौहीन व तनकीस है। न ईजा रसानी बल्कि सिर्फ रावियों की शिनाख्त और उनका तआरुफ के लिए ऐसा किया जाता है।

पहलवान कौन है ?

हदीस नम्बर – 35

عن ابی ھریرۃ ان رسول اللہ ﷺ قال لیس الشدید بالصرعۃ

انما الشدید الذی یملک نفسہ عند الغ–ب.،

अन अबी हुरैरता इन्ना रसूलल्लाहि सल्लल्लाहु तआला अलैहि वसल्लम काला लैसस शदीद बिस सिरअते इन्नमश शदीदल लज़ी यमलिको नफसहू इन्दल गदबे।

तर्जुमा :– हजरत अबू हुरैरा रदियल्लाहु तआला अन्हु रावी है कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु तआला अलैहि वसल्लम ने फरमाया कि लोगो को पछाड़ देने वाला पहलवान नही है पहलवान तो वही है जो गुस्से के वक्त अपने नफ्स का मालिक है।

शरहे हदीस :– हदीस का मतलब यह कि आम तौर पर लोग उस शख्स को बहुत ही ताकत वर और पहलवान समझते हैं जो दूसरों को पछाड दे और लोग उसको पछाड सकें। लेकिन अल्लाह व रसूल के नजदीक बहुत ज्यादा ताकतवर और पहलवान वह शख्स है कि अगरचे वह किसी को पछाड नही सकता। लेकिन उसमें कुव्वत हिल्म और ताकते बरदाश्त का इतना अजीम खजाना हो कि वह शिद्दते गैज व गजब की हालत में भी अपने नफ्स पर पूरा पूरा कन्ट्रोल और काबू रखता हो और गुस्सा की हालत मे भी उससे कोई ऐसा फेल सादिर न हो जो अक्ल या शरीअत के खिलाफ हो। बल्कि एैन गजब की हालत में भी उसके गुस्से के जोश पर उसका होश गालिब रहता हो। जिसकी वजह से वह कोई खिलाफे शरअ् हरकत न कर सके। इस लिए लोगो को पछाड़ देने वाला न तो शरीअत की निगाह में कोई काबिले तारीफ कारनामा अन्जाम देने वाला है। न दुनिया व आखिरत मे किसी मदह व सना का मुस्तहक और अजरो सवाब का हकदार है मगर ऐन हालते गैज व गजब में जो शख्स अपने नफ्स पर कन्ट्रोल और काबू रखे और इस तरह अपने नफ्से अम्मारा

हरगिज न तौहीन व तनकीस है। न ईजा रसानी बल्कि सिर्फ रावियों की शिनाख्त और उनका तआरुफ के लिए ऐसा किया जाता है।

पहलवान कौन है ?

हदीस नम्बर – 35

عن ابی ہریرۃ ان رسول اللہ ﷺ قال لیس الشدید بالصرعۃ

انما الشدید الذی یملک نفسہ عند الغ–ب۔

अन अबी हुरैरता इन्ना रसूलल्लाहि सल्लल्लाहु तआला अलैहि वसल्लम काला लैसस शदीद बिस सिरअते इन्नमश शदीदल लज़ी यमलिको नफसहू इन्दल गदबे।

तर्जुमा :– हजरत अबू हुरैरा रदियल्लाहु तआला अन्हु रावी है कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु तआला अलैहि वसल्लम ने फरमाया कि लोगो को पछाड़ देने वाला पहलवान नहीं है पहलवान तो वही है जो गुस्से के वक्त अपने नफ्स का मालिक है।

शरहे हदीस :– हदीस का मतलब यह कि आम तौर पर लोग उस शख्स को बहुत ही ताकत वर और पहलवान समझते हैं जो दूसरों को पछाड दे और लोग उसको पछाड़ सकें। लेकिन अल्लाह व रसूल के नजदीक बहुत ज्यादा ताकतवर और पहलवान वह शख्स है कि अगरचे वह किसी को पछाड नही सकता। लेकिन उसमें कुव्वत हिल्म और ताकते बरदाश्त का इतना अजीम खज़ाना हो कि वह शिद्दते गैज व गजब की हालत में भी अपने नफ्स पर पूरा पूरा कन्ट्रोल और काबू रखता हो और गुस्सा की हालत मे भी उससे कोई ऐसा फेल सादिर न हो जो अक्ल या शरीअत के खिलाफ हो। बल्कि ऐन गजब की हालत में भी उसके गुस्से के जोश पर उसका होश गालिब रहता हो। जिसकी वजह से वह कोई खिलाफे शरअ् हरकत न कर सके। इस लिए लोगो को पछाड़ देने वाला न तो शरीअत की निगाह में कोई काबिले तारीफ कारनामा अन्जाम देने वाला है। न दुनिया व आखिरत मे किसी मदह व सना का मुस्तहक और अजरो सवाब का हकदार है मगर ऐन हालते गैज़ व गजब में जो शख्स अपने नफ्स पर कन्ट्रोल और काबू रखे और इस तरह अपने नफ्से अम्मारा

पर गालिब हो कर उसको दबाए रखे कि गुनाह का सादिर होना तो बडी बात है उसके हाशिया–ए–ख्याल में किसी गुनाह का तसव्वुर भी न गुजरे यह शरीअत की बारगाह में यकीनन दुनिया व आखिरत के अन्दर लायके सद तहसीन व आफरीन है और दोनों जहान में इनआम व इकराम के अजरो सवाब के काबिल है।

जिस्मानी व रुहानी ताक़त :–इस का राज यह है कि किसी को पछाड़ देना या बहुत बोझ उठा लेना या मज़बूत चीजों को तोड डालना यह सब जिस्मानी ताकतों के कारनामें हैं। मगर नफ्स पर कन्ट्रोल और शहवानी व गज़बाती ताकतों पर काबू पा लेना यह रुहानी ताक़त का करिश्मा है। और यह आफ़ताब से ज़्यादा रौशन हकीकत है कि रुहानी ताकत वाला जिस्मानी ताक़त वाले से बहुत ज्यादा बा कमाल और ताक़तवर हुआ करता है। यही वह हकीकत है जिसकी तरफ इशारा करते हुए डाक्टर इकबाल ने कहा है कि –

कोई अन्दाज़ा कर सकता है उसके ज़ोरे बाज़ू का
निगाहे मर्दे मोमिन से बदल जाती हैं तक़दीरें

गुस्सा :– किसी ख़िलाफ़े तबीअत चीज़ या बात पर नफ़्स का जोश मारना, उस कैफियत का नाम गुस्सा है। गुस्सा बज़ाते खुद न अच्छा है न बुरा। बल्कि गुस्सा अपने अच्छे या बुरे असरात व समरात के लिहाज से अच्छा या बुरा हुआ करता है अगर किसी इन्सान में बिल्कुल ही गुस्से का माद्दा ही नहीं है तो वह इन्सान बहुत से इन्सानी कमालात से महरुम रह जायेगा। यहाँ तक वह अपनी जान व माल की हिफ़ाज़त का भी अहल नहीं रहेगा। ज़ाहिर है कि साँप को मार डालना, चोरों और डाकुओं से लड़ना, कुफ़्फ़ार से जिहाद करना, मुजरिमों को सज़ाऐं देना, यह सब गुस्से ही के तो कारनामें हैं। अगर साँप को देख कर आप को गुस्सा न आये बल्कि प्यार आये तो आप साँप को देख कर फौरन ही अपने कलेजे से चिमटालेंगें। और उसके चिकने चिकने मुँह को बोसा लेना शुरु कर देंगें और वह चन्द ही मिनट में आपको अदम आबाद का टिकट देगा और ज़रा देर में आप न हिन्दुस्तान में रहेंगें न पाकिस्तान में बल्कि बिग़ैर वीज़ा और पासपोर्ट के आप कब्रिस्तान में पहुँच जायेंगे।

यह गज़बी कुव्वत और गुस्से की ताक़त ही का तो करशिमा है कि

आप साँप को मार कर अपने सरमायाए हयात की हिफाजत का सामान कर लेते है। आपको अपने दुश्मनों पर गुस्सा आता है इसलिए तो कैसे कैसे खौफनाक हथियार और उनकी गिरफ्तारी कि लिए कैसे कैसे तेज रफ्तार हवाई जहाज और राकेट आपने ईजाद किये हैं। यह सारी जंगी ईजादाते हजरते गुस्सा ही की तुफैल तो हैं। जिससे आज दुनिया में चहल पहल है अगर मौसमों के मज़ालिम जाड़ा गरमी और बदन की उरयानी पर आप को गुस्सा न आता तो यह सैकड़ों किस्म की पोशाकें कहाँ से तैयार होतीं। ?

बहर हाल यह अर्ज करना है कि गुस्सा हर इन्सान में कमाले इन्सानी के लवाज़िम में से है और गुस्सा फी नफसिही और बज़ाते खुद न अच्छा है न बुरा। बल्कि गुस्सा अच्छा या बुरा इस वजह से हुआ करता है कि बे महल गुस्सा आया। और उसके बुरे असरात ज़ाहिर हुए। मसलन एक माँ से बिछड़े हुए भूके प्यासे दूध पीते बच्चे की गिरयाँ व बुका उसके रोने पर आप को गुस्सा आ गया। और आपने उस बच्चे का गला घोंट कर मार डाला तो ज़ाहिर है कि रहमत व शफ्कत के मौकुअे पर आप का गुस्सा यकीनन बे महल और बे मौका है। और इस गुस्से से जो बे रहमी का असर ज़ाहिर हुआ बिला शुबा वह दुनिया व आख़िरत में काबिले मजम्मत लायके अज़ाब और मख़लूकात व ख़ालिके कायनात की नाराज़गी का सबब है। और अगर किसी ख़ौफनाक डाकू को डाका डालते वक्त देख कर आपको गुस्सा आया और आपने मारे गुस्सा के दाँत पीसते हुए बन्दूक चला कर उस डाकू का ख़ात्मा कर दिया। तो चूँकि आप का यह गुस्सा बिल्कुल बर महल और ऐन मौके के मुताबिक है कि आप ने एक ख़तरनाक डाकू को क़त्ल करके हज़ारों बन्दगाने खुदा को सुकून व इत्मीनान की जन्नत दिला दी। लिहाज़ा आप गवर्मेन्ट के इन्आम, पब्लिक के एजाज़ो इकराम, और खुदावन्द जुल जलाल की तरफ से अजरे ला ज़वाल के मुस्तहक़ होंगे।

एक मिसाल :– गोया यूँ समझ लीजिए कि गुस्सा ऐसा ही है जैसे उस्तरा। ज़ाहिर है कि उस्तरे से हजामत बनायी जाए तो यह बहुत ही अच्छी चीज़ है और अगर उस्तरे से नाक काट ली जाए तो यह बहुत ही बुरी चीज़ है। तो उस्तरा बज़ाते खुद अच्छा है न बुरा। बल्कि अगर उससे अच्छा काम लिया जाए तो यह अच्छा है और अगर उससे बुरा काम लिया जाए तो यह बुरा है। बस गुस्सा भी बिल्कुल ऐसा ही है कि अगर

गुस्सा आने पर उस गुस्से से कोई अच्छा काम हुआ तो यह गुस्सा अच्छा है और इस गुस्से से कोई बुरा काम हुआ तो यह गुस्सा बुरा है। इस लिए न यह कहना सही है कि हर गुस्सा अच्छा है। और न यह कहना सही है कि हर गुस्सा बुरा है। बल्कि हक़ीक़त यह है कि गुस्सा अच्छा भी है और बुरा भी।

हुज़ूर सल्लल्लाहु तआला अ़लैहि वसल्लम के इरशादे गिरामी का यही मतलब है कि जो शख़्स गुस्से की हालत में अपने नफ़्स पर कन्ट्रोल रखे कि उसके गुस्से से कोई ख़िलाफ़े शरीअ़त काम न होने पाए। वह मुसलमान कहलाने का मुस्तहक़ है। और ऐसा आदमी दुनिया व आख़िरत में अजरो सवाब का हक़दार है। क्योंकि उसके गुस्से से कोई बुरा काम नहीं हुआ। लिहाज़ा उसका गुस्सा बुरा नहीं।

दराज़िए उम्र का नुस्ख़ा

हदीस नम्बर – 36

عن انس بن مالک قال سمعت رسول الله ﷺ يقول من سره ان يبسط له في رزقه وينسأله في اثره فليصل رحمه.

अन अनस बिन मालिकन काला समेअतु रसूलल्लाहि सल्लल्लाहु तआला अलैहि वसल्लम यकूलु मन सर्रहु अन यबसुतु लहू फि रिजकिही व यनसालहु फी असरि फल यसिल रहमहु।

तर्जुमा :– हजरत अनस बिन मालिक रदियल्लाहु तआला अन्हु से रिवायत है कि उन्होंने कहा कि मैंने रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु तआला अलैहि वसल्लम को यह फरमाते हुए सुना है कि जिस शख्स को यह अच्छा लगे कि उसकी रोजी में फराखी और उसकी उम्र में दराजी हो तो उसको चाहिये कि अपने रिश्तादारों के साथ नेक सुलूक करे।

फवाइद व मसाइल :– 1. इस बात को हर शख्स जानता है कि यह दुनिया आलमे असबाब है यहाँ के हर काम के लिए कोई न कोई सबब जरुर हुआ करता है। इस लिए रिज्क में ज्यादती और उम्र में दराजी के लिए भी चन्द असबाब हैं। उनमें से एक सबब यह भी है कि आदमी अपने रिश्तादारों के साथ सिला रहमी और नेक सुलूक करता रहे। तो इस अमले खैर की बरकत से इन्शाअल्लाह तआला उसकी रोजी में फराखी व फरावानी हो जायेगी। और उसकी उम्र भी बढ जायेगी।

2. इस हदीस की शरह में हजरत मुहम्मद अब्दुल हक मोहददिस देहलवी रहमतुल्लाहि अलैहि ने फरमाया कि :–

जब शारेह अलैहिस्सलाम ने यह खबर दी है तो एक मोमिन के लिए जरुरी है कि उस पर ईमान रखे और बे चूँ चरा इस पर अमल करता रहे। और सिला रहमी क्यों रोजी और उम्र की ज्यादती का सबब है? और किस तरह सबब है? इस का इल्म खुदा के सुपुर्द करदें। और हरगिज हरगिज इस मामले में बहस व मुबाहिसा न करें।

क्यों? इस लिए कि दुनिया आलमे असबाब है और खुदा वन्द करीम मुसब्बेबुल असबाब है।उसने जिस चीज को जिस चीज का सबब बनाना

चाहा उसका सबब बना दिया। क्यों हुआ? कैसे हुआ? किस लिए हुआ बन्दा उसकी हिकमतों से न कमा हक्कुहु वाकिफ है न वाकिफ हो सकता है। सब जानते हैं कि सन्खिया जहरे कातिल है और तिरयाक जहरों का इलाज है। मगर कोई बता तो दे कि सन्खिया क्यो ? और कैसे? और किस लिए जहरे कातिल है? और तिरयाक क्यों ? और कैसे? और किस लिए जहरों का इलाज है ? इन असबाब व मुसब्बेयात के रब्त व इरतिबात को मुसब्बेबुल असबाब के सिवा कोई नहीं जानता ?

एक सवाल व जवाब :– हाँ! यहाँ यह एक सवाल ज़रुर पैदा होता है कि बाबुल क़दर की हदीसों में मज़कूर है कि बच्चा माँ के शिकम में रहता है। इसी वक़्त एक फरिश्ता उस की उम्र रोज़ी और सआदत व शक़ावत खुदा के हुक्म से लिख देता है।

जो मिट नहीं सकता। तो जिस क़दर उम्र व रोज़ी फरिश्ते ने लिख दी है अब उससे ज़्यादा उम्र व रोज़ी कैसे बढ सकती है।

तो इस सवाल का शारेहीने हदीस ने कई तरह से जवाब दिया है उन में से चन्द यह हैं।

1. उन की उम्र व रोजी की मिक़दार तो घट बढ़ नहीं सकती फ़रिश्ता ने ब हुक्मे इलाही जितनी उम्र व रोज़ी लिख दी है उसकी मिक़दार तो उतनी ही रहेगी। मगर अल्लाह तआला उस मिक़दार में इतनी बरकत अता फरमा देगा कि यह बहुत ज़यादा मालूम होने लगेगी।

किसी चीज़ में बरकत और बे बरकती का तजुर्बा तक़रीबन हर इन्सान को होता ही रहता है। यही बारह घंटे का दिन कभी इतना मुख़्तसर मालूम होता है कि कोई काम ही नहीं होता। और चट पट दिन खत्म हो जाता है। और कभी इतना दराज़ हो जाता है कि कई कई दिनों का काम एक ही दिन में हो जाता है। और दिन इतना बड़ा मालूम होता है कि काटे नहीं कटता।

चुनाँचे मुसन्नेफ़ीने इस्लाम मसलन मौलाना जलालुददीन सियूती, इमाम गिज़ाली, आला हज़रत मौलाना अहमद रज़ा खाँ साहब बरेलवी वग़ैरह ऐसे ऐसे बा बरकत लोग गुज़रे हैं कि इन की उमरों में इस क़दर ज़्यादा बरकत हो गई कि उनकी तसनीफ़ात और इनकी उमरों का हिसाब लगाया जाए तो एक एक दिन इतने इतने औराक़ इन बुर्ज़ुगो ने तस्नीफ़ कर

दिये है कि आज कोई बडा ही जल्दी लिखने वाला उनको नकल करना चाहे तो एक हफ्ता मे भी उनको नकल नहीं कर सकता। क्यों ? इसी लिए तो इन बुजुर्गों के औकात मे बरकत हुआ करती थी। तो उन की थोडी सी उमरें अगर चे मिकदार में थोडी थीं मगर बरकत हो जाने से उन की उम्रें बढ गयीं। और लम्बी लम्बी उमरों वाले अगरचे मिकदार में तो उनकी उमरें बहुत लम्बी थीं मगर बरकत नहीं हुई तो इतनी जल्द उनकी उमरें ख़त्म हो गयीं। कि गोया बहुत कम थीं। तो इस हदीस में सिला रहमी करने वाले की रोजी और उम्र में ज्यादती और दराज़ी का यही मत़लब है कि उसकी रोज़ी और उमर में बरकत हो जाती है।

2. बाज़ शारेहीने हदीस ने फरमाया कि रिज्क़ और उम्र में ज़्यादती का यह मत़लब है कि उसकी रोज़ी और उम्र ज़ाया नही होती। बल्कि फ़रिश्ते ने जो रोज़ी और उम्र लिख दी है न उस रोज़ी का एक दाना ज़ाया होता है न उस उम्र का एक लम्हा बरबाद होता है।और दूसरे लोगों की रोज़ी और उम्र का बहुत सा हिस्सा ज़ाया हो जाया करता है।तो जिसकी रोज़ी और उम्र का कुछ हिस्सा बीमारियों और दूसरे अवारिज़ की वजह से ज़ाये और बेकार हो गया। गोया उसकी रोज़ी और उम्र घट गई। और जिसकी रोज़ी और उम्र बिल्कुल ही ज़ाया और बरबाद नहीं हुई गोया उसकी रोज़ी और उम्र बढ गई।

3. बाज़ उ़ल्मा ने फ़रमाया कि रोज़ी और उम्र बढ़ने का यह मतलब है कि अल्लाह तआला उसको नेक औलाद अता फरमाता है जिसकी बदौलत मरने के बाद भी उसका ज़िक्रे जमील दुनिया में बाकी रहता है। या उससे ऐसा कोई नेक काम अन्जाम पा जाता है कि हमेशा उसकी नेक नामी का डंका बजता रहता है। तो गोया उसकी रोज़ी और उम्र बढ़ गई। और जिसके मरते ही उसकी नेक नामी का नाम व निशान बिल्कुल मिट जाता है गोया उसकी रोज़ी और उम्र घट गई।(हवाशी मिशकात, सफ़ा 419)

क़ब्र में सवाब

हदीस नम्बर – 37

عن ابی ہریرۃ قال قال رسول اللہ ﷺ اذا مات الانسان انقطع عنہ عملہ الا من ثلثۃ الا من صدقۃ جاریۃ او علم ینتفع بہ او ولد صالح یدعولہ رواہ مسلم. (مشکوۃ،ص ۳۲)

अ़न अबी हुरैरता क़ाला क़ाला रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु तआ़ला अ़लैहि वसल्लम इज़ा मातल इन्सानु इन्क़तअ़ अ़न्हु अमलुहु इल्ला मिन सलसता इल्ला मिन स़दक़ता जारिअ़ता औ इलम यनतफ़िओ बिहि औ वलदु सालेहुन यदओहु रवाहु मुस्लिम।

तर्जुमा :– ह़ज़रत अबू हुरैरा रद़ियल्लाहु तआ़ला अ़न्हु ने कहा कि रसूलुल्लाह स़ल्लल्लाहु तआ़ला अ़लैहि वसल्लम ने फ़रमाया कि जब इन्सान मर जाता है तो उससे उसके अ़मल का सवाब कट जाता है मगर तीन अमल से(कि उनका सवाब मरने के बाद भी मिलता रहता है) 1. सदक़ाए जारिया का सवाब, 2. उस इल्म का सवाब जिससे लोग फ़ायदा उठायें, 3. नेक औलाद जो उसके लिए दुआ करती है।

शरहे हदीस :– इन्सान जब तक जिन्दा रहता है क़िस्म क़िस्म के आमाले सॉलेहा करता रहता है और उसको उसके नेक आ़माल का सवाब मिलता रहता है। मगर जब इन्सान मर जाता है तो उसके आमाल का सिलसिला ख़त्म हो जाता है। उसके अजरो सवाब का सिलसिला भी कट जाता है। लेकिन तीन आदमी ऐसे ख़ुश नसीब हैं कि मरने के बाद भी उनके आमाल के अजरो सवाब का सिलसिला क़ायम रहता है और बराबर उनकी क़ब्रों में सवाब पहुँचता रहता है।

इनमें से पहला शख़्स तो वह है जो अपनी ज़िन्दगी में कोई स़दक़ाए जारिया करके मरा हो तो अगरचे वह मरकर क़ब्र में सो रहा है और कोई अमल नहीं कर रहा है मगर उसके नामऐ आमाल में उसके सदक़ाए जारिया का सवाब बराबर दर्ज होता रहता है।

सदक़ाए जारिया क्या है ? मसलन मस्जिद बनवाना, मदरसा बनवाना, कुआँ बनवाना, मुसाफिर ख़ाना बनवाना, या कारे ख़ैर के लिए कोई जायदाद

वक्फ कर देना। जब तक यह चीजें बाकी रहेगी बराबर उनके सवाब का सिलसिला कायम रहेगा। और हर लहजा और हर लम्हा इस का सवाब मिलता रहेगा। उसकी बनवायी हुई मस्जिद में जो नमाज पढ़ी जायेंगी और जितनी नमाजें पढ़ी जायेंगी जिस तरह नमाज पढ़ने वालों को सवाब मिलेगा। उसी तरह मस्जिद बनवाने वाले को भी उसका सवाब मिलता रहेगा।

उसके बनवाये हुए मदरसा में जो लोग पढ़ेंगे पढ़ायेंगे उसके बनवाये हुए कुओं से जितने सैराब होंगे जितने लोग वुज़ू करेंगें उन सब का सवाब बनवाने वाले को मिलेगा। इसी तरह जायदादे मौकूफ़ा से जितने कारे खैर होंगे सबका सवाब वाकिफ़ को मिलता रहेगा। और वक़्फ करने वाले की कब्र में अजरो सवाब पहुँचता रहेगा।

दूसरा शख़्स वह है जो कोई ऐसा इल्म छोड़ कर मरा हो जिससे उम्मते रसूल को नफ़ा हासिल होता हो। मसलन कोई मुफ़ीद किताब लिखकर मरा हो। या कुछ शगिर्दो को इल्म पढ़ाकर मर गया हो। या इल्मे दीन की किताबें खरीद कर वक़्फ़ कर गया हो। तो जिस तरह इल्मे दीन पढ़ने पढ़ाने वालों को सवाब मिलेगा। उसी तरह उस शख़्स की कब्र में भी अजरो सवाब मिलता रहेगा। तीसरा शख़्स वह है जिसने अपनी औलाद को तालीम व तरबीयत देकर नेक व सालेह बना दिया हो तो उसके मरने के बाद उसकी नेक औलाद जो उसके लिए ईसाले सवाब और दुआये मग़फिरत करती रहेगी उसका अजरो सवाब उसको हमेशा मिलता रहेगा।

खुदावन्दे आलम हर मुसलमान को दुनिया में इन तीनों आमाले सालेहा की तौफीक अता फरमाये। आमीन।

बेटियाँ

हदीस नम्बर – 38

ان عائشة زوج النبی ﷺ قالت جاء تنی امرأة ومعها ابنتان لها فسئلتنی فلم تجد عندی شیئا غیر تمرة واحدة فاعطیتها ایاها فاخذتها نقسمتها بین ابنتیها ولم تاکل منها شیئا ثم قامت فخرجت وابنتاها فدخل علی النبی ﷺ فحدثته حدیثها فقال النبی ﷺ من ابتلی من البنات بشیء فاحسن الیهن کن له سترا من النار.

अन आयश्ता ज़ोजतन नबी सल्लल्लाहु तआला अलैहि वसल्लम कालत जाअ् तनी इमरातुन व मअ्हा इब्नितान लहा फसअलतनी फलम तजिद इन्दी शैअन गैरा तमरति व वाहिदतिन फओअ्तीतुहा ईअया हा फअखजतहा नकसमतुहा बैना इब्नतैहा व लम ताकुल मिन्हा शैअन सुम्मा कामत फखरजत व इब्नताहा फदख़ल अलन नबीये सल्लल्लाहु तआला अलैहि वसल्लम फहद्दसहू हदीसहा फकालन नबीयो सल्लल्लाहु तआला अलैहि वसल्लम मनिब्तला मिनल बनाते बेशैइन फअहसन इलैहिन्ना कुन लहू सितरन मिनन नार।

तर्जुमा :– हुजूर नबीए करीम सल्लल्लाहु तआला अलैहि वसल्लम की जौजए मुबारका हजरत बीबी आयशा सिद्दीका रदियल्लाहु तआला अन्हा ने फरमाया कि मेरे पास एक औरत अपनी दो लड़कियों के साथ आयी और मुझसे कुछ माँगा तो उसने मेरे पास एक खजूर के सिवा कुछ नहीं पाया। मैंने वही खजूर उसको दे दी। तो उसने उस खजूर को अपनी दोनो लड़कियों के दरमियान तक़सीम कर दिया। और खुद उसमें से कुछ भी नही खाया। फिर वह उठी और अपनी दोनों बेटियों के साथ बाहर चली गयी। फिर जब मेरे पास नबीए करीम सल्लल्लाहु तआला अलैहि वसल्लम तशरीफ लाए तो मैंने हुजूर सल्लल्लाहु तआला अलैहि वसल्लम से उस औरत की बात बयान कर दी। तो हुजूर सल्लल्लाहु तआला अलैहि वसल्लम ने फरमाया जो शख्स बेटियों के साथ मुबलता किया गया और उनके साथ अच्छा सुलूक किया तो यह बेटियाँ उसके लिए जहन्नम से परदा बन जायेंगी।

फवाइद व मसाइल :– इस हदीस की बाज रिवायतों में यूँ भी आया है कि हुजूर सल्लल्लाहु तआला अलैहि वसल्लम ने फरमाया " इन्नल्लाह कद औजबा लहा बिहल जन्नता औ अअतकाहा बिहा मिनन नार" यानी अल्लाह तआला ने उस औरत के लिए जन्नत वाजिब फरमा दी या हुजूर ने फरमाया कि उस औरत को अल्लाह तआला ने जहन्नम से आज़ाद फरमा दिया।

और हज़रत अनस बिन मालिक रदियल्लाहु तआला अन्हु की रिवायत में यूँ आया है कि जो मुसलमान दो बेटियों को उनके बालिग़ होने तक परवरिश करेगा तो हुजूर सल्लल्लाहु तआला अलैहि वसल्लम ने अपनी दो उँगलियों को मिलाकर फरमाया कि मैं और वह दोनों इस तरह क़यामत के दिन साथ रहेंगे।

2. इस हदीस में है कि जब भीक माँगने वाली औरत अपनी दो लड़कियों के साथ हज़रत बीबी आयशा सिददीका रदियल्लाहु तआला अन्हा के पास आयी तो उस वक़्त हज़रत बीबी आयशा सिददीका के पास एक ही खजूर थी। वही एक खजूर उन्होनें सवाल करने वाली औरत को दे दी।

इससे साबित होता है कि सदक़ा के लिए माले कसीर ही जरुरी नहीं है बल्कि कम से कम चीज़ को भी सदक़ा करने में शर्म व हया नही करना चाहिये। अल्लाह तआला नियतों को देखने वाला है वह थोड़े सदक़े पर भी ज़्याद सवाब अता फरमाता है। बशर्ते कि सदक़ा देने वाले में इख़्लास हो।

3. इस हदीस में बेटी वाले बाप को हुजूर ने" मनिब तुलिया मिनल बनाते बेशैइन" फरमाया। यानी ख़ुदा ने उसको बेटियाँ देकर इम्तिहान और आज़माइश में डाला। सवाल यह है कि ख़ुदा ने बेटियों को बाप के लिए ज़रीआ इब्तिला व आज़माइश क्यों फरमाया? तो इस की वजह है कि लोग चूँकि उमूमन बेटियों से रगबत नहीं रखते बल्कि बुग्ज़ व नफ़रत रखते हैं। चुनाँचे कुरआन करीम में इन्सानी आदत का बयान फरमाते हुए हक तआला ने इरशाद फरमाया। :–

" व इज़ा बुशेरा अहदो हुम बिलउनसा ज़ल्ला वजहाहु मुस्वददा व होवा कजुलमुन"। यानी जब किसी को बेटी के मिलने की बशारत दी जाती है तो उसका मुँह काला पड़ जाता है और वह घुटने लगता है गर्ज़ बेटियाँ

आम तौर पर ना पसन्दीदा हुआ करती हैं। और जब किसी को कोई ऐसी चीज मिले जो उसको पसन्दीदा न हो तो दर हकीकत वह चीज उसके लिए जरीआ इब्तिला और आजमाइश ही का सामान होगी। इसी लिए हुजूर सल्लल्लाहु तआला अलैहि वसल्लम ने बेटियों को बाप के लिए जरीए इब्तला और आजमाइश और इम्तिहान का सामान बताया।

4. इस हदीस में उन माँओं और बापों के लिए बहुत बड़ी बशारते उजमा और अजीमुश्शान खुशख़बरी है जो चन्द बेटियों के माँ बाप हैं और मुहब्बत व शफ़कत के साथ उन बेटियों को खुदा की नेअ्मत समझ कर पालते और परवरिश करते हैं। और बालिग हो जाने पर पूरे एजाज़ के साथ उनकी शादी ब्याह करके उनको अपने घर से रुख़सत करते हैं। इन्शा अल्लाह तआला उन माँओं और बापों को हुजूर सल्लल्लाहु तआला अलैहि वसल्लम कयामत के दिन अपने साथ रखेंगें और यह ईमान है कि कयामत के दिन जिस खुश नसीब को हुजूर सल्लल्लाहु तआला अलैहि वसल्लम का दामने रहमत मिल गया उसका बेड़ा पार हो गया। यकीनन अल्लाह तआला उसको जहन्नम से आज़ाद फरमा देगा। और जरुर उसको जन्नत अता फरमा देगा।

हुजूर अकदस सल्लल्लाहु तआला अलैहि वसल्लम की इस हदीस को पेशे नजर रखकर इस पर ईमान के साथ पूरे पूरे तौर पर अमल करना हर मुसलमान के लिए सआदते दारैन की गारण्टी है। अल्लाह तआला हर बेटी वाले माँ बाप को इस आजमाइश व इम्तिहान में कामयाब फरमायें और अपनी इमदाद व नुसरत से ऐसे वालिदैन की ख़ास तौर से मदद फरमाये। आमीन।

ख़ैर ख़्वाही

हदीस नम्बर – 39

عن زیاد بن علاقة قال سمعت جرید بن عبد الله یوم مات المغیرة بن شعبة قام فحمد الله و اثنی علیه و قال علیکم باتقاء الله وحده لا شریک له و الوقار و السکینة حتی یاتیکم امیر فانما یاتیکم الان ثم قال استعفوا لامیر کم فانه کان یحب العفو ثم قال اما بعد فانی اتیت النبی ﷺ قلت ابایعک علی الاسلام فشرط علی والنصح لکل مسلم فبایعته علی هذا ورب هذا المسجد انی لنا صح لکم ثم استغفر و نزل. (بخاری جلد اول، ص ۱۴)

अन ज़ियाद बिन इलाक़ा काला समेअ़तु जरीद बिन अ़ब्दुल्लाह यौमु मात मुग़ीरत बिन शोअ़बतिन कामा फहम्दो लिल्लाह वसनअ़ै अलैहि व काला अलैकुम बिइत्तक़ाइल्लाहि वह़दहू ला शरीका लहू वल वक़ार वस्सकीनता हत्ता यातिकुम अमीरुन फइन्नमा यातिकुमुल आना सुम्मा काला अस्तअफ़ू लिअमीरिकुम फइन्नहु काना युहिब्बुल अफ़वा सुम्मा काला अम्मा बअदु फइन्नी अतैयतुन नबीया सल्लल्लाहु तआ़ला अलैहि वसल्लम कुलत अबाईओका अलल इस्लामे फशर्ता अ़ला वन्नस़हु लिकुल्ले मुस्लिम फबाईअतुहु अला हाज़ा व रब्बु हाजल मस्जिदु इन्नी लना सिहु लकुम सुम्मा अस्तगफिर व नजला।

तर्जुमा :– ज्याद बिन इलाका से रिवायत है उन्होंने कहा कि मैंने हज़रत जुरैर बिन अ़ब्दुल्लाह से सुना। जिस दिन मुगीरा बिन शोबा (हाकिमे कूफ़ा) का विसाल हुआ तो वह ख़ुत्बे के लिए ख़ड़े हुए और अल्लाह की हम्दो सना की और फरमाया कि तुम लोगों पर लाज़िम है कि अल्लाह से डरो। जो वह़दहू ला शरीका लहू है। वकार व सुकून को लाज़िम पकड़ो यहाँ तक कि तुम्हारा दूसरा ह़ाकिम आ जाए। और वह अब आता ही है । फिर कहा कि अपने साबिक़ ह़ाकिम के लिए मगफिरत की दुआ करो इस लिए कि वह भी अफ़वो दर गुजर को पसन्द करते थे। फिर फरमाया कि जब मैं हुज़ूर सल्लल्लाहु तआ़ला अलैहि वसल्लम की ख़िदमत में (बैअ़त के लिए हाज़िर हुआ) और मैंने अर्ज़ किया कि मैं इस्लाम पर बैअ़त करता हूँ

तो आप सल्लल्लाहु तआला अलैहि वसल्लम ने इसलाम के साथ यह शर्त लगाकर हर मुसलमान की ख़ैर ख़्वाही करना, मुझे बैअ़त फरमाया। तो मैंने इस शर्त पर आप से बैअ़त कर ली। मुझे इस मस्जिद के रब की कसम है (ऐ कूफ़ा वालो) मैं तुम्हारा ख़ैर ख़्वाह हूँ। फिर आपने मग़फिरत की दुआ माँगी। और मिम्बर से उतर गये।

शरहे हदीस :– हज़रत जुरीद बिन अब्दुल्लाह बजली रदियल्लाहु तआला अन्हु ने कूफ़ा के गवर्नर हज़रत मुगीरह बिन शोअ़बा रदियल्लाहु तआला अन्हु की वफ़ात के दिन कूफ़ा की जामेअ़ मस्जिद में ख़ुत्बा पढते हुए इस हदीस को बयान फरमाया। चूँकि गवर्नर के इन्तिक़ाल के बाद अवाम में इन्तिशार फैल जाने का ख़तरा होता है। ख़ुसूसन कूफ़ा जहाँ के लोग इन्तिशार और हैजान फैलाने के आदी थे। इस ख़तरे का बहुत ज़्यादा इमकान था। इसलिए हज़रत जुरीद बिन अब्दुल्लाह बजली ने अवाम को पुर सुकून रहने की तलक़ीन फरमाने के लिए यह ख़ुत्बा दिया और इस ख़ुत्बे में ख़ुदा की हम्दो सना करने के बाद आपने यह इरशाद फरमाया कि ऐ मुसलमानो! तुम लोग अपने हर अमल और अपनी हर हरकत व सुकून में हमेशा ख़ौफ़े इलाही को अपने पेशे नजर रखो। और ख़बरदार ख़बरदार कोई ऐसी हरकत न करो जिससे अल्लाह तआला तुम पर नाराज़ हो जाए। फिर फरमाया कि तुम लोग निहायत ही सुकून और इतमीनान के साथ रहो। बहुत जल्द मरकज़ी हुकूमत की तरफ से नया गवर्नर आने वाला है। जो आकर निज़ामे हुकूमत संभाल लेगा।

फिर आप ने अवाम से यह फरमाइश की कि तुम लोग अपने साबिक गवर्नर के लिए दुआयें माँगो कि अल्लाह तआला उनको अपने मग़फिरत के इन्आम व इकराम से नवाज़े। क्योंकि तुम्हारा साबिक गवर्नर बहुत ज़्यादा दर गुज़र करने वाला और ख़ताकारों की ख़ता माफ करने वाला था।

फिर उसके बाद आपने यह हदीस सुनाई कि मैं जब बारगाहे रिसालत में इसलाम कुबूल करने के लिए हाज़िर हुआ और मैंने हुज़ूर सल्लल्लाहु तआला अलैहि वसल्लम की बारगाह में यह दरख़्वास्त पेश की कि या रसूलल्लाह ! मैं इस्लाम पर क़ायम रहने की बैअ़त करता हूँ। तो हुज़ूर ने इस शर्त पर मुझे बैअ़त फ़रमाया कि इसलाम पर क़ायम रहने के साथ साथ तुम उम्र भर हर मुसलमान की ख़ैर ख़्वाही करते रहना। चुनाँचे

मैंने इस शर्त को क़बूल करते हुए बैअ़त की। लिहाज़ा मैं इस मस्जिद के रब की कसम खाकर कहता हूँ कि मैं अपनी बैअत के मुताबिक आज तक हर मुसलमान की ख़ैर ख़्वाही करता रहा हूँ। और तुम्हारा भी खैर ख़्वाह हूँ और तुम्हारी खैर ख़्वाही का जज़्बा रखते हुए मैं तुम लोगो को पुर सुकून रहने की तलकीन करता हूँ। इसके बाद आपने मग़फिरत की दुआ फरमायी और आप मिम्बर से उतर गये।

हज़रत मुग़ीरह बिन शोअ़्बा :– बहुत ही शानदार और ज़ीरक व होशयार सहाबी हैं। मुल्की इन्तिज़ाम और नज़्म व नस्क़ कायम करने का उनको बड़ा मल्का और बेहतरीन महारत थी। इन्तिहाई ताकतवर आली दिमाग़ और बहादुर थे। उनका तअ़ल्लुक क़बीला सक़ीफ़ से था इस लिए सक़फ़ी कहलाते थे। जंग ख़न्दक के साल 5 हिजरी में इस्लाम क़बूल किया और हिजरत करके मदीना मुनव्वरा चले गये।

हज़रत उ़मर रदियल्लाहु तआ़ला अ़न्हु ने अपने दौरे ख़िलाफ़त में इनको बसरा का गवर्नर मुकर्रर किया था। और हज़रत अमीर मुआ़विया रदियल्लाहु तआ़ला अ़न्हु ने अपने दौरे हुकूमत में इनको कूफ़ा का गवर्नर बना दिया थ। चुनाँचे कूफ़ा गवर्नरी के दौरान 50 हिजरी में मर्ज़ ताऊन में मुब्तला होकर सत्तर साल की उ़म्र में विसाल फ़रमाया। और उसके बाद हज़रत ज़ुरीद बिन अ़ब्दुल्लाह बजली ही को मरकज़ी हुकूमत ने कूफ़ा का गवर्नर बना दिया।

फवाइद व मसाइल :– इस हदीस को इमाम बुख़ारी ने किताबुश्शुरुत में भी ज़िक्र किया है और इमाम मुस्लिम ने किताबुल ईमान में और इमाम निसाई ने बैअत के बाब में तहरीर किया है।

2. "नसीहत" अ़रबी में बहुत की जामेअ़ लफ़्ज़ है। उर्दू में इसका तर्जुमा ख़ैर ख़्वाही करना, दूसरों का भला चाहना है।

दूसरों का भला चाहना, हर मुसलमान के साथ ख़ैर ख़्वाही करना इसके मफ़हूम में बड़ी वुसअ़त है और ह़कीक़त तो यह है कि हर मुसमलान की खैर ख़्वाही यह एक ऐसा अमले ख़ैर है कि अगर हर मुसलमान इस तालीमे नुबुव्वत को हिरज़े जान बनाकर इस पर अमल शुरु कर दे तो एक दम मुसलमानों के बिगड़े हुए मुआशरे की काया पलट जाए। और मुस्लिम मुआ़शरा आराम व राह़त और सुकून व इत्मीनान का ऐसा गहवारा बन जाए कि दुनिया ही में

जन्नत के सुकून व इतमीनान का जल्वा नजर आने लगेगा।

जाहिर है कि जब हर मुसलमान अपनी जिन्दगी का यह नस्बुल ऐन बना लेगा कि मैं हर मुसलमान की खैर ख़्वाही करूँगा तो हर किस्म के मकरो फरेब नुकसान व जरर, जुल्म व सितम बुग्ज व हसद,खलाफ व शिक़ाक़, इनादो निफाक़ बद ख़्वाही व ईजा रसानी तमाम कबीह खसलतों का मुसलामानों के घरों से जनाजा निकल जायेगा। और हर मुसलमान हर एक मुसलमान के लिए सलाह़ व फलाह और नफ़ा रसानी व भलाई के सिवा न कुछ कर सकेगा न कुछ सोच सकेगा। न कोई मुसलमान किसी मुसलमान के साथ ख़यानत करेगा। न चुग़ली गीबत और इफतरा परदाज़ी का मुरतकिब होगा। न जुल्म के किसी पहलू को भी अपने गोशए ख्याल में आने देगा। न किसी के बनते हुए काम में रोड़ा अटकाएगा। बल्कि वह सबका भला चाहेगा। और सबके साथ भलाई करेगा। जिसका कुदरती नतीजा यह होगा कि लोग भी उसकी खैर ख़्वाही और भलाई करेंगे। और वह भी हर नुकसान से महफूज रहेगा और हमेशा उसका भला होता रहेगा।

3. अल्लामा किरमानी ने "अन्नुसह़ो लिकुल्ले मुस्लिम" की शरह में तहरीर फरमाया कि " व अम्मान नसीह़तो लेआम मते फ इरशादोहुम इला मसालेहिम व कफ्फुल अजा अन्हुम" यानी आम मुसलमानो के साथ खैर ख़्वाही का यह मतलब है कि हर मुसलमान को उसकी मसलेहतों और भलाईयों की तरफ राहनुमाई करते रहना और हर मुसलमान से हर किस्म की तकालीफ दूर करते रहना जिसका खुलासा यह है कि हर मुसलमान की हर किस्म की नफ़ा रसानी करना और हर मुसलमान को हर किस्म की ज़रर रसानी से बचाना। वल्लाहु तआला अअ्लम ।

बोल में हल्के, तोल में भारी

हदीस नम्बर – 40

عن ابی هريرة رضی الله تعالیٰ عنه قال قال النبی ﷺ

كلمتان حبيتان الی الرحمن خفيفتان علی اللسان ثقيلتان فی الميزان

سبحان الله وبحمده سبحان الله العظيم.

अन अबी हुरैरता रदियल्लाहु तआला अन्हु काला काला रसुलल्लहि सल्लल्लाहु तआला अलैहि वसल्लम कलिमताने हबीबताने इलर्रहमान खफ़ीफताने अलल लिसान सक़ीलतान फ़िल मीज़ान सुब्हानल्लाहि व बि हम्देहि सुब्हानल्लाहिल अज़ीम।

तर्जुमा :– हज़रत अबू हुरैरा रदियल्लाहु तआला अन्हु रावी हैं कि उन्होंने कहा कि नबी सल्लल्लाहु तआला अलैहि वसल्लम ने फरमाया है कि दो कल्मे रहमान को बहुत ज़्यादा महबूब हैं यह ज़बान पर बहुत ही हल्के और मीज़ान पर(अमल) में बहुत ही भारी हैं। वह दो कल्मे यह हैं " सुब्हानल्लाहि व बे हम्देहि सुब्हानल्लाहिल अज़ीम"।

फवाइद व मसाइल :– 1. यह सही बुख़ारी शरीफ की सबसे आख़िरी हदीस है इमाम बुख़ारी अलैहिर्रहमा ने अपनी किताब को " इन्नमल अअ्मालो बिन्नियात" की हदीस से शुरु फरमाया। और इस हदीस पर अपनी किताब को ख़त्म फरमाया। इस लिए कि हदीसे नियत का तअल्लुक दुनिया से है। क्योंकि दुनिया आमाल का घर है। और आमाल का सवाब नियत पर मौकूफ है। और इस हदीस का तअल्लुक आखिरत से है। क्योंकि मीज़ाने अमल की तोल आख़िरत में होगी। इस में एक लतीफ़ इशारा हो गया कि मीज़ाने अमल में उसी के आमाल का वज़न भारी होगा जिसकी नियत अच्छी होगी।

2. इन दो जुमलों में खुदा की तस्बीह व हम्द का ज़िक्र है अल्लामा किरमानी ने बयान फरमाया है कि अल्लाह तआला की सिफात दो किस्म की हैं एक सिफाते वजूबिया जैसे हयात, इल्मे कुदरत,कलाम सिमाअ़, बस्र, वगैरह। इनको सिफ़ातुल इकरात कहते हैं। दूसरी सिफ़ाते अदमिया

जैसे ला शरीका लहू, ला मिस्ला लहू, ला फना लहू, वगैरह। इन को सिफातुल जलाल कहते हैं। इसी लिए अल्लाह तआला ने कुरआन मजीद में अपनी जाते अकदस को जुल जलाले वल इकराम फरमाया है।

तो इन कलिमात में तस्बीह से खुदा की सिफ़ातुल जलाल की तरफ इशारा है और हम्द से सिफातुल इकराम की तरफ इशारा है। और इसका हासिल मतलब यह है कि मैं अल्लाह तआला को तमाम उयूब व नक़ाइस से पाक जानता और मानता हूँ। और उसकी तमाम सिफ़ाते कमालिया के साथ उसकी ह़म्द व सना करता हूँ।

3. इस हदीस में कलिमतान से मुराद कलामान है। क्योंकि लुगत में कलाम को भी कल्मा कहते हैं। लिहाज़ा इस हदीस का मतलब है कि यह दो कलाम यानी दो जुमले ऐसे हैं जो अल्लाह तआला को बहुत ज़्यादा महबूब और पसन्द हैं। ज़बान पर बहुत हल्के फुल्के हैं। क्योंकि छोटे छोटे जुमले हैं मगर क़ियामत के दिन मीज़ाने अमल में जब आमाल तोले जायेंगे तो इन जुमलों के अजरो सवाब का वज़न बहुत भारी होगा। यानी अमल बहुत थोड़ा सा है मगर उसका अजरो सवाब बहुत ज़्यादा है।

4. बुख़ारी शरीफ़ की किताबुद दाअ़वात में है कि इन दोनों जुमलों में से एक जुमले के सवाब का ज़िक्र फरमाते हुए हुज़ूरे अकरम स़ल्लल्लाहु तआला अ़लैहि वसल्लम ने इरशाद फरमाया कि " मन काला सुब्हानल्लाहि व बे हम्देहि फी यौमे मिआता मर्रतिन हुत्तत ख़तायाहु व इन कानत मिस्ला ज़बादिल बहरे" यानी जो शख़्स दिन भर में एक सौ मर्तबा(सुब्हानल्लाहि व बे हम्देहि) पढ़ ले तो उसके तमाम गुनाहे सगीरा मुआफ़ कर दिये जायेंगे। अगर चे उसके गुनाह समुन्द्र के झाग के बराबर हों।

5. किसी अ़मल पर अजरो सवाब अता फरमाना यह खुदा करीम के फ़ज़्लो करम पर मौकूफ़ है। वह मालिके बे नियाज चाहता है तो थोड़े से अ़मल पर अजरे अज़ीम अता फरमा देता है और उसके फ़ज़्लो करम की कोई ह़द नहीं। कुरआन मजीद में इसका इरशाद है " ज़ालेका फदलुल लाहि युअतिहे मयं यशाओ वल्लाहु जुल फदलिल अज़ीम" यानी अल्लाह तआला अपना फ़ज़्ल जिसको चाहता है अता फरमाता है।

लिहाज़ा अगर किसी छोटे अ़मल पर अपने फ़ज़्ले अज़ीम से वह सवाबे अज़ीम अता फरमाये तो यह उसके फ़ज़्लो करम का जलवा है।

मुख़्तस़र तज़किरए मुहद्दिसीन

(सिहाहे सित्ता के मुसन्नेफ़ीन और दूसरे चन्द मुहद्दिसीन का तआ़रुफ़)

हज़रत इमाम बुख़ारी :– आप की कुन्नियत अबू अ़ब्दुल्लाह और नाम व नसब मुहम्मद बिन इस्माईल बिन इब्राहीम बिन मुग़ीरा बिन बरोज़बा बुखारी जोअ़फ़ी है। आप के परदादा मुग़ीरा हाकिमे बुख़ारा यमान जोअ़फ़ी के हाथ पर मुशर्रफ़ बा इस्लाम हुए और चूँकि उस ज़माने का दस्तूर था कि जो शख़्स किसी के हाथ पर मुसलमान होता था उसकी उसी कबीला की तरफ़ निस्बत किया करते थे। इस लिए इमाम बुख़ारी को भी लोग जोअ़फ़ी कहने लगे।

आप 13 शव्वाल 194 हिजरी को जुमा के दिन बाद नमाज़े जुमा पैदा हुए और बासठ बरस की उम्र में शबे शम्बा ईदुल फित्र की रात में इशा की नमाज के वक़्त 256 हिजरी में वफ़ात पायी। और ख़रतंग नामी गाँव में जो समर कन्द से दस मील के फ़ासिले पर है मदफ़ून हुए।

आप बचपन ही में ना बीना हो गये थे। मगर आपकी वालिदा की दुआओं से अल्लाह तआला ने फिर आपको बसारत अता फ़रमा दी। बचपन ही से हदीसों को याद करने का शौक़ था। और हाफ़िज़ा बेहद कवी था। दस बरस की उम्र से हदीसें याद करने लगे यहाँ तक कि सोलह बरस की उम्र में हज़रत अब्दुल्लाह बिन मुबारक(शागिर्द अबू हनीफ़ा) की तमाम किताबों को याद कर डाला। फिर अपनी वालिदा और अपने भाई अहमद बिन इस्माईल के हमराह हज के लिए गये। हज के बाद वालिदा और भाई तो वतन वापस चले आये मगर आप हिजाज़ में हदीस पढने के लिए ठहर गये। फिर तमाम इल्मी दर्सगाहों का सफर करके एह हज़ार अस्सी शुयूख की ख़िदमतों में हाज़िरी देकर छः लाख हदीसों को ज़बानी याद कर लिया। आपने इल्मे हदीस की तलब में मक्का मुकर्रमा मदीना मुनव्वरा कूफ़ा बसरा बग़दाद मिस्र वासित, अलजज़ाइर, शाम बल्ख़,बुखारा नीशा पुर वग़ैरह इल्मी मरकज़ों का बार बार सफर फरमाया।

आपने बहुत सी किताबे तस्नीफ़ फरमायी हैं मगर आप की सही

बुख़ारी शरीफ बहुत की शानदार और बुलन्द पाया ह़दीस की किताब है। जो सिहाहे सित्ता में सब से बड़ी और अजीमुश्शान किताब है। जिसमें छः लाख हदीसों में से इन्तिख़ाब करके सोलह बरस की मेहनते शाक्का उठाकर आपने तस्नीफ़ फ़रमाया। इस किताब में कुल ह़दीसें अगर मुकर्ररात व मुअल्लेक़ात व मुताबेआत को शामिल करके शुमार की जायें तो नौ हजार बयासी हदीसें हैं। और अगर मुकर्ररात को हज़्फ करके गिनती की जाए तो सही बुख़ारी शरीफ़ की कुल ह़दीसों की तादाद सिर्फ़ दो हजार सात सौ इकसठ रह जाती है। आपके शागिर्दों की तादाद नव्वे हजार है। जिन्होनें सही बुखारी शरीफ को बिला वास्ता खुद इमाम बुख़ारी से पढ़ा। और आपके सब से आख़िरी शागिर्द मुहम्मद बिन युसूफ फरबरी हैं। जिन्होंने 320 हिजरी में वफ़ात पायी।

अमीरे बुख़ारा ख़ालिद बिन अह़मद ज़हली ने इस बिना पर कि आप उसके लड़के को उसके दरबार में हदीस पढ़ाने के लिए तशरीफ नहीं ले गये आप को बुख़ारा से शहर बदर कर दिया। आप बुख़ारा से नीशापुर चले गये। मगर वहाँ के मुतकब्बिर हाकिम से भी आपकी नहीं बनी तो मजबूरन आप एक छोटे से गाँव ख़रतन्ग में बैठ कर ह़दीसों का दर्स देने लगे। यहाँ तक कि उसी गाँव में आप की वफ़ात हो गई। दफ़न के बाद आपकी क़ब्र की मिट्टी से मुश्क की खुश्बू आने लगी। चुनाँचे मुद्दतों तक यह सिलसिला जारी रहा कि लोग दूर दूर से आकर आप की क़ब्र की मिट्टी को खुश्बू की वजह से उठा ले जाते थे।

इमाम बुख़ारी निहायत ज़ाहिद परहेज़गार और साहिबे तक़्वा व इबादत गुजार थे। उम्र भर किसी की ग़ीबत नहीं की। उमरा व सलातीन के दरबारों में कभी नहीं गये। दर्स व तदरीस के बाद फाजिल वक़्त में कसरते नवाफिल और तिलावते कुरआन मजीद का शग़ल रखते थे।

इमाम मुस्लिम :– आप की कुन्नियत अबुल हुसैन और नाम व नसब मुस्लिम बिन हिजाज बिन मुस्लिम है। और लक़ब असाकिरुद्दीन है। बनी कुशैर क़बीला की तरफ़ निस्बत होने की वजह से कुशैरी कहलाते हैं। नीशापुर के रहने वाले हैं जो ख़ुरासान का बहुत ही ख़ूबसूरत और मरदुम खेज़ शहर है। 202 हिजरी में पैदा हुए और बाज़ ने आप का सने विलादत 204 हिजरी और बाज़ ने 206 हिजरी तहरीर किया है। मगर उनकी वफ़ात

पर तमाम मुअर्रेख़ीन का इत्तेफाक़ है। कि 24 रजब 261 हिजरी में आप का विसाल हुआ।

आप का शुमार हदीस के जलीलुल क़द्र इमामों में है आपने हदीस की तलब में इराक़ हिजाज़ शाम व मिस्र वग़ैरह के बहुत से इल्मी मराकिज़ का सफ़र किया है।

आपके उस्तादों में इमाम अहमद बिन हम्बल, याहया नेशापुरी, क़ुतैबा बिन सईद, इसहाक बिन राहुविया, अब्दुल्लाह बिन मुस्लिमा क़अ्नबी वग़ैरह सैकड़ो अइम्माऐ हदीस हैं और इमाम तिरमिज़ी व अबू बक्र बिन ख़ुज़ैमा जैसे हदीस के पहाड़ो ने आपकी शागिर्दी इख़तियार की। तीन लाख हदीसें आपको ज़बानी याद थी।

आपकी बहुत सी तसानीफ़ में से आपकी किताब " सही मुस्लिम शरीफ़" जो सिहाह सित्ता में दाख़िल है इसमें फने हदीस के अजायबात और ख़ास कर लताईफ़े असनाद और मुतव्वन हदीस के हुस्ने सियाक की ऐसी बे मिसाल मिसालें हैं जो बिला शुबा नवादिरात का दरजा रखती हैं।

आपकी वफ़ात का सबब बड़ा ही अजीब व ग़रीब है आप एक हदीस की तलाश में किताबों की वर्क़ गरदानी कर रहे थे। ख़जूरों का एक टोकरा आपके पास रखा हुआ था। मुताला की हालत में एक एक खजूर उसमे से खाते रहे और मुताला में इस क़दर मुनहमिक हो गये कि हदीस मिलने तक तमाम खजूरे तनावुल फरमा गये। और आपको कुछ ख़बर नहीं हुई इसके बाद आपको दर्दे शिकम हुआ और यही आपकी वफ़ात का सबब बना।

इमाम तिरमिज़ी :– आपकी कुन्नियत अबू ईसा और नाम व नसब मुहम्मद बिन ईसा बिन सूरह बिन मूसा बिन ज़हाक़ सलमा बूग़ी है। बोग़ एक गाँव का नाम है जो शहर तिरमिज़ से छः कोस के फ़ासले पर है। इस गाँव की तरफ़ निस्बत होने से आप बूग़ी भी कहलाते हैं। आप इसी गाँव में 209 हिजरी में पैदा हुए और 17 रजब शबे दो शुम्बा 279 हिजरी में वफ़ात पायी। और ख़ास तिरमिज़ शहर में मदफून हुए।

आप इमाम बुख़ारी के सबसे मशहूर शागिर्द व जा नशीन शुमार किये जाते हैं। और आपको यह शरफ़ भी हासिल है कि खुद इमाम बुख़ारी ने बाज़ हदीसों में इनकी शागिर्दी इख़्तयार फरमाई। इल्मे हदीस के लिए हज़ारों मील का सफ़र किया। आपकी तस्नीफ़ात में से जामेअ् तिरमिज़ी शरीफ़ बेहद

मकबूल व मशहूर किताब है। जो सिहाह सित्ता में दाखिल है। और इस कदर मुफ़ीद किताब है कि मजमूई हैसियत से इसको सिहाह सित्ता की तमाम किताबों पर फौकियत हासिल है। आप अपने दौर के बेमिसाल आबिद व जाहिद थे। शब बेदारी और ख़ौफे इलाही से गिरया व जारी के सबब से पहले आँखो में आशोबे चश्म हुआ फिर बीनायी जाती रही।

अबू दाऊद :– आपका नाम व नसब सुलैमान बिन अशअस बिन शद्दाद बिन अम्र है। 202 हिजरी में बमुकाम बसरा आपकी विलादत हुई और 14 शव्वाल 275 हिजरी बसरा ही में आपकी वफात हुई। आप का वतन बसरा था। मगर बारहा आप ने बग़दाद में अकामत फरमायी। और मुददतों बग़दाद में रहे। आपने इल्मे ह़दीस की त़लब में हिजाज,इराक खुरासान, जज़ीरा वगैरह का सफ़र फरमाया। और हज़ारो मुहद्दिसीन से हदीस की समाअत व रिवायत फरमाई। उम्र भर हदीस का दर्स देते रहे इसी लिए आप के शगिर्दों की तादाद इस क़दर ज़्यादा है कि उनका शुमार इन्तिहाई दुशवार है।

किताब सुनन अबू दाऊद आपकी मशहूर तसनीफ है। पाँच लाख हदीसों में से चुनकर चार हज़ार आठ सौ अहादीस आपने अपनी इस किताब में जमा फरमायी हैं। किताब सुनन अबू दाऊद सिहाह सित्ता में दाखिल है। बगदाद के औलिया किराम आपका बेहद एहतिराम करते थे। बग़दाद के एक साहिबे करामात मशहूर वली हज़रत सहल बिन अब्दुल्लाह तसतरी एक दिन इमाम अबू दाऊद की मुलाक़ात के लिए आए और फ़रमाया कि ऐ अबू दाऊद! आप अपनी ज़बान बाहर निकालिये। मैं आपकी जबान का बोसा लूँगा। क्योंकि आप इस ज़बान से हुजूरे अकरम सल्लल्लाहु तआला अलैहि वसल्लम की हदीसें बयान फरमाते हैं। चुनाँचे उनके असरार से मजबूर होकर इमाम अबू दाऊद ने अपनी जबान मुँह से बाहर निकाली। और सहल अब्दुल्लाह तसतरी ने निहायत गर्मजोशी और प्यार के साथ इमाम अबू दाऊद की ज़बान चूम ली।

इमाम निसाई :– इमाम काजी अब्दुर्रहमान अहमद बिन शुएब बिन अली निसाई बहुत ही जलीलुल कद्र और बुलन्द पाया मुहद्दिस हैं। आप की किताब सुनन निसाई सिहाह सित्ता में दाखिल है। अल्लामा इब्ने हजर अस्कलानी ने फरमाया कि आपके असातिजा तलामिजा इस कदर ज्यादा हैं कि उनका शुमार नहीं किया जा सकता। दर्से हदीस व फतावा व तस्नीफ

के साथ साथ आला दर्जे के इबादत गुजार थे तमाम उम्र सौमे दाऊदी के पाबन्द रहे यानी एक दिन का नागा दे कर हमेशा रोजा रखते रहे। उमरा व सलातीन के दरबारों से सख्त मुतनफ्फिर और उन लोगों की मुलाकातों से हमेशा परहेज करते रहे। 214 हिजरी में आप खुरासान के शहर निसा में पैदा हुए और मिस्र के हासिद उल्मा के हाथों से बिला कुसूर मार खाकर ज़ख़्मी होकर आप मक्का मुकर्रमा चले आये। और 13 सफर 313 हिजरी में आपको शहादत नसीब हुई। और सफ़ा मरवा के दरमियान मदफून हुए। मगर युनूस का कौल है कि आप की वफ़ात 13 सफ़र 313 हिजरी को फिलस्तीन में हुई फिर वहाँ से आपकी लाश मुबारक मक्का मुकर्रमा पहुँचाई गई।

इमाम इब्ने माजा :– अबू अब्दुल्लाह कुन्नियत,मुहम्मद बिन यजीद नाम, और रुबअी कज़ैनी निस्बत है मगर आम तौर पर इब्ने माजा के उर्फ के साथ मशहूर हैं। और सही कौल यही है कि माजा आपकी वालिदा का नाम है। सिहाह सित्ता में सुनन इब्ने माजा आप ही की तस्नीफ है। आप कजवैन के रहने वाले हैं। जो ईरान के सूबए आज़र बायजान का एक मशहूर शहर है। आपने हदीस की तलब में हिजाज, इराक शाम, ख़ुरासान, का इल्मी सफर फरमाया। और ख़ास कर बसरा कूफा और बग़दाद हरमैन शरीफैन दमिश्क के शहरों में मुकीम रह कर तकरीबन तीन सौ दस शुयूख से अहादीस की रिवायत फरमायी। और लाखो हदीसों के ज़खीरों में से इन्तिख़ाब करके चार हज़ार रिवायात को मुख़तलिफ अबवाब के तहत पूरी मुनासबत के साथ अपनी किताब सुनन इब्ने माजा में दर्ज फरमाया। उम्र भर इल्मे हदीस के दर्स व तदरीस का मशगला रहा। बुलन्द पाया मुहद्दिसीन में आप का शुमार है।

209 हिजरी में आप की विलादत हुई और 21 रमज़ान 272 हिजरी में आपकी वफ़ात हुई। मुहम्मद बिन अली कहरमान और इब्राहीम बिन दीनार दो बुर्जुगों ने आपको गुस्ल दिया। और आपके भाई अबूबक्र ने आपकी नमाजे जनाज़ा पढ़ाई। और आपके दोनों बरादरान अबू बक्र व अब्दुल्लाह और आपके फरजन्द उबैदुल्लाह ने आपको कब्र में उतारा।

इमाम दारमी :– इनकी कुन्नियत अबू मुहम्मद और नाम व नसब अब्दुल्लाह बिन अब्दुर्रहमान दारमी है। समरकन्द के उल्मा में से निहायत ही बुलन्द पाया हाफ़िज़े हदीस हैं। इमाम मुस्लिम, इमाम तिरमिज़ी इमाम अबू

दाऊद के असातिजा में से हैं। अबू हातिम ने इनके बारे में फरमाया कि यह अपने जमाने के इमाम थे। कबीला बनी तमीमी में एक ख़ानदान दारिम बिन मालिक बिन मुन्ज़िला की तरफ़ निस्बत होने की वजह से दारमी कहलाते हैं। 181 हिजरी में पैदा हुए और 255 हिजरी में वफ़ात पायी। चौहत्तर बरस की उम्र शरीफ़ हुई।

इमाम बयहक़ी :– अबू बक्र अहमद बिन हुसैन बयहकी शाबान 384 हिजरी में निशापुर से तीस कोस और बैहक़ नामी गाँव में पैदा हुए। इस लिए बयहकी कहलाये। जुहदो तक़वा और दयानत व इबादत में उल्माऐ रब्बानीन की तमाम खसाइले हमीदा के जामेअ् थे। इमाम हाकिम के बुलन्द मर्तबा शागिर्दो में से हैं। फने हदीस व फिक़ाह और तसानीफ़ में यक्ताऐ रोज़गार हुए है। मशहूर फकीहे वक़्त मुहम्मद बिन अब्दुल अजीज़ मरुजी का बयान है कि एक रोज मैनें ख़्वाब में देखा कि एक सन्दूक ज़मीन से आसमान की तरफ उड़ाया जा रहा है और उसके इर्द गिर्द नूर चमक रहा है मैंने दरयाफ्त किया कि यह क्या चीज है ? तो फरिश्तों ने जवाब दिया कि यह इमाम बयहकी की तस्नीफ़ात का सन्दूक है। जो बारगाहे इलाही में मक़बूल हो गया है। आप की कुल तस्नीफात का अन्दाजा बड़े साइज के सोलह सौ सफ़हात के करीब है। 10 जमादिल ऊला 458 हिजरी मे विसाल हुआ। लोग उनको ताबूत में रखकर बैयहक गाँव में लाये और मकामे खुसरो जरद में दफ़न किया।

इमाम ख़त्ताबी : – उनकी कुन्नियत अबू सुलैमान और नाम व नसब अहमद बिन मुहम्मद ख़त्ताबी है अपने दौर के अल्लामतुल अस्र और यकताऐ दहर थे। फिक़ह व हदीस और अदब वग़ैरह में बहुत ही बा कमाल और फख़रे रोजगार थे। इनकी तस्नीफ़ात भी बहुत मशहूर और अजीब हैं। मुआलिमुस सुनन, ऐलामुस सुनन गरीबुल हदीस आपकी मशहूर किताबे है। आप शारेह हदीस भी हैं। 388 हिजरी में आपका विसाल हुआ।

इमाम बग़वी :– अबू मुहम्मद हुसैन बिन मसऊद बगवी फकीह शाफेई का शुमार फिक़ह व हदीस के इमामों में है बहुत ही मुत्तकी परहेजगार और सहीहुल अकीदा दीनदार आलिमे दीन थे। किताबुल मसाबीह, शरहे सुन्नत, हदीस में किताबुल मजहब फिकह मे,और मुआलिमुत तनजील तफसीर में आपकी मशहूर तस्नीफ़ात हैं। खुरासान के एक शहर बगसूद, या शहर बग़ की तरफ निस्बत की बजह से बगवी कहलाते हैं।

516 हिजरी में आपकी वफ़ात हुई।

इमाम नौवी :– आप की कुन्नियत अबू ज़करिया और नाम व नसब मुहीय्युददीन बिन शरफ़ नौवी है। अपने दौर के इमाम और बहुत बड़े आलिम व फ़ाज़िल इन्तेहाई मुत्तकी व परहेजगार फ़कीह मुहद्दिस थे। साहिबे तसानीफे कसीरा हैं। फ़िक़ह में उनकी किताबुर रौज़ा हदीस में अररियाज़ और अल अज़कार शरहे हदीस शरहे मुस्लिम, वगैरह बहुत मशहूर हैं। आप दमिश्क़ के एक गाँव नवी के रहने वाले थे। 650 हिजरी में जब आपकी उम्र 19 बरस की थी अपने गाँव से दमिश्क शहर आये। और उलूम हासिल करके फ़िक़ह व हदीस में फ़जल व कमाल हासिल किया। आप बहुत बड़े हक़ गो, इन्तेहाई क़नाअत पसन्द, और सादा जिन्दगी बसर करने वाले थे। बहुत ज़्यादा शब बेदार, और दिन रात इल्मी मशाग़िल और आमाले सालेहा में मसरुफ़ रहते थे। रजब 677 हिजरी में वफ़ात पायी। आपकी कब्र शरीफ़ नवा गाँव में मुसलमानों की ज़ियारत गाह है पैंतालीस बरस की उम्र पायी।

नोट :– इस किस्म के दो सौ मुहद्दिसीन व फुकहाए उम्मत के मुफस्सल हालात, उनकी इल्मी व अमली ख़िदमत,और इबादात करामात का तज़किरा हमारी किताब " औलियाऐ रिजालुल हदीस"(तज़किरतुल मुहद्दिसीन) में पढ़िये। इस किताब को मदारिसे अरबिया के तुलबा व मुदर्रेसीन, वाअेज़ीन और आम्मतुल मुस्लेमीन सभी निहायत ही वालेहाना अकीदत के साथ पढते हैं।

दुआ

ऐ ख़ुदावन्दे जहाँ ऐ किरदिगार
सारे आलम का तू है परवरदिगार
शुक्र तेरा किस तरह से हो अदा
नेमते या रब हैं तेरी बे शुमार
खालिको मालिक तू सब का बिल यक़ी
सब हैं तेरे बन्दए ख़िदमत गुज़ार
सबका तू माबूद सब आबिद तिरे
तेरे दर के सब गदाऐ ख़ाकसार
नेकियों से हाथ ख़ाली हैं मिरे
तेरी रहमत का हूँ मैं उम्मदीवार
बख़्श दे या रब गुनाहो को मिरे
तू है ग़फ्फार और मैं इसयाँ शिआर
है तिरे दरबार में यह इल्तिजा
गो नहीं दुनिया में मेरा कुछ वक़ार
वादा फ़रमाया तिरे महबूब ने
वो जहां में हैं जो मेरे ग़म गुसार
मेरी उम्मत को मेरी चालीस बात
जो भी पहुँचा देगा बनकर दीनदार
हश्र यूँ फ़रमायेगा उसका ख़ुदा
वह बना होगा फ़क़ीहे नामदार
और मैं हो जाऊँगा उसका शफ़ी
और गवाही दूँगा उसकी शानदार
ये बशारत सुन के ऐ रब्बे करीम
नख़ले दिल में आगई मेरे बहार
इस लिए चालीस अक़वाले रसूल
छापता हूँ या रब लिख के बार बार
फ़ज़्ल से अपने अता कर ऐ ख़ुदा
आज़मी को भी यह रुतबा यह वक़ार

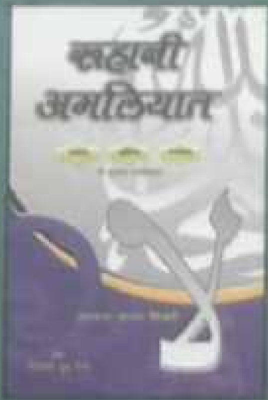
क़त्आत–ए–तारीख़ी

इं रिसाला चू तहरीर कर्द आज़मी
गुफ़्त हातिफ कि"अहसनतु" सद मरहबा
गर कसे साले तस्नीफ़ पर सद बगो
गश्त तारीख़े ऊ, बाग़े फिरदौसे मा
(1394 हिजरी)

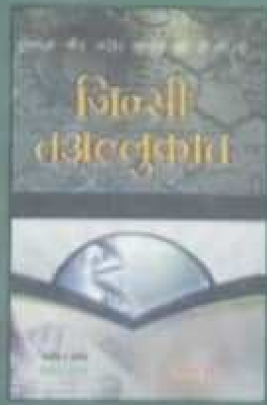
दीगर

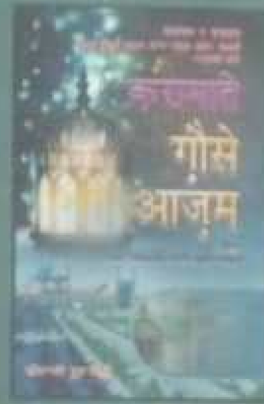
लिख रहा हूँ हदीसे रसूले खुदा सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम
मेरी तहरीर में ख़ुल्दे अनवार है
है तसव्वुर हबीबे ख़ुदा का मुझे
सामने मेरे तैबा का दरबार है
मुस्तुफ़ा के यह चालीस अक़वाल हैं
इन पर कुरआन जन्नत का गुलज़ार है
जमा चालीस ऐसी हदीसें हुईं
हशर में जिनसे बेड़ा मिरा पार है
मोमिनों के लिए बाग़े फ़िरदौस है
कुफ़्र के वास्ते हक़ की तलवार है
यह जवाहिर हदीसों के हैं **आज़मी**
इनकी तारीख़ अक़वाले मुख़्तार है

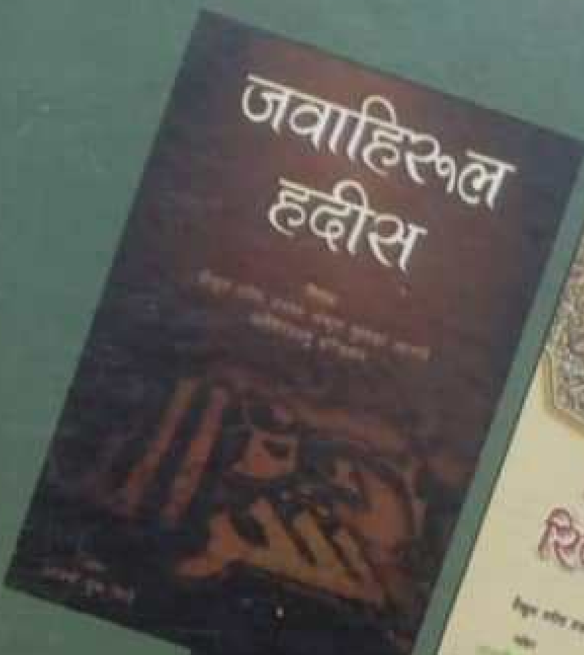
तारीख़े इफ़्तिताह तस्नीफ़ : – 26 जमादिल उख़रा 1394 हिजरी
तारीख़े इख़्तिताम तस्नीफ़ : – 27 रमज़ानुल मुबारक 1394 हिजरी



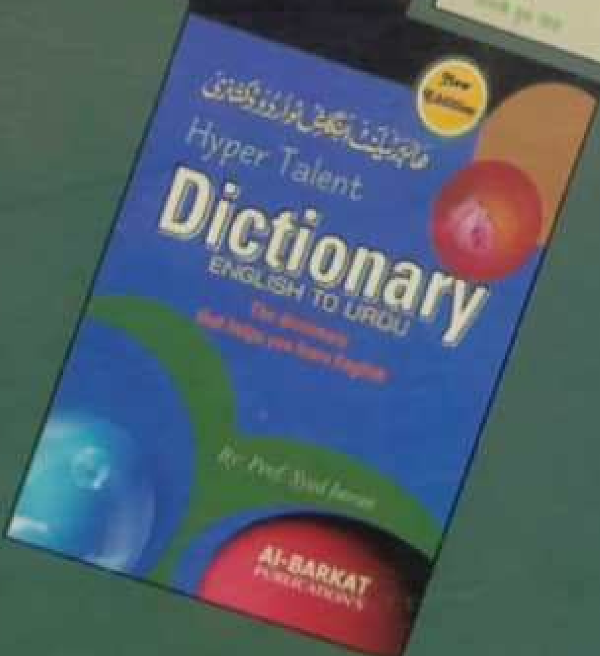












MOHAMMADI BOOK DEPOT
523, Waheed Kutub Market, Matia Mahal, Jama Masjid
Delhi-110006, Ph.:011-23253473/23264355
email: pasha78675@yahoo.in

90/-

ISBN 81-89437-78-X